ग्रन्थमाला-स्मारक-समर्पण-सङ्कल्पः

★ पञ्चापे लब्धजन्माऽऽसीद् होश्यारपुर-पार्श्वतः ।
महात्मा सर्वदानन्दस् सिद्ध-तपा यतीश्वरः ॥ १ ॥

★ वेद–वेदाङ्ग–सच्छ्रद्धो वेदान्त-शान्त-मानसः ।
सत्यधर्म--प्रचारात्म–लोकसेवा–दृढव्रतः ॥ २ ॥

★ सत्प्रेरणाभिराशीभिर् यः खलु मुनि-सत्तमः ।
अस्माकं सर्वदा मान्यः संस्थानस्याऽस्य पोषकः ॥ ३ ॥

★ तस्याऽस्तु सुचिर-स्मृत्यै पूजायै च मनस्विनः ।
सद्ग्रन्थ–विश्व–मालेयं श्रद्धया परयाऽर्पिता ।
इति निवेदयेते तत्–सम्पादक–प्रकाशकौ ॥ ४ ॥

सम्पादक :—

विश्वबन्धु : शास्त्री, ऍम. ए., ऍम. ओ. ऍल.

प्रकाशक :—

विश्वेश्वरानन्द-वैदिक-संस्थान

होशिआरपुर

विश्वेश्वरानन्द संस्थान प्रकाशन—१४४

स. वि. ग्रन्थमाला—१९

S. U. Series—19

पंजाबी रामायण

(देवनागरी लिपि में)

लेखक :—

रामलभाया आनन्द, 'दिलशाद'

सम्पादक :—

विश्वबन्धु शास्त्री, एॅम. ए., एॅम. ओ. एॅल.

होशिआरपुर

विश्वेश्वरानन्द-वैदिक-संस्थान

१९५७

पंजाबी रामायण के लेखक
स्व. दिलशाद जी

[illegible]

१. वैदिक संस्कृति का आधार—

श्रेष्ठ पारिवारिक जीवन ही वैदिक संस्कृति के प्राणों का एक-मात्र आधार था। अथर्ववेद (३,३०) में उक्त जीवन की ओर उत्तरोक्त प्रकार से प्रेरणात्मक संकेत किया है—

> अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
> जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥२॥
> मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
> सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥३॥

(अर्थात्) "(घर-घर में) पुत्र पिता का आज्ञाकारी (और) माता के साथ जुड़े हुए मनवाला हो (घर-घर में) पत्नी पति से मीठी (और) शान्ति-भरी वाणी बोलनेवाली हो ॥२॥

(घर-घर में) भाई-भाई के प्रति (और) बहिन बहिन के प्रति (कभी भी) द्वेष न करे। (सभी आपस में) मिले हुए रहो, समान व्रतों का पालन करो (तथा) भले बोल बोला करो" ॥३॥

२. वाल्मीकि रामायण का महत्त्व—

भारत के साहित्यिक इतिहास में आदि-कवि वाल्मीकि इस लिए विशेष प्रशंसा के पात्र हैं कि उन्होंने वैदिक ऋषिओं के उक्त सांस्कृतिक संकेत को पा कर आदर्श-स्वरूप सदाचार के मूर्ति-भूत, श्रीराम ऐसे पुरुषोत्तम के तथा उनके श्रेष्ठ साथियों के यशोगान द्वारा अपनी करुण-रस-प्रथम-प्रवाहित, सर्व-रस-रञ्जित, सर्व-गुण-भरी, सर्वालङ्कार-चमत्कृत एवं पद-योग तथा छन्दो-योग की अद्भुत छटा से सुभूषित काव्य-कला को अत्युत्तम प्रकार से चरितार्थ किया है। यह सत्य है कि उनकी अमर कृति, 'रामायण' की शोभा उस के श्रीराम आदि श्रेष्ठ पात्रों के संसर्ग द्वारा सिद्ध हुई है किन्तु यह भी कुछ कम सत्य नहीं है कि श्री वाल्मीकि द्वारा उत्तम प्रकार से किए गए उन के गुण-कीर्तन का ही यह साक्षात् अथवा परम्परित, उत्तरोत्तर-वृद्धि-शाली परिणाम है कि अपनी जीवन-लीला के साथियों सहित, श्रीराम आज दिन तक भारत एवं भारत के बाहर के अनेक देशों की जन-कोटियों के हृदयों के आराध्य देवता के रूप में घर-घर में प्रतिष्ठित चले आते हैं।

३. प्रस्तुत पंजाबी रामायण—

रामायण लौकिक संस्कृत का आदिम महाकाव्य है। कवियों की असंख्य पीढ़ियों ने, साक्षात् अथवा परम्परा-सम्बन्ध द्वारा, इसी से प्रभावित और प्रेरित हो कर संस्कृत तथा अन्य अनेक भाषाओं में शतशः, संभवतः, सहस्रशः उत्तमोत्तम साहित्यिक रत्नों को प्रादुर्भूत करते हुए, मानो, इस अक्षय्य महास्रोत से अपनी-अपनी मधुर-रस-वाहिनी काव्य-नदियों को प्रवाहित किया है। प्रस्तुत पंजाबी रामायण रूपी काव्य-सरिता भी उन्हीं में से एक है।

पंजाबी रामायण के लेखक
स्व. दिलशाद जी

सम्पादकीय

१. वैदिक संस्कृति का आधार—

श्रेष्ठ पारिवारिक जीवन ही वैदिक संस्कृति के प्राणों का एक-मात्र आधार था। अथर्ववेद (३,३०) में उक्त जीवन की ओर उत्तरोक्त प्रकार से प्रेरणात्मक संकेत किया है—

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥२॥
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ॥३॥

(अर्थात्) "(घर-घर में) पुत्र पिता का आज्ञाकारी (और) माता के साथ जुड़े हुए मनवाला हो। (घर-घर में) पत्नी पति से मीठी (और) शान्ति-भरी वाणी बोलनेवाली हो ॥२॥

(घर-घर में) भाई-भाई के प्रति (और) बहिन बहिन के प्रति (कभी भी) द्वेष न करे। (सभी आपस में) मिले हुए रहो, समान व्रतों का पालन करो (तथा) भले बोल बोला करो" ॥३॥

२. वाल्मीकि रामायण का महत्त्व—

भारत के साहित्यिक इतिहास में आदि-कवि वाल्मीकि इस लिए विशेष प्रशंसा के पात्र हैं कि उन्होंने वैदिक ऋषिओं के उक्त सांस्कृतिक संकेत को पा कर आदर्श-स्वरूप सदाचार के मूर्ति-भूत, श्रीराम ऐसे पुरुषोत्तम के तथा उनके श्रेष्ठ साथियों के यशोगान द्वारा अपनी करुण-रस-प्रथम-प्रवाहित, सर्व-रस-रञ्जित, सर्व-गुण-भरी, सर्वालङ्कार-चमत्कृत एवं पद-योग तथा छन्दो-योग की अद्भुत छटा से सुभूषित काव्य-कला को अत्युत्तम प्रकार से चरितार्थ किया है। यह सत्य है कि उनकी अमर कृति, 'रामायण' की शोभा उस के श्रीराम आदि श्रेष्ठ पात्रों के संसर्ग द्वारा सिद्ध हुई है किन्तु यह भी कुछ कम सत्य नहीं है कि श्री वाल्मीकि द्वारा उत्तम प्रकार से किए गए उन के गुण-कीर्तन का ही यह साक्षात् अथवा परम्परित, उत्तरोत्तर-वृद्धि-शाली परिणाम है कि अपनी जीवन-लीला के साथियों सहित, श्रीराम आज दिन तक भारत एवं भारत के बाहर के अनेक देशों की जन-कोटियों के हृदयों के आराध्य देवता के रूप में घर-घर में प्रतिष्ठित चले आते हैं।

३. प्रस्तुत पंजाबी रामायण—

रामायण लौकिक संस्कृत का आदिम महाकाव्य है। कवियों की असंख्य पीढ़ियों ने, साक्षात् अथवा परम्परा-सम्बन्ध द्वारा, इसी से प्रभावित और प्रेरित हो कर संस्कृत तथा अन्य अनेक भाषाओं में शतशः, संभवतः, सहस्रशः उत्तमोत्तम साहित्यिक रत्नों को प्रादुर्भूत करते हुए, मानो, इस अक्षय्य महास्रोत से अपनी-अपनी मधुर-रस-वाहिनी काव्य-नदियों को प्रवाहित किया है। प्रस्तुत पंजाबी रामायण रूपी काव्य-सरिता भी उन्हीं में से एक है।

४. कवि-परिचय—

प्रस्तुत ग्रन्थ लेखक के प्रातःस्मरणीय पितृ-पाद, स्वर्गीय श्री *रामलभाया* आनन्द, 'दिलशाद' जी की ओजस्विनी लेखनी का प्रसाद है। पूज्य पिता जी का जन्म १८६८ ई० में भारत से अब खण्डित किए जा चुके पश्चिमी पंजाब के *भेरा* नामक प्रसिद्ध नगर में हुआ था। वहीं पर आप का बाल्यकाल बीता और आपने, उस समय की प्रवृत्ति के अनुसार, उर्दू और फारसी भाषाओं को सीखा। तत्पश्चात्, प्रारम्भिक यौवनावस्था में ही आपने कश्मीर राज्य के पोलीस विभाग में नौकरी कर ली। वहां से १९१७ में सेवा-निवृत्त होने के पश्चात्, आप तीन वर्ष पर्यन्त अपने जन्म-स्थान पर रहे, जहाँ आप ने अपनी अधरांग-भंग-पीड़ित, वृद्धा माता जी की सेवा में दिन-रात एक कर दिया। १९१९ में आप की माता जी का देहान्त हो गया और १९२० के आरम्भ से आप लाहौर में आकर मेरे साथ रहने लग गए। १८ मार्च, १९४६ को, जब कि आप सब प्रकार से स्वस्थ थे, आप अपनी अनेक वर्षों से चली आ रही दिन-चर्या के अनुसार, दोपहर का भोजन तथा विश्राम करके समीपवर्ती गोलबाग में अपनी मित्र-मंडली को अपनी 'रामायण' सुनाने के लिए गए। रामायण-पाठ का नियम पूरा करके, वहाँ से बाजार की ओर गए। परन्तु मार्ग में ही हृदय की गति के एकाएक रुक जाने से आन की आन में आप का प्राण-पंखेरू उड़ गया।

५. कवि की कृतियाँ—

बाल्यकाल से ही कविता करने की ओर आपकी प्रवृत्ति हो गई थी। यह प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गई और, विशेषरूप से, सेवा-निवृत्ति के पीछे तो आपका यही एक-मात्र व्यसन था। नौकरी से निवृत्त होते ही आप ने *रामायण* पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और अन्त तक इस का संशोधन चलता रहा। यही आप की प्रमुख जीवन-कृति रही। आप की कुछ अन्य कृतियों की नामावली उत्तरोक्त प्रकार से है—

(१) किस्सा पूरणभक्त।
(२) क़िस्सा ध्रुवभक्त।
(३) किस्सा धन्नाभक्त।
(४) क़िस्सा भक्तसुदामा।
(५) किस्सा प्रह्लादभक्त।
(६) किस्सा मोरध्वज।
(७) किस्सा नरसी भक्त।
(८) किस्सा जैमलफत्ता।
(९) किस्सा गोपीचन्द।
(१०) किस्सा ज्वाहरसिंह शाहज़ादा।
(११) क़िस्सा करनी भरनी।
(१२) क़िस्सा हैमालशाहज़ादी।
(१३) राजपूतनी सलोचना सती।
(१४) किस्सा राजा भर्तृहरि।

इनके अतिरिक्त फुटकर कविताएँ—बारह मास, हुनर-दस्तकारी (प्रशंसा), कृष्णलीला, कलियुग की निशानी श्रीकृष्ण की ज़बानी, समस्या पूर्ति—उर्दू पत्रों में—'रघवीर पत्रिका' उर्दू (गुजरांवाला) आदि।

प्रस्तुत संस्करण—

कवि ने अपने हाथ से फ़ारसी लिपि में प्रस्तुत ग्रन्थ की दो प्रतिआँ लिखी थीं। इनमें से पहले की लिखी मूल प्रति का कागज कुच्छ जीर्ण हो चुका है। दूसरी पीछे की लिखी प्रति में उन्होंने जहाँ-तहाँ पाठ को कुच्छ-कुच्छ बदल दिया है। मूल प्रति में कहीं-कहीं सिक्के से लिखे कुच्छ शोध भी पाए जाते हैं। ये शोध कवि के सामने इस ग्रन्थ को पढ़ने या सुनने वाले उनके कई-एक मित्रों के सुझावों के फल-

स्वरूप थे, जिन्हें उन्होंने स्वीकार कर लिया था। प्रस्तुत संस्करण में कवि द्वारा स्वयं कृत अथवा उनके द्वारा स्वीकृत उक्त सब शोधों का समावेश कर लिया गया है। इस संस्करण की उत्तरोक्त विशेषताओं की ओर, विशेष रूप से, पाठकों का ध्यान आकर्षित किया जाता है—

(क) शब्दार्थ-कोश—ग्रन्थ की भाषा, मुख्य रूप से, लँहदा अर्थात् पश्चिमी पंजाबी है, जिस के विशेष शब्दों का पूर्वी पंजाबी में बहुत कम प्रचार पाया जाता है। साथ ही, ग्रन्थ की भाषा में फ़ारसी के शब्दों की भी प्रचुरता पाई जाती है। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए, सब प्रकार के कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों के अर्थ अधर-टिप्पणों के रूप में दे दिए गए हैं। यह शब्दार्थ-कोश प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठकों के लिए ही नहीं, वरन् भाषा-शास्त्र के अध्ययन-रसिकों के लिए भी उपयोगी होना चाहिए।

(ख) देवनागरी का प्रयोग—उत्तरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत संस्करण में देवनागरी लिपि का प्रयोग करना ही ठीक समझा गया है—

(१) किसी भी भाषा और उस की किसी भी प्रचलित विशेष लिपि के मध्य में किसी प्रकार का भी अटूट सम्बन्ध नहीं होता। कारण, मनुष्य अपनी भाषा या भाषाओं को जहाँ अनादि काल से बोलता चला आया है, वहाँ वह लिपि या लिपिओं को तो केवल कुच्छेक हज़ार वर्षों से ही बना कर प्रयोग में ला सका है। सैंकड़ों विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले करोड़ों मनुष्य आज तक भी किसी लिपि को नहीं जानते। जिस भी लिपि को उन्हें सिखाने का प्रबन्ध किया जाएगा, उसे ही वे सीख कर, उसी में अपनी-अपनी भाषा को लिखने लगेंगे।

(२) कुछ ही समय पहले, यूरोप के भिन्न-भाषा-भाषी देशों में भिन्न-भिन्न लिपिओं का प्रचार था। धीरे-धीरे वहाँ प्रायः सभी देशों के लोगों ने अनेक प्रकार के सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक लाभों को सिद्ध करने के लिए पारस्परिक संसर्ग-वृद्धि को अत्यावश्यक समझते हुए अपनी-अपनी सभी भाषाओं को सब की साँझी एक लैतिन (रोमन) लिपि में ही लिखना चालू कर दिया। यहाँ तक ही नहीं, वरन् उन्होंने संसार भर की अन्य जिन सैंकड़ों भाषाओं को सीखा, उन सब को भी इसी लिपि में ही लिखने का प्रचार किया। इसी प्रकार, यदि, अपने एक-राष्ट्रीय स्तर पर, विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं को बोलनेवाले हम भारतवासी भी एक ही साँझी राष्ट्र-लिपि का चुनाव करके उसी में अपनी-अपनी सभी भाषाओं को लिखने लग जाएँ, तो यह सब के लिए समान रूप से हितकारक होना चाहिए। यह तो अब कहने की बात नहीं रही कि भारत की वह एक राष्ट्र-लिपि देवनागरी ही हो सकती है और प्रेम-पूर्वक की गई प्रेरणा के फल-स्वरूप, धीरे-धीरे, वही हो भी जानी चाहिए। उस वांछनीय अवस्था में, भारत के किसी भी प्रदेश की भाषा का लेख भारत भर में सर्वत्र थोड़ा-बहुत समझा जा सकेगा। कारण, हमारी प्रादेशिक भाषाओं के अन्दर उन सब की आधार-स्वरूप संस्कृत भाषा का अत्यधिक समान अंश आज भी जीवित भाषा के रूप में बराबर व्यवहार में आ रहा है।

(३) १९४७ के देश-विभाजन के पश्चात्, पश्चिमी पंजाब के लाखों नर-नारी

इधर-उधर बिखर कर, देहली, उत्तर-प्रदेश तथा राजस्थान आदि हिन्दी-भाषी प्रदेशों में जा बसे हैं, जहां, यदि उन्हें देवनागरी में मुद्रित प्रस्तुत ग्रन्थ सरीखा सरल, सार्वजनिक साहित्य सुलभ होता रहेगा, तो वे, कम से कम, अपने घरों में तो पंजाबी भाषा को चिर काल तक जीवित रख सकेंगे।

(ग) विशेष फ़ारसी ध्वनिआँ––फ़ारसी के 'ख़त' आदि, 'ग़ुबार' आदि तथा 'फ़र्मान' आदि शब्दों में पाई जाने वाली तीन आदिम ध्वनिआँ साधारण पंजाबी में, क्रमशः, 'ख' 'ग' और 'फ' की तरह बोली जाती हैं। परन्तु फ़ारसी पढ़े लोग उन्हें, यथा-योग, महाप्राण अथवा प्र-महाप्राण के रूप में ही बोलते हैं। प्रस्तुत संस्करण में भी उन्हें, क्रमशः, 'ख़' 'ग़' तथा 'फ़' के रूप में ही रखा गया है।

(घ) विशेष अक्षर-विन्यास—इस बात का भरसक प्रयत्न किया गया है कि प्रत्येक शब्द का अक्षर-विन्यास करते हुए कवि के अभिप्रेत उच्चारण का पूरा ध्यान रहे। इसी कारण, फ़ारसी में चार पृथक् तालव्य प्र-महाप्राण अक्षरों द्वारा लिखी जाने वाली चारों ध्वनिओं के लिए यहाँ पर एक 'ज़' (=ज़) का ही प्रयोग किया गया है। संस्कृत की 'ष्', 'ऋ' तथा 'ऌ' ध्वनिओं का कहीं भी उपयोग नहीं करना पड़ा। 'ङ्' तथा 'ञ्' के स्थान पर अनुस्वार का ही प्रयोग किया गया है। 'ए' तथा 'ऐ' के अतिरिक्त ह्रस्व 'ऍ' का प्रयोग अत्यावश्यक प्रतीत हुआ है। उत्तरोक्त उदाहरणों से हमारे अक्षर-विन्यास का यह विषय और भी स्पष्ट हो सकेगा—

१. किउँ (=क्यों)।
२. रिशि (= ऋषि)।
३. केऑ (=क्या)।
४. गेऑ (=गया)।
५. धेऑन (=ध्यान)।
६. बेऑन (=बयान)।
७. अज़ान (=ज्ञान)।
८. इस्तरी (=स्त्री)।
९. लओ (=लो)।
१०. हंकार (=अहंकार।
११. राखश (=राक्षस)।
१२. मैह्माँ (=महिमा)।
१३. माह्राज (=महाराज)।
१४. लैह्र (=लहर)।
१५. शैह्र (=शहर)।
१६. मैह्ल (=महल)।

७. आभार-प्रकाशन–

इस ग्रन्थ के सम्पादन, मुद्रण तथा प्रकाशन का कार्य कई हाथों और कई वर्षों पर फैला रहा है। इस का अधिकांश संस्थान की मुखपत्रिका *विश्व-ज्योति* में क्रमशः छपता रहा है, जिस से उस के पाठकों के हृदयों में प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन के विषय में लालसा उत्तरोत्तर बढ़ती रही है। मैं उन सभी सहयोगिओं के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने इस मेरे लिए, व्यक्तिगत रूप से, परम-कर्त्तव्य-भूत पुण्य कार्य को अत्युत्तम प्रकार से तथा अति सुन्दर रूप में सम्पन्न करने में मेरा हाथ बटाया है। इस यज्ञमय कार्य की पूर्ति में, सब से अधिक, श्री देवदत्त शास्त्री, विद्या-भास्कर का हाथ है। आप ने मुझ से प्रारम्भिक संकेत और परामर्श प्राप्त करके प्रायः सम्पूर्ण ग्रन्थ की देवनागरी प्रति बड़ी योग्यतापूर्वक अपने हाथ से लिखी है। इसी प्रकार, शब्दार्थ-कोश का अत्यधिक भाग भी आप के परिश्रम का ही फल है।

साधु आश्रम, होशिआरपुर,
कवि के स्वर्गारोहण की एकादशी बरसी,
(१८ मार्च, १९५७)

विश्वबन्धु

पंजाबी रामायण

विषय-सूची

युद्धकाण्ड—२२४-३२७

उत्तरकाण्ड—३२८-३८४

युद्धकाण्ड—२२४-३२७

उत्तरकाण्ड—३२८-३८४

* पंजाबी रामायण *

कवि-लिखित मूल प्रति का एक पृष्ठ

٦٠

کیتی عرض وزیر سومنت آ کے مہاراج آ جے وچ دربار بیٹھے

گورو وسشٹ جی ہی گئے پہنچ آ کے تے جرنیل کرنیل سردار بیٹھے

وقت مہورت ہی آن ہویا پنڈت جوتشی ہو کے تیار بیٹھے

چلو او ہو دلشاد میں لین آیا وچ دربار سارے انتظار بیٹھے

کا

سن کے عرض وزیر دی کیکئی نے رامچندر نوں جا کے بلا جلدی

میری جان جلدی گڈی پلٹ جلدی مینوں رام دا موہنہ دکھلا جلدی

کیکئی ناگن نے ڈسیا باپ تیرا رامچندر نوں جا کے سنا جلدی

ہو سکے دلشاد تاں ہے ویلا منتر آن کے کوئی چلا جلدی

جانا وزیر کا رامچندر جی کے پاس گمن

لیا سن سومنت نے حکم جدوں دیر ہیر نہ اوس اک پل کیتی

آیا کڈھ محل تھیں باہر جلدی دوجی وار نہ پرت کے گل کیتی

جوئیں ہونا سی او ہنیں ہون دتا اتھے ہونی نے چال بدل کیتی

دل ہو اوداس دلشاد گیا تیاری رامچندر دے اوس ول کیتی

आदि काण्ड

ईश्वर-स्तुति—

[1]अव्वल एक [2]अ-लख [3]अ-लख दाता, उस दा नाम [4]हमेश चितार [5]बंदे ।
[6]ओंदा अंत बे-अंत दा नाहिं कोई, [7]भाँवें [8]देविए [9]उमर [10]गुंझार बंदे ॥ १ ॥
[11]ओही है मालक पालक जगत [12]संदा, करनहार ओही करतार बंदे ।
कई [13]शाह [14]ते कई [15]गंदा [16]कीते, कीते खेल कई [17]किस्म [18]इझहार बंदे ॥ २ ॥
दौलतमंद [19]इक [20]नीं [21]नहिँ परवाह कोई, इक कौडिओं फिरन [22]लाचार बंदे ।
[23]उत्ते तख़्त दे बैठ इक हुक्म करदे, खड़े इक [24]अग्गे ख़िदमतगार बंदे ॥ ३ ॥
[25]चुक्क [26]पँड [27]टुरदे इक सिर उत्ते, उत्ते घोड़ेआँ इक सवार बंदे ।
जो [28]ओ चाहे करे इक पल अंदर, लीला उस दी [29]अपन अपार बंदे ॥ ४ ॥
[30]डरदा रहौं हमेश तूँ [31]रब्ब [32]कोलों, दिलों दूर कर दे [33]हँकार बंदे ।
[34]करसी [35]अदल *दिलशाद* [36]ताँ है [37]मुश्किल, [38]कीताँ [39]फ़झल ताँ [40]देसिआं [41]तार बंदे ॥ ५ ॥

---

१. प्रथम । २. अ-लेख्य, अथवा, अ-लक्ष्य का रूपान्तर । ३. अ-लक्ष्य । ४. सदा । ५. 'बंदा'—(आदमी, मर्त्य) का सम्बोधन । 'दास' का पर्याय 'बंदा'—इस से भिन्न है । ६. उसका । ७. चाहे । ८. हम देवें । ६. आयु । १०. बिता । इस लिपि में झ = ज़ । ११. वही । १२. संबंधित, का । १३. साहू, धनवान । १४. और । १५. मँगते, भिखारी । १६. किए । १७. प्रकार । १८. कौतुक, तमाशा । १६. कुछ लोग । २०. हैं । २१. नहीं । २२. रहित, असमर्थ । २३. ऊपर । २४. आगे । २५. उठा (कर) । २६. भार । २७. चलते (हैं) । २८. वह । २६. अनंत । ३०. डरता । ३१. प्रभु । ३२. से । ३३. अहंकार । ३४. करेगा (यदि) । ३५. न्याय । ३६. तो । ३७. कठिन । ३८. किया (यदि) । ३६. दया । ४०. देगा । ४१. तरने (डूबने से बचने) की शक्ति ।

ईश्वर-प्रार्थना—

नज़र[1] मेहर[2] दी कर ग़रीब[3] उत्ते, डिग्गा[4] आन[5] मैं तेरे दुआर साईं[6] ।
तूँ हीं सुक्याँ[7] नूँ[8] करें[9] चाँ[10] सावा[11], डुबिआँ बेड़िआँ[12] नूँ देवें तार साईं ॥ ६ ॥

नदिआँ नीर सुक्का[13] वहिर[14] करें, करें विचें[15] थल्लाँ[16] आब-शार[17] साईं ।
ज़बर-दस्ताँ[18] नूँ करें ज़ेर[19] तूँ हीं, देवें[20] कर कंगाल शाहुकार[21] साईं ॥ ७ ॥

नहिँ अंत कोई तेरी कुदरताँ[22] दा, है बे-अंत हिसाब शुमार[23] साईं ।
जल थल्ल धरती अकाश[24] उत्ते, रेहा[25] हो तेरा परचार[26] साईं ॥ ८ ॥

मेरे दिल दी ख़्वाहश[27] नूँ कर पूरा, हुण[28] हो मेरा मददगार[29] साईं ।
कराँ हाल[30] बेआन[31] रामायण दा मैं, लेआ[32] विच दिल दे मैं एह[33] धार[34] साईं ॥ ९ ॥

शे'र[35] लिखण दा नहीं वकूफ़[36] मैं नूँ, होया आन मैं सख़्त लाचार साईं ।
बेहर[37] शे'र दा पुर[38] मुहीत[39] डूंघा[40], लेहराँ कैहर[41] दिआँ रेहा मार साईं ॥१०॥

नहिं राह कोई पार लंघणे दा, रेहा[42] अक्ल[43] दौड़ा हजार साईं ।
आखिरकार[44] लाचार हो कंढडे[45] ते[46], लगा बैठ[47] के करण[48] विचार साईं ॥११॥

---

१. दृष्टि । २ कल्याण । ३. असमर्थ । ४. गिर पड़ा (हूँ) । ५. आकर । ६. स्वामिन् । ७. सूखे हुओं । ८. को । ६. कर सकते हो । १०. तथा । ११. हरा । १२. नौकाओं । १३. सूखा । १४. प्रवाहित । १५. में । १६. थलों । १७. जल के सोत । १८. बलात्-कारियों । १६. नीचे । २०. दे सकते हो । २१. साहूकार, धनी । २२. विभूतियों । २३. गिनती । २४. आकाश । २५. रहा (है) । २६. प्रचार । २७. कामना । २८. अब । २६. सहायक । ३०. वृत्तांत । ३१. वर्णन । ३२. लिया (है) । ३३. यह । ३४. व्रत । ३५. पद्य, छन्द । ३६. बोध । ३७. सागर । ३८. भरपूर । ३६. व्यापक, विस्तृत । ४०. गहरा । ४१. प्रकोप, अति क्रोध । ४२. चुका । ४३. बुद्धि । ४४. अन्त में । ४५. किनारे । ४६. पर । ४७. कर । ४८. करने ।

गई पेश[1] न कोई तदबीर[2] मेरी, नाहिँ नज़र आया कोइ यार[3] साईं।
तुध[4] बाज[5] मेरा नहिँ [6]होर कोई, कीती ढूंढ [7]ते भाल बिस्यार[8] साईं ॥१२॥

दे हुण पार उतार देआल[9] हो के, गोते नांह[10] खावाँ मंझधार साईं।
पकड़े हत्थ मेरा तुध बाज केहड़ा[11], सुणे कौण दस्स[12] मेरी पुकार साईं ॥१३॥

[13]सिधी साफ पंजाबी ज़बान[14] अंदर, दे हुण कर रामायण तैयार साईं।
मन[15] सवाल[16] ग़रीब *दिलशाद* दा तूँ, खड़ा आन तेरे दरबार साईं ॥१४॥

निजी अवतरणिका—

छोड़ नौकरी पिनसन लै के ते, पहोंता[18] घर जदों[19] मैं आन मितरा[20]।
[21]किवें [22]गुज़रसन [23]वेहलेआँ दिन मेरे, होया फ़िकर[24] विच इसे हैरान[25] मितरा ॥१५॥

लटक[26] शायरी[27] दी [28]ताँ आहि[29] पैह्ले, विच ओ उमर अवायल[30] दे जान मितरा।
कराँ कोई तसनीफ़[31] किताब बैह[32] के, आया दिल दे विच धेआन[33] मितरा ॥१६॥

लिखे शे'र मिज़ाज़ी[34] अज[35] तक [36]बौहते, लावाँ[37] चित्त[38] हुण शरण भगवान मितरा
देवाँ[39] लिख रामायण दा हाल सारा, विच नज़म[40] पंजाबी ज़बान मितरा ॥१७॥

आया नज़र जद शुग़ल[41] नहिं होर कोई, पेआ[42] लग रामायण बणाण मितरा।
लेआ[43] आसरा[44] पकड़ *दिलशाद* रब दा, करसी[45] मुश्किलाँ ओही आसान[46] मितरा ॥१८॥

---

१. सामने, प्रस्तुत विकट स्थिति के मुकाबिले में। २. नीति। ३. साथी। ४. तेरे। ५. बिना। ६. और। ७. और। ८. बहुत। ९. दयालु। १०. न। ११. कौन। १२. बता, बोल। १३. सीधी, सरल। १४. बाणी। १५. मान ले। १६. प्रार्थना, मांग। १७. आकर। १८. पहुँचा। १९. जब। २०. हे मित्र। २१. किस प्रकार। २२. बीतेंगे। २३. खाली रहते हुए। २४. चिन्ता। २५. चिन्तित। २६. प्रवृत्ति। २७. काव्य-रचना। २८. तो। २९. थी। ३०. छोटी, आरम्भिक। ३१. रचना। ३२. बैठ। ३३. ध्यान। ३४. शृंगार-रसित। ३५. आज। ३६. बहुत। ३७. लगाऊँ। ३८. चित्त। ३९. दूँ। ४०. कविता। ४१. काम। ४२. पड़ा। ४३. लिया। ४४. सहारा। ४५. करेगा। ४६ सुगम।

दशरथ के राज्य का वर्णन—

अजुध्या शैहर् मशहूर[1] जहान[2] अंदर, दसरथ राजा उत्थे[3] हुक्मरान[4] हैसी[5] ।
सूरज-बंसी कुल ते वरण छतरी, ज़बर-दस्त दलेर[6] बलवान हैसी ॥१९॥
राज हद हिसाब थीं[7] बाह्र उस दा, ज़ेर कलम सारा हिंदुस्तान हैसी ।
क्याम[8] राजे दा विच अजुध्या दे, राजधानी दा ओही अस्थान[9] हैसी ॥२०॥
अंठाँ[10] कोहाँ[11] दे विच मैह्लात[12] शाही[13], ते तामीर[14] सोह्णी[15] आलीशान[16] हैसी ।
विचे गुल-गुलज़ार[17] ते चलन[18] नैह्राँ, मुहय्या[19] ऐश[20] दा सभ सामान हैसी ॥२१॥
राजे कई मातहत[21] ख़राज[22] देवन[23], आलीजाह[24] भारा सुलतान[25] हैसी ।
रय्यत[26] खुशी दे नाल[27] गुज़रान[28] करदी, दुखी, समझ, न कोई इनसान[29] हैसी ॥२२॥
शींह[30] बकरी रल[31] के पीने[32] पाणी, गेआ ज़ुलम[33] दा मिट निशान[34] हैसी ।
हक़दार[35] नूँ हक़[36] फ़िल-फ़ौर[37] मिलदा, वडा[38] सख़ी[39] ते आदिल[40] ज़मान[41] हैसी ॥२३॥
किसे मज़्हब दा त'स्सब[42] नांह् विच दिलदे, हर कोइ आपणी[43] जगह शादान[44] हैसी ।
साध[45] संत फ़क़ीर[46] दी करे सेवा, विद्यावान पूरा दयावान हैसी ॥२४॥
किसे चीज़ाँ[47] दी लोड़[48] न थोड़[49] आंही[50], एह्-पर[51] घर न कोई संतान हैसी ।
दिलशाद औलाद[52] दे फ़िकर अंदर, रैंह्दा[53] शाह[54] हमेश हैरान हैसी ॥२५॥

---

१. प्रसिद्ध। २. जगत्। ३. वहाँ पर। ४. शासन-कर्ता। ५. था। ६.साहसी, दलवाला। ७. से। ८. निवास। ९. स्थान। १०. आठ। ११. कोसों। १२. भवन। १३. राजकीय। १४. गृह-निर्माण। १५. सुन्दर। १६. महा-विशाल। १७. बाग-बगीचे। १८. चलती थीं। १९. प्राप्त। २०. विलास। २१. अधीन। २२. कर। २३. देते थे। २४. महा-महिम। २५. महाराज। २६. प्रजा। २७. साथ। २८. निर्वाह। २९. मनुष्य। ३०. सिंह। ३१. मिल। ३२. पीते थे। ३३. अत्याचार। ३४. चिह्न। ३५. अधिकारी। ३६. प्राप्य। ३७. तुरंत। ३८. बड़ा। ३९. दानशील। ४०. न्यायकारी। ४१. (अपने) समय (का)। ४२. पक्षपात। ४३. अपनी। ४४. प्रसन्न। ४५. साधु। ४६. विरक्त। ४७. वस्तु। ४८. अपेक्षा। ४९. कमी। ५०. थी। ५१. सिवाय इस के कि। ५२. संतान। ५३. रहता। ५४. महाराज।

दशरथ का मंत्रियों से संवाद—

हैसन अट्ठ वज़ीर दाना उस दे, कार-बार अंदर मुख़्तेआर प्यारे।
देवाँ लिख उन्हांदड़ा नाम इत्थे, नज़्म-नसक दे जो ज़िम्मेवार प्यारे ॥२६॥

ध्रिश्टी जुंज जयंत ते सुरेश्टर, धरम-पाल पंजवाँ लै विचार प्यारे।
राश्टर-ब्रिद्ध अलोप सुमितर अट्ठवाँ, हर इक बात अंदर ख़बरदार प्यारे ॥२७॥

छैहू ऋषि ब्रैह्मण भी नाल रैहंदे, हर वक्त हाज़िर विच दरबार प्यारे।
मारकंडे सुजग्य ते कात्यायन, हर इक मशवरे दे सलाहकार प्यारे ॥२८॥

कशब जाबाली नाले समझ गोतम, आबिद एह छिवें परहेज़गार प्यारे।
हर दम शाह नूँ नेक सलाह देंदे, वेद शास्तर दे अनुसार प्यारे ॥२९॥

उत्ते वेद आमिल कशफ़ विच कामिल, धरम-करम अंदर होश्यार प्यारे।
मुलक अमन-अमान दे नाल वसदा, शोर-शर होए सभ फ़रार प्यारे ॥३०॥

आपणे-आप दुश्मन सर-निगून होके, जांदे हो ख़राज-गुज़ार प्यारे।
वले रहे हमेश मलूल राजा, आवे कोई पसन्द न कार प्यारे ॥३१॥

इक रोज़ वज़ीराँ नूँ सद्द के ते, करे दिल दा हाल इज़हार प्यारे।
कैहंदा घर नाहिं कोई औलाद मेरे, राज-भाग एह किस दरकार प्यारे ॥३२॥

---

१. थे। २. मंत्री। ३. बुद्धिमान्। ४. अधिकार-युक्त। ५. उन का। ६. प्रबन्ध। ७. उत्तरदायी। ८. धृष्टि। ९. वृजय। १०. सुराष्ट्र। ११. धर्मपाल। १२. पांचवाँ। १३. राष्ट्र-वृद्ध। १४. सुमित्र। १५. आठवाँ। १६. सावधान। १७ छः। १८. रहते थे। १९. समय। २०. उपस्थित। २१. राजसभा। २२. मार्कण्डेय। २३. सुयज्ञ। २४. मन्त्रणा। २५. परामर्शक। २६ काश्यप। २७. जाबालि। २८. गौतम। २९. भक्त। ३०. ये। ३१. छहों। ३२. संयमी। ३३. समय। ३४. राजा। ३५. अच्छी। ३६ सम्मति। ३७. देते थे। ३८. शास्त्र। ३९. आचरण करने वाले। ४०. स्पष्टीकरण। ४१. निपुण। ४२. धर्म-कर्म। ४३. दक्ष। ४४. देश, लोक। ४५. शान्ति। ४६ बसता था। ४७. हो गए (थे)। ४८. भगोड़े। ४९. स्वयं। ५०. शत्रु। ५१. सिर निवाए हुए। ५२. जाते थे। ५३. कर देने वाले। ५४. परन्तु। ५५. रहता था। ५६. विषाद-युक्त। ५७. आता (प्रतीत होता) था। ५८. रुचिकर। ५९. कार्य। ६०. दिन। ६१. बुला कर। ६२. प्रकट। ६३. कहने लगा। ६४. राज-पाट। ६५. काम, उपयोग।

[1]बशर [2]पिसर [3]बाजों [4]शजर [5]समर बाजों, [6]सदफ़ [7]गोहर बाजों है [8]बेकार प्यारे ।
गए [9]दुपैहूर जुवानी दे [10]ढले मेरे, बुढ़ापा [11]आण [12]होयाँ [13]नमूदार प्यारे ॥३३॥

होए वाल भी सिर दे [14]सफ़ेद आके, [15]ज़ाहर मौत दे होए [16]आसार प्यारे ।
[17]सुञ्ञे [18]दिसदे रंग-[19]मैहल मैं नूँ, किधरे [20]चंन्न दा नहिं [21]चमकार प्यारे ॥३४॥

नहिं कोई [22]फ़रज़ंद [23]दिलबन्द मेरा, [24]होवे दिल नूँ [25]किथों [26]करार प्यारे ।
जिगर है पर [27]लख़त-इ-जिगर नहिं [28]गाँ, इसे [29]ग़म विच [30]रहूवाँ [31]बे-ज़ार प्यारे ॥३५॥

[32]बसर [33]हैन ते [34]नूर-इ-बसर नहिँ कोई, आवे नज़र चौ-फेर अंधकार प्यारे ।
राजा [35]आखदा सुणो औलाद बाजों, [36]धिरग [37]जीवणा विच संसार प्यारे ॥३६॥

करो कोइ तदबीर [38]मशीर मेरे, जावे निकल [39]क्लेजेओं [40]ख़ार प्यारे ।
दिलशाद फ़रज़ंद जो इक होवे, [41]सुटाँ जान [42]आपणी [43]उस-तों वार प्यारे ॥३७॥

[44]ताज [45]तख़्त ते राज है [46]कम्म [47]केहड़े, [48]जंग-जदल कर [49]कीते [50]बहम [51]जेहड़े,
दिन मौत दे भी गए आ [52]नेड़े, हाएँ घर नहिं [53]औलाद कोई ।
[54]अठ्ठे [55]पैहर मैं [56]नूँ [57]एहो [58]ग़म खावे, [59]राती [60]सुत्तिआँ [61]ज़रा न नींद आवे,
कराँ क्या [62]तदबीर न [63]पेश जावे, मेरी होई न पूरी [64]मुराद कोई ।

---

१. मनुष्य। २. पुत्र। ३. बिना। ४. वृक्ष। ५. फल। ६. सीप। ७. मोती। ८. व्यर्थ। ९. दोपहर। १०. उतर। ११. आकर। १२. हो गया (है)। १३. प्रकट। १४. श्वेत। १५. प्रकट। १६. चिह्न। १७. शून्य। १८. दिखाई देते हैं। १९. राज-भवन। २०. चन्द्र। २१. प्रकाश। २२. पुत्र। २३. चित्त को भाने वाला। २४. हो सके। २५. कहाँ से। २६. धीरज। २७. जिगर का टुकड़ा=पुत्र। २८. हैगा=विद्यमान। २९. शोक। ३०. रहता हूं। ३१. आनन्द-रहित। ३२. नेत्र। ३३. हैं। ३४. नेत्र की ज्योति। ३५. (राजा ने) कहा। ३६. धिक्। ३७. जीना। ३८. मंत्री। ३९. दिल में से। ४०. कटक। ४१. फैंकूं। ४२. अपनी। ४३. उस के ऊपर से। ४४. मुकुट। ४५. सिंहासन। ४६. काम, प्रयोजन। ४७. किस। ४८. लड़ाई-झगड़ा। ४९. किए। ५०. हस्तगत। ५१. जो। ५२. निकट। ५३. संतान। ५४. आठों। ५५. पहर। ५६. को। ५७. यही। ५८. शोक। ५९. रात को। ६०. सोए हुए। ६१. तनिक। ६२. उपाय। ६३. आगे सफलता की ओर। ६४. अभिलाषा।

मैं[1] ताँ पीर-फ़क़ीर भी लोड़[2] थकेआँ[3], जाके विच मंदराँ[4] हत्थ[5] जोड़ थकेआँ,
[6]हीले कर मैं लक्ख[7] करोड़ थकेआँ, सुणी किसे भी नहिँ मेरी[8] फ़र्याद[9] कोई।
मैं नूँ दसो[10] मैं कराँ उपाअ[11] केहड़ा, मेरा [12]डुबेआ [13]पवे फिर तर बेड़ा,
[14]तुसाँ विच वज़ीर [15]दाना जेहड़ा, [16]दसे ओही[17] [18]तजवीज़ *दिलशाद* कोई ॥३८॥

मन्त्रियों का निवेदन—

रक्खो [19]तक़वा इक भगवान दा जी, मालक है जो कुल [20]जहान दा जी,
[21]गलाँ दिल [22]दिआँ नूँ ओही [23]जाणदा जी, [24]छुपेआ नहिँ जिस [25]थीं इक [26]कक्ख राजा!
विच जल ओही विच थल ओही, विच [27]फुल्ल ओही विच फल ओही,
सदा रहेगा समझ अटल ओही, तूँ भी आसरा उसे दा रक्ख राजा!
[28]पादशाहाँ नूँ करे गदा ओही, देवे शेराँ नूँ पिंजरे [29]पा ओही,
[30]बन्ने [31]डुबदेआँ नूँ [32]देवे ला ओही, मैह्माँ[33] उसदी समझ [34]अलक्ख राजा!
ओही [35]सुक्केआँ नूँ [36]सावा कर देवे, कर आबाद [37]ओ [38]उज्जड़े घर देवे,
ला *दिलशाद* [39]बे-पराँ नूँ [40]परं देवे, करदा ओही है कक्ख थीं लक्ख राजा ॥३९॥
[41]कीती सोच [42]वज़ीराँ ने [43]रल के[44] ते[45], [46]कैह्दे [47]सुण [48]अर्ज़ [49]कन [50]धर राजा!
परम ब्रह्म परमात्मा है ईश्वर, तन मन [51]थीं [52]उसिआँ [53]सिमर राजा ॥४०॥
उजड़े घराँ नूँ ओही आबाद करदा, सुक्के सराँ नूँ देवँदा[54] भर राजा!
[55]झेरों झँबर कर[56] ओही विच पल दे, बे-पराँ नूँ लाँवदा[57] पर राजा ॥४१॥

---

१. तो। २. ढूँढ़। ३. थक चुका हूं। ४. मंदिरों के। ५. हाथ। ६. यत्न। ७. लाख। ८. मेरी। ९. पुकार। १०. बताओ। ११. उपाय। १२. डूबा हुआ। १३. पड़े। १४. तुम्हारे। १५. बुद्धिमान्। १६. बतावे। १७. वही। १८. उपाय। १९. आधार। २० संसार। २१. बातों। २२. की। २३. जानता। २४. छिपा। २५. से। २६. तिनका। २७. फूल। २८. सम्राटों। २९. डाल। ३०. तीर। ३१. डूबतों। ३२. लगा। ३३. महिमा। ३४. अलक्ष्य। ३५. सूखों। ३६. हरा। ३७. वह। ३८. उजड़े हुए। ३९. पंख-हीन। ४०. पंख। ४१. की। ४२. मंत्रियों। ४३. मिल। ४४. कर। ४५. तब। ४६. उन्हों ने कहा। ४७. सुन। ४८. निवेदन। ४९. कान। ५०. लगा कर। ५१. से, द्वारा। ५२. उसी को। ५३. स्मरण कर। ५४. देता है। ५५. नीचे से। ५६. ऊपर। ५७. लगाता है।

ओही नार थीं कर गुलज़ार[2] देवे, सुवाली[3] हो तूँ उस दे दर[4] राजा !
रक्ख आस उस दी न निरास हो तूँ, कर दे दिल थीं दूर फ़िक्कर[5] राजा !!४२॥
देसी[6] रब्ब[7] औलाद ज़रूर[8] तैं नूँ, यग[9] अश्मेध[10] जल्दी हुण[11] तूँ कर राजा !
घोड़ा यग दा छोड़ दे ख़ुश होके, दिलों दूर कर सभ[12] फ़िक्कर राजा !!४३॥
करसी[13] दिल दी रब मुराद पूरी, ते आबाद होसी तेरा[14] घर राजा !
करसें[15] यग *दिलशाद* जे[16] नाल[17] विध[18] दे[19], मुँहों[20] मंगिआ[21] पावसें[22] वर राजा !!४४

राजा का वसिष्ठ से परामर्श लेना—

राजा गल वज़ीराँ दी सुण के ते, गुरु वशिश्ठ नूँ आण[23] सुणावदाँई[24] ।
करो यग सलाह[25] है बौह्त[26] चंगी[27], अगों[28] गुरु वशिश्ठ फ़रमावदाँई[29] ॥४५॥
करे यग अश्मेध जो नाल विध दे, मुँहों मँगी मुराद ओ पावदाँई[30] ।
इस जेआ[31] नाहिं कम्म *दिलशाद* कोई, मेरे[32] दिल नूँ भी एह भावदाँई[33] ॥४६॥
इस यग आरंभणे[34] वासते[35] जी, खट-करम[36] ब्रह्मण[37] विद्यावान[38] चाहिए ।
धरम-करम[39] करे नित-नेम[40] जेहड़ा[41], इक्क वक्त[42] उस दा अनुपान[43] चाहिए ॥४७॥
काम करोध[44] हंकार[45] थीं दूर होवे, हर दम[46] मगन[47] विच भजन भगवान चाहिए ।
होवे लोभ *दिलशाद* न कोई जिसनूँ, बोल झूठ न सच्ची ज़ुबान चाहिए ॥४८॥
लेआ[48] वेख[49] चौ-फेर[50] मैं ग़ौर[51] करके, कहे वशिश्ट मेरी सुण गल राजा !
शरिंगी[52] रिखि[53] दे बाज[54] नाहिं होर[55] कोई, खट-करम ब्रह्मण निछल[56] राजा !!४९॥

---

१ आग=सूखी सड़ी भूमि । २. उद्यान । ३. याचक, प्रार्थी । ४. द्वार पर । ५. चिन्ता । ६. देगा । ७. प्रभु । ८. अवश्य । ९. यज्ञ । १०. अश्वमेध । ११. अब, अभी । १२. सब, सभी । १३. करेगा । १४. तेरा । १५. करोगे । १६. यदि । १७. साथ । १८. विधि । १९. के । २०. मुँह से । २१. माँगा हुआ । २२. पाओगे । २३. आकर । २४. सुनाता है । २५. सम्मति । २६. बहुत । २७. अच्छी । २८. आगे से, उत्तर में । २९. आज्ञा करता है, कहता है । ३०. पाता है । ३१. जैसा । ३२. मेरे । ३३. भाता है । ३४. आरम्भ करने (के) । ३५. वास्ते, लिए । ३६. षट्-कर्मी । ३७. ब्राह्मण । ३८. विद्वान् । ३९. धर्म-कर्म । ४०. नित्य-नियम । ४१. जो । ४२. समय । ४३. खान-पान । ४४. क्रोध । ४५. अहंकार । ४६. समय । ४७. मगन, लीन । ४८. लिया है । ४९. देख । ५०. चारों ओर । ५१. ध्यान । ५२. शृंगी । ५३. ऋषि । ५४. बिना । ५५. और । ५६. छल-रहित ।

नाहिँ काम करोध हँकार उस नूँ, है उस विच तप दा बल राजा !
मुँहों बोलॅआ नहिँ उस झूठ कदी[1], सिमरे नाम भगवान हर पल राजा !!५०।।
जे ओ यग करवावसी[2] आण तैँ नूँ, लँगसी[3] रुख उँमीद[4] नूँ फल राजा !
दिलशाद नहिँ सँदेआँ[5] उस्स औणा[6], जाओ आप तुँस्सी उस दे वँल[8] राजा !!५१।।

राजा का शृंगी ऋषि के पास जा कर अभिप्राय कहना—

इतणा[10] सुण[11] के वशिश्ट महाराज कोलों[12] राजा उठके आप रवान[13] होया[14]।
गया पौहँच शरिंगी[15] दे कोल जदों रिशी[16] हँस[17] के अग्गों[18] पुरसान[19] होया ।।५२।।
दँसो[20] हाल तुसाड्डा है कैसा, मेरी तरफ़ अज्ज[21] कैसे ध्यान होया।
सुणी रिशी दी गँल[22] *दिलशाद* जदों, हँत्थ[23] जोड़ राजा गोयाँन[24] होया ।।५३।।
राँजे[25] आंखेआ सुणो, महाराज, मैथों[26], कारण जिस मैँ आप दे कोल आया।
नीयँत[27] यग अश्मेध दी है मेरी, करो जँमाँ[28] सामान[29] मैँ बोल आया ।।५४।।
तुँस्साँ[30] बाँझ[31] करवा न सके कोई, विच दिल हर इक टटोल आया,
चलो नाल मेरे *दिलशाद* तुस्सीँ, कोल तुस्साँ दे अडके[32] झोलीँ[33] आया ।।५५।।

ऋषि की स्वीकृति—

रिशी कँहे[34], है उँझर[35] फँझूल[36] मेरा, नहिँ विच बँहानेआँ[37] फल कोई।
किसे नाल न जाँवँदा[38] मैँ कदी, आँवँदा[39] भाँवेँ[40] अकाश[41] तों चल कोई ।।५६।।
तुँस्सी[42] राजेआँ दे सिर-ताँज[43] राजे, सकदा नाल नहिँ तुस्साँ दे रँल[44] कोई।
है हुँकम[45] मँनजूर[46] *दिलशाद* मैँ नूँ, ताँकत[47] क्या मेरी करां गल कोई ।।५७।।

---

१. कभी। २. करवाएगा। ३. लगेगा। ४. आशा, अभिलाषा। ५. बुलाने पर। ६. आना। ७. तुम, तुम्हीं। ८ ओर। ९. ऋष्य-शृंग। १०. इतना। ११. सुन। १२. से (=के पास से)। १३. गति-युक्त, प्रस्थित। १४. हुआ। १५ =९.। १६. ऋषि। १७. हँस। १८. आगे से। १९. पूछने वाला। २०. कहो। २१. आज। २२. बात। २३. हाथ। २४. वचन-युक्त, वक्ता। २५. राजा ने। २६. मुझ से। २७. भावना। २८. एकत्रित। २९. सामग्री। ३०. आप के। ३१. बिना। ३२. फैला कर। ३३. झोली। ३४. (ने) कहा। ३५. विरोध। ३६. व्यर्थ। ३७. बहानों के। ३८. जाता (हूँ)। ३९. आता (हो)। ४०. चाहे। ४१. आकाश। ४२. आप। ४३. मुकुट। ४४. मिल। ४५. आदेश। ४६. स्वीकृत। ४७. शक्ति।

अश्वमेध यज्ञ की तैयारी—

लैके रिशी नूँ आपणे नाल राजा, हो के ख़ुश अजुध्या आँवँदाई ।
सरजू नदी किनारे शिमाल[1] जानिब[2], मंडप यग दा चा[3] रचाँवँदाई ॥५८॥

लगा होणँ[4] तैयार सामान यग दा, मुल्काँ विच ऐलान[5] करवाँवँदाई ।
कारीगर नक्काश[6] मेमाराँ[7] जितने, हर इक नूँ उत्थे[8] मंगवाँवँदाई ॥५९॥

महाराजेआँ राजेआँ दी ख़ातिर[9], आलीशान[10] मकान सजवाँवँदा ई ।
फौजाँ लश्कराँ ते लोकाँ आम[11] कारण[12], तंबू विच मैदान लगवाँवँदा ई ॥६०॥

इजाज़त[13] लैके रिशी दी फिर राजा, घोड़ा यग दा चा छुड़वाँवँदा ई ।
जमाँ होए राजे फिर आण[14] उत्थे, हरि-गुण दशरथ पेआ[15] गाँवँदा[16] ई ॥६१॥

रैहँदी[17] लोड़ वी थोड़ न किसे[18] ताँई, मिलदा ओही[19] जो कुछ दिल चाँहवँदा[20] ई ।
मुड़[21] के आण[22] पौहँता[23] घोड़ा यग दा वी[24], हर इक ख़ुशिआँ पेआ मनाँवँदा ई ॥६२॥

दिती[25] आग्या[26] रिशी हुण[27] ख़ुश हो के, विधि नाल राजा फिर नहाँवँदा ई ।
मन तन नूँ करके साफ़-सुथरा, हरि-चरण अंदर चित्त[28] लाँवँदा ई ॥६३॥

इक-मन होके करण[29] यग लग्गा[30], दुई-द्वैता[31] दिलोँ हटाँवँदा ई ।
होया यग संपूरण[32] *दिलशाद* जदोँ, अग्गे[33] रिशी दे सीस निवाँवँदा ई ॥६४॥

शृंगी ऋषि का वर-वचन—

दित्ती[34] वर शरिंगी ने ख़ुश होके, रैहसी[35] तैरा इक़बाल[36] बुलंद[37] राजा ।
कीता शुद्ध सरीर[38] इस यग तैरा, होए[39] दूर सभ[40] पाप ते[41] गंदे[42] राजा ॥६५॥

ख़ाहिश[43] दिल तैरे दी होई पूरी, फ़िकर दूर कर रहो अनंद[44] राजा ।
[45]होसी सच्ची ज़ुबान[46] *दिलशाद* मैरी, होसन[47] घर तैरे चार चंदे[48] राजा ॥६६॥

---

१. उत्तर । २. दिशा । ३. और । ४. होने । ५. घोषणा । ६. चित्रकार । ७. राज । ८. वहाँ । ९. लिए । १०. विशाल । ११. साधारण । १२. लिए । १३. अनुमति । १४. आकर । १५. बैठा । १६ गाता था । १७. रही थी । १८. को । १९. वही । २०. चाहता था । २१. लौट । २२. आ (कर) । २३. पहुँचा । २४. भी । २५. दी । २६. अनुज्ञा । २७. अब । २८. चित्त । २९. करने । ३०. लगा । ३१. भेद-भाव । ३२. संपूर्ण । ३३. आगे । ३४. दिया । ३५. रहेगा । ३६. ऐश्वर्य । ३७. ऊँचा । ३८. शरीर । ३९. हुए । ४०. सब । ४१. और । ४२. मल । ४३. कामना । ४४. आनन्द-युक्त । ४५. होगा । ४६. वाणी । ४७. होंगे । ४८. बच्चे ।

कीता यग अश्मेध एह् जो तुस्साँ, कारण इस दे इक औलाद होवे।
यग करो पुतरेठी[1] इक होर तुस्सी, उस दे[2] कीतेआँ घर आबाद होवे ॥६७॥
देसी[3] चार फ़रज़ंद[4] रब[5] बख़्श[6] तैं[7] नूँ पुख़्तह्[8] समझ तैरी बुनिआद होवे।
पूरा करसें[9] तूँ जद इस यग नूँ वी, राजा फिर तेरा *दिलशाद*[10] होवे ॥६८॥

पुत्रेष्टि यज्ञ का आरम्भ—

सुण के वचन शरिंगी दे चुप होया, हो हैरान[11] राजा दिलों[12] डरण लग्गा।
[13]गेआ [14]पै [15]विस्वास [16]उदास होया, हो निरास सिर कदमाँ तें[17] धरण लग्गा ॥६९॥
कैहँदा बाझ तैरे नहिँ होर कोई, कर हुण मेहर मैं[18] तैरी शरण लग्गा।
कीती देर *दिलशाद* नाँ फिर कोई, यग पुतरेठी राजा करण लग्गा ॥७०॥

आकाश-वाणी—

शरिंगी नाल नदी उत्ते बैठ के तें[18], यग पुतरेठी रेह्याँ[19] कर राजा।
पेआँ[20] आवाझ[21] अकाश थीं[22] विच कैन[23] दे, [24]दिलों दूर कर सभ फ़िकर राजा ॥७१॥
जो केह्या[25] शरिंगी ओ सच्च होसी, दिता उस तैं नूँ जेह्ड़ा[26] वर राजा।
बोल रिशिआँ[27] दे होंदे झूठ नाँहिँ, पुतर[28] चार होसन तैरे घर राजा ॥७२॥
पूरण यग तैरे गए हो[29] दोवें, हो ख़ुश न रक्खव कोई डर राजा।
पूरी होई मुराद[30] *दिलशाद* तैरी, झोली लें[31] उमेद दी भर राजा ॥७३॥

राजा के घर चार पुत्रों का जन्म होना—

राजा यग करके उठ खड़ा होया, करदा रिशी ताईं निमस्कार[32] साईं।
तुस्साँ दी नझर-मेहर[33] दे नाल मैरा, फ़िर्त[34]-फ़ोर होया बेड़ा पार साईं ॥७४॥
[35]कदी एह् ऐह्सान[36] भुलावसाँ[37] नाँह्, रैह्साँ[38] हर दम शुकर-गुझार[39] साईं।
शरिंगी कह हाई ख़ुशी बौह्त मैं नूँ, होए रास[40] तैरे सभ कार[41] साईं ॥७५॥

---

१. पुत्रेष्टि। २. किए जाने पर। ३. देगा। ४. पुत्र। ५. प्रभु। ६. प्रदान (कर)। ७ तुझ। ८. पक्की। ९. करोगे। १०. प्रसन्न। ११. चकित। १२. दिल में। १३ गया। १४. पड़। १५ संशय। १६ खिन्न-चित्त। १७. ऊपर। १८. तब। १९. रहा था। २०. पड़ा। २१. शब्द। २२. से। २३. कान। २४. दिल से। २५. कहा है। २६. जो भी। २७. ऋषियों। २८. पुत्र। २९. दोनों ही। ३०. अभिलाषा। ३१. आशा। ३२. नमस्कार। ३३. कृपा-दृष्टि। ३४. तुरन्त। ३५. कभी। ३६. उपकार। ३७. भुलाऊँगा। ३८. रहूँगा। ३९. धन्यवादी। ४०. सिद्ध। ४१. काम।

खेत जमेआ[1] भुनेआँ[2] दाणेआँ[3] दा, होया रब तैरा मददगार[4] साईं ।
ले परशाद खिला एह् राणिआँ नूँ, करणी देर हुण नहिँ दरकार साईं ।।७६।।
देवीं[5] अद्धा[6] परशाद कुशल्या नूँ, बाक़ी[7] होर तैं नूँ अख़तेआर[8] साईं ।
राजा रिशी थीं फिर परशाद लैके, गेआ[10] मैह्लाँ नूँ तुरत सुधार[9] साईं ।।७७।।
दिता वंड[11] के अद्धा कुशल्याँ नूँ, हत्थीं[12] आपणे[13] नाल पेआर साईं ।
बाक़ी निसफ़[14] दे करके तिन हिस्से[15], लग्गा बंडण बैह्[16] के वारो-वार[17] साईं ।
दिता हत्थ सुमितराँ इक्क हिस्सा, लैके नाम विच दिल करतार साईं ।।७८।।
दूजा[18] हिस्सा कैकय्यी नूँ दे के ते, लग्गा करण राजा फिर विचार साईं ।
हिस्सा तीसरा देवाँ[19] मैं किस ताईं, रेह्या सोच विच दिल हैंझार[20] साईं ।।७९।।
दिता हत्थ सुमितराँ चा[21] ओभी, हो के ख़ुश राजे आखिर-कार साईं ।
लेआ खा परशाद जद राणिआँ ने, सुण अग्गों हुण झिकार-झकार[22] साईं ।।८०।।
चंदें[23] रोझें[24] गुझरे इस गैल[25] ताईं, झाहिर[26] हैमल[27] दे होए आसार[28] साईं ।
राजा सुण न म्योंवँदा[29] विच जामे[30], हासिल[31] होई ख़ुशी बिस्यार[32] साईं ।।८१।।
दान हद्द[33] हिसाब[34] थीं बाह्र कीता, गौआँ मणसिआँ[35] बेशुमार[36] साईं ।
गिण-गिण गुझारने दिन लग्गा, रेह्या कर राजा इन्तझार[37] साईं ।।८२।।
होई हमल दी आण मैयाद[38] पूरी, महीने चेत विच खुली बहार साईं ।
खिड़े[39] मोतिआ चंबा गुलाब क्योड़ा, खिड़े गुल गुलशन[40] गुलझार[41] साईं ।।८३।।
सुक्के[42] रुख[43] सारे सावे[44] होण लग्गे, झुलन[45] वाउ[46] लगी ख़ुशगुवार[47] साईं ।
तिथ[48] नौमी[49] ते चांनणा[50] पक्ख[51] हैसी[52], समाँ[53] वक़्त[54] परभात[55] बुधवार साईं ।।८४।।

---

१. उगा। २. भूने हुओं। ३. दानों। ४. युक्त। ५. देना (तुमने) ६. आधा। ७. शेष। ८ स्वतन्त्रता। ९. राजभक्तों। १०. चला। ११. विभाग कर। १२. हाथ से। १३. अपने १४. आधे। १५. भाग। १६. बैठ। १७. बारी-बारी। १८. दूसरा। १९. दूँ। २०. बहुत अधिक। २१. उठा (कर)। २२. वृत्तान्त। २३. कुछ। २४. दिन। २५. बात। २६. प्रकट। २७. गर्भ। २८. चिह्न। २९. समाता था। ३०. वस्त्र। ३१. प्राप्त ३२. बहुत। ३३. सीमा। ३४. गिनती। ३५. संकल्प कीं। ३६. अगणित। ३७. प्रतीक्षा। ३८. अवधि। ३९. खिल पड़े। ४०. उद्यान। ४१. उद्यान। ४२. सूखे। ४३. वृक्ष। ४४. हरे। ४५. चलने। ४६. वायु। ४७. रम्य। ४८. तिथि। ४९. नवमी। ५० शुक्ल। ५१. पक्ष। ५२. था। ५३. समय। ५४. वेला। ५५. प्रभात।

महाराणी कुशल्या दे पेट विचों, परगट होया चानणा[1] चमकदार साईं ।
सुंदर रूप अनूप सरूप सोह्णा, आया नज़र बालक शीरख़्वार[2] साईं ॥८५॥

इस थीं[3] बाद कैकयी दे पेट विचों, होया सुंदर बेटा पैदावार[4] साईं ।
लड़के सुमितराँ दे दो होए पैदा, ख़ुश-शकल[5] सोह्णे होनहार साईं ॥८६॥

ख़ुशी दसरथ नूँ होई कमाल[6] सुण के, दिल वेख[7] होया ठंडा-ठार[8] साईं ।
कैहँदा इक नूँ तरसदा मैं हैसाँ[9], दित्ते[10] रब मैं नूँ पुत्तर चार साईं ॥८७॥

ओही गुल[11] अंदर ओही बू[12] अंदर, राज़क[13] ओही सब दा पालनहार साईं ।
ओही फ़लक[14] अंदर ओही ख़लक[15] अंदर, ओही अकाश[16] पताल[17] विचकार साईं ॥८८॥

ओही बैहर[18] अंदर ओही नैहर अंदर, ओही लैहर अंदर लैहरमार साईं ।
ओही कोह[19] अंदर ओही काह[20] अंदर, जल थल ओही आश्कार[21] साईं ॥८९॥

विच रंग ओही विच संग[22] ओही, करनहार ओही करतार साईं ।
विच फल ओही विच पत्त[23] ओही, ओही समा रेह्या डार[24]-डार साईं ॥९०॥

ज़हूर[25] उस्से[26] दा है एह[27] जग सारा, [28]किथों [29]ताईं मैं कराँ [30]इज़हार साईं ।
उस्से दित्ती है झोली भर मेरी, कर [31]अर्ज़ मेरी [32]स्वीकार साईं ॥९१॥

होया [33]नूर ज़हूर विच अखिआँ दे, दूर होया अंधेर-ग़ुबार साईं ।
दिल खोल के करन [34]ख़ैरात लग्गा, [35]गंज कई दित्ते सिरों [36]वार साईं ॥९२॥

नंगा [37]भुक्खा न रेह्या विच राज कोई, [38]गदागर हो गए [39]शाहुकार साईं ।
अतर क्योड़े गुलाब ते मोतिए दा, होया शैहर दे विच [40]छिणकार साईं ॥९३॥

---

१. प्रकाश। २. दुध-मुँहा। ३. से। ४. उत्पन्न। ५. सुन्दर-मुख। ६. बहुत। ७. देख कर। ८. अत्यंत शांत। ९. था। १०. दिए हैं। ११. फूल। १२. गंध। १३. भरण-पोषण करने वाला। १४. आकाश। १५. प्राणी मात्र (जिया-जन्त)। १६. आकाश। १७. पाताल। १८. सागर। १९. पर्वत। २०. घास। २१. प्रकट। २२. पत्थर। २३. पत्ता। २४. हर डाल में। २५. चमत्कार। २६. उसी। २७. यह। २८. कहां। २९. तक। ३०. प्रकट। ३१. प्रार्थना। ३२. स्वीकार। ३३. प्रकाश। ३४. दान। ३५. निधि। ३६. निछावर। ३७. भूखा। ३८. भिखारी। ३९. धनवान्। ४० छिड़काव।

हर इक घर अंदर राग-रंग रैहूँदा, गली कूचेआँ विच बाज़ार साईं ।
रही आ आवाज़ चौं[1]-फेरेंओं ऍह, जींवदे[2] रैहून[3] ऍह् राजकुमार साईं ॥९४॥

रखेयो नाम कुशल्या दे जाये[4] दा, रामचंदर नामी नामदार[5] साईं ।
भरथ नाम कैकयी दे पुत्तर संदा[6], दित्ता रख कर ख़ूब विचार साईं ॥९५॥

इक दा नाम लछमन छैंतरघन[7] दूजा, ऍह् सुमितराँ दे दो दुलार साईं ।
सोहूणा रंग *दिलशाद* हर अंग सोहणा, वाह-वाह सोह्णे नक़्श-निगार साईं ॥९६॥

राजपुत्रों का पालन और शिक्षण----

रामचंदर भरथ छतरघन लछमन, चारे लाडले लाल पए पलदे नीं[8] ।
लग्गे रिढ़ंन[9] ज़मीन[10] ते साल पैहूले, सारे दूसरे उठ के चलदे नीं ॥९७॥

साल तीसरे मिठिआँ करन गैल्लाँ[11], झड़दे फुल्ल मुँहों नाल गल्ल दे नीं ।
चौथे साल चारे लग्गे पढ़न विद्या, सुबह नाल उस्ताद उठ रैलदे[12] नीं ॥९८॥

साल पंजवें हो हुशिआर गए, नितें-नेम[13] थीं कदी न टलदे नीं ।
[14]माँवाँ वेख के होँदिआँ[15] ख़ुश पैइयाँ[16], चुम-चुम लाँदिआँ[17] नाल [18]ओ गैल[19] दे नीं ॥९९॥

मिले रैहूण चारे शैंकर-शीर[20] वाँगों[21], पए दूणे[22] चैंऊण[23] फलदे नीं ।
पढ़दे शौंकें[24] दे नाल *दिलशाद* सैंभे[25], बिनाँ हुकम उस्ताद न हैलदे[26] नीं ॥१००॥

बाराँ साल दी उमर विच भाई चारे, हर इक गल्ल अंदर खबरदार[27] हो गए ।
पढ़ ईलम[28] सिक्खे हुनर-फ़ंन[29] सारे, वेद-शास्तर दे वाँक़िफ़कार[30] हो गए ॥१०१॥

सिपाँहगिरी[31] दा सिखेंआँ[32] कैस्म[33] सारा, विच राजनीति हुशिआर हो गए ।
कमी रही *दिलशाद* न क़िस्से गल्ल दी, हर इक कस्म दे विच तैयार हो गए ॥१०२॥

---

१. चारों ओर से । २. जीते । ३. रहें । ४. जातक, पुत्र । ५. प्रसिद्ध । ६. का । ७. शत्रुघ्न । ८. थे । ९. लोटने । १०. ऊपर । ११. बातें । १२. मिलते । १३. नित्य-नियम । १४. माताएँ । १५. होतीं । १६ थीं । १७. लगातीं । १८. वे । १९. कण्ठ । २०. शक्कर-दूध । २१. भांति । २२. दुगुने । २३. चौगुने । २४. उत्साह । २५ सभी । २६. हिलते । २७. विद्वान् । २८. विद्या । २९. कला-कौशल । ३०. परिचित । ३१. युद्ध-विद्या । ३२. सीखा । ३३. कर्म ।

रैहँदे हसदे खेडदे भाई चारे, किस्से चीझ दी नाँह् परवाह हैसी[1] ।
वेख-वेख राजा पेॲा खुश होवे, करदा झॅट[2] न कदी विसाह[3] हैसी ॥१०३॥

आहे[4] प्यारे चारे तारे अखिआँ दे, रामचंदर मनझूर-निगाह[5] हैसी ।
होंदे मोहॅत[6] सारे उस नूँ वेख के ते, खलकत[7] मॅल्ल[8] खलावँदी[9] राह हैसी ॥१०४॥

सूरत[10] तॅक्कदेआँ[11] थॅकदिआँ[12] नहिँ अॅखीं[13], विच दिल हर इक दे चाह हैसी ।
तिने[14] भाई वझीर दिलशाद आहे, रामचंदर हुसन[15] दा शाह[16] हैसी ॥१०५॥

विश्वामित्र ऋषि का आना—

कुझ बरसाँ दे बाद इक रोझ राजा, हैसी बैठा विच दरबार साईँ ।
आहे वझीर मशीर[17] दीवान हाझिर[18], दित्ती छेड़ राजे गुफतार[19] साईँ ॥१०६॥

करां[20] वेॲाह[21] पुतराँ दा आप हॅत्थीं[22], पॅए[23] हो चारे हुशिआर साईँ ।
इस दम[24] दा नहिँ विसाह[25] कोई, नाहीँ झिंदगी[26] दा एतबार[27] साईँ ॥१०७॥

मैरे जिऊंदेआँ-जिऊंदेआँ[28] हो जावे, होया पिच्छों[29] ताँ[30] किस दरकार[31] साईँ ।
कीती गल्ल नाँ खतम[32] सी राजे, आ के अरझ कीती चोबदार[33] साईँ ॥१०८॥

खड़ा बाहर रिशी विस्वामित्र[34] आके, है ओ मिलन संदा खास्तगार[35] साईँ ।
राजा सुणदेआँ[36] सार[37] उठ खड़ा होया, कीती बाहर जाके निमस्कार साईँ ॥१०९॥

इझत मान करके आँदा[38] नाल राँजे[39], बिठाया आँण[40] दरबार विचकार साईँ ।
लग्गा कैहण दरशन कर खुश होयाँ, होए सुत्ते नसीब[41] बेदार[42] साईँ ॥११०॥

---

१. थी । २. क्षण । ३. वियोग । ४. थे । ५. प्रिय-दृष्टि । ६. मोहित । ७. प्रजा । ८. रोक कर । ९. खड़ी हो जाती । १०. रूप । ११. देखती हुई । १२. थकती । १३. आंखें । १४. तीनों । १५. रूप । १६. राजा । १७. मंत्री । १८. उपस्थित । १९. बात । २०. करूँ । २१. विवाह । २२. हाथों । २३. गए । २४. सांस । २५. विश्वास । २६. जीवन । २७. विश्वास । २८. जीते-जीते । २९. पीछे । ३०. तो । ३१. काम का । ३२. पूरी । ३३. सन्तरी, अरदली । ३४. विश्वामित्र । ३५. प्रार्थी । ३६. सुनते । ३७. साथ, ही । ३८. लाया गया । ३९. राजा द्वारा । ४०. लाकर । ४१. भाग्य । ४२. जाग्रत ।

कारण किस [1]तशरीफ [2]शरीफ लाए, दित्ता किस तरह अज्ज [3]दीदार साईं ।
करो हुक्म माह्राज जो दिल चाहे, मैरे [4]लाएक जेहड़ा [5]कम्म-कार साईं ।।१११।।

जो [6]मंगसो मुँह थीं ओह [7]देसाँ, [8]करसाँ कदी नाँ झरा इनकार साईं ।
रिशी [9]आखेआ सुणो माह्राज [10]मैथों, मैं गरीब फक़ीर [11]नादार साईं ।।११२।।

नकद जिनस दी [12]लोड़ नहिं कोई मैंनूँ, कारण इक्क मैं आया दुआर साईं ।
विच बन दे यग मैं हाँ करदा, [13]राखश [14]आन [15]सतान [16]बदकार साईं ।।११३।।

पूरण होण नहिं [17]देवंदे यग मैरा, [18]सुटन [19]गोशत हड्डिआँ [20]मुड़दार साईं ।
[21]कीतां-करतेआ [22]भ्रशट कर [23]देन सारा, [24]होयाँ आण के [25]ताँई [26]लाचार साईं ।।११४।।

रामचंदर [27]आपणे [28]फरज़ंद [29]ताँई, करो नाल मैरे [30]हम-रफ़तार साईं ।
मैरे यग नूँ [31]करनगे ओही पूरण, [32]देसन दुरट पापी राखश मार साईं ।।११५।।
[33]देसाँ इलम ते हुनर सिखला मैं भी, [34]रखसन याद मैरी यादगार साईं ।
[35]चंद रोज़ दे वासते नाल मैरे, रामचंदर नूँ करो तैयार साईं ।।११६।।

विस्वामितर दी सुणी एँह गल्ल जदों, राजा दिल विच करे विचार साईं ।
[36]शश-पंज अंदर [37]गेआ पै राजा, सकदा नहिं जुदाई सहार साईं ।।११७।।
करे सोच एँह भी नाले विच दिल दे, विस्वामितर है बड़ा [38]बलकार साईं ।
[39]जे एँह चाहे देवे उलट विच पल दे, करे [40]नेस्त-नाबूद संसार साईं ।।११८।।

[41]कंबदे देवते सुण के नाम इस दा, तपसी ब्रह्मचारी [42]परहेज़गार साईं ।
राखश हैन इस दे अग्गे चीज़ [43]केहड़ी, गेआ किऊँ एँह उन्हाँ थीं हार साईं ।।११९।।

---

१. आगमन। २. शुभ। ३. दर्शन। ४. योग्य। ५. काम-काज। ६. माँगोगे। ७. दूँगा। ८. करूँगा। ९. कहा। १०. मुझ से। ११. अकिंचन। १२. अपेक्षा। १३. राक्षस। १४. आकर। १५. सताते हैं। १६. दुष्कर्मी। १७. देते। १८. फेंकते हैं। १९. माँस। २०. मृतक। २१. किया-कराया। २२. भ्रष्ट। २३. देते हैं। २४. हुआ हूँ। २५. तभी। २६. विवश। २७. अपने। २८. पुत्र। २९. को। ३०. साथ-चालू। ३१. करेंगे। ३२. देंगे। ३३. दूँगा। ३४. रखेंगे। ३५. कुछ। ३६. छः-पाँच, अनिश्चय। ३७. पड़। ३८. बलवान्। ३९. यदि। ४०. नष्ट-भ्रष्ट। ४१. काँपते (हैं)। ४२. संयमी। ४३. कौन सी।

नाम वड्डा[1] ते गाम[2] उजाड़ वाली, कहावत शायद होई नमूदार[3] साईं ।
समझ गेआ कयाफ़े[4] दे नाल रिशी, रेह्या जो राजा दिल विच धार[5] साईं ॥१२०॥

हो के खड़ा दरबार विच कैह्ण लग्गा, सुणो राजेआँ दे सिरदार साईं ।
करे करोध जेकर[6] यग करण वाला, होंदा फल दा नहिं अधकार[7] साईं ॥१२१॥

इस्से वासते[8] मैं लाचार होयाँ, बैठाँ छोड़ करोध हंकार[9] साईं ।
वरना लोड़ केह्ड़ी [10]हैसी आप अग्गे, ईञ्[11] करदा आन *दिलशाद* पुकार साईं ॥१२२॥

राजा का ऋषि के प्रति कथन—

राजे आखेआ[12] रिशी जी अरज़ मेरी, रब वासते[13] करो कबूल[14] तुस्सी[15] ।
माराँ राखशाँ नूँ मैं आप चल के, मतलब आपणा करो हसूल[16] तुस्सी ॥१२३॥

बालक वासते करो न ज़िद[17] इतणी, पए[18] गल्ल[19] नूँ देओ न तूल[20] तुस्सी ।
दिलशाद [21]लै-जा-के नाल[22] बालक, दस्सो[23] करोगे क्या वसूल[24] तुस्सी ॥१२४॥

विश्वामित्र का कथन—

विश्वामितर ने आखेआ[25] सुण राजा, दिलों आपणे सोच विचार छड[26] दे ।
[27]मुहों बोलेआँ[28] बोल कर दे पूरा, करके दूर फिकर[29] इसरार[30] छड दे ॥१२५॥

दर[31] [32]ते आया सवाली[33] न टोर[34] ख़ाली, मन[35] जा गुफ़तार-इनकार[36] छड दे ।
रामचंदर नूँ टोर दे नाल मेरे, एह *दिलशाद* बेसूद[37] तकरार[38] छड दे ॥१२६॥

कवि-वचन—

रेह्या सोच बैह[39]-के विच दिल राजा, नहिं जाँवदी पेश तदबीर[40] कोई ।
लड्डू मन दे मन विच भोर[41]-रेह्या, नहिं फबदी[42] गल्ल अखीर[43] कोई ॥१२७॥

---

१. बड़ा। २. ग्राम। ३. प्रस्तुत। ४ आकृति-दर्शन। ५. विचार। ६. यदि। ७. अधिकार। ८. कारण। ९. अहंकार। १०. थी। ११. इस प्रकार। १२. कहा। १३. लिए। १४. स्वीकार। १५. आप। १६. लाभ। १७. हठ। १८. देते रहो १९. बात। २०. विस्तार। २१. ले-जाकर। २२. साथ। २३. कहो। २४. प्राप्त। २५. कहा। २६. छोड़। २७. मुँह से। २८. बोला हुआ। २९. चिन्ता। ३०. हठ। ३१. द्वार। ३२. पर। ३३. याचक। ३४. भेज। ३५. मान। ३६. इनकार की बात। ३७. व्यर्थ। ३८. झगड़ा। ३९, बैठ कर। ४०. युक्ति। ४१. तोड़ रहा था। ४२. पूरी उतरती। ४३. अन्ततः।

चुप-चाप होके सुणन-पए[1] सारे, वेखो[2] बोलदा[3] नहिँ वज़ीर कोई ।
गल्ल है मशहूर *दिलशाद* एह[4] ताँ[5], औखे[6] वक्त[7] नहिँ पकरदा[8] पीर[9] कोई ॥१२८॥

राजा का निवेदन—

हत्थ जोड़ के बेनंती[10] करे राजा, मैँ नूँ हुकम[11] तेरा मनज़ूर[12] स्वामी ।
जो मैँ आखेआ है ओ याद मैँ नूँ, कीता मैँ इकरार[13] ज़रूर[14] स्वामी ॥१२९॥
बाल आपणे थीँ[15] पिछे हटसाँ[16] नाँ[17], देसाँ[18] वायदे[19] आपणे नूँ पूर स्वामी ।
लै जाणा जे[20] नहिँ मैँ नूँ नाल चाँहदे, देवाँ फ़ौज नूँ कर मामूर[21] स्वामी ॥१३०॥
औसन[22] राखशाँ नूँ जा[23] के मार ओही, होसन[24] दूर तमाम फ़तूर[25] स्वामी ।
करो यग बेशक[26] *दिलशाद* होके, देसाँ विघन सारे कर दूर स्वामी ॥१३१॥

ऋषि का उत्तर—

पर एह गल्ल केहड़ी[27] एडी[28] है भारी, जिस दे वासते गए घबरा राजा ।
अज[29] तक तुसाडड़े[30] दर उत्तोँ[31], ख़ाली गया नहिँ कोई गंदा[32] राजा ॥१३२॥
चार धाम अंदर तेरा नाम रोशन[33], हर कोई देवँदा पेआ दुआ[34] राजा ।
राजे रघु दा हाल भी ज़रा मैथोँ[35], लै सुण तूं चित्त लगा राजा ॥१३३॥
सख़ी[36] ओ[37] भारा होया विच जग दे, राज-भाग दा अन्त न का[38] राजा ।
पूरा करे सवाल सवालिआँ दा, डंका गेआ चौकुण्ठ[39] वजा राजा ॥१३४॥
जो आया सवाली न गेआ ख़ाली, पूरी सभ दी करे मनशा[40] राजा ।
कीता यग राजे रघु इक वारी[41], दित्ती[42] कुल सरवंस[43] लुटा राजा ॥१३५॥
कर दान दित्ता राज-भाग सारा, राजे यग दी जगह सिवा राजा ।
उसे जा[44] ते[45] करण गुज़रान[46] लग्गा, मैहल-माड़िआँ[47] दिलोँ भुला राजा ॥१३६॥

---

१. सुनते रहे । २. देखो । ३. बोला । ४. यह । ५. तो । ६. कठिन । ७. समय । ८. सहायता करता । ९. गुरु, बड़ा । १०. निवेदन । ११. आदेश । १२. स्वीकार । १३. प्रण । १४. अवश्य । १५. से । १६. हटूँगा । १७. नहीं । १८. पूरा कर दूंगा । १९. प्रण । २०. यदि । २१. तैयार । २२. आएंगे । २३. जा कर । २४. होंगे । २५. बाधाएं । २६. संशय-रहित । २७. कौन सी । २८. इतनी । २९. आज । ३०. आप के । ३१. पर से । ३२. याचक । ३३. यशस्वी । ३४. आशीष । ३५. मुझ से । ३६. दानी । ३७. वह । ३८. कोई । ३९. चारों कोटों (=दिशाओं) के अन्त तक (=सर्वत्र) । ४०. अभिलाषा । ४१. समय, बार । ४२. दी । ४३. सर्वस्व । ४४. स्थान । ४५. पर । ४६. निर्वाह । ४७. भवन-प्रासाद ।

नाँहिँ [1]ताज [2]अते नाँहिँ [3]तख़त रेह्या, रेह्या मस्त हो दिन लंघा राजा ।
मोह माया संसार दे छोड़ के ते[4], नाँ[5] भगवान दा रेह्या धेया राजा ॥१३७॥
इक रोई[6] रिशी इक [7]सवाल [8]कारण, [9]खड़ा दर उस दे उत्ते आ राजा ।
रघु रिशी नूँ वेख के ख़ुश होया, लेॲा आपणे कोलें[10] बिठला राजा ॥१३८॥
करो हुक्म माह्राज जो दिल चाहे, आए किस तरह हो मैरे दारें[11] राजा ।
छोड़ शरम ते[12] करो [13]करम, तुस्सीं देओ दिल दा हाल बतला राजा ॥१३९॥
रिशी रघु दे हाल नूँ वेख के ते[14], लग्गा करण दिल विच [15]पछो-ता राजा ।
नाँहिँ वेखेॲा सिर ते ताज [16]शाही, नाँहिँ तख़त डिट्ठा[17] झेरें[18]-पा राजा ॥१४०॥
न पोशाक[19] शाही [20]झबें तन [21]आही, बैठा सभ कुछ [22]आप गँवा राजा ।
पैसा इक न वेखेॲा कोल उस दे, [23]लैई [24]तर्कें रिशी हर इक जा राजा ॥१४१॥
कैह्दा कराँ सवाल मैं के[25] इस नूँ, रेह्या दिल दे विच शरमा राजा ।
हो निरास उठ के वापस जाण लग्गा, आसण आपणा लेॲा उठा राजा ॥१४२॥
रघु उठ के [26]लग्गदा फिरें[27] [28]कदमीँ, कैहूँदा ना-[29]उमीद नाँह् जा राजा ।
देओ[30] [31]दस्स मैं नूँ आए किस कारण, देओ[32] हुकम जो है [32]फ़रमा राजा ॥१४३॥
होया चुप रिशी कुछ बोलदा नहिँ, रेह्या [33]दिल-दलीलाँ दौड़ा राजा ।
रघु आखदा करो माह्राज किरपा, [34]भरम दिल थीँ देओ हटा राजा ॥१४४॥
अज कोल मैरे इत्थे रौह्[35] तुस्सी, देसाँ कर [36]रुख़सत कल [37]चाँ राजा ।
करके [38]आजज़ी बेनती रघु राजे, लई रिशी नूँ गल्ल [39]मँना राजा ॥१४५॥
[40]रैह्-पेॲा रिशी इक दिन कारण, गई पेश नाँ चूँ-[41]चँरा राजा ।
वि[42]खाली रात काली दित्ती आण [43]उत्तोँ, दिन गल्लाँ विच दित्ता बिता राजा ॥१४६॥

१. मुकुट । २. और । ३. सिंहासन । ४. तब । ५. नाम । ६. दिन । ७. मांग (के) । ८. लिए । ६. खड़ा था (=हुआ)। १०. समीप । ११. ओर । १२. और । १३. दया । १४. परन्तु । १५. पश्चात्ताप । १६. राजकीय । १७. देखा । १८. पांव के नीचे । १६. पहरावा । २०. तन पर सज रही । २१. थी । २२. स्वयं । २३. ली । २४. देख । २५. क्या । २६. पड़ गया । २७. पश्चात् । २८. पांव पर । २६. निराश । ३०. देवें । ३१. बता । ३२. आज्ञा कर दें । ३३. मन के संकल्प-विकल्प । ३४. भ्रम, संदेह । ३५. रहें । ३६. विदा । ३७. ही । ३८. नम्रता । ३६. स्वीकार करा । ४०. रहगया । ४१. आपत्ति । ४२. दर्शन । ४३. ऊपर से ।

मोह्राँ याह्राँ[1] करोड़ दी लोड़े[2] मैं नूँ, दित्ता रिशी अख़ीर सुणा राजा ।
रघु कहे सवाल एह क्या हैसी[3], रखेआ जिस नूँ तुस्सां छपाँ[4] राजा ॥१४७॥

जोश नाल रघु फिर लाल होके, लेआ तीर-कमान उठा राजा ।
चलेआ मैं माह्राज हाँ लैण मोह्राँ, करनाँ फिकर नहिँ तुस्साँ ज़रा राजा ॥१४८॥

गया पौह्ँच कुवेर दे कोल रघू, कुवेर वेख[5] कंबेआ थरथरा राजा ।
मोह्राँ याह्राँ करोड़ दे दे मैं नूँ, कैह्ंदा ढिल[6] नाँ पल दी पा[7] राजा ॥१४९॥

उसे वक्त कुवेर ने डर के ते, मींह झर[8] दा दित्ता वँसा[9] राजा ।
सोने चाँदी दे लग्ग अँबार[10] गए, हीरे लाल मोती बेवहा[11] राजा ॥१५०॥

केआ[12] मँगा दा आँह[13] मकान जेहड़ा[14], दित्ता झर दे नाल भरा राजा ।
कीती अरज़[15] कुवेर ने फिर[16] आके, दित्ता सभ कुछ मैं पौह्ँचा राजा ॥१५१॥

रघु गल्ल कुवेर दी सुणी जँदे[17], उत्थों[18] उठ वापस हो पेआ[19] राजा ।
जगह आपणी उस जँद[20] आण डिठ्ठी[21], रहे[22] नाल झर दे जगमगा राजा ॥१५२॥

दित्ता रिशी दा कर सवाल पूरा, मोह्राँ दित्तिआँ तुरत लदवा राजा ।
होया विदा रिशी दिलों खुश होके, दे आसीस कैह्ंदा मरहबा[23] राजा ॥१५३॥

उसे[24] रघु दे कुल विच जनम लै के, करो क्युँ पए फिर[25]-फिरा राजा ।
रक्ख कदम-बज़ुरगाँ[26] ते[27] कदम आपणा, इद्धे-उद्धे[28] न पेआ हिला[29] राजा ॥१५४॥

कर हौसला[30] फिकर न रक्ख कोई, दिलों ख़ाम[31] ख़ेआल[32] हटा राजा ।
कर करार[33] *दिलशाद* फिर[34] हार[35] जाणा, नहिँ राजेआँ एह रवाँ[36] राजा ॥१५५॥

---

१. ग्यारह । २. लालसा । ३. था । ४. छिपा । ५. देख कर । ६. देर । ७. कर । ८. धन । ९. बरसा । १०. ढेर । ११. अमूल्य । १२. डेरा । १३. था । १४. जौन सा । १५. निवेदन । १६. पश्चात् । १७. जब । १८. वहां से । १९. मुड़ पड़ा । २०. जब । २१. देखी । २२. रही थी । २३. साधुवाद । २४. उसी । २५. परिवर्तन । २६. बड़ों के पाद-चिह्न । २७. पर । २८. इधर-उधर । २९. हिला, सरका । ३०. उत्साह । ३१. कच्चा । ३२. संकल्प । ३३. प्रण । ३४. पश्चात् । ३५. उलट । ३६. आचरण के रूप में स्वीकृत ।

लै मन्न मैरी हुण तूँ गल्ल राजा, आया दुर[1] के मैं तैरे वल्ल[2] राजा,
दे छोड़ सारे वल-छल[3] राजा, रामचंदर नूँ टोर[4] दे नाल मैरे।
सवाली दर तैरे उत्ते आया मैं, तैं नूँ आपणा दुक्ख सुणाया मैं,
नाले वासता[5] रब्ब[5] दा[5] पाया[5] मैं, रैहम[6] कर झरा उत्ते हाल मैरे।
सपूरन यग मैरा नहिं होण दैंदे, विच बन दे नहिं खलोण[7] दैंदे,
फल फुल भी नहिं ओ खोर्ण[8] दैंदे, झालम[9] पै[10] गंए राखश खेंआंलं मैरे।
दे दे दान हुण तूँ *दिलशाद* मैंनूँ, रैहसी तैरा ऐहसान[11] एह याद मैंनूँ,
सुण फरेआंद[12] मैरी दैंवे दांद[13] मैंनूँ, दे हुण राजेआ कट जंजाल[14] मैरे ॥१५६॥

वसिष्ठ जी का राजा को उपदेश—

विस्वामितर दी गल्ल नूँ सुण के ते, गुरु वसिशट फिर एह समझान लग्गा।
कीता जद इकरार[15] इनकार[16] केहाँ[17], वकत समझ राजा हत्थों जाण लग्गा ॥१५७॥
पैहले केहया[18] जो मंगसो[19] दे देसाँ[20], कारण किऊँ हुण झूठी झबान लग्गा।
विस्वामितर दे झोर दी खबर तैंनूँ, किऊँ फिर [21]हीले-बहाने बणान लग्गा ॥१५८॥
इस दे गुस्से दी अग्ग जद भड़क पौसी[22], पाणी[23] समभ उत्ते[24] नहिं कोई पाण[25] लग्गा।
केहाँ[26] मैंन[27] मैरा न कर झिद्द[28] राजा, सुखन[29] हार किऊँ धरम गँवाण लग्गा ॥१५९॥
झरा रिशी दे मुँह वल्ल वेख[30] खाँ[31] तूँ, कैहरवान[32] होके गझब[33] ढाण[34] लग्गा।
उलट-पुलट देसी[35] कर विच पल दे, जाण बुझ किऊँ होण नादान लग्गा ॥१६०॥
नहिं[36] परवाह कोई रामचंदर [37]ताईं, किऊँ फिकर[38] राजा दिल नूँ लाणे[39] लग्गा।
देओ[40] टोर[41] बेशक[42] *दिलशाद* होके, किस वासते होण हैरान[43] लग्गा ॥१६१॥

१. चल। २. ओर। ३. छल-कपट। ४. भेज। ५. भगवान् के नाम की दुहाई दी। ६. दया। ७. खड़ा होने। ८. तोड़ने। ६. दारुण। १०. पीछे पड़ गए। ११. उपकार। १२. शिकायत। १३. न्याय। १४. विपत्ति। १५. वचन। १६. निषेध। १७. कैसा। १८. कहा था। १६ मांगोगे। २०. दूंगा। २१. बहाने। २२. पड़ेगी। २३. पानी। २४. ऊपर। २५. डालने। २६. कहना। २७. मान। २८. आग्रह। २६. वचन। ३०. देख। ३१. तो, सही। ३२. क्रोधयुक्त। ३३. आग। ३४. करने, बरसाने। ३५. देगा। ३६. डर। ३७. को। ३८. चिन्ता। ३६. लगाने। ४०. दीजिए। ४१. भेज। ४२. संदेह-रहित। ४३. व्यथित।

रामचंद्र और लक्ष्मण को ऋषि के साथ भेजना—

लई गल्ल वसिशट दी सुण जदों, होए फ़िकर सभ राजे दे दूर प्यारे ।
गेआ फिर तां आ सिद्धे[1] राह उत्ते, हो गए वैहम-खेआल[2] काफ़ूर[3] प्यारे ॥१६२॥

रामचंदर ते लछमन नूं याद कीता, दोंवें[4] होए आ हाज़र[5] हज़ूर[6] प्यारे ।
चले जाओ तुसीं कैहंदा नाल रिशी, मनणा इस दा हुकम ज़रूर प्यारे ॥१६३॥

हुकम करेगा रिशी जिस गल्ल संदा[7], करना तुसां है ओही मनज़ूर[8] प्यारे ।
रैहणा इस दी आग्या[9] विच हर दम, खबरदार[10] नहिं करना गरूर[11] प्यारे ॥१६४॥

सपूरण इस दा यग करवाओ जा के, होण पावे नांही कोई कसूर[12] प्यारे ।
अच्छी तरह *दिलशाद* हिदायत[13] करके, दित्ते अखिआं दे टोर नूर[14] प्यारे ॥१६५॥

रामचंद्र और लक्ष्मण का ऋषि के साथ जाना—

सुण के बाप दा हुकम नहिं देर कीती, झट-पट हो गए तैयार दोवें ।
तुरकुश तीर अते धनश बाण लै के, रिशी नाल टुर पए दिलदार[15] दोवें ॥१६६॥
विस्वामितर दे नाल विच जंगलां दे, पए चलदे राजकुमार दोवें ।
आया जंगल *दिलशाद* जद इक भारा, पुछदे रिशी थीं कर सत्कार दोवें ॥१६७॥

रामचंद्र और लक्ष्मण का प्रश्न करना—

[16]ख़ौफ़नाक जंगल घणा वेख के ते, लगे रिशी थीं करण पुच्छकार[17] साईं ।
दसो[18] जंगल माहराज एह है केहा, राह चलण वी होया दुश्वार[19] साईं ॥१६८॥
चरिंद[20] परिंद[21] जेहड़े पए नज़र सानूं[22], भआनक शकल सारे ख़ूंखार[23] साईं ।
राह सुथरा साफ़ नहिं कोई दिस दा, औंदे[24] नज़र हर तरफ़ पए खार[25] साईं ।१६९।
एही जंगल है राखशी ताड़का दा, रिशी आखदा ओ मरदम-आज़ार[26] साईं ।
ताकत जिसम[27] उस दे विच बौहत हैगी, रक्खे ज़ोर हाथी इक हज़ार साईं ॥१७०
कीता बंद उस राह मुसाफ़रां[28] दा, तोबह-तोब[29] रहे लोक पुकार साईं ।
जेकर[30] कोई भुल्ल[31] के जावे आ इत्थे, होंदा उस दा झट ओ शिकार साईं ॥१७१॥

---

१. सीधे । २. भ्रमयुक्त धारणा । ३ दूर । ४. दोनों । ५. उपस्थित । ६. सरकार के सामने । ७. के बारे में । ८ स्वीकार । ९. आज्ञा । १०. सावधान । ११. अहंकार । १२. हानि । १३. निर्देश । १४. चांदने । १५. दिल को लुभाने वाले । १६. भयानक । १७. प्रश्न । १८. बतावें । १९. कठिन । २०. पशु । २१. पक्षी । २२. हमें । २३. क्रूर । २४. आते हैं । २५. कांटे २६. मनुष्य-घातक । २७. शरीर । २८. पथिक । २९. त्राहि-त्राहि । ३०. यदि । ३१. भूल कर ।

जांदी पेश नहिँ किसे दी नाल उसदे, सारे उस अग्गे[1] जांदे हार साईँ ।
पुत्तर दो भी हैन बलवान उस दे, दुँहाँ[2] वाँग[3] पहाड़ अकार[4] साईँ ॥१७२॥

इक दा नाम सुबाहु मरीच दूजा, दोँ वेँ हैन शैतान बँदकार[5] साईँ ।
रैहँदी ताड़का है विच बन इस दे, ख़बरदार हो जाओ होशयार साईँ ॥१७३॥

सारे लोक दी रैछ्या[6] करन कारण, पाँपण[7] ताड़का नूँ देओ मार साईँ ।
दूजा[8] मार नहिँ सकदा कोई उसनूँ, समझो सच्च एह मेरी गुफ़तार[9] साईँ ॥१७४॥

रामचंदर माह्राज नूँ गल्ल सुण के, पै गई दिल विच सोच भँरमार[10] साईँ ।
कैहँदे रिशी जी सुणो है अरज़ मेरी, है धर्म-विरुद्ध एह कार[11] साईँ ॥१७५॥

करे वार[12] जो औरत ते मरद हो के, है ओ मरद नामरद मुड़दार साईँ ।
औरत मार मरदानगी नहिँ होंदी, होंदा यश नहिँ विच संसार साईँ ॥१७६॥

छैतरी[13] धरम भी एह गल्ल नहिँ कैहँदा, कराँ औरत उत्ते कीँ वेँ वार साईँ ।
औरत मारेआँ लँगदै[14] पाप भारी, धरम शास्तर दे अनुसार साईँ ॥१७७॥

रक्खो हौसला डरो न ज़रा तुस्सी, रिशी आखदा नाल पेआर साईँ ।
परसराम ने बाप दा हुकम मन के, माँ नूँ मारेआ नाल तलवार साईँ ॥१७८॥

लगे कैह्ण अग्गों हस्स के रामचंदर, कर सकदा नहिँ मैँ भी इनकार साईँ ।
एही आग्या पिता दी है मैँ नूँ, सोँ[15] चलसाँ[16] मैँ हुण हुकम अनुसार साईँ ॥१७९
देसाँ मार ज़रूर मैँ ताड़का नूँ, तुस्सी पाप संदेँ[17] ज़िम्मेवार साईँ ।
दिलशाद बँचावणाँ[18] पाप कोलोँ[19], रँखणाँ[20] याद नहिँ देणाँ[21] विसार[22] साईँ ॥१८०॥

ताड़का का आकर आक्रमण करना—

सुन आवाज़ इनसान दी ताड़का भी, वेखो मुँह फैला के आ रही ए ।
कँद[23] वांग पहाड़ दे राखशी दा, भेआनक शकल मुँहीव[24] डरा रही ए ॥१८१॥
झट पौहँच झपट के करे हमला, मिट्टी जंगल दी पुँट[25] उँडा[26] रही ए ।
कदी रुख उखाड़ के पई मारे, पत्थर चुँक[27] के कदी वँगा[28] रही ए ॥१८२॥

१. आगे । २. दोनों का । ३. तुल्य । ४. आकार । ५. कुकर्मी । ६. रक्षा । ७. पापिनी । ८. दूसरा । ९. वचन । १०. अत्यधिक । ११. कर्म । १२. आक्रमण । १३. क्षत्रिय । १४. लगता है । १५. इस लिए । १६. चलूँगा । १७ के बारे में । १८. बचाइएगा । १९. से । २०. रखिएगा । २१. कीजिएगा । २२. विस्मृत । २३. आकार, ऊंचाई । २४. भयानक । २५. उखाड़ कर । २६. उड़ा । २७. उठा । २८. फैंक ।

कदी गज्ज के आँवंदी शेर बांगों[1], कदी खिंच[2] तलवार चला रही ए ।
कदी उच्छल के चाहवंदी[3] पकड़ने नूँ, खड़ी सामणे शोर मचा रही ए ॥१८३॥

जांदा ज़ोर पर पेश नहिँ कोई उस दा, करतब आपणे कई दिखा रही ए ।
पर गई है थक *दिलशाद* हुण ताँ, हो हैरान विच दिल घबरा रही ए ॥१८४॥

विश्वामित्र का निर्देश—

देओ मार बदकार नूँ झट तुस्सी, रिशी आखदा किऊँ कर देर दित्ती ।
बस तीर खिच मारेआ रामचंदर, ज़बरदस्त ज़ालम[5] कर ज़ेर[6] दित्ती ॥१८५॥

लग्गा तीर सरीर नूँ चीर गेआ, मार पल विच शेर दलेर दित्ती ।
गइआँ भुल्ल चलाकिआँ *दिलशादा*, इक तीर दे नाल कर ढेर दित्ती ॥१८६॥

रामचन्द्र और विश्वामित्र का संवाद—

मार ताड़का नूँ हुण रामचंदर, विस्वामितर दी आण शरण लग्गे ।
इस पाप थीँ लैणा बचा मैं नूँ, अग्गे रिशी दे अरज़ एह करण लग्गे ॥१८७॥

रिशी आखेआ डरो नाँ ज़रा तुस्सी, कर बुरा नहिँ आए एह आप कोई ।
हर इक नूँ देवंदा दुक्ख जेहड़ा, उस नूँ मारने दा नहिँ पाप कोई ॥१८८॥

कीता नहिँ एँह तुस्साँ अधरम कोई, लगदा आप नूँ नहिँ सराप[11] कोई ।
कीता धरम दा कम्म[12] *दिलशाद* एह ताँ, इत्थे पाप दा नहिँ मिलाप कोई ॥१८९॥

रिशी वेखदा जा के उस जाँ[13] ते, जित्थे ताड़का जिमीँ[14] ते सोई हुई ए ।
सूरत डिट्ठिआँ[15] उस दी डर आवे, होया के[16] भाँवीँ[17] ओ मोई[18] हुई ए ॥१९०॥

नाँ ओ ज़ोर ते नाँ ओ शोर रेह्या, रल[19] के मिट्टी विच मिट्टी होई हुई ए ।
नदी ख़ून दी पई *दिलशाद* चलदी, छाती तीर दे नाल परोई हुई ए ॥१९१॥

विच इस्से रौले[20] दिन गुज़र गेआ, अते वकत हो गेआ फिर शाम इत्थे[21] ।
रामचंदर माहराज नूँ कहे रिशी, अज्ज[22] रात कर देइए केआम[23] इत्थे ॥१९२॥

---

१. भान्ति। २, खींच कर। ३. चाहती है। ४. अधिक बलयुक्त। ५. अत्याचारिणी। ६. नीचे। ७. मरी हुई। ८ चरण। ९. किया। १०. यह। ११. शाप। १२. कर्म। १३. स्थान। १४. भूमि। १५. देख कर। १६. क्या। १७. चाहे। १८. मरी। १९. मिल। २०. गड़बड़। २१. यहीं। २२. आज। २३. पड़ाव।

विच जंगल चलणा औखा[1] ईस्स[2] वेले, लैइए[3] रात एह कर आराम इत्थे ।
गए बैठ *दिलशाद* सब रुख तैल्ले[4], विस्वामितर लछमन सिरी[5] राम इत्थे ॥१९३॥

यज्ञ की पूर्ति—

सुबह[6] उठ कर देवँ दे कूच उत्थोँ, पए अग्गे हुण हो रवाँन सांईँ ।
जंगल होर[8] डिट्ठा थोड़ी दूर जा के, होया वेख के दिल शादान[9] सांईँ ॥१९४॥
रंगा रंग दे फुल्ल[10] हर जा उत्ते, वेख वेख ताझा होवे जान सांईँ ।
किधरे चंबा, गुलाब ते मोतिआ ई, किधरे गुंल[11] लालह् ते गुल रिहान[11] सांईँ ॥१९५॥
किधरे गुल नरगस[12] रहे खिड़ सोहणे, रेहेआ खिड़ किधरे झाफ़रान[13] सांईँ ।
किधरे मार लैहराँ रहिआँ चल नैहराँ, किधरे बोलन पँछी खुश-अलहान सांईँ ॥१९६॥
फ़रश सबझ[14] चौफेर झमीन उत्ते, सोहणे द्रख़त[15] पए दिल लुभान[16] सांईँ ।
सिफ़त[17] जंगल दी सक्के न हो मैथोँ, आहा[18] ओ जंगल बहिश्त-निशान[19] सांईँ ॥१९७॥
विस्वामितर थीँ पुच्छदे रामचंदर, है एह जंगल या है गुलस्तान[20] सांईँ ।
के नाम माह्राज इस्स जंगल दा ए, करो इस्स दा हाल बेआन सांईँ ॥१९८॥
रिशी आखदा लौ हुण सुण मैथोँ नाल ग़ौर दे करो धेआन सांईँ ।
चरितर बन इक नाम इस्स जंगल दा ए, सिद्ध-आशरम है दूजा वतान सांईँ ॥१९९॥
इस्से बन अन्दर तन-मन ला के, कीता तप सी विशन भगवान सांईँ ।
मेरी कुटिआ भी विच्च बन इस्से, नहिँ ओ दूर, नझदीक[21] ला जान सांईँ ॥२००॥
गल्लाँ कर देआँ गए फिर पौह्ँच उत्थे, जित्थे रिशी दा अहा[22] मकान सांईँ ।
रिशी मुनी तपसी[23] जो आहे बैठे, लग्गे शरण सारे अग्गोँ आण सांईँ ॥२०१॥
रामचंदर माह्राज जी कैह्ण लग्गे, सुणो गल्ल मेरे मेह्रबान[24] सांईँ ।
करो यग बेशक बे-फ़िकर[25] होके, रैह्साँ मैं इत्थे निगाह्बान[26] सांईँ ॥२०२॥

---

१. कठिन। २. इस। ३. लेवें। ४. तले, नीचे। ५. श्री। ६. प्रातः। ७. चलन्त, प्रस्थित। ८. और। ९. प्रसन्न। १०. फूल। ११. विशेष पुष्प का नाम। १२. विशेष पुष्प का नाम। १३. केसर। १४. हरा। १५. वृक्ष। १६. लुभाते हैं। १७. प्रशंसा। १८. था। १९. स्वर्ग का सूचक। २०. पुष्प-वाटिका। २१. समीप। २२. था। २३. तपस्वी। २४. दयावान्। २५. निश्चिन्त। २६. रक्षक।

देसाँ मार के ओ मुका[1] सारे, करसन शैतनेत[2] जो शैतान[3] साईँ ।
गेआ हो पिच्छे जेहड़ा होवणा सी, होसी हुण न कोई नुकसान[4] साईँ ॥२०३॥

जिन्हाँ राखशां दा है डर तुसां, केआ मजाल[5] जे आन सतान साईँ ।
इक तीर दे नाल कर चूर देसाँ, जे ओ आण इत्थे फेरा पाण साईँ ॥२०४॥

कीता रिशी ने यग अरम्भ फिर ताँ, गेआ करके बैठ अशनान[6] साईँ ।
रामचंदर लछमन लग्गे देन पैहरा, लै के हत्थ विच तीर कमान साईँ ॥२०४॥

दिन पञ्ज[7] गुझरे यग करदेआँ नूँ, रिशी लग्गे फिर एह सुणान साईँ ।
एह दिन अखीर दा है छेवाँ[8], होसी यग खतम अज्ज जान साईँ ॥२०६॥

खबरदार[9] रैहणा होशेआर[10] चाहिए, हैन संखत राखश बे-ईमान[11] साईँ ।
अचेन-चेत[12] मौजूद[13] हो जाए आ के, देन कर भरिष्ट[14] सामान साईँ ॥२०७॥

लग्गे कैहण अग्गो हस्स के रामचंदर, करो पिआरे ओ याद भगवान साईँ ।
केआ मजाल राखश आवे कोई इत्थे, मैरे सामणे विच्च मैदान साईँ ॥२०८॥

गेआ भुल्ल[15] के आ भी जे कोई, जासी दे ओ आपणे प्राण साईँ ।
इतणा सुण के जाँवदे बैठ रिशी, फिकर दिल दे दिलों हटान साईँ ॥२०९॥

मैरे भाई लछमन खबरदार हो जा, करनी नहिँ गफलत[16] इक आन साईँ ।
पए आहे समझाँवदे रामचंदर, पई आवाझ कन्नीं[17] नागहानें[18] साईँ ॥२१०॥

दिस्सन[19] गरद-गुब्बार[20] चौफेर लग्गा, चढ़ेआ आण अँधेर-तूफानें[21] साईँ ।
लग्गे कैहण रिशी लौ आ गए नें, सुबाहु मरीच राखश पैहलवान साईँ ॥२११॥

राखश होर भी इन्हाँ दे नाल बौहते[22], शौह-झोर[23] भारे बलवान साईँ ।
एह ताँ पाण विघन आए विच्च यग दे, देसन दे मचा घमसानें[24] साईँ ॥२१२॥

लई सुण जदों गल्ल रिशिआँ दी, लग्गा अकल माहराज दौड़ान साईँ ।
छत्त तीरां दी तुरत बणा के ते, जगह यग उत्ते दित्ती तान[25] साईँ ॥२१३॥

---

१. समाप्त। २. दुष्टता। ३. दुष्ट। ४. हानि। ५. शक्ति। ६. स्नान। ७. पाँच। ८. छठा। ९. सचेत (रहो) १०. ज्यादा। ११. अधर्मी, पापी। १२. अचानक। १३. प्रकट। १४. भ्रष्ट। १५. भूल कर। १६. प्रमाद। १७. कानों में। १८. अचानक। १९. दीखने। २०. धूलि का विस्तार। २१. भारी अंधेरी। २२. बहुत-से। २३. शक्तिशाली। २४. गड़बड़। २५. फैला।

गए चढ़ आकाश ते फिर राखश, मीँह लहू दा लग्गे बरसान साईँ ।
तले छत्त नहीं जाँवँदी बूँद इक भी, राखश वेख के होए हैरान साईँ ॥२१४॥
लग्गे हड्डिआँ चुक्क के सुट्टण[1] फिर ताँ, गुस्से नाल हो के कैह्‌रवान[2] साईँ ।
हेठ छत्त नहिँ जाँवँदी चीझ कोई, राखश झोरँ[3] अपणा पए लान साईँ ॥२१५॥
लग्गे तीर चलान फिर रामचंदर, लाके शिँस्त[4] उत्ते आसमान साईँ ।
छाती विच्च मरीच दे तीर लग्गा, हाय ! हाय ! कर लग्गा कुरलान[5] साईँ ॥२१६॥
कोँह[6] पञ्ज समुँदरों पार जा के, पेआ डिग्ग मुरदे समेआनँ[7] साईँ ।
गेआ लग्ग सुबाहु नूँ तीर दूजा, दित्ती जान पर रेँह्‌आ अरमान[8] साईँ ॥२१७॥
लगातार फिर ताँ चलन तीर लग्गे, राखश वेख के लग्गे घबरान साईँ ।
विच्च बन दे रेँहा न कोई राखश, गेआ हो फिर अमन-अमान साईँ ॥२१८॥
पूरन यग होया विस्वामितर संदाँ[9], रिशी खुशिआँ पए मनान साईँ ।
रामचंदर माह्‌राज नूँ वेख के ते, पए होण कुरबाँन-कुरबान[10] साईँ ॥२१९॥
आशीर्वाद रिशी विस्वामितर दे के, लग्गा गुण माह्‌राज दे गाण साईँ ।
पूरण यग *दिलशाद* हो गेआ मैरा, होया मैं ममनूँनँ[11] एहसानँ[12] साईँ ॥२२०॥

रामचंद्र का निवेदन—

गेआ यग माह्‌राज ताँ हो पूरा, दस्सो होरँ[13] किस गल्ल दी लोड़ तुस्साँ ।
जो कहोगे कराँगा मैं ओहीँ[14], रैह्‌ण देवसाँ कोई न थोड़ँ[15] तुस्साँ ॥२२१॥
साडे नाल अजुधेआ विच्च चल के, औणाँ है सानूँ घर छोड़ तुस्साँ ।
नाले हुँनर[16] सिखाओ *दिलशाद* कोई, बोल आपणा चाढ़ँनाँ तोड़ँ[17] तुस्साँ ॥२२२॥

ऋषि द्वारा शस्त्र-विद्या की शिक्षा—

आही विद्या शसतर याद जेह्‌ड़ी, रामचंदर नूँ ओह सिखला देंदा ।
मंतर होर भी जाणदा आहा जेह्‌ड़े, ओह भी दस्स के सिद्ध करवा देंदा ॥२२३॥

---

१. फैंकने । २. क्रूर । ३. शक्ति । ४. लक्ष्य । ५. कष्ट (मानने) । ६. कोस । ७. सामान । ८. खेद । ९. का । १०. निछावर । ११. आभारी । १२. उपकार । १३. और । १४. वही । १५. कमी । १६. कौशल । १७. अन्त तक पहुँचाना ।

वेख-वेख के होवँदा खुश रिशी, शुद्ध मन थीँ पेॲा दुआं[1] देंदाँ ।
लग्गे मंगण रुखसत[2] *दिलशाद* जदों, विस्वामितर फिर एह सुणा देंदाँ ॥२२४॥

विश्वामित्र का वचन—

सुअम्बर है भारा विच जनकपुर दे, चल्लो एह तमाशा भी वेख लैये ।
इकट्ठे होणगे आण के बहुत राजे, विच उन्हाँन्दड़े[3] असी भी चल बैह्ये ॥२२५॥
अक्खीँ आपणीँ आवइए वेख अस्सीँ, पिच्छों सुण काह्नूँ पिच्छोता सैह्ये ।
औसन[4] लोक बौह्ते दूरों वेखणे नूँ, अस्सी नेड़ॲाँ[5] किऊँ पिच्छे हट रैह्ये ॥२२६॥
गए आ सबब दे नाल तुस्सीँ, होर गल्ल न कोई इस गल्ल जैह्ये ।
होसी मेला अजीब[6] *दिलशाद* भरेॲा, अग्गोँ मरज़ी जो आप दी आप कैह्ये ॥२२७॥

रामचन्द्र का वचन—

माह्राज सुअंबर एह है केहा, सुणेॲा नाहिँ मैं ताँ अज तक नाम है जी ।
किस वासते औणगे[8] लोक दूरों, उत्थे राजेॲाँ दा केॲा काम है जी ॥२२८॥
मेला किस दा लगदा है उत्थे, कितणा दूर इत्थोँ[9] ओ मकांम[10] है जी ।
दस्सो हाल *दिलशाद* नूँ खोल सारा, है ओह खास[11] मेला या के आम[12] है जी ॥२२९॥

विश्वामित्र द्वारा स्वयंवर-वर्णन—

विस्वामितर ने आखेॲा सुणो मैथोँ, सारा हाल मैं देवाँ सुणा पेॲारे ।
मिथलापुर दे विच है जनक राजा, दित्ता उस सुअंबर रचा पेॲारे ॥२३०॥
उस दी कुल दा है दस्तूर[13] जेह्ड़ा[14], देवाँ ओ भी मैं समझा पेॲारे ।
जावे बैठ राजा उत्ते तख़त[15] जेह्ड़ा, लैंदा नाम ओ जनक धरा पेॲारे ॥२३१॥
धनश शिवजी माह्राज थीँ लै के ते, ब्रह्मा देवँदा जनक नूँ चा पेॲारे ।
सिफ़त[16] धनश सक्के न हो मैथोँ, मुख़तसिर[17] मैं देवाँ बता पेॲारे ॥२३२॥
धनश वांग[18] पहाड़ दे आहा भारा, फ़ायदा[19] नहीं कोई तूल[20] वैंधा[21] पेॲारे ।
विच त्रैलोकी उस धनश ताईँ, नहिँ सकदा कोई हिला पेॲारे ॥२३३॥

१. आसीस। २. छुट्टी। ३. उन के। ४. आवेंगे। ५. पास से। ६. विचित्र। ७. इच्छा। ८. आवेंगे। ९. यहाँ से। १०. स्थान। ११. विशेष। १२. साधारण। १३. नियम। १४. जो। १५. सिंहासन। १६. स्तुति। १७. संक्षिप्त कर के। १८. समान। १९. लाभ २०. विस्तार। २१. अधिक कर के।

नित नेम पूजा करे जनक राजा, जा के धनश दी दिल लगा पेॲारे।
एह ही रोज़ दा फ़र्ज़[1] इक आहा उसदा, होवे केॲा मजाल ख़ता[2] पेॲारे॥२३४॥

इक रोज़ ब्रह्में[3] राजे जनक ताईं, लेॲा आपणे कोलें[4] बुला पेॲारे।
पूजा धनश दी राणी दे ला ज़िम्मे[5], कर ताकीद एह दित्ता फ़रमा[6] पेॲारे॥२३५॥

धनश पूजणा सुबह[7] उठ बिला[8] नाग़ा[9], ख़बरदार मत देवीं भुला पेॲारे।
गेॲा ब्रह्मा दे कोल फिर आप राजा, हो बे-फ़िकर सभ फ़िकर हटा पेॲारे॥२३६॥

सुबह नित सवेरे नहा धो के, राणी धनश नूँ पूजदी जा पेॲारे।
गई हो तबीअत[10] अलील[11] इक दिन, गई पेश मुशकल सखत आ पेॲारे॥२३७॥

पूजा-पाठ अन्दर दिक्कत[12] आन होई, राणी रही खेॲाल दौड़ा पेॲारे।
सद्द[13] के लड़की नूँ फिर *दिलशाद* राणी, लैंदी आपणे कोल बहा पेॲारे॥२३८॥

रानी का लड़की से वचन—

पूजा धनश दी अज नहीं कर सकदी, गई हो बेटी बीमार हाँ मैं।
इस्से वास्ते सद्देॲा है तैनूँ, होई आन के जद्द लाचार[14] हाँ मैं॥२३९॥

आ पूज अज्ज धनश जा के तूँ, होई अग्गे तेरे मिन्नतें[15]-वार हाँ मैं।
कैंह्वाँ[16] होर *दिलशाद* मैं दस्स किस नूँ, तेरे उत्तों[17] बेटी बलेहार हाँ मैं॥२४०॥

ऋषि का वचन—

कैंह्णा माँ दा मन्न[18] उठ गई सीता, कीता ज़रा न उस अटका[19] पेॲारे।
जद्दों वेखेॲा धनश नूँ कोल जाके, गई वेख के हो ख़फ़ा पेॲारे॥२४१॥

धनश गर्द[20]-गुबार दे नाल भरेॲा, कूड़ा[21] हेठें[22] उस दे सालहा[23] पेॲारे।
रखेॲा धनश नूँ चुक्क के इक पासे, दित्ती जगह फिर कर सफ़ा पेॲारे॥२४२॥

करके साफ़ सुथरा फिर धनश नूँ भी, रक्खदी आपणी जगह टिकाँ[24] पेॲारे।
पूजा-पाठ कर के आई उठ सीता, रक्खी गल्ल विच्च दिल छुपा पेॲारे॥२४३॥

---

१. कर्तव्य। २. भूल। ३. ब्रह्मा ने। ४. पास। ५. अनुरोध। ६. आदेश (कर) ७. प्रातः। ८. बिना। ९. छूट। १०. स्वास्थ्य। ११. खराब=बीमार। १२. कठिनाई। १३. बुला। १४. अशक्त। १५. प्रार्थी। १६. कहूँ। १७. ऊपर से। १८. मान कर। १९. निषेध=रुकावट। २०. मिट्टी-घट्टा। २१. कचरा। २२. नीचे। २३. बहुत वर्षों का। २४. बिठा।

ब्रह्मा कोल कुछ दिन गुज़ार[1] के ते, वापस जनक भी गेआ फिर आ पेआरे ।
डिट्ठा उस्स जद्द धनश नूँ आन के ते, हो हैरान गेआ घबरा पेआरे ॥२४४॥

धनश उज्जला चमकदा नज़र आया, शीशे वाँग डिट्ठी[2] साफ़ जाँ[3] पेआरे ।
कैहँदा कौन बली ऐसे ज़ोर वाला, लेआ धनश एह जिस उठा पेआरे ॥२४५॥

एह ताँ ज़रा हिलायाँ न हिलदा सी, रहे ज़ोर बौहते अज तक ला पेआरे ।
पहलवान भारे बलवान जेहड़े, ओ भी वेख के गए शरमा पेआरे ॥२४६॥

पेआ हौसला[4] किसे दा नाहिँ कदी, सक्केआ नहिँ कोई हत्थ पा पेआरे ।
नहिँ आँवदा कुझ[5] विच्च समझ मेरी, दित्ता किस एह गुल खिला पेआरे ॥२४७॥

शश-पँज[6] दे विच्च पै गेआ राजा, तोते ख़ेआल दे रेह्या उड़ा पेआरे ।
होई गल्ल अख़ीर मालूम उस नूँ, सीता रक्खी सी जो छपा पेआरे ॥२४८॥

उस्से वक़त प्रण एह धार लेआ, लई क़ँसम[7] राजे तुरत खा पेआरे ।
देसी धनश उठा जो आण के ते, लैसी ओही सीता परणा[8] पेआरे ॥२४९॥

इस्से वास्ते औणगे चढ़ राजे, ख़ुलकत[9] होर औसी कर के धाँ[10] पेआरे ।
लोक बहुत जमाँ होसन आण उत्थे, राजे बैहनगे सभा जमा पेआरे ॥२५०॥

वारो-वार चुकसन जा के धनश ताईं, लैसन आपणा ज़ोर अज़मा पेआरे ।
मेला है अजीब *दिलशाद* एह ताँ, अग्गों आप दी जो रीझा[11] पेआरे ॥२५१॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचंदर माहराज ने हाल सुण के, विस्वामितर नूँ एह सुणाया ए ।
है गल्ल अजीब बेशक एह ताँ, होसी सच्च जो तुसाँ फ़रमाया ए ॥२५२॥

धनश चुकणे दी नहिँ हिम्मत मै नूँ, इस्से गल्ल ने दिल डराया ए ।
कितणी आउसी शरम *दिलशाद* उत्थे, जा के धनश न जद्द उठाया ए ॥२५३॥

विश्वामित्र का वचन—

किस वासते गए घबरा इतणे, रक्खो हौसला नाहिँ एह गल्ल कोई ।
नहिँ बराबरी किसे दी नाल तुसाँ, आवे भावेँ अकाश थीँ चल्ल कोई ॥२५४॥

---

१. बिता । २. देखा । ३. जगह । ४. साहस । ५. कुछ । ६. छ-पांच (=संशय) ७. सौगन्ध । ८. विवाह । ९. जनता । १०. दौड़ । ११. इच्छा ।

तुस्साँ बाझ[1] नहिँ चुक्कणा धनश किस्से, नहिँ विच्च वहानेआँ फ़ल्ल[2] कोई ।
दिलशाद चलो लैये वेख मेला, पाओ गल्ल दे विच्च न वल्ल कोई ॥२५५॥

रामचन्द्र का वचन—

विच्च दिल दे सोचदे रामचंदर, मरज़ी[3] एही हुण रिशी दी जापदी ए ।
सुअंबर वेखणा पेॲा झरूर सानूँ, हुण ताँ गल्ल इत्थे चुप-चाप दी ए ॥२५६॥

लग्गे कैह्ण मनज़ूर है सौ वारी, माह्राज सलाह जो आप दी ए ।
हाँ ताबै[4] हुकम दिलशाद मैं ताँ, मैं नूँ आगेआ भी एहो बाप दी ए ॥२५७॥

विश्वामित्र की आशीष—

रामचंदर माह्राज जद्द मन्न लीता, कीती गल्ल रिशी कोई फेर नाहीँ ।
हो के ख़ुश आसीस एह देवँदा ए, रैह्सी बोल-बाला[5] होसी झेर[6] नाहीँ ॥२५८॥

जो अड़ेगा[7] झँड़ेगा मुँहँ-परनेँ[8], होसी सामणे शेर दिलेर नाहीँ ।
पौदाँ[9] टुर[10] दिलशाद आसीस दे के, कीती पल भी इक फिर देर नाहीँ ॥२५९॥

प्रस्थान—

रामचन्दर ते लछमन नूँ नाल लै के, विस्वामितर हो पेॲा रवान[11] साईँ ।
बग़ल[12] विच्च पोथी अते होर आसन, विच्च हत्थ करमण्डलँ[13] पहचान साईँ ॥२६०॥

टुरदे सैर करदे पए जंगलाँ दे, कीता गंगा दा भी अशनान साईँ ।
कई दिन गुज़रे राह चलेदेआँ नूँ, पौँह्ते[14] जा विच इक बेआबान[15] साईँ ॥२६१॥

दूरोँ शह्र सोह्णा इक नज़र आया, डिट्ठा जंगल विच्च इक मकान साईँ ।
विस्वामितर कोलों सिरी राम पुच्छदे, करो किरपा किरपा-निधान साईँ ॥२६२॥

वसदा शैह्र सोह्णा पेॲा है केह्ड़ा[16], है विच्च जंगल एह केआ असथान साईँ ।
है एह जनकपुरी विस्वामितर कैह्ँदा, सोह्णा शैह्र पेआरा आलीशान[17] साईँ ॥२६३॥

विच्च बन एह गौतम दी है कुटिआ, रह के विच्च इस दे भजदा ओ भगवान् साईँ ।
गौतम रिशी भी गेआ फिर पौँह्च उत्थे, कर परणाम लग्गा गुण गान साईँ ॥२६४॥

---

१. बिना । २. फल । ३, इच्छा । ४. अधीन । ५. विजय । ६. पराजित । ७. गिरेगा । ८. मुँह के बल । ६., १०, चल पड़ा । ११. प्रस्थित । १२. कांख । १३. कमंडलु । १४. पहुँचे । १५. निर्जन । १६. कौन-सा । १७. बड़ा भारी ।

धन्न[1] भाग तुसाडड़े[2] होए दरशन, होंदा वेख के पेआ कुरबान साईं ।
उस्से बन दे विच्च उस रोझ तिन्ने, रहे गौतम दे कोल मैह्मान साईं ॥२६५॥
कंद-मूल जो गौतम दे कोल है सी, हो के ख़ुश कीता अन्न-पान साईं ।
दिन दूसरे सुबह दिलशाद टुर के, जनक-पुर जा डेरा जमान साईं ॥२६६॥

राजा जनक को सूचना—

राजे जनक नूँ होई रिपोर्ट[3] जाके, माह्राज रिशी इक आया ए ।
बालक सुन्दर सोह्णे दो नाल उस दे, डेरा नदी ते आण जमाया ए ॥२६७॥
कोई चीझ साडे कोलों नहिँ लैंदे, असाँ झोरें[4] बतेरड़ा लाया ए ।
असी मंगण दिलशाद नहिँ आए इत्थे, अग्गों एह जवाब[6] सुणाया ए ॥२६८॥
झाहिराँ दिस्सदे राजकुमार दोँवें, ख़ुश-शकल सोहणे होनहार दोँवें ।
रक्खण रिशी दे नाल पेआर दोँवें, डेरा आण के नदी ते लाया ए ॥२६९॥
वेख होवँदे उन्हाँ नूँ मौह्त सारे, गोया हैण असमान दे चन्न[8]-तारे ।
खलकत होवँदी वेख के बलेँहारे, हर इक्क दा दिल लुभाया ए ॥२७०॥
अरझाँ[9] कीतिआँ असाँ बतेरिआँ जी, हर इक जिन्सं दिआँ लाइआँ ढेरिआँ जी ।
उन्हाँ नहिँ दलीलाँ[11] फेरिआँ जी, हत्थ[12] जोड़ के वासता पाया ऍ ॥२७१॥
किसे चीझ दी आखदे लोड़ नाहीँ, सानूँ कोई दिलशाद जी थोड़ नाहीँ ।
किसे नाल[13] असाडड़ाँ[14] जोड़[15] नाहीँ, तुसाँ शोर किऊँ आण मचाया ए ॥२७२॥

जनक का अपने पुरोहित से संवाद—

आखो कर मालूम एह आए कित्थों[16], राजा सुण रिपोट फरमान लग्गा ।
शतानंद पुरोह्त सी कोल बैठा, खड़ा हो के ओह समझान लग्गा ॥२७३॥
चल्लो कर दरशन आओ आप तुस्सी, नाले करो दरेआँफत[17] सुणान लग्गा ।
इतनी गल्ल पुरोह्त दी सुणी जदों, दिलशाद राजा जनक जान लग्गा ॥२७४॥

---

१. धन्य । २. आप के । ३. सूचना । ४. अनुरोध । ५. बहुत-तर । ६. उत्तर । ७. देखने में । ८. चन्द्र । ९. प्रार्थनाएँ । १०. पदार्थ । ११. इच्छाएँ । १२. हाथ जोड़ने के नाम पर (उस की ओर ध्यान दिलाते हुए) प्रार्थना की है । १३. साथ । १४. हमारा । १५. बंधन । १६. कहाँ से । १७. पता ।

राजा का ऋषि से वचन—

विस्वामितर दे कोल फिर पौहँच राजे, हत्थ जोड़ कीता पैरणाम[1] जाके ।
कहे रहे माह्राज किऊँ बैठ इत्थे, बाग़ शाही[2] विच्च करो आराम जाके ॥२७५॥

बाह्राँ दिनाँ दे बाद सुअम्बर होसी, तुसी बाग़ विच्च करो कॅआम जाके ।
करदे बाग़ दे विच्च *दिलशाद* डेरा, विस्वामितर लछमन सिरी राम जाके ॥२७६॥

राजा जनक फिर रिशी थीँ पुच्छण लग्गा, माह्राज एह राजकुमार किस दे ।
एह दिलबंद[3] किस दे ते फरज़ंद किसदे, काबल-दीद[4] दिलबर[5] दिलदार[6] किसदे ॥२७७॥

किस घर दे हैन चराग़[7] दोवेँ, तारे अक्खिआँ दे होनहार किस दे ।
देॲो दस्स माह्राज देॲाल होके, एह दो गुल *दिलशाद* गुलज़ार किस दे ॥२७८॥

विश्वामित्र का वचन—

करो राजा जी आपणा कम्म तुस्सी, देॲो छोड़ हुण इन्हाँ कहाणिआँ नूँ ।
मस्त हाल दे विच्च फ़कीर रैह्ँदे, नहिँ ओ जाणदे राजेॲाँ राणिआँ नूँ ॥२७९॥

राज़ी रब्ब दी रैह्ण रज़ा उत्ते, करके दिल थीँ दूर हैरानिआँ नूँ ।
सुअम्बर वेखणे आए *दिलशाद* असी, नहिँ ताँ कम्म केॅह्ड़ा राजधानिआँ नूँ ॥२८०॥

राजा का वचन—

हत्थ जोड़ के जनक फिर कैह्ण लग्गा, साध, संत, फ़कीर दा दास हाँ मैं ।
करनी सेवा उन्हाँदड़ी धरम मेॅरा, करदा चोर बदमाश दा नास हाँ मैं ॥२८१॥

देवाँ जाण निरास न कोई इत्थोँ, पूरी हर इक दी करदा आस हाँ मैं ।
करो मेॅह्र दी नज़र *दिलशाद* मैं ते, सुआली आया हुण आप दे पास हाँ मैं ॥२८२॥

विश्वामित्र का वचन—

एह फुल्ल सोह्णे मेॅथोँ सुण राजा, सूरजबंस दे हैन विच्च बाग़ दोवेँ ।
मेरा यग करवा आ गए इत्थे, घर दसरथ दे हैन चराग़ दोवेँ ॥२८३॥

---

१. नमस्कार । २. सरकारी । ३. मनोहर । ४. देखने योग्य । ५. प्यारे । ६. सुन्दर ।
७. दीपक । ८. सुन्दर ।

रखसन एही क़ायम[1] धरम करम ताईं, धो देसन[2] पाप दे दाग़[3] दोवें ।
हर इक गल्ल *दिलशाद* एह जाणदे नीं, विच्च अक़ल दे आली-दिमाग़[4] दोवें ॥२८४॥

राजा का लौटना—

लेॲ सुण एह हाल जद्द जनक राजे, होके खुश सारा इन्तज़ाम[5] करदा ।
अहलकार[6] दो चार बुला के ते, आदेस उन्हाँ नूँ आप तमाम करदा ॥२८५॥
ख़ातरख़ाह[7] हो गए जद कम्म सारे, रुखसत[8] लै के फिर परणाम करदा ।
आया उट्ठ *दिलशाद* फिर बाग़ विच्चों, विच्च मैहलाँ आण आराम करदा ॥२८६॥

राजा का रानी से वचन—

राजा विच्च मैहल जद्द आण बैठा, सद्द के राणी नूँ हाल समझा देंदा ।
सुअम्बर वेखणे नूँ आए राम-लछमन, जो कुझ वेखेॲ[9] ओ सुणा देंदा ॥२८७॥
सूरत सोहणी मोहणी राम दी ए, सूरज वेख के मुँह छपा देंदा ।
होंदी क़सम *दिलशाद* जे ना खाधी[10], सीता राम दे नाल परणा देंदा ॥२८८॥
बोलें[11] बोलेॲ[12] मुँह दा नहिं मुड़दा, गेॲ निकल जो सुख़न झबान [13]विच्चों ।
आएॲ पैरत[14] के फेर न कदी राणी, जावे निकल जो तीर कमान विच्चों ॥२८९॥
बे-ग़ैरत[15] इनसान हैवान[16] होंदा, हटदा मरद नहिं कदी मैदान विच्चों ।
कराँ झूठी झबाँन[17] मैं किऊँ राणी, लैके के जाणा इस जहान विच्चों ॥२९०॥
टुट जाएगी क़सम एह तद्द मेरी, छोड़ जिसम जद्द निकलसी जान विच्चों ।
होंदा[18] ओही *दिलशाद* जो रब्ब करदा, हुण के निकलदा है पिच्छों तौंन[19] विच्चों ॥२९१॥

रानी का वचन—

कुदरत रब्ब दी है बे-अन्त[20] राजा, जो ओह चाहे करके दिखला देवे ।
ओही शेराँ नूँ पिंजरे पा देवे, ओही चिड़िआँ थीं बाझ कुहीं[21] देवे ॥२९२॥
पल विच्च करे कंगाल निहाल[22] ओही, ओही कक्ख थीं लक्ख बणा देवे ।
पातशाहाँ नूँ करे फ़क़ीर ओही, उत्ते तख़त बैंहा[22] गदा देवे ॥२९३॥

---

१. स्थिर। २. देंगे। ३. धब्बे। ४. श्रेष्ठ बुद्धि वाले। ५. प्रबन्ध। ६. कर्मचारी। ७. संतोषजनक। ८. विदा। ९. देखा था। १०. खाई (उठाई)। ११. वचन। १२. कहा हुआ। १३. (कें) बीच से। १४. लौट। १५. निर्लेज्ज। १६. पशु। १७. वचन। १८. होता है। १९. पछतावा। २०. अनन्त। २१. कटवा। २२. सम्पन्न।

तन्दुरुस्त[1] नूँ ओही बीमार करदा, ते बीमार नूँ ओही शफ़ा देवे।
नदियाँ नीर सुका[2] वहीर[3] करे, थलाँ विच्च चला दरेॳा देवे ॥२९४॥
ओही सुकेॲाँ नूँ देवे कर सावा, ओही खेरॲाँ[4] मीहँ बरसा देवे।
झबरदस्त नूँ करदा झेर ओही, ओही डुबदेॲाँ नूँ बन्ने ला देवे ॥२९५॥
रामचंदर बालक है ताँ के होया, चाहे रब्ब ताँ धनश उठा देवे।
सब कुझ *दिलशाद* विच्च हत्थ रब्ब दे, जिस नूँ चाहे उस नूँ फते चा देवे ॥२९६॥

रावण द्वारा अपनी बल-परीक्षा—

सुण के ख़बर सुअम्बर दी शाह रावण, कैहँदा धनश पैह्ले वेख आविए जी।
रंग ढंग उसदा लैए वेख जाके, नाले आपणा झोर अझमाविए जी ॥२९७॥
जावे चुकेॳा धनश जे न मैथों, ऐवें जाके किऊँ शरमाइए जी।
रहिए बैठ *दिलशाद* फिर चुप करके, काह्नूँ[5] आपणा भरम[6] गँवाइए जी ॥२९८॥
एही सोच के पेॳा फिर टुर रावण, वेस आपणा चा बदलाया सू[7]।
जनकपुर दे विच्च जद पौँह्चेॳा ए, हत्थ जाके धनश नूँ पाया सू ॥२९९॥
हलेॲाँ[8] धनश नहीं झरा झमीन उत्तों, झोर सारे शरीर दा लाया सू।
गई भुल्ल शेखी[9] *दिलशाद* सारी, शर्म विच्च दिल दे डाँढा[10] आया सू[11] ॥३००॥
आया परत वापस फिर विच्च लंका, कैहँदा मैं सुअम्बर ते जाँवणा नहिँ।
जावे चुकेॳा धनश न एह मैथों, बैह के राजेॲाँ विच्च शरमाँवणा नहिँ ॥३०१॥
लई रक्ख भगवान ने लाज मेरी, उत्थों हत्थ मेरे कुज्झ आँवणा नहिँ।
होसी जो *दिलशाद* ओह सुण लैसाँ, उत्थे जाके भरम गँवाँवणा नहिँ ॥३०२॥
झट पट गए गुँझर[12] दिन बाह्राँ, गेॳा दिन सुअम्बर दा आ साईँ।
बन-तन[13] राजे कई आन बैठे, दित्ता जनक लगा दरबार साईँ ॥३०३॥
पैह्लवान बलवान शाहझोर बौह्ते, गए बैठ ओ सभा जमा साईँ।
गई ख़लकत चौफेरॲाँ आ बौह्ती, रही हद्द-हसाब[14] न का साईँ ॥३०४॥

---

१. स्वास्थ्य। २. सूखा। ३. चालू। ४. बादलहीन (आकाश) से। ५. किसलिए। ६. आदर, प्रभाव। ७. उस (ने)। ८. हिला। ९. अभिमान। १०. बहुत। ११ उसको। १२ व्यतीत। १३. सज कर। १४. सीमा।

वज्जन ढोल[1] नेगारे[2] ते सुरनाईआँ[3], वाजे दिला नूँ रहे बधाँ[4] साईँ ।
विस्वामितर लैके लछमन राम ताईँ, बैठा विच्च दरबार दे जा साईँ ॥३०५॥
सूरत वेख के होवँदे मोह्त सारे, पए जान थीँ होण फ़िदा[5] सारे !
देवे रब्ब फतेह् रामचन्दर ताईँ, पई देवँदी ख़लक[6] दुआ साईँ ॥३०६॥
वारो-वाँर[7] दरबार थीँ उट्ठ राजे, जाके धनश नूँ रहे उठा साईँ ।
ते पैहॅलवान् जेहड़े भारे झोर वाले, ओ भी वेख के गए शरमा साईँ ॥३०७॥
हलेॲा धनश नहीँ झरा झमीन उत्तों, रहे झोर आपणा सारे ला साईँ ।
शरम विच्च दिल दे आई बौह्त भारी, बैठे आपणा भरम गँवाँ साईँ ॥३०८॥
डिट्ठा जनक राजे एह हाल जदोँ, लगा कैह्ण उठ के गुस्सा[8] खा साईँ ।
गए किधर छैतरी[9] अज्ज झोर वाले, बैठे ओ किऊँ मुँह छुँपा[10] साईँ ॥३०९॥
चंगिआँ[11] औरताँ[12] उन्हाँ थीँ कई हिस्से, आए मरद जो नाम धँरा[13] साईँ ।
रहे झोर सरीर दा ला सारे, सकेॲा धनश नहीं कोई हला साईँ ॥३१०॥
छतरी सूँरमा[14] रेहॅा नहिँ कोई किधरे, दित्ते मौत ने मार मुका साईँ ।
पैह्ले सुअम्बर थीँ भी कई आ चुके, गए धनश ते झोर अझमा साईँ ॥३११॥
सीता रैह्सी कुँवारी केॲा घर मैरे, एह आक्खदा जनक घबरा साईँ ।
ओ हुण वक़त *दिलशाद* न हत्थ आवे, जिस वक़त बैठा क़सम पा साईँ ॥३१२॥

धनश किसे न जद उठाया ए, राजा दिल दे विच्च घबराया ए,
कहे एह के रब विखाया ए, झोर किसे दा धनश ते चलेआँ[15] नहिँ ।
[16]वड्डे-वड्डे राजे बलवान आए, शाहझोर भारे पैह्लवान आए,
हत्थ सारेआँ धनश नूँ जा पाए, झरा धनश झमीन तों हलेआँ[17] नहिँ ॥३१३॥
नाँ सी ख़बर मैनूँ कसम कर बैठाँ, जान बुझ सिर ते भार धर बैठाँ,
दुःख विच्च कलेजड़े[18] जड़[19] बैठाँ, द्रख़त मैरी उमीद दा फलेआँ[20] नहिँ ।
ओ घर *दिलशाद* वीरान[21] है जी, कुँवारी जिस दी रही सन्तान है जी,
करदा लोक उस नूँ लॉन-तॉन[22] है जी, जित्थे डीवाँ[23] सुँहाग[24] दा बलेआँ[25] नहिँ ॥३१४॥

१, २, ३. बाजों के नाम । ४. बढ़ा । ५. बलिहारी । ६ जनता । ७. वारी वारी से । ८. क्रोध । ९. क्षत्रिय । १०. छिपा । ११. अच्छी । १२. स्त्रियां । १३. रखा । १४. शूरवीर । १५. चला । १६. बड़े-बड़े । १७. हिला । १८. दिल के । १९. लगा । २०. फला । २१. उजाड़ । २२. धिक्कार । २३. दीपक । २४. सौभाग्य । २५. जला ।

लक्ष्मण का जनक से वचन—

लछमण बोलेआ उठ के नाल गुस्से, कैहँदा सुणो मैं सच्च सुणा देवाँ ।
एह धनश माह्‌राज है चीझ केहड़ी, कहो ताँ तोड़ के हत्थ फड़ा[1] देवाँ ॥३१५॥

सूरज वंस नूँ जाणदे नहिँ तुस्सी, लौ वेख मैं हुण दिखला देवाँ ।
गए किऊँ घबरा *दिलशाद* ऐंवें, फ़िकर आप दे सारे हटा देवाँ ॥३१६॥

गल्ल धीरज दे नाल है करन चंगी, तेझी[2] करदा मरद [3]मैरदूद है जी ।
बीज-नास नहिँ किसे दा कदी होंदा, सभ कुझ बूँद न कुझ नाबूँद है जी ॥३१७॥

रक्खो याद माह्‌राज एह गल्ल मेरी, छतरी कौम [6]अँज्जे मौजूद है जी ।
बिना सोच विचार जो गल्ल करिए, होंदी ओ *दिलशाद* बेसूँद है जी ॥३१८॥

विश्वामित्र का लक्ष्मण से वचन—

विस्वामितर समझावँदा बाहोँ [8]फड़ के, बस बस न हो [9]गैरम लछमन ।
रामचंदर तेरा वड्डा भाई इत्थे, झरा उस दी कर शरम लछमन ॥३१९॥

[10]वँड्डे होन मौजूद ताँ छोटेआँ नूँ, ऐसा बोलना नहिँ धरम लछमन ।
उस जेहे्आ[11] *दिलशाद* नहिँ होर कोई, रैहँदा हो के जो नरम लछमन ॥३२०॥

विश्वामित्र का रामचन्द्र से वचन—

रामचंदर माह्‌राज नूँ कहे रिशी, तुस्सी झगड़ा एह मिटा देओ ।
गेआ सख़त घबरा है जनक राजा, उठो उस दे फ़िकर[12] हटा देओ ॥३२१॥

झोर [13]सँभणाँ दा लेआ वेख तुस्साँ, ताकत आपणी भी दिखला देओ ।
दिलशाद मैदान दे विच्च जाके, करो ढिल न धनश उठा देओ ॥३२२॥

रामचन्दर जी विच्च मैदान आके, खड़े होवँदे धनश दे कोल जाके,
राजे वेखदे पए [14]नंझीर लाँके[15], दिल विच्च कई ख़ेआल दौड़ावँदे नीँ ।
कैहँदे धनश नूँ [16]किंवें उठाएगा एह, हत्थ किंवें पहाड़ नूँ पाएगा एह,
भरम आपणा आप गँवाएगा एह, बैह के कुरसिआँ ते मुस्कराँवँदे[17] नीँ ॥३२३॥

---

१. पकड़ा । २. जल्दी । ३. कायर । ४. भाव-रूप । ५. अभाव-रूप । ६. अभी । ७. वृथा । ८. पकड़ कर । ९. तेज़ (क्रुद्ध) । १०. बड़े । ११. जैसा । १२. चिन्ता । १३. सब का । १४. टिकटिकी । १५. लगा कर । १६. कैसे । १७. मुसकुराते हैं ।

करसी केआ भला जोड़ मेल एह ताँ, नहिँ बच्चेआँ[1] बालड़ा खेल एह ताँ,
रहे वेलने[2] दिल विच्च वेलं[3] एह ताँ, ईक-दुवे[4] नूँ पए सुणावँदे नीँ ।
केआ दलील विच्च दिलदे आई ए जी, खलकत सारी *दिलशाद* तरसाई ए जी,
चक्को धनश नूँ देर किऊँ लाई ए जी, विस्वामितर माह्राज फरमाँवदे नीँ ॥३२४॥
लए सुण जद रिशी दे बोल मितरा, डँड[6] कढदे कपड़े खोल मितरा,
वजदे खुशिआँ दे पए ढोल मितरा, हत्थ जा के धनश नूँ पा[7] देंदे ।
वाँग[8] फुल्ल दे धनश उठाया नेँ, ज़रा चिर फिर कोई न लाया नेँ,
फिकर जनक दे नूँ चा हटाया नेँ, धनश हत्थ विच्च चुक दिखला देंदे ॥३२५॥

पकड़ धनश नूँ फिर घुमाण लग्गे, राजे विच्च दिल दे शरमाण लग्गे,
लोक जैं जैं कार बोलान लग्गे, मीहँ फुल्लाँ दा उत्ते बरसा देंदे ।
पकड़ धनश नूँ चा तरोड़ेआँ[9] नेँ, बाकी कुझ पिच्छे न छोड़ेआ नेँ,
वाह ! वाह !! जोड़ *दिलशाद* एह जोड़ेआ नेँ, होके खुश पए लोक दुआ देंदे ॥३२६॥
धनश त्रुटणे दी होई आवाज़ ऐसी, गोया बिजली कड़क के पई ए जी ।
गेआ गूँज असमान ते कँबी[10] धरती, कोई होश न किसे नूँ रही ए जी ॥३२७॥
जामे विच्च नहिँ मेओंदा[11] जनक राजा, पूरी क़सम उसदी हो गई ए जी ।
विस्वामितर दे कोल *दिलशाद* आके, राजे जनक फिर गल्ल एह कही ए जी ॥३२८॥

जनक का विश्वामित्र से वचन—

विस्वामितर दे कोल फिर जनक राजा, जाके होवँदा अरज़ गुज़ार साईँ ।
किरपा तुस्साँ दे नाल माह्राज सारे, होए रास मैरे कम-कार[12] साईँ ॥३२९॥
देवाँ टोर वज़ीर अजुध्या मैं, देओ आगेआ कराँ इन्तज़ार साईँ ।
देवे हाल सुणा वज़ीर जाके, लै आवे कर बरात तैयार साईँ ॥३३०॥
रिशी आखदा गल्ल है बौहत चंगी, लई तुस्साँ जो एह विचार साईँ ।
राही[13] कर सफीर[14] नूँ देओ जल्दी, करनी ढिल[15] हुण नहिँ दरकार साईँ ॥३३१॥

---

१. वाला । २. वेलने । ३. वेल । ४. एक-दूसरे । ५. कहते । ६. डण्ड पेलने लगे । ७. डाल देते हैं । ८. उपमा । ६. उन्होंने तोड़ दिया । १०. कांप उठी । ११. समाता था । १२. काम-काज । १३. चालू । १४. दूत । १५. देर ।

नाल आजझी दसरथ नूँ जनक राजा, लिखे ख़त मज़मून सँवार साईँ ।
सुणो अरज़ माह्राज सिरताज[1] मेरे, मैं गुलाम बंदा ताबेदार[2] साईँ ॥३३२॥
बाद अँदब-अदाब[3] दे हाल सारा, कराँ आप दे गोश-गुज़ार[4] साईँ ।
लिखे लेख नसीब दे आण मिलदे, टलदी[5] नहिँ कदी होलहार साईँ ॥३३३॥
हैसी धनश मौजूद इक कोल मेरे, वडुरगाँ मेरेआँ दी यादगार[6] साईँ ।
उस नूँ चुक न सकदा अहा कोई, उस दा वाँग पहाड़ दे भार साईँ ॥३३४॥
पूजा उस दी कराँ मैं नित जाके, छड्डाँ न खाली कोई वार साईँ ।
गेआ हो इक रोज़ इतफ़ाक ऐसा, सुणो राजेआँ दे सिरदार साईँ ॥३३५॥
जाणा बाह्र पै गेआ ज़रूर मैनूँ, कीते उज़र ताँ होए बेकार साईँ ।
पिच्छों धनश दे पूजणे वास्ते मैं, दित्ती कर राणी ज़िम्मेवार साईँ ॥३३६॥
मेरी अदम मौजूँदगी[10] विच्च राणी, धनश पूजदी छड्ड के ओर साईँ ।
लड़की आपणी नूँ लग्गी कैह्ण इक दिन, गई हो जद आप बीमार साईँ ॥३३७॥
अज्ज तूँ बेटी ! धनश पूज जाके, सिरों मेरेओं भार उतार साईँ ।
केह्या मां दा मन्न उठ गई लड़की, सक्की कर न ओ इन्कार साईँ ॥३३८॥
पौँह्ची धनश दे कोल जद ओ जाके, गई वेख के हो बेज़ार[12] साईँ ।
अहा धनश पेआ कई सदियाँ दा, लग्गे कूड़े दे हेठ अम्बार[13] साईँ ॥३३९॥
ताकत आही न किसे नूँ चुक्कणे दी, अहा वाँग पहाड़ दे भार साईँ ।
ताहीँ कर न सकेआ साफ़ कोई, नाहीँ उतरेआ गरद-गुब्बार साईँ ॥३४०॥
धनश चुक्क लड़की रक्खेआ इक पासे[14], जगह साफ कर दित्ती हमवार[15] साईँ ।
डिट्ठा धनश नूँ आणके मैं जदों, हो हैरान कीता इस्तफ़सार[16] साईँ ॥३४१॥
गई गल्ल मालूम जद हो मैनूँ, कीती किस पिच्छों एह कार साईँ ।
धनश चुक्कणा सैह्ल[17] न अहा ए ताँ, उस[18] कुदरताँ नूँ बलहार साईँ ॥३४२॥
लई तुरत क़सम मैं खा उत्थे, अते लेआ प्रण एह धार साईँ ।
जासी लै परणा हुण ओ सीता, होसी जो ऐसा बलकार[19] साईँ ॥३४३॥

---

१. शिरोमणि। २. सेवक। ३. अभिवादन। ४. कर्ण-गोचर। ५. रुकती। ६. स्मारक। ७. था। ८. निमित्त। ९. आपत्ति। १०. अनुपस्थिति। ११. संकोच। २१. रुचि-रहित। १३. ढेर। १४. ओर। १५. बराबर। १६. पूछ-ताछ। १७. आसान। १८. उस (भगवान्) की। १६. बलवान्।

दित्ता सुअम्बर रचा लै सुण शाहा !, देके विच्च मुलकाँ इश्तहार[1] साईँ ।
आए कई राजे शादी[2] करण कारण, बैठे आण ओ लौं[3] दरबार साईँ ॥३४४॥
डँण्ड[4]-पील पैहलवान शाहझोर भारे, गए आ ओही बन्ह[5] कतार[6] साईँ ।
विश्वामितर रिशी लैके नाल आया, दोवें आप दे राजकुमार साईँ ॥३४५॥
राजे उठ के आपणी जा उत्तों, चुक्कण धनश लग्गे वारोवार साईँ ।
आहे होर पैहलवान शाहझोर जेहड़े, लाके झोर ओही गए हार साईँ ॥३४६॥
हलेआ धनश नहीं झरा झमीन उत्तों, रहे फुरतिआँ कर हज़ार साईँ ।
चलेआ झोर न किसे दा धनश उत्ते, पाके हत्थ होए शरमसार[7] साईँ ॥३४७॥
लैके आगेआ रिशी दी रामचन्दर, निकले विच्च मैदान ललकार साईँ ।
वाँग फुल्ल दे चुक्केआ धनश ताईँ, कीती देर न इक पलकार[8] साईँ ॥३४८॥
लग्गे छिक्क के चिल्ला चढ़ान जदों, त्रुट[9] धनश होया टुकड़े चार साईँ ।
नाहिँ कोई मुग़ालता[10] विच्च इस दे, समझो सच मैरी गुफ़्तार[11] साईँ ॥३४९॥
दवाँ छोड़ कहाणिआँ लम्मिआँ[12] नूँ, होए तुस्सी मैरे रिश्तेदार साईँ ।
जँञ[13] लै आओ तुस्सी घर मैरे, सनेँ फौज लशकर अहलकार साईँ ॥३५०॥
इतणा लिख के ख़त कर वंद दित्ता, दित्ता टोर वझीर होशेआर साईँ ।
पेआ टुर वझीर फिर ख़त लैके, घोड़ा वाँग होएआ उड्डार[14] साईँ ॥३५१॥
चौथे रोझ अजुध्या जा पौहँता, खड़ा जाके राज-द्वार साईँ ।
'खड़ा जनक दा वाहर वझीर आके,' कीती अरझ जाके चोबँदार[15] साईँ ॥३५२॥
दसरथ आखेआ अन्दर बुलाओ जल्दी, है केआ उसनूँ सरोकार[16] साईँ ।
सुण के हुकम वझीर होगेआ हाज़र, विच्च सरकार दौलत-मँदार[17] साईँ ॥३५३॥
कीता अदब-अदाब अदा पैहले, दित्ता ख़त फिर वाहाँ उलार[18] साईँ ।
दसरथ पढ़ के ख़त नूँ खुश होएआ, लग्गा सिमरने नाम करतार[19] साईँ ॥३५४॥
घर बैठेआँ कम्म सभ रास[20] होए, होएआ रब्ब मैरा मददगार साईँ ।
दित्ता हुकम वरात तैय्यार करो, शुतर[21] फीले[22] घोड़े लौ सिंगार साईँ ॥३५५॥

---

१. विज्ञापन । २. विवाह । ३. लगा । ४. डण्ड (व्यायाम) करने वाले । ५. बाँध । ६. पंक्ति । ७. लज्जायुक्त । ८. पल । ६. टूट कर । १०. गलती । ११. बात । १२. लम्बी । १३. बरात (जनेत) । १४. उड़ने वाला । १५. द्वारपाल । १६. काम । १७. दरबार । १८. ऊपर करके । १६. परमात्मा । २०. ठीक । २१. ऊँट । २२. हाथी ।

देॲो हुक्म सुणा एह फौज नूँ भी, चले लै के नाल हथेॲार साईँ ।
झट-पट हो गए तैयार सारे, फौरन हुक्म सुनीदेॲाँ[1] सार साईँ ॥३५६॥

किसे चीझ दी कमी न रही कोई, लई नाल जिन्स वे-शुमार साईँ ।
लैके जञ नूँ नाल *दिलशाद* राजा, जनकपुर नूँ गेॲा सुधार साईँ ॥३५७

जनकपुर में तैयारी—

अजुध्या भेज वझीर नूँ जनक राजे, रक्खे कर सारे इन्तझाम पिच्छोँ ।
तम्बू विच्च मैदान लगवा के ते, रक्खेॲा शैह्‌र सजवा तमाम पिच्छोँ ॥३५८॥

किसे गल्ल दी कसर न रैह्‌ण दित्ती, कीत्ते कम्म तमाम[3] अञ्झाम पिच्छोँ ।
होदाँ कम्म *दिलशाद* है ओही चंगा, जिदे कीतेॲाँ निकलदा नाम पिच्छोँ ॥३५९॥

जनकपुर में बरात का आगमन—

दशरथ लै के जञ अजुध्या थीँ, जनकपुर विच्च पौहँचदा आन साईँ ।
हत्थ जोड़ के जनक खलो रेहॲा, धिॲाँ[5] देंदिॲाँ त्रोड़[6] अभमान साईँ ॥३६०॥

झवर-दस्ताँ नूँ करन झेरँ धिॲाँ, धिॲाँ राजेॲाँ नूँ चा निवान साईँ ।
देके धी नहिँ होवँदी ॲक्ख उच्ची, धिॲाँ रैह्‌न नहिँ देंदिॲाँ मान साईँ ॥३६१॥

जञ होई दाखल विच्च शैह्‌र आके, लै सुण हुण अग्गों बेॲान साईँ ।
दित्ता दसरथ नूँ खोल इक्क मैह्‌ल सोह्‌णा, लँत्थी[10] फौज जा विच्च मैदान साईँ ॥३६२॥

बाकी प्यारेॲाँ जाञिॲाँ सारेॲाँ नूँ, दित्ते खोल अजीब मकान साईँ ।
दित्ता कर मौजूद हर इक्क डेरे, खाण-पीणँ[11] दा सभ सामान साईँ ॥३६३॥

गई जञ जमींअँत[12] जद हो सारी, जनक दसरथ नूँ लग्गा सुणान साईँ ।
कीती मेहरबानी मैं ग़रीब उत्ते, होऍआ मैं ममनून-एहसान[13] साईँ ॥३६४॥

तकलीफ होई विच्च सफ़र झरूर होसी, करनी मुआफ मैं मुआफी-खाहान[14] साईँ ।
[15]बरकत क़दम [16]तुसाडड़ी नाल मैरा, गेॲा हो रोशन खानदान साईँ ॥३६५॥

---

१. सुने जाने पर। २. ही। ३. सारे। ४. पूर्ण। ५. पुत्रियां। ६. तोड़। ७. नीचे। ८. झुका देती हैं। ९. आंख। १०. उतरी। ११. खान-पान। १२. इकठी। १३. उपकार से उपकृत। १४. क्षमा-प्रार्थी। १५. पदार्पण-सौभाग्य। १६. आपकी।

तुस्साँ नाल बराबरी नहीं मैरी, मैं [1]महकूम तुस्सी [2]हुक्मरान साईँ ।
कुशध्वज राजा है [3]भिरा मेरा, कन्याँ घर उस दे दो जवान साईँ ॥३६६॥
मैरे घर भी लड़किआँ दो शाहा, दित्ता मेल एह जोड़ भगवान साईँ ।
रब्ब तुस्साँ नूँ भी पुत्र चार दित्ते, चारे लड़किआँ चार परनान साईँ ॥३६७॥
अग्गों [4]मरज़ी-मुबारक जो आप दी ए, मैं ताँ [5]ताबेआँ हाँ [6]फ़रमान साईँ ।
विश्वामितर रिशी एह गल्ल सुण के, लग्गा जनक नूँ फिर समझान साईँ ॥३६८॥
इस गल्ल जही नहिँ गल्ल कोई, केहआ तुस्साँ दा है [7]परवान साईँ ।
आएआ उठ उत्थों जनक खुश होके, बाजे खुशी दे लग्गा वजवान साईँ ॥३६९॥
घड़ी शुभ [8]नछत्र ओ शुभ आही, चारे [9]शादिआँ चा रचान साईँ ।
चढ़ी जञ [10]कँर-फर दे नाल ऐसी, गेआ गूँज ज़मीन असमान साईँ ॥३७०॥
करन [11]रसम-रसूम नूँ लग्गे पूरा, चारे वेदिआँ चा लगवान साईँ ।
गेआ बैठ जनक हत्थ बन्ह कंगना, दित्ते कर चारे कन्या-दान साईँ ॥३७१॥
गइयाँ खुशी दे नाल हो शादिआँ नीं, पए खुशिआँ लोक मनान साईँ ।
रंगारंग दी आही मिठाई ख़स्ता, जाञीँ [12]रोज़मर्रा लग्गे खान साईँ ॥३७२॥
[13]लड्डू [14]पेड़ा [15]जलेबी ते होर [16]बर्फी, [17]कलाकंद [18]बेदाना पकवान साईँ ।
[19]पिस्ता [20]कन्दी [21]पतीसा ते [22]सोन-हलवा, [23]फिरनी खीर भी पए वरतान साईँ ॥३७३॥
[24]रसगुल्ले विच्च मुँह दे पए घुलदे, [25]बून्दी [26]शक्करबारे दिल नूँ भान साईँ ।
[27]कड़ाह केसरी रंग दा अहा पीला, विच्च थालिआँ आन टिकान साईँ ॥३७४॥
समोसा पूड़ी कचौड़ी पकौड़िआँ भी, होर लाची सुपारी ते पान साईँ ।
सत्त दिन रक्खी जञ जनक राजे, घर आपणे विच्च मेहमान साईँ ॥३७५॥
कीती रुख़सत जञ फिर दिन अट्ठवें, [28]कुड़िआँ गीत [29]विदायगी गान साईँ ।
दित्ता लड़किआँ नूँ पा विच्च डोली, धिआँ धन [30]पराँई [31]अमान साईँ ॥३७६॥
[32]दाज हद-हसाब थीँ बाहर दित्ता, हीरे लाल मोती [33]मिरजान साईँ ।
दिलशाद राजा दसरथ जञ लै के, वापस होएआ अजुध्या [34]रवान साईँ ॥३७७॥

१, सेवक । २. मालिक । ३. भाई । ४. शुभ इच्छा । ५. मानने वाला । ६. आज्ञा । ७. प्रमाण, ठीक । ८. नक्षत्र । ९. ब्याह । १०. सज-धज । ११. रीति-रिवाज । १२. प्रतिदिन । १३–२६. विशेष मिठाइयों के नाम । २७. हलुवा । २८. कन्याएँ । २९. विदा सम्बंधी ३०, दूसरे की । ३१. अमानत । ३२. दहेज । ३३. विशेष मणि । ३४. प्रस्थित ।

मार्ग में परशुराम से मेल—

जनकपुर थीं जञ जद मुड़ गई ए, विच्च राह मुसीबत आन पई ए,
कंब[1] सारिआँ दी थर-थर जान रही ए, परसराम मिलिआ हुण आन अग्गों।

एह बेला[2] भारी इक अफात[3] हैसी, दुश्मन छतरिआँ दी ब्राह्मण ज्ञात हैसी,
लई रोक उस सारी बरात हैसी, होके लाल एह लग्गा सुणान अग्गों ॥३७८॥

है ओ कौण जिस धनश त्रोड़ेआ ए, उस नूँ किऊँ न किसे ने होड़ेआँ ए,
बेड़ा आपणा उसने बोड़ेआँ ए, कुहाड़ा[6] चुक्क के पेआ ने खाण[7] अग्गों।

निकल मुँह उस दे विच्चों अग्ग रही ए, गरम हो उसदी रग-रंग रही ए,
सारी जञ मिन्नताँ करन लग्ग पई ए, लग्गा शोर *दिलशाद* मचाने[9] अग्गों ॥३७९॥

गुस्से नाल अक्खीं लालोलाल होईआँ, कैहर[10] नाल भरी निगाह[11] डरा रही ए।
राजा दसरथ भी डर के कंबन[12] लगा, ते बरात तमाम घबरा गई ए ॥३८०॥

जांदी पेश नहीं इस दे नाल कोई, कैहण मौत असाडड़ी[13] आ रही ए।
जाए नस्स[14] के दस्स[15] *दिलशाद* कित्थे, नाहीं छप्पण संदी[16] कोई जाँ[17] रही ए ॥३८१॥

लई जञ दी कर पड़ताल जदों, रामचन्दर वल फिर धेआन होएआ।
कैहँदा धनश इस किवें त्रोड़ेआ ए, विच्च दिल दे सख़त हैरान होएआ ॥३८२॥

गुस्से नाल कचीचिआँ[18] वट्टन[19] लग्गा, रत्ता[20] लाल होके कैहरवान[21] होएआ।
रामचन्दर माहराज दे कोल आके, परसराम *दिलशाद* गोयान[22] होएआ ॥३८३॥

परशुराम का वचन—

केहड़े झोर ते हो मगरूर[23] बैठों, दस्स खाँ[24] कर केहड़ी ऐसी कार आएओं।
औरत मार बहादरी नहीं कोई, होएआ के जे ताड़का मार आएओं ॥३८४॥

धनश त्रोड़ के हत्थ के आएओ ई, मौत आपणी कर तैयार आएओं।
बैठों समझ *दिलशाद* मैं जित्ते[25] आएआँ, एह नहिँ जित्तेआँ[26] बल्के हार आएओं ॥३८५॥

---

१. कांपा। २. कष्टप्रद वस्तु। ३. बाधक वस्तु। ४. रोका। ५. डुबोया। ६. कुल्हाड़ा। ७. खाने को। ८. नस-नाड़ी। ९. करने। १०. क्रोध। ११. दृष्टि। १२. कांपने। १३. हमारी। १४. भाग। १५. बताओ। १६. की। १७. जगह। १८. क्रोध से अंगों को सुकेड़ना। १९. कसने। २०. रक्त। २१. क्रोधयुक्त। २२. कहने लगा। २३. अभिमानी। २४. मैं कहता हूँ। २५. जीत। २६. जीता।

दशरथ की परशुराम से विनती—

लई दसरथ ने सुण जद गल्ल इतणी, विच्च दिल दे ख़ौफ़[1] जरूर होएँआ ।
भुल्ली होश ते सुरत न रही कोई, प्यादा-पा[2] आ हाज़िर हज़ूर[3] होएँआ ॥३८६॥
हत्थ जोड़ के मिन्नताँ[4] करन लग्गा, नाल डर दे रंग काफ़ूर होएँआ ।
है मासूम बालक अनजान एह ताँ, करो मुआफ इस थीं जो कसूर होएँआ ॥३८७॥
पुराना धनश हैसी कई सदिआँ[6] दा, हत्थ लाँदेआँ एह चकनाँचूर होएँआ ।
रेहआ आख *दिलशाद* हज़ार राजा, वैले[8] इक नहीं उत्थे मनज़ूर होएँआ ॥३८८॥

लक्ष्मण का परशुराम से वचन—

लछमन होके सामने नाल गुस्से, कैहँदा अग्ग इतनी पेआ फँक नाहीँ ।
कर एँहमका[10] शरम न गरम हो तूँ, मुँहोँ पेआ वेहूदा[11] बक नाहीँ ॥३८९॥
अज तक नहिँ मिलेआ कोई तैनूँ, करके लाल अक्खीँ पेआ तक नाहीँ ।
रक्खें ख़ाहिशँ[12] जे ताकत वेखणे दी, निकल आ मैदान विच्च झँक[13] नाहीँ ॥३९०॥
देसाँ खाक दे विच्च मिला तैनूँ, समझीँ सच्च करीँ ज़रा शक नाहीँ ।
कन्न वलेटें[14] *दिलशाद* जा नस्स[15] इत्थों, पेआ सिर ते चुक फ़लक[16] नाहीँ ॥३९१॥

परशुराम का उत्तर—

परसराम फिर गज्ज के कैह्‌ण लग्गा, होके गिदड़ झगड़ा नाल शेर न कर ।
कीड़ी होके टक्कर पहाड़ मारें, मत्तमारेआँ[17] ऐडे अँन्हेर[18] न कर ॥३९२॥
तेरे खून दे नाल के हत्थ भेराँ[19], जा के जान छिपा गल्ल फेर न कर ।
जे ज़िन्दगी लोड़नाँ एँ, जा नस्स इत्थों ज़रा देर न कर ॥३९३॥

मण का वचन—

एह दस्स मैनूँ हैं तू चीज़ केहड़ी, पिच्छे हट जा जे भला चाह्‌वनाँ[20] एँ ।
आपे बनें मुँहो पेआ मियाँ-मिट्ठू[21], तीस-मार[22] भी आपे कहावनाँ एँ ॥३९४॥
तेरे जेहे अग्गे कितने वेख चुके, तू हुण किस नूँ पेआ डरावना एँ ।
रामचन्दर माहराज दी लग्ग शरणीँ, किउँ जान *दिलशाद* गँवावनाँ[23] एँ ॥३९५॥

१. भय । २. पाओं से चल कर । ३, श्रीमान् के सामने । ४. विनय । ५. अबोध । ६. शताब्दिआँ । ७. टुकड़े-टुकड़े। ८. परन्तु । ९. खा, फँक, । १०. मूर्ख । ११. व्यर्थ । १२. इच्छा । १३. सकुचा । १४. छिपा करके । १५. भाग । १६. आकाश । १७. नष्ट-बुद्धि । १८. अंधेर=(मूर्खता की बातें) । १९. भिगोऊँ । २०. चाहते । २१. अपनी स्तुति आप करने वाला । २२. भारी मार करने वाला । २३. नष्ट करना ।

परशुराम का प्रतिवचन—

है चीझ केहड़ी रामचन्दर तेरा, कदी झल्ल[1] न सकेंगा वार मेरा,
होवे सामने जे ओह इक फेरा, गरदन कट के परे वगा[2] देवाँ।
ऐंवें कर न पेआ तूँ गल्ल टेहड़ी, लग्गों चढ़न किउँ मौत दी तूँ बेड़ी,
ताकत वेख लैसाँ तेरी है जेहड़ी, पैहले तैनूँ ही मार मुका[3] देवाँ ॥३९६॥

पिच्छों मारसाँ बाकिआँ सारेआँ नूँ, इन्हाँ जाञिआँ रब्ब देआँ मारेआँ नूँ,
सकसन[4] मिल न जाके पेआरेआँ नूँ, कुहाड़ा चुक के इक चला देवाँ।
लेआ समझ, मूरख नादान[5] हैं तूँ, कोई दम दा हुण मैहमान हैं तूँ,
पौहूँता मौत दे मुँह विच्च आन हैं तूँ, तैनूँ सच्च *दिलशाद* सुणा देवाँ ॥३९७॥

लक्ष्मण का वचन—

लछमन आखदा एह[6] तूँ के कही ए, मेरे गुस्से दी अग्ग हुण भड़क पई ए,
रग-रँग मेरी हो गरम रही ए, सिर वेख मैं तेरा उड़ान लगाँ।
मददगार तेरा दस है केहड़ा, लड़सी नाल मेरे इत्थे आण जेहड़ा,
तेरी झिन्दगी दा लगा डुब्बन वेड़ा, तेरा नाम निशान मिटान लगाँ ॥३९८॥

लगा करन ग़रूर है चूर तैनूँ, आँदा मौत ने पकड़ ज़रूर तैनूँ,
माफी मंग बख़शावाँ कसूर तैनूँ, ऐवें जान किऊँ मुफ्त गँवान लगा।
निकल सामने आ मैदान दे विच्च, जेकर है ताकत तेरी जान दे विच्च,
नाहिं ताँ रहेंगा पिच्छों अरमान दे विच्च, मैं हुण तीर *दिलशाद* चलान लगाँ ॥३९९॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण से वचन—

रामचंदर माहराज फेर कैहण लग्गे, हो जा तूँ हुण बस ख़ामोश[10] भाई।
मेरे नाल कर लैन दे गल्ल इस नूँ, करना नहिँ चाहिए इतना जोश भाई ॥४००॥

देसाँ कर पूरा मैं घर इस दा, भुल्ल जाएगी इस नूँ होश भाई।
तकसी[11] परत दिलशाद न फेर पिच्छों, नस जाएगा पकड़ के गोश[12] भाई ॥४०१॥

---

१. सह। २. फैंक। ३. समाप्त कर। ४. सकेंगे। ५. अबोध। ६. यह (बात)। ७. प्रत्येक नाड़ी। ८. चूर्ण (नष्ट)। ९. क्षमा करवाता हूँ। १०. चुप। ११. देखेगा। १२. कान।

रामचन्द्र का परशुराम से वचन—

रामचंदर माहराज फेर कैहण लगे, इस धनश नूँ मैं तरोड़ेआ ए।
नहिं कुझ निकलदा हुण अफसोस विचों, त्रुटे होए नूँ कद किसे जोड़ेआ ए॥४०२॥

खफ़ा होए जे लछमन दी गल्ल उत्ते, मैं ताँ बहुँ उस नूँ पेआ होड़ेआ ए।
गेआ हो *दिलशाद* जो होवना सी, होनहार नूँ दस्सो किस मोडेआ ए॥४०३॥

परशुराम का रामचन्द्र से वचन—

वाँग शेर दे गज्ज के कैहण लगा, लै सुण मैं तैनूँ सुणा देवाँ।
आहे दो धनश भारे विच्च दुनिया, मुखतसिर[3] मैं हाल बतला देवाँ॥४०४॥

इक शिवाँ दा धनश जो तरोडेआ तूँ, एह लै वेख दूजा मैं विखा देवाँ।
मेरे दादे नूँ दित्ता सी एह विष्णु, सारी वाकफी[4] तैनूँ करा देवाँ॥४०५॥

पिछों बाप मेरे दे हत्थ आया, कराँ झाहिर[5] एह किऊँ छिपा देवाँ।
दित्ता बाप ने बखश एह धनश मैनूँ, नाल इसदे धरत[6] हिला देवाँ॥४०६॥

राजे अरजन ने मारेआ बाप मेरा, ते मैं हो गुस्से कसम खा देवाँ।
छैत्री[7] जीवँदा छोड़साँ न कोई, तुखम[8] छत्रिआँ दा मैं मुका देवाँ॥४०७॥

मारे हद्द-हिसाब[9] थीं वाहर मैं ताँ, नदी खून दी फिर वँहा[10] देवाँ।
गेआँ[11] हो पैदा अज तूँ कित्थों, विच्च खाक दे तैनूँ मिला देवाँ॥४०८॥

अन्न-जल तेरा अज खतम होएआ, नींदरे[12] मौत दी तैनूँ सँवा देवाँ।
तरोड़ धनश नूँ हत्थ के आएंओ ई, मज़ा उस दा हुण चखा देवाँ॥४०९॥

आ चुक्क के धनश ऐह वेख मेरा, शेखी सब मैं तेरी भुला देवाँ।
लैसें धनश भी चुक्क *दिलशाद* जे तूँ, जासें बच न सच्च सुना देवाँ॥४१०॥

लक्ष्मण का परशुराम से वचन—

लछमन सुण के फिर नहीं रह सकेआ, कैंहदा तरोड़ तेरे इत्थे दन्द[13] देवाँ।
तेरे इस्से कुहाड़े दे नाल इत्थे, कर जुदा सारे बन्द-बन्द[14] देवाँ॥४११॥

करें झूठिआँ शेखिआँ किऊँ पेआ, एह हटा तेरे मकर-फंद[15] देवाँ।
दिलशाद तैनूँ अज मार के मैं, कर दूर संसार तो गन्द देवाँ॥४१२॥

१. रोका। २. लौटाया। ३. संक्षेप से। ४. परिचय। ५. प्रकट। ६. धरती। ७. क्षत्रिय। ८. बीज। ९. सीमा और संख्या। १०. प्रवाहित कर। ११. गया है। १२. नींद। १३. दाँत। १४. प्रत्येक जोड़। १५. कपट-जाल।

परशुराम का वचन—

परसराम कचीचिआँ[1] वट[2] के ते, बोल शेर वाँगों अगों गज्जेआ ए।
करां हत्थ तेरे उत्ते[3] साफ पहिले, जेकर जीऊने थीं दिल रज्जेआ[4] ए ॥४१३॥
गेआ वचना हो सुहाल[5] तेरा, ढोल मौत दा सिर ते वज्जेआ ए।
समझ सच्च *दिलशाद* यकीन करके, कासा[6] झिन्दगी दा अज्ज भज्जेआँ[7] ए ॥४१४॥

रामचन्द्र का परशुराम से वचन—

रामचन्दर माह्‌राज फिर कैह्‌न लग्गे, करो हुकम जो कुछ फरमावँदे ओ।
देओ, चुक्क के धनश दिखला देवाँ, मेरे झोर नूँ जे अझमावँदे ओ ॥४१५॥
होवे ख़ाहिश विच्च दिल जे होर कोई, देओ दस्स जो कुछ तुसी चाहवँदे ओ।
करो गल्ल *दिलशाद* जी नाल मेरे, पए शोर इतना काह्‌नूँ पावँदे ओ ॥४१६॥
इतना आख के धनश फिर कस्स[8] लैंदे, देंदे दस्स[9] फिर चिल्ला[10] चढ़ा[11] के ते।
चेहरा[12] नाल गुस्से हो लाल गेआ, कैहँदे तीर विच्च धनश दे पाके[13] ते ॥४१७॥
कहो केआ तुसाडड़ी है मरझी, देओ दस्स झरा फरमा के ते।
लेआ भरम[14] *दिलशाद* गँवा अपना, केआ हत्थ आया इत्थे आ के ते ॥४१८॥
जल्दी कहो माह्‌राज जो है कैह्‌णा, नहिँ ताँ मैं हुण तीर चला देवाँ।
कोई अंग्ज[15] तरोड़ के छोड़ देवाँ, या के सुरग[16] दे विच्च पहुँचा देवाँ ॥४१९॥
खाली कदी न जाँवसी[17] वार मेरा, समझो सच्च मैं एह सुणा देवाँ।
दस्सो केआ *दिलशाद* जी है मरझी, जेकर कहो ताँ मार मुका देवाँ ॥४२०॥

परशुराम की दशा—

चेहरा लाल माह्‌राज दा वेख के ते, परसराम दा दूर ग़रूर होया।
भुल्ली[18] सुरत[19] ते जुरत[20] न रही कोई, सारा सत्त[21] सरीर थीं दूर होया ॥४२१॥
हुण ताँ डर के थर-थर कँबन लग्गा, नाल खौफ दे रंग काफूर होया।
हत्थे जोड़ के अरझ *दिलशाद* करदा, देओ बखश मैंथीँ[22] जो कसूर होया ॥४२२॥

---

१. क्रोधवश अंगों का कसा जाना। २. कस। ३. ऊपर। ४. तृप्त हो गया। ५. कठिन। ६. प्याला। ७. टूट गया। ८, कस, खींच। ९. दिखा। १०. धनुष की डोरी। ११. खींच। १२. मुख। १३. डाल। १४. मान। १५. अङ्ग। १६. स्वर्ग। १७. जाएगा। १८. भूल गई। १९. चेतनता। २०. साहस। २१. सत्ता। २२. मुझ से।

लेॲा धनश तुसाँ जिस वकत मैंथीँ, उस वकत माह्राज मैं जाण गेॲा।
कीता नूर कमाल झहूर[1] तुस्साँ, अनोखा विच्च जहान पैह्चान गेॲा ॥४२३॥
तुस्साँ नाल बराबरी नहिँ मैरी, मैं ताँ हार सै वार हुण मान गेॲा।
देॲो बख़्शश *दिलशाद* जी जान मैरी, लैणा समझ ब्राह्मण लै के दान गेॲा ॥४२४॥

रामचन्द्र का दयाभाव—

परसराम दी सुण के मिन्नत-झारी[2], रामचन्दर वेखो मेह्रबान होया।
करके रैह्म कसूर चा मुआफ कीता, परसराम ममनून-एहसान[3] होया ॥४२५॥
कीती देर न पल दी फेर उत्थे, सिद्धा तरफ पहाड़ रवान होया।
पिच्छों परत *दिलशाद* नहीं फिर तक्केआँ[4], शुकर-गुझार[5] बचा के जान होया ॥४२६॥

अयोध्या में प्रवेश—

परसराम गेॲा जदों टुर उत्था, अते साफ हो गेॲा मैदान पेॲारे।
राजा दसरथ भी वेख के खुश होया, गोया[6] तन[7] अन्दर आई जान पेॲारे ॥४२७॥
नाझल[8] होई वेला[9] अझीम[10] आही[11], कैहँदा जान बचाई भगवान पेॲारे।
होंदी नाही बराबरी नाल उस दे, कीती रब्ब मुशकल आसान पेॲारे ॥४२८॥
उसे वकत कर दित्ता फेर कूच[12] उत्थों, लैके जञ हो पेॲा रवान पेॲारे।
गेॲा पहुँच अजुध्या विच्च आ के, घर-घर खुशिआँ लोक मनान पेॲारे ॥४२९॥
डोले[13] होए महल्लाँ दे विच्च दाखल, सोहले[14] खुशी दे औरताँ गान पेॲारे।
कुशल्या राणी सुमित्राँ कैकई अग्गे, नूहाँ[15] जाके सीस निवान पेॲारे ॥४३०॥
वेख राणिआँ होन्दिआँ खुश पइआँ, पइआँ दिल थीं होण कुरबान पेॲारे।
कीते रसम-रसूम[16] अंदा[17] सारे, कीता होर बहुता पुन-दान पेॲारे ॥४३१॥
दित्ता दे इनाम सभ अहलकाराँ[18], रेहेआ खाली न कोई इनसान पेॲारे।
कई रोझ रेहेॲा जशन[19] शैह्र अन्दर, जारी लंगर[20] गरीब पए खान पेॲारे ॥४३२॥
मुखतसिर मैं दित्ता सुणा इत्थे, है बे-फायदा तूल[21] वधान पेॲारे।
लेआ हाल *दिलशाद* एह सुण सारा, अगों होर कर झिकर वेॲान पेॲारें ॥४३३॥

॥ इति बाल-काण्ड समाप्त ॥

१. प्रकाश। २. विनय-पुकार। ३. उपकार द्वारा अनुगृहीत। ४. देखा। ५. धन्यवादी। ६. दूसरे शब्दों में। ७. शरीर। ८. आ पड़ी। ९. भूतनी। १०. बड़ी भारी। ११. थी। १२. प्रस्थान। १३. (वधुओं से युक्त) पालकिआं। १४. प्रशंसा के गीत। १५. स्नुषाएँ; पुत्र-वधुएँ। १६. रीति-रिवाज। १७. पूरे। १८. कर्मचारी-वर्ग को। १९. उत्सव। २०. अन्न-भण्डार। २१. विस्तार।

अयोध्या काण्ड

युधाजित् का आगमन—

युधाजित राजा मामा भरथ सँदा, भरथ लैंण अजुध्या आएँआ ए ।
राजे दसरथ दे कोल आ अरज़ करदा, मेरे पिता माह्‌राज फरमाएँआ ए ॥ १ ॥

भरथ वेक्खेँआँ नूँ होए दिन बौह्‌ते, भरथ वेक्खने नूँ दिल चाहॅआ ए ।
देॲो भरथ नूँ टोर *दिलशाद* तुस्सी, मेरे नाल ऍह आख सुनाएआ ए ॥ २ ॥

भरत एवं शत्रुघ्न का गमन—

राजे दसरथ ने लेॲा एह सुण जदोँ, तैयार सफर[1] दा चा सामान कीता ।
प्यारे भरथ अते छत्रघन ताईँ, मामे भरथ दे नाल रवान कीता ॥ ३ ॥

घर नानके[2] भरथ जी पौहँच गए नीँ, अग्गों वेख नाने आदर मान कीता ।
कुझ दिनां दे बाद *दिलशाद* दसरथ, विच्च दरबार दे बैठ बेॲान कीता ॥ ४ ॥

दरबार में दशरथ का भाषण—

इक रोज़ दरबार दे विच्च राजे, कीती बैठ के एह तँकरीर[3] है जी ।
गई उमर अज़ीज़ हुण गुज़र मेरी, गेॲा आ हुण वक्त आखीर है जी ॥ ५ ॥

ताकत आन सारी ज़ायल[5] होण लग्गी, ते कमज़ोर हो गेॲा सरीर है जी ।
विच्च दिल दे हवँस नहीँ रही कोई, हटी हिरँस अखीर बेपीरँ है जी ॥ ६ ॥

लेॲा राज भी रँज्ज के कर मैं ताँ, कीती बहुँ अज तक गीरोगीरँ है जी ।
रामचन्दर नूँ तख़त बिठला देवाँ, लायक तख़त ओ नेक-ख़ँमीर[11] है जी ॥ ७ ॥

देवाँ राज-तिलक हँत्थीँ[12] आपणी मैं, एह गल मेरे दिल-पँज़ीर[13] है जी ।
अकलमंद दाना होशिआर है ओ, ते बलवान भारा सूरवीर है जी ॥ ८ ॥

---

१. यात्रा । २. ननेहाल । ३. व्याख्यान । ४. प्यारी । ५. नष्ट । ६. अभिलाषा । ७. तृष्णा । ८. निगुरी । ९. तृप्त होकर । १०. परिग्रह-शीलता । ११. सु-जात । १२. हाथ से । १३. मन-भाती ।

पेआरा ओ ही तारा मेरा अक्खिआँ दा, ओ ही दिल मेरे दा धीर[1] है जी ।
सोह्नी सूरत उस दी वेखने नूँ, खलकत दौड़दी घंत[2] वहीर[3] है जी ॥ ९ ॥
दस्सो केआ तुसाडड़ी है मरज़ी, कैहँदा तुस्साँ दा केआ ज़मीर[4] है जी ।
अग्गों उठ वज़ीराँ ने अरज़ कीती, एह तजवीज़ सोह्णी बे-नज़ीर[5] है जी ॥१०॥
करो कम्म माह्राज एह बौह्त जल्दी, करनी इस विच्च नहिँ ताखीर[6] है जी ।
दिलशाद नहिँ जानदा एह राजा, विच्च नसीब[7] दे केआ तहरीर[8] है जी ॥११॥

राजा का वसिष्ठ से वचन—

लग्गा गुरु वसिष्ठ नूँ कैह्ण राजा, तैयार तुस्सी सामान करवाओ जल्दी ।
राजतिलक दे के रामचन्दर ताईँ, उत्ते तखत दे चा बिठाओ जल्दी ॥१२॥
हुक्मरान जो ज़ेर-फ़रमान[9] मेरे, लिख मुरासले[10] सभ बुलवाओ जल्दी ।
करनी देर *दिलशाद* न ज़रा चाहिए, इस कम्म नूँ तोड़ चढ़ाओ जल्दी ॥१३॥

राजतिलक की तैयारी—

जमाँ तुरत सामान हो गेआ सारा, मेरे प्यारेआ जो मतलूब[11] है सी ।
दित्ता शैह्र सजा तमाम लोकाँ, कीता ओही जो दिल मरगूब[12] है सी ॥१४॥
चढ़ के आए माह्राजे ते होर राजे, वाह ! वाह !! मौका नादर[13] अजूब[14] है सी ।
दिलशाद नहिँ वेखेआ तूँ जा के, राज तिलक सँदा जलसा खूब है सी ॥१५॥

समारोह—

राज-तिलक दी मच गई धूम यारा, वाजे पए चौतरफी वज्जदे नीँ ।
रामचन्दर दी सूरत साँवली नूँ, वेख वेख के लोक न रज्जदे[15] नीँ ॥१६॥
सोह्णा मौसम महीना चेत दा सी, पए बदल असमान ते गज्जदे[16] नीँ ।
होवे कोई उस वकत दा ताँ दस्से, जानन लोक *दिलशाद* के अज्ज दे नीँ ॥१७॥

राजा की घोषणा—

करदी खुशिआँ पई तमाम खलकत, बैठा दसरथ दरबार लगा के ते ।
इकट्ठे हो राजे गए आ सारे, बैठे विच्च दरबार दे जा के ते ॥१८॥

---

१. ढारस । २. बना कर । ३. पंक्ति, धारा । ४. अन्तरात्मा । ५. अनुपम । ६. देर । ७. भाग्य । ८. लेख । ९. अधीन । १०. पत्र । ११. अभीष्ट । १२. धारण । १३. दुर्लभ । १४. अद्भुत । १५. तृप्त होते । १६. गरजते ।

राज-तिलक कल सुबह ज़रूर होसी, राजा आखदा एह सुणा के ते।
लगा होण *दिलशाद* आझाद मैं ताँ, रामचन्दर नूँ तखत विठला के ते ॥१९॥

कवि-वचन—

बंदा करे तदबीर तकदीर हस्सदी, कीती सोच कोई पेश न जाँवदी ए।
नाहीं मौत दे वकत दी खबर किसे, नाहीं समझ नसीव[1] दी आँवदी ए ॥२०॥

करिए कुझ ताँ होवँदा कुझ है जी, किसमत रंग अजीब दिखलाँवदी ए।
हस्सन दिन नूँ पए *दिलशाद* जेहड़े, होणी रात नूँ उह्नाँ रुवाँवदी ए ॥२१॥

मन्थरा का कैकिया से वचन—

गोली[2] मन्थरा पास कैकई दे जा, बोली कराँ गल पर तूँ खफा[3] होसें।
अज्ज हस्सदी खेडदी पई दिस्सें, कल विच मैह्लाँ वैह के पई रोसें ॥२२॥

लगसी दाग़ कलेजड़े विच कारी[4], पई मल मल हञ्जुआँ[5] दे नाल धोसें[6]।
गेआ वकत *दिलशाद* न हत्थ औसी[7], विच अफसोस वैह के सिर दे बाल खोसें[8] ॥२३॥

कैकयी का दासी से वचन—

दस्स मन्थरा होआ अज्ज के तैनूँ, कहे[9] बोल अंवलड़े[10] बोल रही एँ।
वेदन[11] अपने दिल दा दस्स मैनूँ, वाँग सप्प[12] किऊँ विस नूँ घोल रही एँ ॥२४॥

कित्थों जिन्न[13] तैनूँ अज चमड़[14] गेआ, एडे कुफर[15] किऊँ झल्लिए[16] तोल रही एँ।
होया के *दिलशाद* दस्स नाल तेरे, कारण जिस दे दिल थीं डोलें[17] रही एँ ॥२५॥

मन्थरा का उत्तर—

होणा के[18] रानी दस अहा मैनूँ, तैनूँ खबर नहिँ हाल संसार दा नीँ।
नाहीं चमड़ेआ जिन्न या भूत मैनूँ, पेआ नमक तेरा जोश मार दा नीँ ॥२६॥

गई आ खिंझाँ[19] विच बाग तेरे, झलके वेखसें रंग गुलझार दा नीँ।
लै कर चट-पट जे कर सकें, रेह्आ वकत न हुण विचार दा नीँ ॥२७॥

रामचन्दर नूँ राज अज मिलन लग्गा, गइआँ हो तैयारिआँ सारिआँ नीँ।
तू बेखबर तैनूँ नाहिं खबर कोई, पौसंन[20] सिर मुसीबताँ भारिआँ नीँ ॥२८॥

---

१. भाग्य। २. दासी। ३. रुष्ट। ४ जलाने वाला। ५. आँसू। ६. धोएंगी। ७. आएगा। ८. उखाड़ेंगी। ९. कैसे। १०. उलटे। ११. पीड़ा। १२. सर्प। १३. भूतना। १४. चिमट गया। १५. अनर्थ। १६. मूर्खे। १७ घबरा। १८. क्या। १९. पतझड़। २०. पड़ेंगी।

नहीं मालूम की भरथ दा हाल होसी, इस्से ग़म अन्दर मैं ताँ मारिआँ नीँ ।
जल्दी कर इलाज *दिलशाद* कोई, तेरिआँ जुत्तिआँ तों मैं वारिआँ नीँ ॥२९॥

कैकयी का छल-चरित—

दित्ती गल सुणा जद मन्थरा ने, सुण के अकल कैकई दी उड़ गई ए ।
भुल्ली होश[1] ते सुरत न रही कोई, खा के ग़श झमीन ते डिग्ग[2] पई ए ॥३०॥
हाय ! हाय !! झुबान थीं पेआ निकले, वेखो हाल थीं हो बे-हाल रही ए ।
तड़फे पई *दिलशाद* झमीन उत्ते, आखे मन्थरा ने के एह आण कही ए ॥३१॥
पाड़ कपड़े सुट्टदी लाह झेवर, वेखो लेट झमीन ते पई ए जी ।
न कोई दुःख ते न कोई दरद है सी, वांग मछली दे तडफ़ रही ए जी ॥३२॥
मैकर[3] झैन मशहूर जहान अन्दर, केआ खूब एह किसे ने कही ए जी ।
तिरिआ[4]-चारितर[5] *दिलशाद* न कोई जाने, ख़सम[6] मार के सती हो गई ए जी ॥३३॥

दशरथ का कैकयी-सदन में आगमन—

होई दसरथ नूँ जद एह ख़बर जा के, ओ भी विच्च मैह्‌लाँ दे आएआ वे ।
रही तड़फ कैकई झमीन उत्ते, राजा वेख के हाल घबराएआ वे ॥३४॥
बैठ पुछदा होया के तैनूँ, किऊँ अपना आप गँवाएआ वे ।
सुबह हस्सदी खेडदी आहें बैठी, मैनूँ दस्स ताँ किस सताएआ वे ॥३५॥
देवाँ पकड़ कलेजड़ा चीर उस दा, तेरे दिल नूँ जिस दुखाएआ वे ।
आवे समझ दे विच्च न कुझ मैनूँ, एह के तूँ रंग बनाएआ वे ॥३६॥
होइआ या फ़तूर दिमाग़ अन्दर, या भूत किसे दा साएआ[8] वे ।
जिस चीझ दी लोड़ है दस्स मैनूँ, तैनूँ वास्ता रब्ब दा पाएआ वे ॥३७॥
जो मंगसेंगी देआँगा ओही तैनूँ, लै मंग रानी जो दिल चाहेआ वे ।
भेत[9] अपने दिल दा खोल के ते, दे दस्स मैनूँ किऊँ छिपाएआ वे ॥३८॥
आवे समझ दे विच्च न कुझ मैनूँ, मैं ताँ लक्ख खेआल दौड़ाएआ वे ।
मिलेआ नाहिं जवाब *दिलशाद* कोई, राजे झोर बतेरड़ा लाएआ वे ॥३९॥

---

१. होश । २. गिर । ३. कपट । ४. स्त्री । ५. स्त्री का छल । ६. पति । ७. थीं ।
८. छा गया । ९. भेद (=रहस्य) ।

सिरहाने बैठ कैकई दे कहे राजा, रानी किस पासे अज धॆग्रान होया।
मुँहों बोल के फोल[1] दे दुःख सारा, केहड़ी गल्ल तों[2] ऐडा वधान[3] होया ॥४०॥
दस्स के बरती एह नाल तेरे, तैनूँ वेख के मैं हैरान होया।
नहिँ खबर *दिलशाद* जी कोई मैनूँ, अज्ज के रानी तैनूँ आण होया ॥४१॥

कैकयी का राजा से वचन—

बैठी उठ कैकई एह गल्ल सुण के, कैंह्दी केॲा माह्राज फरमाँवदे ओ।
झूठी दिलँदारी[4] करो किऊँ ऐंवे, पए बैठ के गलां बनाँवदे ओ ॥४२॥
कर इकरार इन्कार नहीं फिर करना, जेकर मैं थीं[5] पुच्छणा चाहँवदे ओ।
नहिं मनझूर *दिलशाद* जे एह तुस्साँ, करो चुप फिर किऊँ सताँवदे ओ ॥४३॥

राजा का वचन—

रक्ख शक न दिल दे विच कोई, कर दे हाल बेॲान निशंग[6] रानी।
कोई उमर विच झूठ नाहिं बोलेॲा मैं, रेहॲाँ झूठ दे संग थीं असंग[7] रानी ॥४४॥
एह ही कौल-करार[8] है नाल तेरे, देसाँ ओही जो लएँगी मंग रानी।
लै समझ *दिलशाद* चढ़ गई रंगन, जो कुझ रंगनाईँ लै रंग रानी ॥४५॥

कैकयी का वचन—

लओ सुण माह्राज जी अरझ मेरी, गेॲा आ मैनूँ एतवार है जी।
देवासुराँ दे जंग दे विच्च तुस्साँ, कीता अग्गे भी इक इकरार है जी ॥४६॥
अज्ज नाल मेरे कसम फिर कीती, गोया कौल कीता दूजी वार है जी।
करना नहिं इनकार *दिलशाद* हुण ताँ, लग्गी होण खाह्श मेरी इझहार है जी ॥४७॥
मेरी झिन्दगी जे दरकार है जी, करना नहिँ तुस्साँ इन्कार है जी,
गेॲा आ मैनूँ एतबार है जी, देसो तोड़ चढ़ा इकरार तुस्सी।
मुँहों बोलेॲा बोल विसारना[9] नहिँ, धरम करक धरम थीं हारना नहिँ,
समझो किसे ने पार उतारना नहिँ, कर हुण वचन चुक्के दूजी वार तुस्सी ॥४८॥
राज अजुध्या दा मेरा भरथ पावे, रामचन्दर बनवास विच निकल जावे,
झरा देर न पल दी ओह लावे, देॲो हुकम चढ़ा सरकार तुस्सी।

---

१. खोल। २. इतना। ३. बखेड़ा। ४. बहलावनी। ५. से। ६. बे-खटके।
७. अछूता। ८. प्रतिज्ञा (=वचन)। ९. भुलाना।

एहो लोड़ मैनूँ *दिलशाद* है वे, इस्से गल दा सारा फ़साद[1] है वे,
मुँहों बोलेआ वचन जे याद है वे, पए फिर किऊँ विच्च विचार तुस्सी ॥४९॥

दे भरथ नूँ देओ एह राज-तिलक, खेआल दिल दे दिलों भुला देओ।
रामचन्दर करे सैर जंगलां दी, चौदाँ बरसाँ दा हुकम सुणा देओ ॥५०॥

एही दो गलाँ मैं तां मंगनी हाँ, बोल अपना तोड़ चढ़ा देओ।
हुण सोच-विचार *दिलशाद* कैसी, मुँहों अपने आप फ़ेरमा[2] देओ ।५१॥

रामचन्दर नूँ सद के आख देओ, हुण ओ शाही पोशाक उतार देवे।
निकल जाए अजुध्या शैह्र विच्चों, इस्से वकत बनबास सुधार देवे ।५२॥

जावे खावे हवा हुण जंगलाँ दी, खेआल राज दे दिलों विसार देवे।
सबर शुकर दे नाल बनवास अन्दर, चौदाँ साल *दिलशाद* गुज़ार देवे ॥५३॥

राजा की अवस्था—

सुणी गल्ल कैकई दी जद राजे, खा के ग़ेश[3] ज़मीन ते डिग पेआ।
गई उड लाली सारी मुँह उत्तों, खून सारे सरीर दा सुक्क गेआ ॥५४॥

सुण के बोल कैकई दा हौल[4] पेआ, वांग माही[5] बेआब[6] दे तड़फ रेहा।
आवे वकत *दिलशाद* ओह हत्थ किथों[7], मुँहों बोल जिस वेलड़े वचन केहा ॥५५॥

राजा का रानी से वचन—

देवाँ भरथ नूँ मैं एह राजतिलक, राजा आखदा है मनज़ूर रानी।
रामचन्दर नूँ रैह्ण दे कोल मेरे, उस नूँ मत मैथों[8] कर दूर रानी ॥५६॥

मेरी जान प्राण है रामचन्दर, मेरी अक्खिआँ दा ओही नूर रानी।
जीवंसाँ[9] पल *दिलशाद* न बाज उस दे, मर जावसाँ पिच्छों ज़रूर रानी ॥५७॥

रैह्म कर ज़रा मेरे हाल उत्ते, नहिँ इतना ज़ुलम कमान चंगा[11]।
रामचन्दर बिगाड़ेआ के तेरा, बेगुनाह नूँ नहिँ सतान चंगा ॥५८॥

इस दुनिया थीं लै के जावनाँ के, करना नहिँ रानी अभमान चंगा।
होवे हर-दिलें-अज़ीज़[12] *दिलशाद* जेह्ड़ा, ओही होवँदा है इनसान चंगा ॥५९॥

---

१. झगड़ा। २. आदेश कर। ३. मूर्च्छा। ४. घबराहट। ५ मछली। ६. जल-बियुक्त। ७. समय। ८. मुझ से। ६. जीवन। १०. जीऊँगा। ११. ठीक। १२. सर्वप्रिय।

रानी का उत्तर—

मैनूँ नहिँ पसंद एह गल कोई, कैंहदी केआ माह्राज फरमा रहे ओ।
मुँहों बोलेआ बोल कर देओ पूरा, मैनूँ के एह तुस्सी सुणा रहे ओ ॥६०॥

रामचन्दर नूँ देओ बनवास जल्दी, किऊँ हीले वहाने बना रहे ओ।
करो याद *दिलशाद* जो कौल कीता, सुखन[1] हार किऊँ धरम गँवा रहे ओ ॥६१॥

इस गल नूँ सोचना अहा[2] पहले, गुझर वक्त गेआ पिच्छोतान[3] कैसा।
कीता कम माह्राज जो आप हत्थीं, करना उस दा फिर अरमान कैसा ॥६२॥

दे के दान जो करे अभमान पिच्छों, ओह फिर दान कैसा ते गेआन[4] कैसा।
नहिँ इतबार फिर जिसदी झबान उत्ते, दस्स *दिलशाद* तूँ ओ इनसान कैसा ॥६३॥

राजा शिवि बेझुरग[5] तुसाडड़ा सी, कैंहदी उस दा सुनो बेआन प्यारे।
कीता सुख़न झबान दा जिस पूरा, कराँ बेआन उस दी दास्तान[6] प्यारे ॥६४॥

कीते यग राजे शिवि बौह्त भारे, नित-नेंम[7] करदा पुन-दान प्यारे।
धर्म-कर्म उस राजे दा वेख के ते, खौफ[8] इन्दर ताईं पेआ आन प्यारे ॥६५॥

जप-तप नूँ वेख के डर गेआ, राजे शिवि नूँ लग्गा अझमान प्यारे।
रूप बाझ दा आप फिर धार लैंदा, सुणना करके झरा धेआन प्यारे ॥६६॥

कबूतर लेआ बना इक देवते नूँ, पए उड उत्ते असमान प्यारे।
अग्गे अग्गे कबूतर ते बाझ पिच्छे, पौंह्ते शिवि दे जा अस्थान[9] प्यारे ॥६७॥

कबूतर राजे शिवि दी विच्च झोली[10], लगा बैठ के जान छुपान प्यारे।
कैंहदा जान बचाओ माह्राज मैरी, लगा बाझ झालम मैनूँ खान प्यारे ॥६८॥

औउँदी ओट कोई होर नहिँ नझर मैनूँ, तुस्साँ बाज नहिँ बचदी जान प्यारे।
रैह्म करो मैं हाँ शरण लग्गा, जेकर हो तुस्सी दयावान प्यारे ॥६९॥

पिच्छों आन के बाझ भी पौंह्च जांदा, बैंहदा सामने उत्ते मकान प्यारे।
लगा कैह्न शिकार एह है मैरा, नहिँ राजेआँ एह शैायाँ[11] प्यारे ॥७०॥

भुख नाल आई जान लैंब[12] उत्ते, मेरे निकलन लग्गे प्राण प्यारे।
लैणी खैस[13] खुराक फिर दूसरे दी, है एह पाप भारा सच्च जाण प्यारे ॥७१॥

१. वचन का पालन न करके। २. था। ३. पश्चात्ताप। ४. ज्ञान। ५. पूर्वज। ६. कथा। ७. नियम। ८. डर। ९. स्थान। १०. शरण। ११. उचित। १२. होंठ। १३. छीन।

धर्मशास्त्र विच भी नहिँ लिक्खेआ, सिक्खेआ किस थीं एह गेआन प्यारे।
आवे विच्च पनाह[1] जो किसे राजा, फरज़ उस दी जान बचान प्यारे ॥७२॥
देवाँ कदी कबूतर न एह तैनूं, राजा बाज़ नूं लगा फरमान प्यारे।
इस जितना तोल के लै लै मास मेरा, कीती बाज़ भी एह गल मान प्यारे ॥७३॥
त्रेकड़ी[2] तुरत फिर उत्थे मंगवा के ते, राजा बाज़ नूँ लगा दिखलान प्यारे।
दित्ता चाहड़ कबूतर नूँ इक पासे[3], होया वेख के बाज़ हैरान प्यारे ॥७४॥
कट के मास फिर अपने जिस्म उत्तों, तरफ दूसरे लगा चढ़ान प्यारे।
पासा उड़दा कबूतर दा हो जावे, लगा होर कट के मास पान[4] प्यारे ॥७५॥
इन्दर वेखॅ के डरेआ विच दिल दे, गेआ त्रुट सारा अभमान प्यारे।
केहँदा बस माहराज मैं रज्ज[6] गेआ, ताकत नहीं एह मास पचान प्यारे ॥७६॥
गेआ उड शरमिन्दा फिर हो के ते, कर अजमाइश होया परेशान प्यारे।
देखो धनी ज़बान दा शिवि राजा, होया लासानी[9] विच जहान प्यारे ॥७७॥
ऐसे पुरख दे कुल विच जनम लै के, लगे पॅरतने[11] किऊँ ज़बान प्यारे।
जिस इन्सान दी होवे ज़बान झूठी, नहिँ इन्सान है ओ हैवान प्यारे ॥७८॥
हो के मरद[12] जो कौल न करन पूरा, ओही मरद नामरद[13] कहान प्यारे।
लैना केआ है किसे ने दुनिआ तोँ, पड़े रैहनगे सब सामान प्यारे ॥७९॥
बड़े बड़े भारी बलवान राजे, होए मर के बेनिशान[14] प्यारे।
दस्सो एह माहराज है गल केहड़ी, जिस दे वास्ते लगे घबरान प्यारे ॥८०॥
मुहों बोलेआ बोल कर देओ पूरा, लगे फिकर किऊँ दिल नूँ लान प्यारे।
झूठा अपना कौल *दिलशाद* करके, किऊँ लगेओ धर्म गँवान प्यारे ॥८१॥

राजा दशरथ का वचन—

इतना ज़ुलम नहिं ज़ालिमें करन चंगा, बाज़ आ जा रब्ब दी मारिए नीँ।
रामचन्दर नूँ हुण बनबास दे के, औसी के हत्थ तैरे हैत्यारिए[15] नीँ ॥८२॥
दना भरथ नूँ राज मनज़ूर मैनूं, गल दूसरी मुशकल भारि ए नीँ।
गल मन्न *दिलशाद* तूँ लै मेरी, कर ज़िद न इतनी प्यारिए नीँ ॥८३॥

---

१. शरण। २. तुला। ३. ओर। ४. झुकता। ५. डालने। ६. तृप्त। ७. परीक्षा। ८. लज्जित। ९. अद्वितीय। १०. पुरुष। ११. उलटने। १२. वीर पुरुष। १३. कायर। १४. नाम व निशान के बिना। १५. हत्या करने वाली।

रामचन्दर वनवास जद धार लेआ, उसे वकत मैरी निकल जान जासी ।
तेरे हत्थ के औसी झालमें नीँ, राज-भाग सब हो वीरान जासी ॥८४॥

कुशल्या मरेगी पुत्तर दे गम अन्दर, अते चुक उसदा पैह्न-खान जासी ।
करसेँ केआ तूँ दस *दिलशाद* पिच्छों, हो बरबाद सारा खानदान जासी ॥८५॥

मेरे जिगर नूँ रानिए साड़ेआ तूँ, कीता करतेआ सारा विगाड़ेआ तूँ,
पाड़न एह अपुठड़ा पाड़ेआ तूँ, जिस नूँ नहिं कदी कोई सी सकदा ।
ऐवें दित्ता नाहक तूँ पा झेहँडा, अपुट्ठा लगिएँ खूहँ नूँ देन गेड़ा,
फायदा दस्स तैनूँ इस विच केहड़ा, हत्थीं आप नहिं झैह्र कोई पी सकदा ॥८६॥

दूणा भरथ नूँ राज मनझूर है नीँ, प्यारा रामचन्दर भी झरूर है नीँ,
मेरी आक्खिआँ दा ओही नूर है नीँ, बिना उसदे नहिं मैं जी सकदा ।
कीता कौल जेहड़ा ओ है याद उस नूँ, लेआ धरम ने बँन्ह *दिलशाद* उसनूँ,
लगी करन कैकई बरबाद उस नूँ, इत्थे दस राजा कर की सकदा ॥८७॥

कैकेयी का राजा से वचन—

जो कुझ होवसी लवाँगी देख मैं भी, एँवें किऊँ माह्राज डरा रहे ओ ।
मुँहों बोलेआ बोल कर देओ पूरा, किऊँ बे-फायदा मगझ खपा रहे ओ ॥८८॥

देओ आख इकरार नहिं कोई कीता, एँवें इतना किऊँ घबरा रहे ओ ।
इन्हां तिलाँ विच्च तेल *दिलशाद* नहिं गा, ऐडा झोर तुस्सी काहनूँ ला रहे ओ ॥८९॥

कवि का वचन—

सुणी गल कैकई दी जद राजे, हत्थ मार मत्थे उत्ते रोण लग्गा ।
गेआ वकत नहिं आउँदा हत्थ मुड़ के, करके आप हत्थीं नादिंम होण लग्गा ॥९०॥

विच्च ग़म दे निकलन दम लग्गा, बैह के हञ्जूँ दे हार परोण लग्गा ।
मनदी गल *दिलशाद* नहिं इक रानी, राजा अक्क नालों अम्ब खोह्ण लग्गा ॥९१॥

---

१. उजड़ । २. फाड़ । ३. उलटा । ४. कलह । ५. उलटा । ६. कुआँ । ७. बांध । ८. मस्तिष्क । ९. इतना । १०. लज्जित । ११. आक । १२. आम ।

कैंह्दा मार तलवार जे कतल कराँ, मेरे वास्ते एह भी सराप[1] है जी।
औरत मार के हो बदनाम जासाँ, नाले सोचदा वड्डा एह पाप है जी ॥९२॥
गई पेश न० उस दी जद कोई, गेआ बैठ हो के चुप-चाप है जी।
देवें दोस *दिलशाद* किऊँ किसे ताईं, करनहार करतार एह आप है जी ॥९३॥
होया असर कैकई नूँ नहिं कोई, हुण ताँ रेहा समझा के थक्क राजा।
कैंह्दा मौत बेशक आ गई मेरी, बैठा समझ दिलों एह पक्क[2] राजा ॥९४॥
खास्तगार[3] फिर रैह्म दा हो के ते, रेहा तरफ कैकई दे तक्क राजा।
होंदी नरम कैकई *दिलशाद* नाहीं, बैठा त्रोड़ उमीद दा लक्क[4] राजा ॥९५॥
मन्त्री सुमन्त्र का आगमन—

गई रात सारी गुज़र विच्च झगड़े, कोई फैसला नहिं अखीर होया।
मन्नी गल्ल कैकई ने नहिं कोई, विच्च ग़म राजा दिलगीर[5] होया ॥९६॥
गई रात मनहूस[6] ते होई सुबह, हाज़िर आण सुमन्त वज़ीर होया।
रामचन्दर बनवास *दिलशाद* जासी, एही लेख नसीब तहरीर होया ॥९७॥
सुमन्त्र का निवेदन—

कीती अरज़ वज़ीर सुमन्त आके, माह्राज राजे विच दरबार बैठे।
गुरु बसिष्ट जी भी गए पौंह्च आके, ते जरनैल करनैल सरदार बैठे ॥९८॥
नेड़े वकत महूरत भी आण होया, पंडत जोतशी होके तैयार बैठे।
चलो उठो *दिलशाद* मैं लैण आया, विच्च दरबार सारे इन्तज़ार बैठे ॥९९॥
राजा का वचन—

सुण के अरज़ वज़ीर दी कहे दसरथ, रामचन्दर नूँ जाके बुला जल्दी।
मेरी जान जलदी घड़ी पलट जल दी, मैनूँ राम दा मुँह दिखला जल्दी ॥१००॥
कैकई नागन ने डसेआँ[7] बाप तेरा, रामचन्दर नूँ जा के सुणा जल्दी।
हो सके *दिलशाद* ताँ है वेला[8], मंतर आण के कोई चला जल्दी ॥१०१॥
मन्त्री का रामचन्द्र के पास गमन—

लेआ सुण सुमन्त ने हुकम जदों, देर फिर न उस इक पल कीती।
आया निकल ओह महल थीं बाहर जल्दी, दूजी वार न परत के गल कीती ॥१०२॥

१. शाप। २. पूर्णतया। ३. प्रार्थी। ४. कमर। ५. उदास। ६. बुरी। ७. डस लिया। ८. समय।

जो हुण होवना सी ओ नाहिं हुण होण दित्ता, इत्थे होणी ने चा अदल-बदल कीती।
दिल हो उदास *दिलशाद* गेआ, तैयारी रामचन्दर दे उस वल कीती ॥१०३॥

सुमन्त्र का रामचन्द्र से निवेदन—

रामचन्दर माह्राज दे कोल जाके, एह वज़ीर सुमन्त सुनाऍआ वे।
विच्च महल कैकई दे हुण बैठे, उत्थे तुसाँ नूँ याद फरमाऍआ वे ॥१०४॥

आई नज़र तबीअत अलील मैंनूँ, मैरा वेख के दिल घबराऍआ वे।
दिलशाद सुमन्त दी गल सुण के, उठ के रामचन्दर जल्दी आऍआ वे ॥१०५॥

रामचन्द्र का पिता स निवेदन—

हो गए बाप दे कोल फिर तुरत हाज़र, कीती अदब दे नाल परणाम है जी।
देॲो पिता जी हुकम फरमा मैंनूँ, खड़ा दस्त-बस्ता[1] हाज़र राम है जी ॥१०६॥

जिस वास्ते कीता है याद तुस्साँ, देॲो दस मैंनूँ केह्ड़ा काम है जी।
हसरत नाल *दिलशाद* मुँह पुत्तर वल्लोँ, पेॲा तक्के न ताकत कलाम[3] है जी ॥१०७॥

कवि-वचन—

हसरत भरी निगाह दे नाल राजा, रामचन्दर दे मुँह वल तक्क रेहा।
होया जोश मुहब्बत दा आण ऐसा, चल अक्खिआँ थीं छम-छम नीर[4] पेआ ॥१०८॥

दिल चाह्वँदा उठ के गल कराँ, विच अफसोस नहिं जावँदा कुझ केहा।
तैनूँ खबर *दिलशाद* दस है केह्ड़ी, जाणे ओहीं जिसने एह् दुख सेहा[6] ॥१०९॥

रामचन्द्र का निवेदन—

करदे अरज़ माह्राज हत्थ जोड़ के ते, अज पिता जी किधर खेआल है जी।
लेटे किऊँ ज़मीन दे फरश उत्ते, होया अज्ज ऐसा किऊँ एह् हाल है जी ॥११०॥

या कोई होई तकसीर[7] गुलाम कोलों, केह्ड़ी गल दा दिल ते मलाल[8] है जी।
दस्सो हाल *दिलशाद* नूँ खोल सारा, करनी जिसने कायम मसाल[9] है जी ॥१११॥

जिस कम कारण कीता याद मैंनूँ, हुण पिता जी हुकम सुणा देओ।
करसाँ विच्च तामील[10] न उज़र कोई, मुँहों बोल इक वार फरमा देओ ॥११२॥

मैरे होंदेआँ नहिं परवाह कोई, फिकर दिल दे दिलों हटा देओ।
जो कहोगे कराँगा मैं ओही, इक वार *दिलशाद* समझा देओ ॥११३॥

---

१. हाथ जोड़े। २. निराशा। ३. वचन। ४. जल=आँसू। ५. वह ही। ६. सहन किया। ७. अपराध। ८. शोक। ९. दृष्टान्त। १०. पूर्ण करना।

कवि-वचन——

दिल चाहवँदा राजे दा गल्ल करां, लाया ज़ोर पर मुँहों नहिं बात निकली ।
रो रो के अक्खिआँ सुज[1] गइआँ, विच हाल इसे सारी रात निकली ॥११४॥
जिस नूँ समझदा सी प्यारा जाण कोलों, अज ओही कैकई अफ़ात[2] निकली ।
खाके हार *दिलशाद* शाह होया काबू, आखर चाल शतरंज दी मात[3] निकली ॥११५॥

रामचंद्र का कैकेयी से निवेदन——

जे कर है कुझ खबर तां दस माता, होया पिता जी दा किऊँ है हाल ऐसा ।
मुँहों बोल के किऊँ नहिं गल करदे, गेआ किस पासे अज खेआल ऐसा ॥११६॥
होया मेरे थीं या कसूर कोई, कीता किस ने दिल निढाल[4] ऐसा ।
इस दी सार *दिलशाद* नहिं कोई मैनूँ, केहड़ी गल थीं होया मलाल ऐसा ॥११७॥

कैकेयी का वचन——

मैं कह्वाँ तां दसो फिर केआ कह्वाँ, हत्थ आप दे है इलाज बच्चा ।
इस मरज़[5] दा होर दवा कोई, नहिं कर सकदा तैरे बाझ बच्चा ॥११८॥
आया वकत आज़माइश[6] दा हुण इत्थे. रक्खनी तुस्सां है बाप दी लाज बच्चा ।
दिलशाद जो नेक औलाद होंदी, देंदी होण नहिं ओ मोह्ताज[7] बच्चा ॥११९॥

रामचंद्र का वचन——

गलां दिल दिआँ नूँ नहिं कोई समझ सकदा, मैनूँ खोल के दे सुणा मातां ।
मैरी समझ दे विच्च नहीं कुझ आया, मैं तां रहेआ हां अक़ल दौड़ा मातां ॥१२०॥
जेकर है इलाज विच्च हत्थ मैरे, जल्दी दस फिर देर न ला मातां ।
लै औसां ढूण्ड के मैं असमान उत्तों, देवें दस जे तूँ दवा मातां ॥१२१॥
ज़रा उज़र न करांगा मैं कदी, करसां बाप तो जान फिदा मातां ।
सुण के गल तैरी पेआ भरम[8] दिल नूँ, मैरे भरम नूँ दे तूँ मिटा मातां ॥१२२॥
ऐसी कौन मुशकल पेश आ गई ए, जिस थीं पिता जी रहे घबरा मातां ।
जल्दी दे सुना *दिलशाद* मैनूँ, रक्खेआ गल नूँ किऊँ छिपा मातां ॥१२३॥
करदा टैहूल[9] खिदमत माई-बाप[10] दी जो, समझो ओही पूत सपूत होंदा ।
दुखी वेख मां-पे वंडे[11] दुख नाहीं, ओ पूत नाहीं बल्कि मूत होंदा ॥१२४॥

१. सूज । २. बला । ३. मन्द । ४. संज्ञा-रहित । ५. रोग । ६. परीक्षा । ७. पराश्रित । ८. संशय । ९. सेवा । १०. माता-पिता । ११. बांटे ।

जिस ने कैह्या मां-बाप दा मन्नेआ नहिँ, ओ पूत समझो मर के भूत होंदा ।
सताया जिस *दिलशाद* है मापेआँ नूँ, उस पूत दे सिर ते जूत होंदा ॥१२५॥

कैकेयी का वचन—

कीती गल बेशक है सच तुस्साँ, होवे अमल ताँ फिर ठीक है जी ।
[1]वेह्वे ज्ञान बौह्ते जेह्ड़ा विच्च लोकाँ, हुंदा लालची ओही [2]वधीक है जी ॥१२६॥
आवे न इतबार तद तक्क मैंनूं, [3]लैवाँ वेख नाहीं जदों [4]तीकँ है जी ।
जासी [5]खुलै [6]कलै *दिलशाद* इत्थे, नहिं कोई दूर हुण वक्त नझदीक है जी ॥१२७॥

रामचन्द्र का वचन--

दे दस्स जल्दी किउँ फिर ढिल्ल कीती, गल दिल दे विच्च न रक्ख माताँ ।
तू माँ ते मैं हां पुत्तर तेरा, मैंनूँ समझ न तूँ हुण [7]वक्ख माताँ ॥१२८॥
झाहिरा ईश्वर नूँ वेखेआ नहिं किस्से, माई-बाप ईश्वर [8]परतक्ख माताँ ।
कैह्या तुस्साँ दा [9]मोड़सां नाँ कद्दी, भावें पौन मुसीबताँ लक्ख माताँ ॥१२९॥
हुक्म मां-पिऊ दा जिस मन्नेआँ नहिँ, पा के जनम [10]मारी उस [11]झक्ख माताँ ।
दिल दुखावे सतावे जो मा-पेआँ दा, बैठा समझ ओ ताँ झहर [12]चक्ख माताँ ॥१३०॥
मां-बाप दा मरतबा ओ जाने, खुली जिस दी ज्ञान दी अक्ख माताँ ।
दिलशाद जाणी इक दिन छोड़ दुनिया, जाणा नाल नाहीं इक [13]कक्ख माताँ ॥१३१॥

कैकेयी का वचन—

इक रोझ तेरे बाप ने नाल मेरे, कसम धर्म दी खा इकरार कीता ।
जो मंगेंगी [14]देआँगा ओही तैनूँ, ओही वचन अज भी दूजी वार कीता ॥१३२॥
जद मंगेआ मैं जो मंगना सी, इसे गल दा एडा [15]खिलार कीता ।
धर्म हार *दिलशाद* इनकार कर दे, मेरे नाल भी बहुँ तकरार कीता ॥१३३॥

रामचन्द्र का वचन—

मैनूँ दस माताँ जो तूँ मंगेआ वे, मुँहों बोल के बोल शरमावणाँ केआ ।
जिस गल ने आवनाँ बाह्र होवे, उस गल नूँ फिर छुपावनाँ केआ ॥१३४॥
धर्म बाप दा कदी न जाण देवाँ, धर्म बाझ माताँ नाल [16]जांवणा केआ ।
दे तूँ साफ सुणा *दिलशाद* मैंनूँ, माए विच गल दे वल [17]पाँवना केआ ॥१३५॥

---

१. कहे । २. अधिक । ३. लूँ । ४. तक । ५. उतर । ६. मुलम्मा । ७. अलग । ८. प्रत्यक्ष । ९. मोड़ूँगा । १०. की । ११. गलती । १२. खा । १३. तिनका । १४. दूंगा । १५. विस्तार । १६. जाना । १७. पाना ।

कैकेयी का वचन—

लै साफ मैथों तूँ हुण सुन बच्चा, जिस बात ते होया तकरार प्यारे।
मिले राजतिलक मैरे भरथ ताईं, तुसी जाओ वनवास सुधार प्यारे ॥१३६॥

करो सैर तुसी जा के जंगलां दी, चौदह बरस फिर देओ गुज़ार प्यारे।
दिलशाद मंगेआ लैहूंणा[1] आपणा मैं, मंगेआ नहिं मैं कुझ उधार प्यारे ॥१३७॥

रामचन्द्र का वचन—

लई सुण कैकई दी गल जदों, अग्गों हस के एह सुणाया वे।
कर दे फिकर दिल दे दिलों दूर मातांँ, है मनज़ूर जो तूँ फरमाया वे ॥१३८॥

है सी गल केहड़ी मुशकल एह इतनी, जिस दे वासते झगड़ा पाया वे।
जागे सुत्ते[2] नसीब *दिलशाद* मैरे, जेकर जंगल मैरे हिस्से आया वे ॥१३९॥

देंदा भरथ नूँ राज मैं आप हत्थीं, हौंदा इत्थे तांँ हुण ज़रूर मातांँ।
दिलों दे असीस तूँ खुश हो के, लगा होण मैं तुसां थीं दूर मातांँ ॥१४०॥

रखीं दिल दे विच्च न वट कोई, देवीं बख्श जो होया कसूर मातांँ।
केआ मजाल *दिलशाद* जे उज़र होवे, मैनूँ है बनवास मनज़ूर मातांँ ॥१४१॥

रामचन्द्र का पिता से वचन—

उठो पिता जी फिकर नूँ दूर करके, लई सुण सारी हुण गल्ल मैं तांँ।
दे देओ राज एह भरथ ताईं, बैठा जंगल दा राज हां मैंल्ल[3] मैं तांँ ॥१४२॥

बोल[4] तुसां दा भूठ न होण देसां, लैसां[5] सभ मुसीबतां झल्ल मैं तांँ।
हो के खुश *दिलशाद* कर देओ रुखसत, पेआ हांँ बन नूँ हुण चल्ल मैं तांँ ॥१४३॥

राजा की दशा—

सकदा दे जवाब नहिं कोई अग्गों, लग्गा रोण सुण के ज़ार-ज़ार[6] राजा।
चल नीर[7] रेहा छम-छम अक्खिआँ थीं, होया आन के सखत लाचार राजा ॥१४४॥

मुश्कल पेश आई जिन्द[8] घबराई, नहिं सकदा जुदाई[9] सहार राजा।
पेआ तक्के *दिलशाद* हैरान हो के, सके कर न कोई गुफतार राजा ॥१४५॥

१. लेना। २. सोए हुए। ३. संभाल। ४. कथन। ५. लूँगा। ६. फूट-फूट कर। ७. जल। ८. जान (दिल)। ९. वियोग।

रामचन्द्र का निवेदन—

देॲो पिता जी आगेॲा हुण मैंनूँ, अग्गे आपदे मैरी एह अरज़ है जी।
करनी टैह्ल खिदमत मां-बाप संदी, होंदा पुत्तर दे सिर ते कर्ज़ है जी ॥१४६॥

माता-पिता दे हुक्म नूँ मन्न लैणा, एह भी पुत्तर दा समझो फर्ज़ है जी।
धर्म आप दा रहे *दिलशाद* कायम, मैरी पिता जी बस एह अरज़ है जी ॥१४७॥

राजभवन के बाहर—

बाह्र कई हज़ार सी लोक जम्माँ, सारे खुशिआँ पंए मनावँदे नीँ।
कैहँदे हुणे मिल जाएगा राजतिलक, गाने खुशी दे लोक पए गावँदे नीँ ॥१४८॥

रामचन्दर दे दरशन करन कारन, दौड़-दौड़ के लोक पए आवँदे नीँ।
दिलशाद दरवाज़ेॲाँ विच्च आके, झुक झुक के झाँतिआँ पावँदे नीँ ॥१४९॥

रामचन्द्र का बाहर आना

हालत वेख के बाप दी रामचन्दर, उत्ते कदमाँ दे सीस निवा दैंदे[३]।
लौं[४] पिता जी विदा मैं तुसाँ कोलों, इतना ऑख हत्थ पैरीं[५] लगा दैंदे ॥१५०॥

निकल आए कैकई दे मह्ल विचों, आके खलकत नूँ बाह्र सुणा दैंदे।
मुलतवी[६] होया जैंशन[७] ताजपोशी[८], मुँहों बोल *दिलशाद* फरमा दैंदे ॥१५१॥

रामचन्द्र का मात कौशल्या के पास जाना—

लछमन विच्च खुशी पेॲा आवंदा सी, मिलेॲा राह् दे आन विचकार प्यारे।
जशन ताजपोशी दा वेखने नूँ, बन तन हो आया तैयार प्यारे ॥१५२॥

दित्ती चाल कैकई ने खेंड[१०] जेह्ड़ी, न सी इस नूँ उस दी सार[११] प्यारे।
रामचन्दर माह्राज ने हस्स के ते, लाया नाल छाती कर प्यार प्यारे ॥१५३॥

चले गए कौशल्या दे कोल दोवें, कीती जा दुहाँ नमस्कार प्यारे।
होई वेख कौशल्या खुश दिल तों, करदी शुकर[१२] हज़ार करतार प्यारे ॥१५४॥

कैहँदी दूर बलाईं[१३], दुआईं[१४] देवे, होवे वेख के पई निसार[१५] प्यारे।
किस वक्त बैह्सो[१६] दस्सो तखत उत्ते, लग्गी करन माताँ इस्तफसार[१७] प्यारे ॥१५५॥

---

१. थे। २. दृष्टि। ३. दिया। ४. कह कर। ५. चरणों पर। ६. स्थगित। ७. उत्सव। ८. राज्याभिषेक। ९. बीच। १०. खेल। ११. पता। १२. धन्यवाद। १३. विपत्तियाँ। १४. आशीष। १५. निछावर। १६. बैठोगे। १७. प्रश्न।

उत्ते सिर दे वेखसाँ ताज जद्दों, दौलत सिर उत्तों देसाँ वार प्यारे।
बाहर आई *दिलशाद* नहिं गल्ल छुपदी, जांदी हो ज़ाहिर आखरकार प्यारे ॥१५६॥

रामचन्द्र का वचन––

राजतिलक एह तां मिलॅआ भरथ ताईं, मैंनूँ जंगल दा मिलॅआ ए राज माताँ।
जाके कोल कैकई दे पिता मेरे, सुखनहार हो गये मोहताज[1] माताँ ॥१५७॥
लाया ज़ोर पर पेश न गई कोई, नहिं तकदीर दा कोई इलाज माताँ।
चौदह साल मैयाद *दिलशाद* मिल्ली, मेरी हत्थ भगवान् दे लाज माताँ ॥१५८॥
लिखे लेख नसीब दे आहे[2] मेरे, विच्च जंगलाँ दे दुक्ख सैंहण माताँ।
गेॲँ हो तैयार बनवास नूँ मैं, होया हुण मुशकल इत्थे रैंहण माताँ ॥१५९॥
खुश हो के आगेॲा दे मैं नूँ, मैं ताँ आया हाँ रुखसत लैंण माताँ।
मन्नेॲा हुकम *दिलशाद* जे बाप दा नाँ, दस लोक पिच्छों केॲा कैहण माताँ ॥१६०॥

कौशल्या की दशा––

रही सुणदेॲाँ साँर[3] न होश कोई, खा के गश ज़मीन ते डिग पई ए।
नहिं सी गल एह धार तलवार है सी, वांग तीर कलेजँड़ा[4] चीर गई ए ॥१६१॥
गइआँ खुशिआँ सारिआँ भुल्ल उस नूँ, कैंहँदी केॲा तुसाँ गल आण कही ए।
रहिआँ दिलदिआँ विच *दिलशाद* दिल दे, हो हैरान मुँह पुत्तर दा तक रही ए ॥१६२॥
बैह के कोल माहराज फिर घुट्टन[6] लग्गे, अर्क क्योड़ा गुलाब छिड़काँया नें।
गई आ कौशल्या नूँ होश जद्दों, सारा बैठ के हाल समझाया नें ॥१६३॥
माताँ खुश हो के हुकम दे मैंनूं, हत्थ जोड़ के वासता[8] पाया नें।
विदा कर *दिलशाद* असीस दे के, उत्ते कदमाँ दे सीस निवाया नें ॥१६४॥

कौशल्या का संताप––

गई हो हैरान एह सुण के ते, कैंहदी के कीता मेरे नाल साँइआँ।
हैसी ख्वाब[11]-ख्याल न कोई मैंनूँ, अचन[12]-चेत मुसीबताँ चा पाइआँ[13] ॥१६५॥
कढ[14] लै जान मेरी न हुण कर देरी, पुत्तर टोर के जीवन किस तौरें[15] माइआँ[16]।
कीता पाप *दिलशाद* मैं है केहड़ा, एह के मेरे अज पेश आइआँ ॥१६६॥

---

१. अधीन। २. थे। ३. (के) साथ (=उसी समय, तत्काल)। ४. कलेजा, हृदय। ५. बैठ। ६. (पाँव) दबाने। ७. छिड़काया। ८. अनुरोध। ९. करना। १०. हे प्रभो! ११. सपना (भी)। १२. अजाने, अकस्मात्। १३. डाल दीं। १४. निकाल। १५. तरह। १६. माताएँ।

कैंहदी पुत्तर दा धर्म बेशक है एह, हुकम बाप दे नूँ कदी मोड़ना नहिँ ।
हॅक माँ दा भी कुझ है बच्चा, रोंदी मैं निमाणी नूँ छोड़ना नहिँ ॥१६७॥
जित्थे चलोगे चलाँगी नाल मैं भी, पिछे रह के सुख मैं लोड़ना नहिं ।
लै मन *दिलशाद* जी गल मेरी, मैंनूँ दुखां दे वैह्ण विच बोड़ना नहिँ ॥१६८॥

रामचन्द्र का वचन—

बेह् के कोल फिर एह समझान लग्गे, ज़रा सुण मेरी लै तू गल माताँ ।
गए पिता जी वृद्ध हुण हो मेरे, गॅआ घट सरीर दा बल माताँ ॥१६९॥
लैंसी खबर कैकई न विच मस्ती, बेह्सी भरथ जद राज नूँ मॅल माताँ ।
होंदा भरथ इत्थे न सी डर कोई, लैंदा भार सिर ते ओ झल माताँ ॥१७०॥
फिकर पिता जी दा मैंनूँ है भारा, जिह्दे नाल मैं गॅआ हाँ घुल माताँ ।
मैं भी होन हुण उन्हां थीं दूर लग्गा, पॅआ हां बनवास नूँ चल माताँ ॥१७१॥
एह् ही वेला टैह्ल करन संदा, जो करेगा पाएगा फल माताँ ।
जिन्हां खसम दा नहिं परवाह कीती, नाल उन्हां दे तू न रल माताँ ॥१७२॥
पतिबरत जेह्या नहिं धरम कोई, तप ते जप सारे निष्फल माताँ ।
इसे धरम डराए नीं लोक तिन्ने, जावे ज़मीन आसमान भी हल माताँ ॥१७३॥
करदा एहो सहायता अन्त वेले, जद जावंदी जान निकल माताँ ।
तेरे वास्ते ईश्वर-रूप हैवन, करके टैह्ल कर जनम् सफल माताँ ॥१७४॥
चौदह बरस मेरे ऐवें गुज़र जासन, जिवें गुज़र जांदे चौदाँ पल माताँ ।
नहिं परवाह बनवास विच कोई मैंनूँ, मेरे वास्ते न पई गैल माताँ ॥१७५॥
सेवा पति दी धरम है इस्तरी दा, निकल बाहर न धरम थीं ढॅल माताँ ।
मोह् माया त्याग *दिलशाद* दिलों, समझ है दुनिया सारी छल माताँ ॥१७६॥

१. बेचारी । २. बहाव । ३. डुबो । ४. लेगी । ५. संभाल । ६. खर । ७. पति । ८. मिल । ९. तीनों । १०. हैं । ११. घुल, खर, (शोक से दुर्बल होना) । १२. विमुख ।

ज्ञान का प्रभाव—

लेॲा दिल नूँ पकड़ उपदेश जा के, गए खेॲाल बदल कुझ पल अन्दर ।
गेॲा हो गेॲान पैह्चान होई, होई वाकफी राझे[1] असल अन्दर ॥१७७॥

पानी शांति दा गेॲा पै उत्ते, रही आही जेह्ड़ी अग्ग वैल[2] अन्दर ।
रोक टोक *दिलशाद* सब दूर कीती, पाया वैल[3] न कोई फिर गल अन्दर ॥१७८॥

कौशल्या का वचन—

लग्गी कैह्न कौशल्या सुणो मैथों, हो बनवास नूँ आए तैॲार तुस्सी ।
मैरे रोकेॲाँ रुकना नहिं तुस्साँ, करनहाँर[4] हर कॉर[5] मुख्तार तुस्सी ॥१७९॥

रक्खो नाम झिन्दा विच संसार अन्दर, लाहो[6] बाप दे सिरों उधार तुस्सी ।
मैरे फिकर *दिलशाद* होए दूर सारे, बेशक जाओ बनवास सुधार तुस्सी ॥१८०॥

तसल्ली सीता दी करो हुण जा तुस्सी, पिछों तुस्सां दे ओ घबराए नाहीँ ।
रहे हसदी खेडदी विच मैह्लाँ, झरा फिकर कदी दिल ते लाए नाहीँ ॥१८१॥

सुँफने[7] वाँग लङ्घ जानगे बरस चौदाँ, मैनूँ रो रो के पई रुवाए नाहीँ ।
घर आपने रहे *दिलशाद* बैठी, हो उदास घर बाप दे जाए नाहीँ ॥१८२॥

रामचन्द्र का सीता के पास जाना—

रुखसत लै कौशल्या माई कोलों, दित्ता कदमां ते सीस निवा प्यारे ।
दे के थापणा[8] दित्ती असीस माताँ, दुश्मन होन तेरे झरपा प्यारे ॥१८३॥

रह्वेँ खुश खुरसन्द हमेश बच्चा, होवे दिल दी पूरी मुद्दा प्यारे ।
साईं सच्चा तेरा निगहवान होसी, किधरे होवसी न अटका प्यारे ॥१८४॥

लै के आगेॲा मैह्ल थीं बाहर निकले, माताँ देवँदी रही दुआ प्यारे ।
लछमन भाई नूँ लै के नाल आपने, पौंह्ते कोल सीता दे जा प्यारे ॥१८५॥

खुशी राजतिलक दे विच सीता, गीत खुशी दे रही सी गा प्यारे ।
वेद-पाठी पंडत पए करन पूजा, कई रहे नीँ हवन करवा प्यारे ॥१८६॥

होया जो कैकई दे मैह्ल अन्दर, उस दी इस नूँ खबर नहिं कैं[10] प्यारे ।
रामचन्दर माह्राज नूँ वेख के ते, लग्गी पुच्छन सीता मुस्करा प्यारे ॥१८७॥

१. रहस्य। २. जल। ३. बल, चक्कर। ४. करने वाले। ५. काम। ६. उतार दो। ७. सपना। ८. थपकी। ९. प्रसन्न। १०. कोई।

ताजपोशी दा वकत गुज़श्त[1] होया, दित्ती देर इतनी काह्नूँ ला प्यारे ।
वाजे वजेद खुशी दे सुणे नाहीँ, नाहीँ तोप दी सुणी सदा[2] प्यारे ॥१८८॥

लैके राजतिलक जे हुण आए तुस्सी, रक्खेँआ ताज फिर कित्थे छपा प्यारे ।
मैं ताँ राह चरोकँणा[3] तँक रहि आँ, रेहा दिल मैरा घबरा प्यारे ॥१८९॥

दिस्से होर दा होर कुझ रंग मैनूँ, दस्सो के होया उत्थे जाँ[4] प्यारे ।
दिलशाद जो करके आए तुस्सी, सच्चो सच्च ओ देँओ सुणा प्यारे ॥१९०॥

रामचन्द्र जी का वचन—

लई सीता दी गल जद सुण सारी, बैह् के कोल फिर हाल समझान लग्गे ।
मिलेँआ भरथ नूँ राज अजुध्या दा, अस्सी जंगलाँ दे विच जान लग्गे ॥१९१॥

चौदाँ बरस करनी सैर जंगलाँ दी, होया हुकम एह् मैनूँ सुणान लग्गे ।
गुलशन छोड़ *दिलशाद* उड चले पंछी, विच्चों बाग़ दे माली उड़ान लग्गे ॥१९२॥

सीता का वचन—

सीता हो हैरान फिर कैह्न लगी, माह्राज एह की फरमाएँआ ए ।
चौदाँ बरस कैसे जंगल सैर कैसी, मैरी समझ विच कुझ न आएँआ ए ॥१९३॥

मैनूँ खोल के दस देओ हाल सारा, मैरा सुन के दिल घबराएँआ ए ।
देओ साफ सुणा *दिलशाद* मैनूँ, हत्थ जोड़ के वास्ता पाएँआ ए ॥१९४॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माह्राज जी हाल सारा, बैह के सीता नूँ समझावँदे नीँ ।
गेआ राज एह भरथ नूँ मिल सारा, मिलेँआ मैनूँ बनवास सुणावँदे नीँ ॥१९५॥

लिखे लेख नसीब दे नहिँ मिटदे, समझ पेश ज़रूर ओ आवँदे नीँ ।
चौदाँ बरस बनवास दे विच रैहणा, मुँहों बोल *दिलशाद* फरमावँदे नीँ ॥१९६॥

अचन-चेत गेआ रंग बदल सारा, नाँ सी कोई मैनूँ खबर सार रानी ।
पिता जी ने नाल कैकई माताँ, किसे रोज़ कीता इकरार रानी ॥१९७॥

मँगें जो मैथों देसाँ ओही तैनूँ, करसाँ कदी न ज़रा इन्कार रानी ।
अज राजतिलक दी खबर सुन के, दित्ता उस पाखण्ड खिलार[5] रानी ॥१९८॥

१. व्यतीत । २. आवाज=ध्वनि । ३. बहुत देर से । ४. जाकर । ५. फैला ।

कर चाक[1] पोशाक सिर खाक पाई, दित्ता हार सिंगार उतार रानी।
पिता जी नूँ होई एह खबर जद्दों, आके पुच्छन लगे नाल प्यार रानी ॥१९९॥
बोली नहिँ बुँलाएँआँ[3] ओ अग्गों, बैठी बन कैकई बीमार रानी।
आ गए मकर-फरेब विच पिता मैरे, कर इकरार[4] दित्ता दूजी वार रानी ॥२००॥
देऔ भरथ नूँ राज फिर कैहन लग्गी, लवाँ मैं बनवास नूँ धार[5] रानी।
एह दो बोल कैकई दे सुन के ते, डिगे पिता जी मुँह दे भार[6] रानी ॥२०१॥
मैनूँ बोल के कुछ नहिँ कह सक्के, लगे वेख रोवन झारो-झार रानी।
जाना पैऔ बनवास झरूर मैनूँ, राज भाग हुण नहिँ दरकार रानी ॥२०२॥
बोल बाप दा झूठ न होण देवाँ, भावें सखतिआँ होण हजार रानी।
जिस हुकम माँ-बाप दा नहिं मन्नेऔ, होन्दा ओह हमेश खँवार[7] रानी ॥२०३॥
जे हुण मैं बनवास नूँ नाँ जावाँ, रैह्सी पिता दे सिर उधार रानी।
नाले झूठी झवान भी हो जासी[8], गए सुखन आपना जद के हार रानी ॥२०४॥
तूँ हुण रहो इत्थे पिच्छे घर अन्दर, नाल सबर[9] दे कर करार[10] रानी।
बिच बनवास परवाह नहिँ कोई मैनूँ, अते नहिँ मैनूँ कोई औंर रानी ॥२०५॥
चौदाँ बरस गुझार के आ जासाँ, वेख लवेगा सभ संसार रानी।
रुखसत दे *दिलशाद* तूँ खुश हो के, मैं ताँ चलन नूँ हाँ तैयार रानी ॥२०६॥

सीता का निवेदन—

लगी कैह्न सीता अगों रो के ते, मैरे नाल एह झुलम कमाओ[11] नाहिँ।
तुसाँ बाझ माहूराज न रैह सक्काँ, बिछौड़ा एह मैनूँ तुसी पाओ नाहिँ ॥२०७॥
वाली[12] आप दे बाझ है कौन मैरा, मैनूँ छड अँकल्याँ[13] जाओ नाहिँ।
उत्ते कर्ता[14] ते हेठ *दिलशाद* भर्ता[15], पए होर दी होर सुणाओ नाहिँ ॥२०८॥

रामचन्द्र का वचन—

नहिँ खबर तैनूँ न कर झिद इतनी, होंदे विच वनवास दे दुःख सीता।
खाना मिले न वकत सिर खावणे[16] नूँ, सख्त आन सँतावँदी[17] भुक्ख सीता ॥२०९॥

---

१. फाड़। २. मिट्टी। ३. बुलाने पर। ४. प्रतिज्ञा। ५. ग्रहण कर। ६. बल। ७. खराब। ८. जायगी। ९. धीरज। १०. शंका। ११. कीजिए। १२. रक्षक। १३. अकेले। १४. रचने वाला ईश्वर। १५. पति। १६. खाने। १७. सताती है।

होंदे शेर चितरे विच जंगलाँ दे, नाले दिस्सन डरावणे रुँक्ख[1] सीता।
दिस्से न वसती कदी ख़्वाब[2] अन्दर, आवे नज़र न कोई मँनुख[3] सीता ॥२१०॥

करके सबर गुज़ार लै दिन इत्थे, सुण के ख़बर बनवास न झुक्खँ[4] सीता।
होसें दुखी *दिलशाद* तूँ नाल जाके, इत्थे रहेंगी पाएँगी सुख सीता ॥२११॥

सीता का वचन—

सुन जवाब बेताब[5] हो गई सीता, कैंहदी केॲा माहराज फरमा रहे ओ।
चौदाँ पल भी गुज़रने हैण औखे, एह ताँ चौदाँ बरस सुणा रहे ओ ॥२१२॥

छोड़ सुख मैं दुख मनज़ूर करसाँ, मैनूँ किऊँ पर तुस्सी डरा रहे ओ।
रक्खो कँदमां[6] दे विच *दिलशाद* मैनूँ, झूठे बाग किऊँ सबज़ दिखला रहे ओ ॥२१३॥

एह ताँ लेख नसीब दा जाँपदा[7] जी, कैह्ना सच्च बेशक है आप दा जी,
मन्नेॲा हुक्म तुस्साँ एह बाप दा जी, छोड़ राज बनवास नूँ धारेॲा वे।
माताँ आखेॲा मैनूँ सुणा के ते, जदों टोरेॲाँ[8] सी डोलीँ[9] पा के ते,
टैह्ल पति दी करीं दिल ला के ते, बारम्बार उस एहो पुकारेॲा वे ॥२१४॥

केहा माँ दा मन्नना ज़रूर मैं भी, रैह्ना कदी नहिँ तुसाँ थीं दूर मैं भी,
चलसाँ नाल ज़रूर हज़ूर मैं भी, हत्थ जोड़ के वासता डारेॲाँ[10] वे।
मैनूँ तुस्सी *दिलशाद* किऊँ रोक रहे ओ, सिद्धे साफ जवाब किऊँ ठोकँ[11] रहे ओ,
खेॲाल विच दिल दे केहड़े झोकँ[12] रहे ओ, नहिँ खबर के तुस्साँ विचारेॲा वे ॥२१५॥

तुस्सी छोड़ के जे[13] चले गए मैनूँ, ताँ फिर मैं सरीर एह छोड़ जासाँ।
चँढ़सी[14] ग़माँ दा जद तूफान सिर ते, किश्ती ज़िन्दगी दी उस विच्च बोड़ जासाँ ॥२१६॥

आके देखसो तुस्सी न फिर मैनूँ, रिश्ता इस जहान दा तरोड़ जासाँ।
पतिव्रत *दिलशाद* न कोई होवे, सभनाँ औरताँ नूँ मैं होड़[15] जासाँ ॥२१७॥

कवि-वचन—

रामचन्दर माह्राज दे कदमाँ ते, सीता हो बेहोश फिर डिग पई ए।
होई ग़श तारी विच्च बेकँरारी[16], समझो होश हवास न कोई रही ए ॥२१८॥

---

१. वृक्ष। २. स्वप्न। ३. मनुष्य। ४. दुःख मना। ५. दुःखी (सहने में असमर्थ)। ६. चरणों। ७. पता लगता है। ८. भेजा। ९. पालकी। १०. डाला। ११. बल-पूर्वक देना। १२. डाल। १३. यदि। १४. चढ़ेगा। १५. रोक। १६. दुःख।

छम-छम अक्खिआँ थीं चल नीर रेहा, नाल हञ्जुआँ दे कुड़ती[1] सिंज गई ए।
तुस्साँ बाझ्ह *दिलशाद* है कौन मेरा, मुँहों बोल के झरा माह्राज कही ए ॥२१९॥

रामचन्द्र का वचन—

गई हो तासीर[3] झरूर दिल नूँ, कैहूँदे उठ के बैठ पिआरिए नीँ।
जो तूँ कहेंगी है मनझूर ओही, मुँहों बोल हुण जनकँदुलारिए[4] नीँ ॥२२०॥
उठ चल तैयार हो नाल मेरे, रल के दोवें बनवास नूँ धारिए नीँ।
पाइए कैफनिआँ[5] गल विच *दिलशादा*, शाही कपड़े चा उतारिए नीँ ॥२२१॥

सीता की तैयारी—

पेॲा एह आवाझ जद विच कन दे, बैठी उठ सीता खबरदार होई।
रामचन्दर दे नाल बनवास कारण, वेखो अपने आप तैयार होई ॥२२२॥
लेॲा समझ्ह ईश्वर पति आपने नूँ, उत्ते उस दे जाननिसाँर[6] होई।
जान बुझ के दुक्खाँ विच पैंण[7] लगी, नहिँ सुख दी ओ रैंवादार[8] होई ॥२२३॥
टैह्ल करन कारन लगी नाल चलन, घर वार कोलों अवाझार[9] होई।
दुःख सुख नूँ समझ्हेॲा नाल खांवंद[10], दिल विच होर न कोई विचार होई ॥२२४॥
पतिबरत धर्म नूँ पाल के ते, विच दुनिआ दे ओ नांमवार[11] होई।
ओही ईस्त्री[12] जान *दिलशाद* चंगी, जेहड़ी विच दुख दे मददगार होई ॥२२५॥

लक्ष्मण का निवेदन—

लेॲा सुण लछमन जद एह हाल सारा, विच दिल दे होन हैरान लग्गा।
हैसी होवंना[13] के ते होया के, एह रब्ब के रंग दिखलान लग्गा ॥२२६॥
नहिँ खबर के पिता जी सोच बैठे, डोरॅ[14]-भोर[15] हो करन अरमान लग्गा।
कदमाँ विच *दिलशाद* फिर डिग के ते, हत्थ जोड़ के एह सुणान लग्गा ॥२२७॥
हुकम जाँयझ[16] नूँ मन्नना फर्झ साडा, ते नाजायझ नहिँ मन्नना रवाँ[17] है जी।
होई पिता दी उमर अखीर आ के, होश उन्हाँ दी नहिँ बँजा[18] है जी ॥२२८॥
विच इक्क रात दे हो एह के गेॲा, के अँन्धेर[19] दित्ता उन्हाँ पा है जी।
जाना नहिँ बनवास *दिलशाद* तुस्साँ, सुनो भाई जी गल सफा है जी ॥२२९॥

---

१. चोली। २. भीग। ३. प्रभाव। ४. हे जनक-पुत्रि। ५. चीवर। ६. प्राण-दान करने वाली। ७. पड़ने। ८. इच्छा वाली। ९. उपराम। १०. पति। ११. अमर नाम वाली। १२. स्त्री। १३. होना। १४. अशांत। १५. विभोर। १६. उचित। १७. ठीक। १८. ठिकाने। १९. अन्धकार।

रामचन्द्र का वचन—

वाह ! वाह !! लछमना डिट्ठी[1] मैं अकल तैरी, एह सवक के मैनूँ पढ़ान लग्गों ।
है ईश्वर बराबर ही बाप मैनूँ, उलटे किऊँ एह दस्सन ग्यान लग्गों ॥२३०॥
हुकम उन्हाँदड़ा मोड़साँ मूले नाहीँ, एह के तूँ मैनूँ सुणान लग्गों ।
चौदाँ साल *दिलशाद* गुझार औसाँ, रक्ख हौसला किऊँ घबरान लग्गों ॥२३१॥

लक्ष्मण का निवेदन—

मरे सँप्प[3] ते लाठी भी न त्रुट्टे, कराँ अरझ जे मुआफ कसूर होवे ।
देवाँ सिर उतार कैकई दा मैं, मिटन झगड़े फसाद सब दूर होवे ॥२३२॥
देसी कौन फिर दस्सो बनवास तुस्साँ, होसी अमन, काफूर फतूर[5] होवे ।
आई सोच *दिलशाद* एह दिल मैरे, मैरी अरझ माह्‌राज मनझूर होवे ॥२३३॥
झगड़ा मैं माह्‌राज मिटा देवाँ, ते फसाद एह सभ हटा देवाँ,
सिर कैकई दा हुणे उडा देवाँ, देसी फिर दस्सो बनवास केहड़ा ।
भरथ[6] नाल मैरे केॲआ लड़ेगा जी, मैरे सामने केॲआ ओ अँड़ेगा जी,
शरन आप दी आन ओ पड़ेगा जी, नहिं ताँ वेख लैसाँ है झोर जेहड़ा ॥२३४॥
पिता जी भी न ख़फा होसन, बलकि सुण बारझा[8] होसन,
हुण तां पए करदे पिच्छोता होसन, वैठे कर जो हैन ओ वचन टेढ़ा ।
मैनूँ गल पसंद एह आ गई ए, मैरे अन्दर *दिलशाद* समा गई ए,
एहो दिल मैरे विच भँा[10] गई ए, जासी मिट माह्‌राज तमाम झेड़ा ॥२३५॥

रामचन्द्र का वचन—

ख़बरदार नहिँ लछमना एह करना, समझ तूँ कैकई भी माँ है जी ।
हुकम उस दा मन्नना धरम मैरा, नाल हाँ मिलावणी हाँ है जी ॥२३६॥
जो उस आक्खेॲआ मन्नसाँ सिर उत्ते, हिम्मत हार मैं नहिँ करनी नहिँ है जी।
जाणी छोड़ *दिलशाद* इक दिन दुनिया, एह ताँ समझ मिसाल[12] सराँ[13] है जी ॥२३७॥

लक्ष्मण का वचन—

गई पेश जद लछमन दी नहिँ कोई, ढाँईँ[14] मार के फिर ओ रो रेहा ।
कैहँदा खेॲाल केहड़ा है सी विच दिल दे, जानाँ केॲआ मैं एह के हो रेहा ॥२३८॥

---

१. देखी । २. सर्वथा । ३. सांप । ४. नष्ट । ५. झगड़ा । ६. भरत । ७. मुकाबले पर खड़ा होगा । ८. होंगे । ९. सहमत । १०. सूझ । ११. झगड़ा । १२. दृष्टान्त । १३. विश्राम-शाला । १४. ऊँचे स्वर से विलाप ।

हञ्जूँ वाँग बरसात दे चल रहिआँ, दिल विच दलीलां कई ढो[1] रेहा।
मैं भी चलाँगा नाल *दिलशाद* तुसाँ, हत्थ जोड़ के कोल खलो[2] रेहा ॥२३९॥

रामचन्द्र का वचन—

लगे कैहन माहराज फिर हस के ते, कर दे दूर तमाम फिकर लछमन।
आवाँ मैं गुज़ार के बरस चौदाँ, मैंनूँ नहिँ कोई खौफ़-खतर[3] लछमन ॥२४०॥
पिच्छे तूँ अजुध्या विच रैहॅ के ते, खिदमत माँ ते बाप दी कर लछमन।
होसें दुखी *दिलशाद* बनवास अन्दर, गल मॅन्न मैरी रहो घर लछमन ॥२४१॥

लक्ष्मण का वचन—

रहे केॅआ माहराज फरमा तुस्सी, घर रैहॅन दी नहिँ कोई लोड़[4] मैंनूं।
चलसाँ आप दे नाल ज़रूर मैं ताँ, मुड़साँ न भावें[5] रहसो मोड़ मैंनूँ ॥२४२॥
नहिँ ताँ मराँगा ज़हर नूँ खा के ते, जेकर गए तुस्सी पिच्छे छोड़ मैंनूँ।
करसाँ टैह्ल *दिलशाद* मैं नाल चल के, रहे किऊँ तुस्सी दस्सो होड़[6] मैंनूँ ॥२४३॥

रामचन्द्र का वचन—

मन गल्ल मैरी न कर ज़िद्द भाई, किऊँ रो के मैंनूँ सुणान लग्गोँ।
दाँनशमंद[7] अकील[8] फहीम[9] हो के, जाँनबुझ[10] किऊँ बनन नादान लग्गोँ ॥२४४॥
कहो माताँ कौशल्या सुमित्राँ दा, है कौन, किऊँ दिल चुराँन[11] लग्गोँ।
होए पिता जी भी ब्रिद्ध आन के ते, दिल उन्हाँ दा किऊँ दुखान लग्गोँ ॥२४५॥
कर टैह्ल उन्हाँदड़ी रहो इत्थे, रक्ख हौसला किऊँ घबरान लग्गोँ।
तुध बाझ उन्हाँदड़ा होर केहड़ा, किऊँ हुण उन्हाँ थीं मुँह छिपान लग्गोँ ॥२४६॥
केॅह्या मन्न मैरा रहो घर लछमन, दुखाँ विच फसान किऊँ जान लग्गोँ।
फिकर दिल दे दूर *दिलशाद* कर दे, होण पिआरेॅआ किऊँ हैरान लग्गोँ ॥२४७॥
लेॅआ सुण कैकई दा हाल है तूँ, जो कुछ उस कीता मैरे नाल लछमन।
बैह्सी[12] भरथ जद आन के तख़त उत्ते, नहिँ मालूम के होवेगा हाल लछमन ॥२४८॥
माताँ-पिता मत होणगे दुखी पिच्छों, ज़रा होश हवास संभाल लछमन।
रहो घर *दिलशाद* मन्न गल मैरी, दे बनवास दा छोड़ खेॅआल लछमन ॥२४९॥

---

१. सोच। २. खड़ा। ३. डर, भय। ४. मान। ५. चाहे। ६. रोक। ७. चतुर। ८. बुद्धिमान्। ९. समझदार। १०. जानते हुए। ११. छोटा करना। १२. बैठेगा।

लक्ष्मण का निवेदन—

दस्सेआ हाल कैकई दा जो तुस्साँ, लेआ सुण सारा ओ है याद मैनूँ।
देंदा सिर माहराज उतार उस दा, भावें आखदे[1] लोक जल्लाद मैनूँ ॥२५०॥

जांदे मिट फसाद ते होर झगड़े, करदे तुस्सी जे ज़रा अरशाद[2] मैनूँ।
लैंदा दिल दा कढ्ढ अरमान मैं ताँ, देंदे दे जे हुकम *दिलशाद* मैनूँ ॥२५१॥

माता-पिता नूँ नहिँ परवाह कोई, तुसी किऊँ एह फिकर लगा बैठे।
होया के जे भरथ नूँ राज मिलेआ, उत्ते तख़त बेशक ओ आ बैठे ॥२५२॥

लै के राज नूँ जद फिर भरथ भाई, खिदमत करन थीं दिल चुरा बैठे।
या कैहे[3] कैकई दे लग के ते माई बाप नूँ कंडँ दिखा बैठे ॥२५३॥

तां भी फिकर माहराज जी नहिं कोई, भावें भरथ भी शरम गँवा बैठे।
साडे वखरे खज़ानेआँ विच समझो, नहिँ मजाल उसदी हत्थ पा बैठे ।२५४॥

खिदमतगार गुलाम मौजूद सारे, गल तौंक[5] अताअत[6] सजा बैठे।
करसन[7] नाल इशारेआँ कम ओ ताँ, न ओ भरमसन[8] कोई भरमा[9] बैठे ॥२५५॥

मैं भी जाँदेआँ[10] कर ताकीद जासाँ[11], खबरदार कर कोई खता बैठे।
ज़रा फिकर न उस दा करो कोई, तुस्सी किऊँ माहराज घबरा बैठे ॥२५६॥

आ के ख़बर लैजासाँ[12] मैं पेआ, विच बन जिस डेरा जमा बैठे।
इस दे बाझ कोई दुख नहिँ होर उन्हाँ, हो तुस्साँ थीं जो जुदा[13] बैठे ॥२५७॥

लौणे[14] ज़ोर भी हुण ताँ कम्म केहड़े, तुस्सी चित्त बनवास नूँ चा बैठे।
नहिं ताँ उन्हाँ नूँ दुख नहिँ होर कोई, हत्थीं आपणीं ता एह खा बैठे ॥२५८॥

दास आपणे नूँ रक्खो पास आपणे, कर निरास किऊँ हो खफा बैठे।
कदमाँ विच्च जद रक्खेआ अज तोड़ी[15], दस्सो हुण किऊँ दिलों भुला बैठे ॥२५९॥

---

१. कहते। २. आज्ञा। ३. कहने पर। ४. पीठ। ५. प्रमाण-पत्र। ६. दासता। ७. करेंगे। ८. भूल करेंगे। ९. भूल करवा। १०. जाते हुए। ११. जाऊँगा। १२. ले जाऊंगा। १३. वियुक्त। १४. लाएं। १५. तक।

तुस्सां बाझ मुशकल इत्थे रैहन मैरा, मैनूँ केॲआ एह तुस्सी फरमा बैठे।
रैहसी[1] दम कदम दे नाल ऐह ताँ, एहो लेख *दिलशाद* लिखा बैठे ॥२६०॥

रामचन्द्र का वचन—

कहवाँ केॲआ तैनूँ दस्स वीर मैरे, मैनूँ सखत चा तूँ मजबूर कीता।
सुख छोड़ के दुख नूँ हत्थ पाया, मैरे नाल बनवास मनज़ूर कीता ॥२६१॥

आ हुण दुखिआँ दे गल लग्ग आके, शीशे ऐशे[2] दे नूँ जे तूँ चूर कीता।
चल हो तैयार फिर नाल मैरे, जेकर ज़िद नूँ नहिँ तू दूर कीता ॥२६२॥

मैं ताँ आखेॲआ रहो तूँ घर अन्दर, पर तूँ आपणा कैह्या ज़रूर कीता।
आद अन्त ताईं *दिलशाद* आपणा, विच दुनिया दे नाम मशहूर कीता ॥२६३॥

सर्वस्व-दान—

धन-माल जो कुछ मौजूद है सी, नमित्त[3] ईश्वर दे सब लगा देंदे।
गरीबाँ आजज़ाँ[4] अते ब्राह्मणाँ नूँ, हत्थीं आप पिआरेॲआ चा देंदे ॥२६४॥

कौडी आपणे कोल नहिँ इक्क रखदे, पल विच सरबंस[5] लुटा देंदे[6]।
लछमन ताईं *दिलशाद* फिर हस के ते, रामचन्दर माहराज फरमा देंदे ॥२६५॥

रामचन्द्र का तैयार होकर पिता के पास जाना—

मैरे भाई लछमन सुण गल्ल मैरी, करनी ढिल हुण नहिं दरकार प्यारे।
दिल खुश कैकई दा कर देइए, चलिए उठ बनवास सुधार प्यारे ॥२६६॥

एह पुशाकिआँ देविएँ लाहँ[7] इत्थे, लइए कफनिआँ[8] गल सँवार प्यारे।
इस जा दी किसे चीज़ दा भाई मैरे, होना नहिँ असाँ रवादार प्यारे ॥२६७॥

परसराम थीं लेॲआ मैं धनश जेह्ड़ा, दित्ती जनक भी इक्क तलवार प्यारे।
एही दो चीज़ाँ लैसाँ नाल मैं ताँ, सुण भाई मैरे वफादार[9] प्यारे ॥२६८॥

धनश आपने नूँ रक्ख नाल तूँ भी, नहिँ होर कोई लोड़ हथिआर प्यारे।
इतना आख फिर देर न ज़रा कीती, कपड़े देवँदे[10] दोहें उतार प्यारे ॥२६९॥

लई दोहाँ ने पा पुशाक भगवीँ, गए हो बन-वास तैयार प्यारे।
चलो पिता जी दा दरशन कर लईए, कैंहदे रामचन्दर जांदी-वार[11] प्यारे ॥२७०॥

---

१. प्राण। २. विलास। ३. निमित्त। ४. अनाथ। ५. सर्वस्व। ६. दें। ७. उतार। ८. गोदड़ियां। ९. आज्ञानुवर्ती। १०. दोनों। ११. जाते हुए।

चौदाँ बरस रैह्णा असां विच बन दे, नहिं नाल बस्ती सरो-कार प्यारे।
साडे[1] औंदिआँ[2] नूँ खबरे केॲा होसी, नहिं दमाँ[3] दा[4] कोई इतवार प्यारे ॥२७१॥
होसी वेख कैकई भी खुश सानूँ, जासी उस दा उतर बुखार प्यारे।
तपेॲा तन तंदूर[5] दे वाँग उस दा, चलो कर चलिए ठंडाठाँर[6] प्यारे ॥२७२॥
कीता नाल साडे कोई बुरा नाहीँ, असी कागे भजन करतार प्यारे।
हाझर बाप दे कोल *दिलशाद* होके, हत्थ जोड़ करदे नमस्कार प्यारे ॥२७३॥

मंत्री सुमन्त का राजा से वचन—

करे अरझ वझीर सुमन्त उठ के, सुत्ते किऊँ माह्‌राज मुँह कज्ज के ते।
रामचन्दर जी तुसां दे कोल हाझर, गए आ बनवास नूँ सँज्ज के ते ॥२७४॥
सीता लछमन भी नाल तैयार होए, उठो करो दर्शन हुण रँज्ज के ते।
मंगन आगेआ खड़े *दिलशाद* तिन्ने, लगे चलन अजुध्या तजँ के ते ॥२७५॥
घर बार नूँ छोड़ फकीर होए, धन माल एह सभ लुटा आए।
लाया चित्त बनवास दे विच इन्हाँ, मैहॅल माड़िआँ दिलों भुला आए ॥२७६॥
एह ताँ हो तैयार माह्‌राज पए नेँ, खैंरसन[11] ऐशें[12] दे नूँ अग्ग ला आए।
सुट्टिआँ[13] लाँह[14] पुशाकिआँ *दिलशादा*, गल विच भगविआँ कफनिआँ पा आए ॥२७७॥

दशरथ का आदेश—

लई सुण सुमन्त दी गल जदों, नाल नरम आवाझ फरमाया वे।
हाझर रानिआँ करो तमाम इत्थे, एह सुमन्त नूँ हुकम सुनाया वे ॥२७८॥
गइआँ रानिआँ सारिआँ आ उत्थे, जाके सद्दे[15] सुमन्त ले आया वे।
रामचन्दर नूँ फिर *दिलशाद* राजे, बाँहों पकड़ छाती नाल लाया वे ॥२७९॥

दशरथ का वचन—

मैरी अक्खिआँ थीं न हो दूर बच्चा, दे बनवास दा छोड़ खेआल प्यारे।
रहो विच घर दे बेटा कोल मैरे, लै तूँ राज ते भाग संभाल प्यारे ॥२८०॥
नहिं ताकत कैकई दी कुझ्झ आखे, नाहिँ भरथ दी कोई मजाल प्यारे।
बुड्ढी जान *दिलशाद* मैं आन होया, रहो तूँ कोल मैरे मैरे लाँल[16] प्यारे ॥२८१॥

---

१. हमारे। २. आने पर। ३. प्राण। ४. का। ५. रोटी बनाने का मिट्टी का भाठ। ६. शीतल। ७. ढांप। ८. तैयार। ९. तृप्त। १०. त्याग। ११. काट कर रखा हुआ पक्का फसल। १२. सुख-विलास। १३. फैंकी। १४. उतार। १५. बुला। १६. पुत्र।

रामचन्द्र का निवेदन—

लौ सुण हुण पिता जी अरज़ मैरी, करां केॲआ दिल हौंदा नरम नाहीँ ।
करके कौल ज़बान थीँ हार जाना, दस्सो पिता जी केॲआ शरम नाहीँ ॥२८२॥
करसाँ बोल तुसाडड़ा मैं पूरा, पिछे हटणा मैरा धरम नाहीँ ।
ऐसे राज *दिलशाद* कई मिल जासन, मैरे वासते करो भरम नाहीँ ॥२८३॥

दशरथ का वचन—

मैं ताँ ज़ोर बतेरड़ा ला थकेॲआ[१], मन्नी नहिँ कैकई कोई गल मैरी ।
सुखन-हार बेशक मैं ताँ हाँ बैठा, सकदी पेश नाहीँ ताहीँ चल मैरी ॥२८४॥
कराँ केॲआ नहिँ सुझदा[२] कुझ मैनूँ, रही जान अन्दरों हाय जल मैरी ।
नहिँ झूठ *दिलशाद* इस विच कोई, हुण ताँ है ज़िन्दगी घड़ी पल मैरी ॥२८५॥
सुण फरज़न्द मैरे दिलबंद प्यारे, रहो तूँ इत्थे मैरे पास बच्चा ।
वेख वेख तैनूं पेॲआ मैं जीवाँ, मन्न गल न हो उदास बच्चा ॥२८६॥
आया वकत अखीर मैं जान बैठा, लैंवाँ[३] उत्ते अटके मैरे साँस बच्चा ।
बुड्ढे बाप दा मन्न *दिलशाद* कैह्णा, दे छोड़ खेॲआल बनबास बच्चा ॥२८७॥

रामचन्द्र का वचन—

कर चुका मैं पिता जी अरज़ पैह्ले, सुखन हार के धरम गँवावनाँ है ।
इस दुनिआँ तों इक दिन चल जाना, धरम बाझ कुझ कम नहीं आवनाँ है ॥२८८॥
देॲओ आगेॲआ पिता जी खुश होके, मैं ज़रूर बनवास नूँ जावनाँ है ।
मैरा करो न फिकर *दिलशाद* कोई, बोल आप दा तोड़[४] चढावनाँ है ॥२८९॥
कन्द-मूल दे कड्ढने वासते हुण, मैनूँ पिता जी लोड़ औज़ार है जी ।
नाले फल-फुल्लाँ दे रक्खने नूँ, इक टोकरी भी दरकार है जी ॥२९०॥
एही दो चीज़ाँ देॲओ बखश मैनूँ, रैह्सी कोल मैरे यादगार है जी ।
नहिँ लोड़ *दिलशाद* कुझ होर मैनूँ, मैनूँ आसरा इक निरंकार[५] है जी ॥२९१॥

कवि-वचन—

उस दी कुदरताँ तो कुरबान जावाँ, निराले हैन उस रब दे रंग भाई ।
ओही रामचन्दर मालक तखत जेह्ड़ा, रेह्या रम्बा ते टोकरी मंग भाई ॥२९२॥

---

१. थक गया । २. सूझता । ३. होठों । ४. पूरा करना । ५. परमात्मा ।

वड्डे वड्डे स्यानेआँ[1] दानेआँ[2] दी, अकल वेख के होवँदी दंग भाई ।
पातशाहाँ नूँ वखत *दिलशाद* पाके, देवे पल विच कर मलंग[3] भाई ॥२९३॥
इलम गै़ब[4] नूँ जाणदा नहिँ कोई, नहिँ किसे ने उस दा भेत लेआ ।
महूरत कढ्डेआ[5] पंडताँ राज दा सी, झगड़ा फेर दस्सो किऊँ एह आन पेआ ॥२९४॥
गैइआँ पोथिआँ[6] थोथिआँ[7] हुन किथे[8], कित्थे नजूमिआँ[9] दा हुण नंजूम[10] गेआ ।
पंडत वेखदे पए *दिलशाद* ओही, बदले राज दे मिल वनवास रेहा ॥२९५॥
झूठा जोतिष नजूम ते पंडत झूठे, इलम गै़ब दे नूँ कोई जाणदा नहिँ ।
पल विच हसाए रुँवाए[11] पल विच, वाकफ कोई उस रब्ब दी शानदा नहिँ ॥२९६॥
वेदशास्त्र सब अधीन उसदे, एह ग्यान कोई दिल ते आणदा[12] नहिँ ।
होवे ओही *दिलशाद* जो रब्ब भावे, चलदा ज़ोर फेर कोई इनसान दा नहिँ ॥२९७॥

दशरथ की दशा——

रामचन्दर माहराज दी गल सुण के, झार झार राजा दसरथ रोण लग्गा ।
डिग्गा[13] खा पँछाड़[14] ज़मीन उत्ते, हुण ताँ ज़िंदगी थीं हत्थ[15] धोण लग्गा ॥२९८॥
पइआँ रोंदिआँ रानिआँ गोलिआँ[16] नीँ, खून अक्खिआँ थीं समझो चोणँ[17] लग्गा ।
निकलन सुण[18] डीकाँ[19] चीकाँ दरद दिआँ[20], कहो केआ *दिलशाद* एह होण लग्गा ।२९९।
राजे दशरथ नूँ हो यकीन गेआ, गल आपणी नूँ एन्हाँ मोड़ना नहिँ ।
विद्यावान एह ताँ ग्यानवान पूरे, रिश्ता धरम दा इन्हाँ तरोड़ना नहिँ ॥३००॥
हो आए तैयार बनवास नूँ एह, इत्थे रह के ते सुख लोड़ना[21] नहिँ ।
जावे पेश *दिलशाद* न कोई मेरी, ज़िद अपनी नूँ इन्हाँ छोड़ना नहिँ ॥३०१॥

सुमन्त्र को आज्ञा——

लग्गा कैहन सुमन्त नूँ फेर राजा, जा के रथ नूँ जोड़ लेआ हुण तूँ ।
मेरे प्यारे तारे दोवेँ अक्खिआँ दे, उत्ते रथ ते लै चढ़ा हुण तूँ ॥३०२॥
हो सके ताँ मोड़ के लै आवीँ, मेरी जान नूँ लवीँ बचा हुण तूँ ।
मरसाँ[22] मैं फ़िराक[23] दे विच पिच्छों, एह भी देवीं *दिलशाद* सुणा हुण तूँ ॥३०३॥

---

१. निपुण । २. बुद्धिमान् । ३. फकीर । ४. परोक्ष । ५. निकाला । ६. पुस्तकें । ७. झूठिआँ । ८. कहां । ९. ज्योतिषी । १०. ज्योतिष । ११. रुलाए । १२. लाता । १३. गिर पड़ा । १४. (ज़ोर से) पीठ के भार । १५. त्यागने । १६. दासिआँ । १७. गिरने । १८. रोने का ऊँचा शब्द । १९. चीत्कार । २०. की । २१. चाहना । २२. मरूँगा । २३. वियोग ।

कैकेयी की प्रसन्नता—

दित्ता हुकम सुमन्त नूँ एह जदोँ, सुण के दिलों कैकई निहाल होई।
चेहरा सुणदेआँ ई हो गेआ दूणा, आके विच खुशी रत्ती-लाल[1] होई ॥२०४॥

कैंह्दी चाल चल गई एह खूब मेरी, खुशी दिल दे विच कमाल होई।
जाके पुच्छ *दिलशाद* कुशल्या नूँ, सख़्ती जिस ग़रीबनी नाल होई ॥२०५॥

कैकेयी का सीता से वचन—

लग्गी सीता नूँ कैह्न कैकई रानी, बेटी एह कपड़े तूँ पाँवने नहिँ।
लाह[2] दे पोशाक ते होर झेवर, विच बनवास दे नाल ले जाँवने नहिँ ॥२०६॥

एह लै भगवी पा पौशाक तूँ भी, विच जंगल दे राज कमाँवने नहिँ।
रैहॅना बरस चौदाँ विच जंगलाँ दे, एह लिबास *दिलशाद* कम आँवना नहिँ ॥२०७॥

सीता का चकित होना—

कपड़े लए कैकई थीँ लै सीता, वैले[3] समझ न उस नूँ पाण दी सी।
घर पातशाहाँ दे पैदा होई एह ताँ, रह के विच मैह्लाँ मौजाँ मानदी सी ॥२०८॥

कपड़े लै के हो हैरान गई ए, इन्हाँ गलाँ नूँ कद ओ जानदी सी।
रही सोच *दिलशाद* विच दिल बैह के, औंदी जाच न कपड़े लान[4] दी सी ॥२०९॥

रामचन्द्र का सीता से वचन—

रामचन्दर माह्राज गए समझ दिलोँ, कैह्दे कोल सीता दे जाके ते।
एह ताँ शगन पहला बनवास दा ए, होइओँ किऊँ हैरान घबरा के ते ॥२१०॥

कपड़े लै सीता दे हत्थ विचोँ, देंदे आप हत्थीं पैहना के ते।
कहो केॲा *दिलशाद* हुण हत्थ आया, मेरे नाल बनवास नूँ आके ते ॥२११॥

कवि-वचन—

संगदिलां[5] दे भी दिल वेख के ते, समझो सच ओ भी मोम होण लग्गे।
होया रोझ[6] मैहॅशर[7] गोया[8] विच मैह्लाँ, झार-झार बह के सारे रोण लग्गे ॥२१२॥

आया तरस कैकई नूँ नहिँ झरा, पट-पट[9] वाल सिर दे सभे खोण लग्गे।
फ़रश मैह्ल दे नूँ *दिलशाद* उत्थे, पानी हञ्जुआँ दे नाल धोण लग्गे ॥२१३॥

---

१. लाल-लाल। २. उतार। ३. परन्तु। ४. पहिनने। ५. पत्थर की भांति कठोर दिल वालों। ६. दिन। ७. प्रलय का। ८. मानो। ९. उखाड़ उखाड़ कर।

सुमन्त का कैकेयी से वचन—

लगा कैह्न सुमन्त फिर रो के ते, एह तूँ चाल रानी उलटे राह कीती ।
आई सोच विचार न कोई तैनूँ, सारी पातशाही तूँ तबाह कीती ॥३१४॥

रही गरम हमेश तू अग्ग वाँगों, कदी नरम न तूँ निगाह कीती ।
उसे माँ दी धी *दिलशाद* हैं तूँ, जिस खसम दी नहिँ परवाह कीती ॥३१५॥

कैकेयी की माता का वृत्तान्त—

लै सुण मैथों धर के कन झरॉ, माँ आपणी दी दास्तान[1] रानी ।
बोली पंछिआँ दी समझे बाप तेरा, कर धेआन मैं लगा सुणान रानी ॥३१६॥

इक रोझ विच मैहॅल दे आहा बैठा, होके विच दिल दे शादमान[2] रानी ।
तेरी माँ भी कोल सी उस वेले, पंछी उडदे पए असमान रानी ॥३१७॥

सुण के बोली परिंदे[3] दी बाप तेरा, लगा हस के ताड़ी[4] वजान रानी ।
वजा[5] हसने दी पुच्छे माँ तैरी, राजा चाँहदा सी भेत छुपान रानी ॥३१८॥

मुड़ मुड़ पई आखे देओ दस्स मैनूँ, लगा बाप तैरा गल वलान[6] रानी ।
वेले माँ तैरी छड्डेआ नहिँ खैहूँड़ा, हत्थ धो लगी मगर आन रानी ॥३१९॥

होया बाप मजबूर जद आन तेरा, तेरी माँ नूँ लगा सुणान रानी ।
इस दे पुच्छने थीं नहिँ कोई फैदा, बल्कि है तेरा नुकसान रानी ॥३२०॥

वकत औसिआ हत्थ न फिर मुड़ के, बैह के करेंगी पिच्छों अरमान रानी ।
नहिँ हुकम मैनूँ इस दे दसने दा, छोड़ झिद न हो नादान रानी ॥३२१॥

वजा हसने दी जे मैं दसाँ तैनूँ, निकल तुरत जासी मैरी जान रानी ।
औसी हत्थ *दिलशाद* दस के तैरे, जासी राज भी हो वीरान रानी ॥३२२॥

रानी का राजा से वचन—

कैह्दी जो होसी सो होण देओ, हसे किऊँ एह देओ बतला मैनूँ ।
हँसी आई माहराज किस गल उत्तों, सच्चो सच्च ओ देओ सुणा मैनूँ ॥३२३॥

पुच्छे बाझ न रह्वाँगी मैं कदी, दओ दस किऊँ रहे डरा मैनूँ ।
सुणे बाझ *दिलशाद* न सबर आवे, दस्सो रब्ब दे वास्ते चा[7] मैनूँ ॥३२४॥

---

१. कहानी । २. प्रसन्न । ३. पत्ती । ४. ताली । ५. कारण । ६. बदलने । ७. अनुरोध । ८. आयगा ।

राजा का रानी को निकाल देना—

लेॲा सुण राजे एह हाल जदों, कीता माँ जो तेरी बेॲान रानी।
आ सोच गई फिर विच दिल दे, है बेफायदा मगज़[1] खपान[2] रानी ॥३२५॥
मैरे मरण दी नहिँ परवाह इसनूँ, लेॲा समझ राजे कर धेॲान रानी।
लगा कैॅहन एह ताँ दुश्मन है मैरी, होया जिस ते मैं कुरबान रानी ॥३२६॥
मोयाँ[3] मैं ताँ फिर एह कम केहड़े, होया मैं किऊँ एडा हैरान रानी।
जिऊँदा रहेॲा ताँ रानिआँ कई मिलसन, देवाँ किऊँ मैं अपनी जान रानी ॥३२७॥
दित्ता मैॅहल थीँ कड्ढ फिर बाहर राजे, तैरी माँ नूँ पकड़ के कान रानी।
दर दर दी मंगदी भीख फिर दी, करदे लोक सारे लान-तान[4] रानी ॥३२८॥
उसे माँ दे पेट थीँ तू जॅम्मी[5], तैरा वेक्खेॲा ओही निशान रानी।
नहिँ फरक ज़रा तैरे विच्च कोई, तूँ भी उस दे हैं समेॲान[6] रानी ॥३२९॥
कराँ केॲा भोला बादशाह मैरा, बैठा बंद जो कर ज़बान रानी।
करदा जुॅरत[7] जेकर *दिलशाद* राजा, देंदा तरोड़ तेरा अभमान रानी ॥३३०॥

वसिष्ठ जी का वचन—

गुरु वसिष्ठ माह्राज फिर खफा होके, लगे कैह्न किऊँ ज़ुलम कमान लगी एँ।
ज़रा रब दा खौफ कर ज़ालमे नीँ, जले दिलाँ नूँ किऊँ जलान लगी एँ ॥३३१॥
रामचन्दर नूँ हुकम बनवास दा ए, ऐवें सीता नूँ किऊँ सतान लगी एँ।
विच जहान बदनाम *दिलशाद* होके, किऊँ फिर नंग-नामूस[8] गँवान लगी एँ ॥३३२॥

वसिष्ठ जी का शाप देना—

अज यश तैरा रेह्ॲा हो जेह्ड़ा, जाके पुच्छ खां खास[9] ते आँम[10] कोलों।
इस पाप दा मिलसी सराप तैनूँ, छुटसे कदी न इस इलज़ाम कोलों ॥३३३॥
रखसी नाम कैकई न कोई अग्गों, डरसी कुल लुँकाई[11] इस नाम कोलों।
कीता ज़ुलम *दिलशाद* एह बौहत भारा, आहेॲा[12] वैर लैना केहॅड़ा राम कोलों ॥३३४॥

दशरथ का वचन—

राजे दशरथ ने आखेॲा नाल गुस्से, वाह ज़ुलम थीँ ज़ालमे आ हुण तूं।
बन के डैनँ[13] किऊँ लगी एँ खान सानूँ, मिट्टी आपने सिर न पा हुण तूं ॥३३५॥

---

१. मस्तिष्क। २. थकाना। ३. मर गया। ४. दुत्कार। ५. उत्पन्न हुई। ६. समान। ७. हिम्मत। ८. प्रतिष्ठा। ९. विशेष लोग। १०. सर्वसाधारण। ११. जनता। १२. था। १३. डाकिनी।

इन्हाँ गल्लाँ थीँ हत्थ के औसिआँ नीँ, दिल दुखिआँ दे न दुखा हुण तूँ ।
दित्ता सीता नूँ दस बनवास किसने, मैनूँ एह *दिलशाद* सुणा हुण तूँ ॥३३६॥

रत्नजड़त[2] फिर झेवर मंगा के ते, राजा आप सीता नूँ चा देंदा ।
ज़री-बाफ[3] ते मखमली होर कपड़े, अग्गे उस दे ढेर लगा देंदा ॥३३७॥

नाल आपने लै जा तूँ बेटी, रो रो के एह सुणा देंदा ।
दिलशाद इस वकत नूँ वेख के ते, संगदिल भी आँसू बहा देंदा ॥३३८॥

दशरथ का रामचन्द्र से वचन—

दसरथ रो के फिर एह कैह्न लग्गा, मैं ताँ दुःख जुदाई दा सैह्न लग्गा,
जिऊँदा मैं कदी नहिँ रैह्न लग्गा, जासी निकल मैरी पिच्छों जान बचा ।

करां केॲआ मैं झोर न कोई चल्ले, मैरे प्राण लैबां[4] उत्ते आन खल्ले[5],
लगी मौत हुण ताँ[6] मैंते करन हल्ले, मैरा दम कोई दम मैहमान बचा ॥३३९॥

बेशक चले बनवास नूँ जाओ तुस्सी, चौंदाँ साल गुझार के आओ तुस्सी,
मिट्टी सिर कैकई दे पाओ तुस्सी, करसी मदद तैरी भगवान बचा ।

सोची के सी मैं ते के होई, मैरी गई तदबीर न पेश कोई,
मैरे नाल *दिलशाद* के रब्ब ढोई[7], जासां मर मैं विच अरमान बचा ३४०॥

कवि-वचन—

रामचन्दर लछमन दोवें उठ के ते, करन माइआँ[9] नूं निमस्कार लग्गे ।
सिर झुका के पैराँ नूँ हत्थ लैंदे, हुण बनवास नूँ होन तैयार लग्गे ॥३४१॥

पेश दसरथ दी नहिँ कोई चल सक्की, जुदा होन प्यारे आखरकार लग्गे ।
दिल दी हिरस नूँ दूर *दिलशाद* करके, करन नाम रोशन विच संसार लग्गे ॥३४२॥

सुमित्रा का लक्ष्मण को उपदेश—

हत्थ लछमन दी पिट्ठ[11] ते फेर के ते, कहे सुमितराँ रक्खीँ खेॲआल बचा ।
खुशी हद हिसाब थीं बाहर होई, लगों चलन तूँ भी जद के नाल बचा ॥३४३॥

---

१. आयगा । २. रत्नों से जड़े हुए । ३. सुनहरी । ४. हौंठ । ५. रुक गए ।
६. मुझ पर । ७. आक्रमण । ८. बर्ताव किया । ९. माताओं । १०. लगाते हैं । ११. पीठ ।

मन्नेआ हुकम जिवें[1] इन्हाँ बाप दा वे, तूँ भी वचन मेरा देवीँ पाल बच्चा ।
होवीँ गरम न रहीँ तूँ नरम हो के, रहना ताबा-हुकम[2] हर हाल बच्चा ॥३४४॥
अंग-संग रह के करीँ टैहल पूरी, मेरे दुद्ध नूँ करीँ हलाल[3] बच्चा ।
रहवीं दस्त-बस्ता[4] हाझर हर वेले[5], लावीँ दिल ते न मलाल[6] बच्चा ॥३४५॥
करीँ मुट्ठी-चाँपी हत्थीँ आपणी तूँ, देवीँ बिस्तरे आप संभाल बच्चा ।
होवे कोई तकलीफ न इन्हाँ ताईं, रखीँ खॅआल एह नेक-खसाल[7] बच्चा ॥३४६॥
करसें टैहल ताँ रैहसें निहाल[8] सदा, कर यकीन लवीँ मेरे लाल बच्चा ।
जा हुण नाल *दिलशाद*[9] तूँ खुश होके, जासन गुझर एह ताँ चौदाँ साल बच्चा ॥३४७॥

सुमन्त का रथ ले जाना—

सुमन्त रथ नूँ बाहर खलार[10] के ते, आ के सामने हुण खलो रेहा ।
मुँहोँ बोल के कुछ नहिँ आख सकदा, झार-झार फिर वेख के रो रेहा ॥३४८॥
गई पेश नहिँ किसे दी कोई भाई, जो कुम्फ होवना सी ओ ताँ हो रेहा ।
मणके कई दलीलां दे *दिलशादा*, धागे खॅआल दे विच परो रेहा ॥३४९॥

अयोध्या से बाहर हो जाना—

खड़ा सामने वेख सुमन्त ताईं, रामचन्दर माहराज मुस्करावँदे नीँ ।
हत्थ बाप दे पैरां ते ला के ते, नाल अदब[11] दे सीस नवावँदे नीँ ॥३५०॥
कीती देर न पलदी फेर उत्थे, निकल बाहर मैहल थीं आवँदे नीँ ।
लै के लछमन ते सीता नूँ नाल आपने, उत्तः रथ सवार हो जावँदे नीँ ॥३५१॥
होए जमा अजुध्या दे लोक सारे, घेरा रथ नूँ आन के पावँदे[12] नीँ ।
जांदी पेश उन्हाँदड़ी नहिँ कोई, रो रो पए हाल गँवावँदे नीँ ॥३५२॥
कई कैहन कैकई ने बुरा कीता, कई दसरथ नूँ बुरा बनावँदे[13] नीँ ।
आवे जो विच मुँह दे पए आखन, हो वेखौफ[14] ओ खौफ[15] न खावँदे नीँ ॥३५३॥
कपड़े चाक कर डिग्गे कई खाक उत्ते, कई रथ नूँ पकड़ अटकावँदे[16] नीँ ।
कई लेटदे पए झमीन उत्ते, वांग मच्छी[17] दे जान तड़फावँदे नीँ ॥३५४॥

---

१. जैसे । २. अधीन । ३. पवित्र । ४. हाथ-बँधा । ५. समय । ६. दुःख । ७. (हाथ से) अंगों का दबाना । ८. सद्गुणी । ६. प्रसन्न । १०. खड़ा करके । ११. सम्मान । १२. डालते । १३. बनाते । १४. निडर । १५. डर । १६. रोकते । १७. मछली ।

चाबक मार सुमन्त ! कर तेज घोड़े, रामचन्दर माह्राज फरमाँवदे नीँ ।
लोक रथ दे नाल पए दौड़ सारे, वध-वध[1] के कदम उठाँवदे[2] नीँ ॥३५५॥

लै रथ नूँ रोक सुमन्त ! झ़रा, उच्चा बोल के पए सुनाँवदे नीँ ।
जाणा असाँ भी नाल माह्राज दे जी, पए कूँजँ[3] दे वांग कुरलाँवदे[4] नीँ ॥३५६॥

रथ अटका रैला[5] लै नाल साँनूँ, पा पा कसमाँ पए बुलाँवदे नीँ ।
पए दौड़दे रथ दे मगर सारे, पिच्छे पैर न झरा हटाँवदे नीँ ॥३५७॥

अजुध्यावासिआँ नूँ वेख रामचन्दर, फौरन रथ नूँ चा खलवाँवदे[6] नीँ ।
गए मिल *दिलशाद* जद आन सारे, ताँ फिर उन्हाँ नूँ आप समझाँवदे नीँ ॥३५८॥

रामचन्द्र का वचन—

कैह्ंदे करो न तुसी तकलीफ कोई, ऐवेँ[7] दुख पए गल पाओ नाहिँ ।
मैनूँ लोड़ हमराही[8] दी नहिँ कोई, फिकर प्यारेओ दिल ते लाओ नाहिँ ॥३५९॥

बस्सो रस्सो तुसी घरां विच जाके, मेरे नाल बनवास विच आओ नाहिँ ।
चौदाँ बरस पिच्छों मिलसां आन तुस्साँ, रक्खो हौसला दिलों घबराओ नाहिँ ।५६०।

मन्नो वासते रब दे गल्ल मेरी, जान देओ मैनूँ अटकाओ नाहिँ ।
मनना हुकम *दिलशाद* है धर्म मरा, मैनूँ धर्म थीं पिच्छे हटाओ नाहिँ ॥३६१॥

अयोध्यावासिओं का वचन—

लग्गे रल के कैह्न फिर एह सारे, तुस्सां बाझ माह्राज है रैह्न मुशकल ।
किस तरह गुझारिए बरस चौदाँ, चौदाँ पल विच घर दे बैह्न[9] मुशकल ॥३६२॥

पल्ला छंड लगे नस्सन[11] किऊँ साथों, साडा रैह्न अजुध्या खैह्न[12] मुशकल ।
रखो कदमाँ दे नाल *दिलशाद* सानूँ, सानूँ दुख जुदाई दा सैह्न मुशकल ॥३६३॥

एहो आखदे पए हत्थ जोड़ सारे, माह्राज असाँ कदमाँ नाल रैह्ना ।
तुस्साँ बाज गुझारना दिन औखा, विच बनबास एह चौदाँ साल रैह्ना ॥३६४॥

पिच्छे कदी हटायाँ नहिँ हटना, समझो नाल असां हर हाल रैह्ना ।
दिलशाद तुसाडड़े बाज साडा, विच अजुध्या दे है महाल[13] रैह्ना ॥३६५॥

---

१. बढ़-बढ़ । २. उठाते । ३. सारस पक्षी । ४. चीखते । ५. मिला । ६. खड़ा कराते हैं । ७. वृथा । ८. सहयात्री (साथी) । ९. बैठना । १०. कपड़ा झाड़ कर । ११. भागने । १२. ठहरना । १३. कठिन ।

कवि-वचन—

लई प्यारेआं गल्ल जद सुन इतनी, उतर रथ थीं हेठ फिर आवँदे नीँ ।
रल के नाल अजुध्याबासिआँ दे, पैदल[1]-पा हुण टुरदे जावँदे नीँ ॥३६६॥

हटदा नहिँ हटाएँआँ कोई पिच्छे, तरह[2]-तरह दे नाल समझावँदे नीँ ।
तमसा नदी दे उत्ते *दिलशाद* जा के, कर केआम चा डेरा लगावँदे नीँ ॥३६७॥

जंगल में रात—

रस्ते टुरदेआँ नूँ जद्द दिन सारा, गेआ गुज़र ते हो गई शाम इत्थे ।
राह चलन दा रेहा न वकत कोई, दित्ता सारेआँ ने कर केआम इत्थे ॥३६८॥

जो कुझ कोल हैसी लैंदे खा बैह् के, खोल बिस्तरे करन बिश्राम इत्थे ।
नींदर घेरेआँ[3] आन *दिलशाद* ऐसा, सुत्ते हो बेहोश तमाम इत्थे ॥३६९॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण से वचन—

अजुध्याबासिआँ ने सुण भाई मेरे, कदी साथ असाडड़ा छोड़ना नहिँ ।
रैह्‌ना विच बनबास अकन्त[4] असाँ, जोड़ नाल किसे असाँ जोड़ना नहिँ ॥३७०॥

देईए[5] किऊँ तकलीफ फिर इन्हां ताईँ, बदले अंब[6] दे अँक[7] नचोड़ना नहिँ ।
सुत्ता रैह्‌न *दिलशाद* दे सुत्तेआँ नूँ, संग नाल असाँ कोई लोड़ नहिँ ॥३७१॥

कवि-वचन—

गए हो सवार फिर रथ उत्ते, तुरत रथ नूँ चा जुड़वायाँ[8] नेँ ।
लै गए अजुध्या वल पैह्‌ले, पिच्छों पिच्छे चा फिर परतायाँ[9] नेँ ॥३७२॥

वासते भुल्लन अजुध्यावासिआँ दे, समझो एह मुगालता पाया नेँ ।
फिर कर पार नदी नूँ *दिलशादा*, डेरा आपणा दूर जा लायाँ नेँ ॥३७३॥

अयोध्यावासियों का जागना—

खुली नींद अजुध्यावासिआँ दी, सभे नींद थीं हो बेदार बैठे ।
रामचन्दर माह्‌राज नहिँ नज़र आए, पए रोवन सारे झारो झार बैठे ॥३७४॥

असां साथ लुटाया कैहन सुत्तेआँ, हुण के होवँदा वकत गुज़ार बैठे ।
कई ज़ैह्‌र खाके *दिलशाद* आहे, डुब के मरण नू कई हो तैय्यार बैठे ॥३७५॥

---

१. पदाति (पाँव के बल)। २. कई उपाय। ३. घेर लिया। ४. एकान्त (अकेले)। ५. देवें। ६. आम। ७. आक। ८. जुतवाया। ९. लौटाया। १०. गाड़ा।

वृद्धों का वचन—

चंद इक मरद आहे विच पीर-सालाह[1], लगे कैहन ओ सुण के वात सारी ।
पिच्छोंतोयाँ[2] हुण के हत्थ आवे, जद गुझार दित्ती सुत्तेआँ रात सारी ।।३७६।।

कीती ग़ाफ़िलो[3] तुसाँ नहिँ होश कोई, होई अकल तुसाडड़ी मात सारी ।
चले छोड़ के गए दिलशाद ताँही, लई वेख ग़ाफ़िल जद जँमात[4] सारी ।।३७७।।

आओ उठो इत्थे किऊँ हुण बैठ रहे ओ, असी ढूँढिए चल सिरीराम भाई ।
खुरे[5] रथ दे नूँ असी पकड़ के ते, रहिए चलदे सुबह तों शाम भाई ।।३७८।।

जित्थे होणगे मिलांगे जा उत्थे, गल्लाँ नाल नहिँ होवँदे काम भाई ।
सुण के गल दिलशाद एह बुड्ढेआँ दी, पए उत्थों फिर चल तमाम भाई ।।३७९।।

उन का अयोध्या मे लौट आना—

खुरा वेखणे नूँ पए लग सारे, डिट्ठा अजुध्या वल निशान है जी ।
गए परत अजुध्या रामचन्दर, होया रब साथे मेह्रबान है जी ।।३८०।।

वापस जाके नझर नहिँ कोई आया, ओही आह-नाला[6] ते फ़िँगाँ[7] है जी ।
धोखे विच दिलशाद आ गए सारे, रेहा दिल दे विच अरमान है जी ।।३८१।।

अयोध्यावासिओं की पंचायत—

पए रोन विच घराँ दे बैठ सारे, लगे कैह्न कैकई ने गंदे[8] कीता ।
कीता झुलम उस झालम ने एह भारा, राजे नाल भी उसने फंद[9] कीता ।।३८२।।

गई राजे दी अकल भी डुब सारी, जिस चँ[10] केहा कैकई पसंद कीता ।
किसे नाल नहिँ बैठ सलाह कीती, दूर अक्खिआँ थीँ फरझंद कीता ।।३८३।।

इकट्ठे हो के गए फिर बैठ सारे, आखिर[11] फैसला एह अंदे-चंद कीता ।
चौदाँ साल दे वासते दिलशादा, जशन शादिआँ दा चा बंद कीता ।।३८४।।

रामचन्द्र का सुमन्त्र से वचन—

जा हुण परत सुमन्त अजुध्या तूँ, असी चले चलांगे आप अग्गे ।
शोर-शर[12] दी नहिँ है लोड़ कोई, असाँ जाँवना है चुप चाप अग्गे ।।३८५।।

---

१. वृद्ध अवस्था वाले । २. पछताने पर । ३. हे प्रमाद करने वालो । ४. समूह । ५. निशान । ६. रोना-पीटना । ७. विलाप । ८. बुरा । ९. कपट । १०. 'ही' के अर्थ में अव्यय । ११. अन्तिम रूप से । १२. कोलाहल ।

रैह्ना जंगलाँ विच अकंत असाँ, रखना नाल नहिँ किसे मिलाप अग्गे ।
करना फिकर *दिलशाद* नहिँ कोई साडा, करीं अरज़ मैरी मैरे बाप अग्गे ॥३८६॥

सुमन्त्र का निवेदन—

हत्थ जोड़ सुमन्त खलो रेहा, कैहँदा मुआफ हुण करो गुनाह तुस्सी ।
चलो परत के विच अजुध्या दे, बैठे अपनी गल्ल निबाह[1] तुस्सी ॥३८७॥
करो दस्तगीरी[2] चल के वक्त पीरी[3], बुड्ढे बाप दी हो पनाह तुस्सी ।
तुस्साँ बाझ न रैह्नगे ओ झिन्दा, आए ला कलेजड़े भाह[4] तुस्सी ॥३८८॥
पए दरस नूँ तरसदे लोक सारे, किऊँ लाह बैठे दिलों चाह[5] तुस्सी ।
जिन्हाँ दुखाँ दे भार नूँ सिर चाया[6], देऑ भार उन्हाँदड़ा लाह तुस्सी ॥३८९॥
दे विसाह[7] अजुध्यावासिआँ नूँ, सुत्तेआँ छड आए विच राह तुस्सी ।
मन्नो गल्ल *दिलशाद* न झिद करो, होए किऊँ इतने बेपरवाह तुस्सी ॥३९०॥

रामचन्द्र का वचन—

केहँड़े तूँ सुमन्त ! धेआन लग्गों, उलटे करन मैनूँ एह ग्यान लग्गों,
मैं नहिँ भरमदा किऊँ भरमाण लग्गों, दुनिआ विच है दस्स बुनियाद[8] केह्ड़ी ।
मैह्ल माड़िआँ जाँदिआँ नाल नाहीँ, गेआ लै कोई धन ते माल नाहीँ,
करदा किऊँ एह तूँ खेआल नाहीँ, नाल जायगी दस जायदाद[9] केहड़ी ॥३९१॥
माँरू[10] मौत दा सिर ते वज्जना[11] ई[12], इक दिन समझ सरीर एह तजना ई,
जो घडेआ[13] है उसने भज्जना[14] ई, रैह्सी चीज़ दस आद[15]-जुगाद[16] केहड़ी ।
चौदँ बरस बनबास गुज़ार आवाँ, सिरों अपने भार उतार आवाँ,
देख जंगल दी मौज बहार आवाँ, है एह मुशकल गल *दिलशाद* केह्ड़ी ॥३९२॥
केहा मन्न सुमन्त नादान न हो, सुन गल्ल धेआन दे नाल भाई ।
करके खाँम[17] किऊँ काम बदनाम होवाँ, जासन गुज़र एह ताँ चौदाँ साल भाई ॥३९३॥
सुखन मोड़ना लोड़ना सुख अपना, धर्म छोड़ना है मुँहाल[18] भाई ।
रक्ख याद *दिलशाद* बुनयाद केह्ड़ी, फाँनी[19] दुनिआ खाब-खेआल[20] भाई ॥३९४॥

---

१. पूरी कर । २. सहायता (हस्तावलम्बन) । ३. वृद्धावस्था । ४. आग । ५. इच्छा । ६. उठाया । ७. विश्वास (भरोसा) । ८. मूलवत्ता (स्थिरता) । ९. संपत्ति । १०. मृत्युसूचक बाजा । ११. बजना (शब्द करना) । १२. है । १३. बना । १४. टूटना । १५–१६. आयुगान्त (नित्य) । १७. गलती । १८. कठिन । १९. नश्वर (नाश वाली) । २०. स्वप्नात्मक ।

तरकड़ी[1] सत दी जिस विच हत्थ पकड़ी, समझ ओ कदी घट[2] तोलदा नहिँ ।
लोभ छोड़ के जो निर्लोभ होया, ओह तां झूठ कदी मुँहों बोलदा नहिँ ॥३९५॥
जिसदा लगा धेॅआन ग्यान अंदर, कदी चित्त उसदा फिर डोलँदा[3] नहिँ ।
चुगन[4] गंदगिआँ कांग[5] *दिलशाद* जाके, हंस कदी अरूड़िआँ[6] फोलँदा[7] नहिँ ॥३९६॥
लौ, सुमन्त जी रुखसत हुण तुसाँ कोलों, असी हो गंगा थीँ पार चल्ले ।
जाओ परत अजुध्या विच तुस्सी, घर बार नूँ असी विसार चल्ले ॥३९७॥
रही हिरस न कोई विच दिल साडे, त्रिशना[8] मन दी नूँ असी मार चल्ले ।
करम-भोग एह समझ न शोक कर तूँ, लै वेख *दिलशाद* दिलदार चल्ले ॥३९८॥

चित्रकूट में पहुँचना—

दरया गंगा थीँ हो के पार तिन्ने, पए अगां नूँ हो रवान प्यारे ।
अग्गे अग्गे लछमन पिच्छे रामचन्दर, टुरदी पई सीता दरम्यान प्यारे ॥३९९॥
विच जंगलाँ दे पए चलदे नीँ, लै के तीर तरकश धनश बान प्यारे ।
संगम गंगा जमना उत्ते पौँह्च के ते, लैंदे कर तिन्ने अश्नान[9] प्यारे ॥४००॥
न कोई बिस्तरा बरतन साथ है सी, न सी होर कोई नाल सामान प्यारे ।
आवे रात जित्थे लैंदे कट उत्थे, द ॰ रब दी अजब तूँ शान प्यारे ॥४०१॥
खांदे छँत्तरी[10] नेहँमताँ[11] आह्न जेहड़े, कंद-मूल लगे ओही खान प्यारे ।
रखेँआ बिन सवारी नहिँ पैर जिन्हाँ, विच जंगलाँ ओही पैदल जान प्यारे ॥४०२॥
पौँदे[12] बिस्तरे रेशमी आहे जेहड़े, अज्ज हेठ ओ घास बिछान प्यारे ।
दम मारने दी नहिँ जा कोई, है बेअन्त लीला भगवान प्यारे ॥४०३॥
डरदा रहो हमेशा तूँ रॅब कोलों, खबरदार मत करें अभमान प्यारे ।
चलदे हसदे खेडदे विच जंगलाँ, कोई फिकर न दिल ते लान प्यारे ॥४०४॥
जा पौँह्चे फिर उस जा उत्ते, भारद्वाज दा जित्थे अस्थान प्यारे ।
होया खुश रिशी दिलों वेख के ते, लगा करन अगों आदर-मान प्यारे ॥४०५॥
आसन घँत[13] बिठौँवदा[14] कोल अपने, वेख वेख होवे शादमान प्यारे ।
रामचन्दर माहराज फिर बैठ उत्थे, लगे रिशी नूँ एह सुणान प्यारे ॥४०६॥

१. तराजू। २. कम। ३. हिलता। ४. चुगते हैं। ५. कौए। ६. गंदगी का ढेर। ७. खोलता। ८. तृष्णा। ९. स्नान। १०. छत्तीस। ११. बढ़िया पदार्थ। १२. पड़ते (लेटते) १३. बिछा। १४ बैठाते हैं।

माई मातराँ[1] दा हुकम मन्न के मैं, आया बाप दा कौल[2] निभान प्यारे ।
रैहना बरस चौदाँ विच बन असाँ, कीता एह ही माता फरमान प्यारे ।।४०७।।

जगह दस अकन्त कोई देओ सानूँ, करिए बैठ के जित्थे गुझरान प्यारे ।
लगा हस के रिशी फिर कैहन अग्गों, मैंनूँ खबर सारी दास्तान प्यारे ।।४०८।।

दस कोस इत्थों चित्रकूट है जी, है ओ जंगल सोहणा[3] आलीशान प्यारे ।
पए टुर उत्थों इतना सुन के ते, कीती ढिल्ल[4] न फिर इक आन प्यारे ।।४०९।।

चित्रकूट दे विच्च गए पौंह्च जदों, उत्थे कुटिया लगे बनान प्यारे ।
लई तुरत तयार फिर कर कुटिया, उसदी कुदरताँ तों कुरबान प्यारे ।।४१०।।

झुग्गी[5] विच्च गुझरान हुण करन लग्गे, होके मुल्क संदे हुक्मरान प्यारे ।
एह ताँ बैठ *दिलशाद* गए हैन[6] इत्थे, सुन अजुध्या दा हुण बेआन प्यारे ४११।।

दशरथ की दशा—

राजा मैहल कुशल्या दे विच जाके, है सी लेटेआँ[7] पलंग डहा[8] भाई ।
चले गए बनवास विच रामचन्दर, थकेआँ[10] कर भावें लख उपा भाई ।।१९२।।

अक्खीं तकदिआँ[9] थकदिआँ नहिं झराँ, रहिआँ तक्क सुमन्त दा राह भाई ।
रही उमीद *दिलशाद* नहिं जीवण दी, खड़ा लबाँ उत्ते आन साह[11] भाई ।।४१३।।

सुमन्त्र की दशा—

रामचन्दर माह्राज गए टुर जदों, कोई सुमन्त दा पेश नहिं झोर गेआ ।
वांग झलेआँ तकदा राह वलों, कैंह्दा छप कित्थे दिल दा चोर गेआ ।।४१४।।

रही होश सरीर दी न कोई, गोया हो दाखल झिन्दा गोर[12] गेआ ।
दलीलाँ दिल दिआँ दिल दे विच रहिआँ, इत्थे हो *दिलशाद* कुझ होर गेआ ।।४१५।।

अयोध्या में सुमन्त्र का आगमन—

पेआ टुर अखीर दिलगीर[13] होके, पौंह्ता विच अजुध्या जाके जी ।
राजे दसरथ दे कोल फिर पौंह्च के ते, दित्ता हाल उस सारा बता के जी ।।४१६।।

गई पेश माह्राज नहिं कोई मेरी, मैं ताँ आया हां साथ लुटा के जी ।
कही लक्ख *दिलशाद* नहिं इक मन्नी, गए टुर ओ पल्ला छुड़ा के जी ।।४१७।।

---

१ सौतेली माता । २. प्रतिज्ञा । ३. सुन्दर । ४. देर । ५. छप्पर । ६. हैं । ७. लेट गया । ८. बिछा । ९. देखते हुए । १०. थकती । ११. प्राण । १२. कब्र । १३. दुःखी ।

हत्थ जोड़ के कीती डंडौत[१] उन्हाँ, कीती आपनूँ उत्थों परणाम है जी ।
मैरे वासते फिकर नहिँ कोई करना, दित्ता तुस्साँ नूँ एह पैग़ाम[२] है जी ॥४१८॥
बोल आपदा चाढ़ना तोड़ मैं ताँ, इस जेहाँ[३] कोई होर न काम है जी ।
नहिँ कोई तकलीफ *दिलशाद* मैनूँ, हर तरह दे नाल आराम है जी ॥४१९॥
है कैकई भी धरम दी माँ मैरी, गुस्से नहिँ रैह्णा उस दे नाल तुस्साँ ।
उस्से दस्सेआ धरम दा राह मैनूँ, करना दिल नहिँ उस दा मलाल तुस्साँ ॥४२०॥
मैरी माँ कुशल्या सुमितराँ दा, निगह्बान रैह्णा हर हाल तुस्साँ ।
पौंह्चे दुःख *दिलशाद* न कोई उन्हाँ, रखना पिता जी एह खेआल तुस्साँ ॥४२१॥

भरत को संदेश—

भरथ भाई नूँ भी एहो आखेआ नें, राज आपना लैणा संभाल चाहिए ।
चलना हुकम कैकई दे विच तुस्साँ, रक्खना रैअँत[४] नूँ भी खुशहाल चाहिए ॥४२२॥
बेगुनाह नूँ नहिँ सझा देनी, करनी अच्छी तरह देख-भाल चाहिए ।
दिल दुखाना सताना न किसे ताईं, सच झूठ दी होवणी ताँल[५] चाहिए ॥४२३॥
पा के राज नूँ सुन फिर भरथ भाई, राजनीति दी रक्खनी चाल चाहिए ।
टैह्ल[६] पिता जी दी करनी पँरीत[७] सेह्ती[८], होणा मस्त न वेख इकबाल चाहिए ॥४२४॥
होंदा हक है बाप दा पुत्तर उत्ते, करनी झरा न टालमटाल चाहिए ।
मन तन थीं खिदमत करीं भाई, धरम आपने नूँ देना पाल चाहिए ॥४२५॥
मैरी माँ कुशल्या सुमितराँ दा, रक्खना तुस्साँ हर वकत खेआल चाहिए ।
होवे उन्हाँ नूँ न तकलीफ कोई, खँबरगीर[९] रैह्णा हर हाल चाहिए ॥४२६॥
रक्खना खुश कैकई नूँ हर वेले, खफा नहिँ होणा उस दे नाल चाहिए ।
मैरा जाना बनवास विच्च सुन के ते, लाणा दिल ते नहिँ मलाल चाहिए ॥४२७॥
गुझर जाणगे समझ एह साल चौदाँ, होना पेआरेआ रब्ब दयाल चाहिए ।
खबरदार *दिलशाद* होशेआर रैह्णा, विच्च राज न आणा झँवाल[१०] चाहिए ॥४२८॥

सुमन्त द्वारा लक्ष्मण की बात की सूचना—

लछमन आहा माह्राज जी बौह्त गुस्से, कैहँदा पिता ने झुलम कमाया जी ।
कीती सोच-विचार न कोई उन्हाँ, सद्द के कोल न कोई बहाया जी ॥४२९॥

---

१. दण्डवत् । २. संदेश । ३. जैसा । ४. प्रजा । ५. पड़ताल । ६. सेवा । ७. प्रीति । ८. सहित । ९. ध्यान करने वाला । १०. कमी=अवनति ।

कीता ओही कैकई जो कैंह दित्ता, केहा उस दा नहिँ परताया जी ।
किसे नाल नहिँ बैठ सलाह कीती, हो के चुप अन्धेर चा पाया जी ॥४३०॥
आवे हत्थ दस्स हुण के रोवने थीँ, हत्थीँ आप जद वकत [1]वंजाया जी ।
प्यारे पुत्तर आपने रामचन्दर ताईँ, घरों कढ के बाहर रुलाया जी ॥४३१॥
न सी दिल अजुध्या रैह्‌ण चांहदा, इस्से वास्ते निकल मैं आया जी ।
रैह्‌साँ भाई दे नाल मैं विच बन दे, करसाँ टैह्‌ल खिदमत [2]वीड़ा चाया जी ॥४३२॥
होंदा बाप [3]समेआँन है भाई वड्डा, एही दिल मेरे नूँ [4]भाया जी ।
नहिँ झूठ माह्‌राज इस्स विच्च कोई, लछमन सच *दिलशाद* सुनाया जी ॥४३३॥

कवि-वचन—

गल्लाँ सचिआँ सुन के रोवन लग्गे, गोया [5]लून पेआ उत्ते [6]फट्ट दे नेँ ।
[7]पिट्टन [8]हत्थड़े मार के [9]मत्थड़े ते, पए वाल सिर दे [10]बैहके [10]पट्टदे नेँ ॥४३४॥
आई समझ न वकत गँवा बैठे, हुण ताँ पए कर्चीचिआँ [11]वट्टदे नेँ ।
दिलशाद जुदाई दे दुक्ख [12]डाढे, जानण ओही जो इन्हाँ नूँ [13]कट्टदे नेँ ॥४३५॥

अचेतनता में राजा का वचन—

बुरा कीता ई कैकईए झालमें नीँ, मैनूँ खाक दे नाल मिलाया ई ।
मल मल हञ्जूँ दे नाल पेआ धोवाँ, ऐसा दाग़ कलेजड़े लाया ई ॥४३६॥
रामचन्दर नूँ जंगल विच्च टोर के ते, तैनूँ झालमें हत्थ के आया ई ।
झिद आपनी नूँ नहिँ छोडेआ तूँ, कई तरह तैनूँ समझाया ई ॥४३७॥
रक्खेओई मैनूँ न किसे गल [14]जोगाँ, एह हत्यारिए झुलम कमाया ई ।
दित्ता [15]बाल [16]चुँआतड़ा ला मैनूँ, मेरे तन नूँ चा तपाया ई ॥४३८॥
गेआ वचना हो मुहाल मेरा, बन के नागन [17]डंग चलाया ई ।
पिछली उमर बुढेपे दे विच्च आ के, मैनूँ चा *दिलशाद* रुलाया ई ॥४३९॥
रामचन्दर नूँ मैथों [18]विछोड़िआई, मैनूँ [19]जिऊँदेआँ विच्च न छोड़ेआई,
मेरी झिन्दगी दा बेड़ा बोड़ेआई, कीतो के एह रञ दी मारिए नी ।

---

१. नष्ट किया । २. प्रण । ३. समान । ४. अच्छा लगा । ५. लवण । ६. व्रण । ७. पीटने लगे । ८. दोनों हाथ । ९. माथे । १० उखाड़ते । ११. कसते । १२. बहुत अधिक । १३. काटते । १४. योग्य । १५. जला १६. जलती हुई लकड़ी । १७. दंश । १८. अलग किया । १९. जीते हुए ।

मेरे दिल नूँ चा दुखाया तूँ, मैनूँ खाक दे नाल मिलाया तूँ,
मेरे पुत्तर नूँ जंगल रुलाया तूँ, आयोई हत्थ के दस्स हत्यारिए नीँ ॥४४०॥
मैं ताँ आखेआ भरथ नूँ राज देसाँ, सिर उस दे ते रख ताज देसाँ,
सारे सौंप उस नूँ कम्म-काज[1] देसाँ, दूजी गल्ल नूँ किवें सहारिए नीँ ।
तेरे नाल इकरार जे न करदा, अज दुख *दिलशाद* एह न जरदा,
विच्च ग़म जुदाई दे न मरदा, जा उठ हुण एथों नकारिए[2] नीँ ॥४४१॥
हो जा दूर एथों मेरिआँ अक्खिआँ थीँ, मेरे सामने न खलो हुण नीँ ।
नहिँ साक[3] कोई तेरे नाल मेरा, दित्ता तोड़ रिश्ता अहा जो हुण नीँ ॥४४२॥
देवीँ आख बेशक एह भरथ नूँ भी, करे क्रम[4] मेरे नाँ ओ हुण नीँ ।
जा उठ *दिलशाद* न बैठ इत्थे, जो होवना सी गेआ हो हुण नीँ ॥४४३॥

कौशल्या का राजा से वचन—

एह किस नूँ तुस्सीँ सुणा रहे ओ, एह ताँ मेरा मकान माहराज है जी ।
है कम्म कैकई दा केआ इत्थे, बैठी मस्त ओ ताँ लै के राज है जी ॥४४४॥
किस वासते तुस्साँ दे कोल आवे, न ओ आप दी हुए मोहताज है जी ।
रामचन्दर नूँ टोर बनवास दित्ता, रक्खेआ भरथ दे सिर ते ताज है जी ॥४४५॥
ओ ताँ खुश हो के पई हस्सदी ए, मेरा रेहा कलेजड़ा खाज[5] है जी ।
जाणाँ केआ के पुत्तर दा हाल होसी, मेरी हत्थ भगवान दे लाज है जी ॥४४६॥
देवे धीरज दिल नूँ आन केहड़ा, दस्सो कौन मेरा रॅब्ब दे बाज[6] है जी ।
घड़ी घड़ी *दिलशाद* मैं फौल[7] रहिआँ, मिलेआ दुखाँ संदा जेहड़ा दाज है जी ॥४४७॥

राजा का वचन—

दसरथ कहे मैं झूठा ते तूँ सच्ची, गेआ भुल्ल मैं बखश गुनाह[8] रानी ।
गई वरत होनी एह ताँ नाल मेरे, चल्लेआ मैं अपुट्ठड़े[9] राह रानी ॥४४८॥
कीती साच-विचार न मैं कोई, कीता आपना आप तबाह रानी ।
घड़ी पल मैह्मान *दिलशाद* हैवाँ, आया लबाँ उत्ते मेरा साह रानी ॥४४९॥
आई मौत मेरी नहिँ शक कोई, रखीँ खेआल मेरा हुण तूँ आप रानी ।
बेगुनाह मैं सरवन नूँ मारेआ सी, कीता है भारा मैं एह पाप रानी ॥४५०॥

---

१. कार्य-कलाप । २. हे बुरे काम करने वाली । ३. सम्बन्ध । ४. क्रिया-कर्म । ५. खाया जाता । ६. भिन्न । ७. खोल । ८. अपराध । ९. उलटे ।

साड वाँग मरसें तूँ भी नाल-हा वे, केह्आ सरवन दे एह माँ-बाप रानी ।
गेआ वकत *दिलशाद* एह आ ओही, आया पेश मैंरे ओ सराप[२] रानी ॥४५१॥

कौशल्या का वचन—

माह्राज सराप किस तौर मिलेआ, तुससाँ एह के हुण सुणाया वे ।
अग्गे दुक्ख रेहा इक मार मैनूँ, उत्तों फिकर दूजा एह चा पाया वे ॥४५२॥
हैसी कौन सरवन मिल गेआ कित्थों, उसनूँ मार के किऊँ मुकाया[३] वे ।
दस्सो खोल के हाल *दिलशाद* उस दा, रानी वासता रब्ब दा पाया वे ॥४५३॥

राजा का वचन—

कराँ केआ मैं हाल बेआन रानी, आए लबाँ उत्ते मैंरे प्राण रानी,
हुण ताँ लग्गी निकलन मैरी जान रानी, हाय ! पाप भारा मैं एह कर बैठा ।
केहा सरवन दे जो मां-बाप मैंनूँ, दित्ता उन्हाँ ने जेह्ड़ा सराप मैंनूँ,
खला आन अग्गे ओही पाप मैंनूँ, ओही दुख मैं भी अज जर[४] बैठा ॥४५४॥
जेह्ड़ी नाल उन्हाँदड़े आही होई, मैंरे नाल भी रही आ हो ओही,
होंदा इसदा नहिँ इलाज कोई, समझ सच्च रानी मैं ताँ डर बैठा ।
लग्गा रोवन *दिलशाद* फिर झारझारी[५], लग्गी चोट कलेजड़े आन कारी[६],
गई भुल सरीर दी सुरत सारी, राजा हत्थ मत्थे उत्ते धर बैठा ॥४५५॥

श्रवण का वृत्तान्त—

दस्सां केआ रानी तैनूँ हाल उसदा, कीता एह भारा अपराध मैं ताँ ।
होके मस्त जवानी दे विच्च गाफल, बेगुनाह इक मारेआई साध[७] मैं ताँ ॥४५६॥
हत्थीं आप उसदा सस्कार करके, किरेआ कर्म ते कीते सराध मैं ताँ ।
लग्गा ओही सराप *दिलशाद* आके, बैठा कड्ढ ओही दिलों काढ[८] मैं ताँ ॥४५७॥
इक दिन जवानी दे विच्च रानी, वक़त शाम मैं खेडंन[९] शिकार गेआ ।
उत्ते पानी दे आई अवाझ मैंनूँ, सुन आवाझ मैं हो होशेआर गेआ ॥४५८॥
जाता आया शिकार कोई पीन पानी, मैं मारने नूँ हो तैआर गेआ ।
खिंच[१०] के तीर इक झोर दा मारेआ मैं, जेह्ड़ा निकल कलेजओं पार गेआ ॥४५९॥

---

१. रोता हुआ । १. शाप । ३. समाप्त किया । ४. झीलना, पाना । ५. निरन्तर आँसू बहाता हुआ । ६. तीव्र । ७. साधु । ८. तत्त्व । ६. खेलने । १०. खींच ।

पई एह अवाज़ फिर विच्च कंन्न[1] दे, हाय कौन ज़ालम तीर मार गेआ ।
तेरा ज़ालमा केॳा गँवाया मैं, बेगुनाह ते किउँ कर वार गेआ ॥४६०॥
होसन आखदे माँ ते बाप मेरे, सरवन लैन पानी हुण कॅन्धार[2] गेआ ।
दिलशाद मरसन रुल के विच्च जंगलाँ, ऐसी ज़ालमाँ कर तूँ कार[3] गेआ ॥४६१॥

गेआ कंब मैं एह अवाज़ सुण के, होए होश हवास फरार रानी ।
लग्गा वेखने फिर मैं जा के ते, कर रेहा है कौन पुकार रानी ॥४६२॥
आया आदमी दा बच्चा नज़र उत्थे, तड़फ तड़फ रोवे ज़ार ज़ार रानी ।
गेआ तीर कलेजड़ा चीर उसदा, नॅज़ा[4] वक़्त हो रेहा लाचार रानी ॥४६३॥
मां-बाप नूँ याद कर पेआ रोवे, वग लहू रेहा बेशुमार रानी ।
उसदा वेखेआ एह मैं हाल जदों, मेरा दिल हो गेआ बेज़ार रानी ॥४६४॥
रही होश सरीर दी न कोई, अथ्रुँ[5] निकलिआँ बे-अख़्तेआर रानी ।
ओह हुण वक़त *दिलशाद* न हत्थ आवे, जिस वक़त बैठा तीर मार रानी ॥४६५॥

गँवाया मैं तेरा दस्स के है सी, किस दे वास्ते तीर चलाया तूँ ।
मैं बेज़र[6] दे कोल नहिँ ज़र[7] कोई, ऐवें झॅलेआ[8] दिल भरमाया तूँ ॥४६६॥
चमड़े हड्डिआँ बाज नहिँ कुच्छ इत्थे, दस्स के इत्थों लैण आया तूँ ।
मैनूँ आपने मरण दा ग़म नाहीँ, ए पर वॅडा[9] अपराध कमाया तूँ ॥४६७॥
मा-बाप मेरे अँन्हे[10] अक्खिआँ थीं, हाय ! वॅखत[11] उन्हाँ नूँ पाया तूँ ।
लैसी खबर उन्हाँदड़ी कौन जाके, जिन्हाँ आजज़ाँ नूँ रुलाया तूँ ॥४६८॥
आया लैण पानी उन्हाँ वासते मैं, इत्थे मार के मैनूँ मुकाया तूँ ।
नहिँ इक *दिलशाद* एह मोए तिन्ने, पाप आपने सिर चढ़ाया तूँ ॥४६९॥

---

१. कान । २. दूर देश । ३. काम । ४. अन्तिम समय । ५. आँसू । ६. निर्धन । ७. धन ।
८. हे मूर्ख । ६. बड़ा । १०. अन्धे । ११. क्लेश ।

तेरे राज दे विच्च इक कक्ख दा भी, मैं ताँ नहिँ होया रवादार[1] राजा ।
डिग्गे फल द्रखताँ दे खा के ते, रेहा मैं साँ वक्त गुज़ार राजा ॥४७०॥
माँ-बाप बुड्ढे अन्हे हन मैरे, टुरन[2] फिरन थीँ ओह लाचार राजा ।
उत्ते वैहँगी बिठा के उन्हाँ ताईँ, फिराँ मोढेआँ[3] ते चुक्क भार राजा ॥४७१॥
एहो फिकर मैनूँ हुण लग रेहा, लैसी कौन उन्हाँदड़ी सार राजा ।
भुक्ख[4] तेस[5] दे नाल मर जाणगे ओह, सुणसी उन्हाँ दी कौन पुकार राजा, ॥४७२॥
मैनूँ आपनी मौत दा फिकर नाहिगाँ[6], रेहा ग़म मैनूँ एहो भार राजा ।
हैसी भार उन्हाँदड़ा सिर मैरे, सकेआ ओह नहिँ मैं उतार राजा ॥४७३॥
पानी जा पिला प्यासेआँ नूँ, करदे होणगे ओह इन्तज़ार राजा ।
मैनूँ देर *दिलशाद* हो बौहत गईए, जा वासता मन्न करतार राजा ॥४७४॥

जा आ सुणा तूँ उन्हाँ ताईँ ओह ताँ तक्कदे[7] होणगे राह राजा ।
रेहा उमर सारी उन्हाँ कोल मैं ताँ, कीता झट न कदी विसाह राजा ॥४७५॥
लैसी ख़बर उन्हाँदड़ी दस्स केहड़ा, कीता जिन्हाँ नूँ तूँ तबाह राजा ।
एह ही फिकर *दिलशाद* है विच्च दिलदे, आया लबाँ उत्ते मेरा साह राजा ॥४७६॥

दूजा फिकर गेआ एह खा मैनूँ, तैनूँ देन सराप न चा राजा ।
दित्ता बोल जो मुँह थीँ बोल उन्हाँ, जासी कदी न ओह खता राजा ॥४७७॥
एह डोल मैरा लै तूँ भर एत्थों, पानी उन्हाँ नूँ जा पिला राजा ।
करीं मिन्नत *दिलशाद* फिर कोल बैहके, लवीँ अपनी भुल बख़शा राजा ॥४७८॥

मैरे नाल रानी इतनी गल्ल करके, फिर बंद हो गई ज़बान उसदी ।
रही होश सरीर दी न कोई, कराँ केआ मैं हालत बेआन उसदी ॥४७९॥

---

१. इच्छा वाला । २. चलने । ३. कंधों । ४. भूख । ५. प्यास । ६. नहीं है । ७. देखते ।

सकेआ गल्ल कोई कर नाँ नाल उसदे, तड़फ तड़फ गई निकल जान उसदी ।
भर के डोल *दिलशाद* मैं टुर पेआ, हकीकत सुण के होया हैरान उसदी ॥४८०॥

वच्चा सरवना ढिल किऊँ लाई इतनी, सच्चो सच्च हुण दे सुणा सानूँ ।
गए थक्क उंडीकदे[1] राह अस्सी, रेहोँ[2] कित्थे तू इत्थे वेहा सानूँ ॥४८१॥
लाई देर इतनी अग्गे नहिँ कदी, बैठों किऊँ अज्ज दरस भुला सानूँ ।
तू ही प्राण असाँ बेप्राणेआँ[3] दा, जल्दी आ ते गल्ल सुणा सानूँ ॥४८२॥
तुध बाज असाडड़ा कौन वच्चा, पिछली उमर विच्च न रुला सानूँ ।
नाल प्यास लग्गे निकलन साँस साडे, घुँट[4] पानी दा आन पिला सानूँ ॥४८३॥
विच्च दिल दलील है हुण घूमने दी, देसाँ दे विच्च लेआ फिराँ[5] सानूँ ।
रब देसिआ फल *दिलशाद* इसदा, फिरें मोढेआँ ते जेहड़ा चा[6] सानूँ ॥४८४॥

मैं ताँ राजा माह्राज अजुध्या दा, वँरन[7] छत्री[8] ते दसरथ नाम है जी ।
पेआ कराँ शिकार मैं विच्च बन दें, गेआ हों समझो वकत शाम है जी ॥४८५॥
भुल्ल के तीर मैं सरवन नूँ मार बैठा, होया उस दा काम तमाम[9] है जी ।
नहिँ सरवन नूँ जान के मारेआ मैं, होया भुल्ल भुलेखँड़े[10] काम है जी ॥४८६॥
होनँहार[11] मिटायाँ नाहिँ मिटदी, एह ताँ जाणदा खास ते आम है जी ।
होया चोर माह्राज तुसाडड़ा मैं, चढ़ेआ सिर एह मैरे इलज़ाम[12] है जी ॥४८७॥
जो वरतेआ दित्ता सुणा सारा, सच्चो सच्च एह मैरी कलाम है जी ।
सरवन वांग *दिलशाद* मैं टहल करसाँ, मुँह अतायत दी पाई लगाम है जी ॥४८८॥

खिदमत आप दी मैं माह्राज करसाँ, विच्च घर लै जा बिठलावसाँ मैं ।
देसाँ होण तकलीफ न कोई तुस्साँ, हत्थीँ आपनी टैह्ल कमावसाँ मैं ॥४८९॥

---

१. प्रतीक्षा करते । २. बैठा । ३. शक्ति-हीन । ४. घूंट । ५. सैर करा । ६. उठा । ७. वर्ण । ८. क्षत्रिय । ६. मरना । १०. भूल से । ११. भाग्य । १२. अपराध ।

किसे लोड़ दी थोड़ न होण देसाँ, जो चाहोगे पुन करवावसाँ मैं।
सरवन बांग *दिलशाद* चुक्क मोढेंआँ ते, देस तुसाँ नूँ सब फिरावसाँ मैं ॥४९०॥

दित्ता राजे ने हाल सुणा जदों, सुणके होश-हवास भुलावँदेनीँ।
लग्गे रोवन पिट्टन चीकाँ मारके ते, डिग डिग भवालिआँ खावँदेनीँ ॥४९१॥
रही होश सरीर दी ना कोई, पए कूँज दे वाँग कुरलावँदेनीँ।
सैँल पुत्तरां दे होंदे हैन डाढे, एह ताँ सहे *दिलशाद* न जावँदेनीँ ॥४९२॥
कीताई झुलम एह झालमा बौहत भारा, दित्ताई खाक दे नाल मिला सानूँ।
जे तूँ पुत्तर असाडड़ा मार आया, कर फिर ढिल न मार मुका सानूँ ॥४९३॥
सरवन बाझ साडी ए झिन्दगी कम केहड़े, नाहीँ जीउने दा कोई चाँ सानूँ।
उसनूँ तीर दे नाल जे मारेआ ई, दे फिर वार तलवार चला सानूँ ॥४९४॥
अग्गे दुख न मुँकदे आहे साडे, दित्ताई होर उत्तों दुख पा सानूँ।
असाँ अन्हेआँ नाल के वैर आहिआ, झरा राजेआ दे बता सानूँ ॥४९५॥
लेआ सरवन ने या कुझ अहा तेरा, दित्ती किसदी एह सझा सानूँ।
जित्थे सरवन नूँ मार के सुट्टेआई, उस जा ते दे पौंह्चा सानूँ ॥४९६॥
तप्पेआ तन तन्दूर दे वाँग साडा, उत्तोँ होर न पेआ सता सानूँ।
उठ चल *दिलशाद* हुण वासता ई, वैह के गल्लाँ न पेआ सुणा सानूँ ॥४९७॥

कराँ केआ रानी मैं बेआन अग्गों, जानें केआ तूँ जो मेरे नाल होया।
रोंदा वेखके सरवन दे मापेआँ नूँ, रो रो के मैं भी निढाल होया ॥४९८॥
चुक मोंढेआ ते गेआ लै उत्थे, जित्थे सरवन ग़रीब हलाल होया।
पए लाश ते डिग दिलशाद दोवें, कह्वाँ केआ जो उन्हाँ दा हाल होया ॥४९९॥

कित्थों सरवना नींद आ गई तैनूँ, उठ जाग के ते मुँहों बोल बच्चा।
कर गल्ल असाडड़े नाल कोई, होयों किऊँ खामोश अनभोल बच्चा ॥५००॥

१.चेतनता। २.चक्कर। ३.फाड़। ४.चाह। ५.समाप्त होते। ६.व्याकुल। ७.मरा हुआ। ८.भोले।

लैली खबर साडी तुध बाज केहड़ा, ते आन करेगा कौन कलोल[1] बचा।
होंदी खबर नाँ देवँदे जान तैनूँ, लैंदे खस[2] तेरे हत्थों डोल बचा ॥५०१॥

एन्हां आजझां बे-प्राणेआँ नूँ, दस छड चल्लेओं[3] किसदे कोल बचा।
असाँ दुखिआँ नूँ न तू छोड़ इत्थे, नाल आपने असाँ नूँ जोल[4] बचा ॥५०२॥

झख्म तीर दा लभदा नहिँ सानूँ, रहे असी सरीर टटोल[5] बचा।
कित्थे झालम ने मारेआ तीर तैनूँ, झरा दस्स सानूँ अक्खीं खोल बचा ॥५०३॥

रहेओं लेट किऊँ तू चुपचाप होके, उठ नाल साडे दुखड़े फोल बचा।
केहड़ी गल्ल तो हो नाराझ गेओं, लग्गों नस्सन किऊँ छड के झोल[6] बचा ॥५०४॥

जीउना बाझ तेरे साड़ा कम्म केहड़े, असी पिआँगे झहर नूँ घोल बचा।
टुट्टी आस निरास *दिलशाद* होए, बज्जेआ मौत दा सिर ते ढोल[7] बचा ॥५०५॥

इतना आख फिर पुत्तर दी लाश उत्ते, झार झार वैह के रहे रो दोवें।
मारन पए चीकाँ निकलन सुण डीकाँ[8], रो रो बेहोश गए हो दोवें ॥५०६॥

पंछी प्राणाँ दा मार उडार गेआ, बैठे जान अझीझ नूँ खो दोवें।
रल के खाक विच्च खाक *दिलशाद* होए, गए हत्थ जहान थीं धो दोवें ॥५०७॥

एही मिलिआ अहा सराप मैनूँ, दित्ता तुध नूँ जो सुणा रानी।
दित्ता कर बेआन मैं हाल सारा, रक्खेआ झरा भी नहिँ छपा रानी ॥५०८॥

मैरे दिल नूँ है यकीन पूरा, जासी कदी न एह खंता[9] रानी।
लै कर *दिलशाद* जो हैई करना, समझ मौत मैरी गई आ आ रानी ॥५०९॥

राजा का विलाप—

एह ताँ ओही वेला गेआ आ रानी, बैठा पंक दिलों मैं जाण[10] के जी।
रामचन्दर लछमन गए विच्च वन दे, छत्रघन भरथ हीनें[11] नानके जी ॥५१०॥

---

१. क्रीडा। २. छीन। ३. चला है। ४. ले चल। ५. हाथ से तलाश करना। ६. गोदी। ७. दोनों ओर चमड़े से ढका हुआ लकड़ी का बजाने का साधन ८. चीखें। ९. व्यर्थ। १०. निश्चयपूर्वक। ११. हैं।

चौवाँ पुत्तराँ थीं नहिँ इक इत्थे, लवे कौन मैरी खबर आन के जी ।
देवाँ दोस *दिलशाद* मैं किऊँ किसने, पीती झहर हत्थीं आप छान के जी ॥५११॥

कित्थों रामचन्दर आवे नझर मैनूँ, गए हैन बनवास सुधार ओ ताँ ।
मैनूँ वैह्न फराक विच्च सुट्ट के ते, गए जीऊँदिआँ ईँ मैनूँ मार ओ ताँ ॥५१२॥
मैरा दम मैहमान कोई दम दा वे, विच्च ग़म कर गए लाचार ओ ताँ ।
तूँ ही दस *दिलशाद* कहे कौन जाके, मिल जान आ के इक वार ओ ताँ ॥५१३॥

इक वार मिल जावँदे जे आ के, जांदा दिल दा निकल अरमान साइआँ ।
ताङ्ग दरस दे विच्च दिनरात मैरी, पई तरसदी जिस्म विच्च जान साइआँ ॥५१४॥
रही आस न कोई निरास होया, लबाँ उत्ते अटके सास आन साइआँ ।
लवीँ अरझ *दिलशाद* एह मन्न मैरी, रहना तूहीँ उसदा निगहवान साइआँ ॥५१५॥

लगी मौत विखालिआँ देण मैनूँ, मैं ताँ छोड़ के हुण जहान चल्लेआ ।
मिले वकत आखीर नहिँ रामचन्दर, लै के दिल दे विच्च अरमान चल्लेआ ॥५१६॥
पए दुख चौफेरेओँ धा मैनूँ, हो के दुखिआ करदा फँगाँ चल्लेआ ।
सुने कौन फरयाद *दिलशाद* मैरी, दे के विच्च फराक दे जान चल्लेआ ॥५१७॥

राजा का सुमित्रा व कौशल्या से वचन––

लग्गा कैह्न कौशलया सुमित्राँ नूँ, रामचन्दर नूँ एह सुणा देना ।
मोया बाप फराक दे विच्च तेरा, कासद भेज पैगाम पहुँचा देना ॥५१८॥
रैहना तुसाँ भी नहिँ नाराझ चाहिए, कर मुआफ मैरी सब खता देना ।
देने बख़श कसूर *दिलशाद* मैरे, गुस्सा दिल दा दिलों हटा देना ॥५१९॥

राजा की मृत्यु—

इतना आख फिर लग्ग पेआ रोण राजा, दिल थीँ दूर नहिँ उसदा ग़म होया ।
गेरदश खा झमीन ते डिग्ग पेआ, हुण ताँ दम नूँ तरोड़ बेदम होया ॥५२०॥

१. क्षण । २. कामना ३. प्रतीक्षा । ४. प्रार्थना । ५. दर्शन । ६. दौड़ । ७. विलाप । ८. संदेशवाहक । ६. चक्कर । १०. प्राण-हीन ।

गई निकल वजूद[1] थीं जान उसदी, राजा राही मुलके-अदम[2] होया।
लग्गे रोवन ते पिट्टन *दिलशाद* सारे, पूरा अज्ज कैकई दा कम्म होया ॥५२१॥

शोक—

पैईआँ रोवँदिआँ गोलिआँ रानिआँ नीं, रोवन पए वज़ीर दीवान सारे।
कर चाक पोशाक सिर खाक पाई, पए कूँज दे वाङ्ग कुरलान सारे ॥५२२॥

शाही तख़त होया यक-लखत[3] खाली, सुञ्जे आवँदे नज़र मकान सारे।
सुझदी नहिँ तजवीझ *दिलशाद* कोई, बैठे होके हुण हैरान सारे ॥५२३॥

कौशल्या का विलाप—

ढाईं मार कौशल्या पई रोवे, कैहँदी तूँ डाढा बेपरवाह साईं।
अग्गे विच्च दुखाँ पई जान गैलदी[4], दित्ते होर उत्तों दुख पा साईं ॥५२४॥

सरताज माह्राज भी चल बस्से, दामन[5] आपना गए छुड़ा साईं।
रामचन्दर लछमन फिरदे विच्च जंगलाँ, देवे कौन धीरज मैनूँ आन साईं ॥५२५॥

होई मुखतार[6] कैकई हर कार अन्दर, रही नहिँ मेरी कोई जा साईं।
पुछसी वाट[8] असाडड़ी कौन आके, देसी भरथ नूँ भी भरमा साईं ॥५२६॥

इस जीवणे थीं मर जाए चंगा, झिन्दा रैहन नहिँ रवा साईं।
दिलशाद सती होके नाल स्वामी, देवाँ आपनी जान गँवा साईं ॥५२७॥

मंत्रियों का परामर्श—

लई सुण कौशल्या दी गल्ल जदों, सब वझीर मशीर[9] घबरावँदे नीं।
सती होन नूँ है तैयार एह ताँ, गुरु वसिष्ठ नूँ बैठ समझावँदे नीं ॥५२८॥

ऐसा कम्म माहराज नहिँ होण चंगा, पए वासते रब दे पावँदे नीं।
ऐसी करो तजवीझ *दिलशाद* कोई, होवे सती न आख सुणावँदे नीं ॥५२९॥

लग्गे कैह्‌ण वसिष्ठ माह्‌राज अग्गों, मैं ताँ सुण बैठा सारा हाल भाई।
रैहना विच्च बनवास झरूर है जी, रामचन्दर लछमन चौदाँ साल भाई ॥५३०॥

---

१. शरीर। २. परलोक ३. अकस्मात्। ४. गल रही है। ५. पल्ला। ६. स्वतन्त्र। ७. प्रत्येक। ८. हाल। ९. मंत्रणा करने वाले।

किरेआ कर्म कारण नहिँ कोई इत्थे, छुत्तरघन भरथ नानहाल भाई ।
जित्थों तीक न होणगे ओ इत्थे, नहिँ सस्कार दी साडी मंजाल भाई ।।५३१।।
कासद भेज देओ भरथ दे वल्ल तुस्सी, जाके लै आवे जेह्ड़ा नाल भाई ।
दिन चौदाँ नूँ जासी पौंह्च इत्थे, रक्खो लाश नूँ तुस्सी संभाल भाई ।।५३२।।
खबरदार खराब न लाश होवे, रक्खना एह बखूबी खेॲाल भाई ।
लैसी तख़त भी भरथ संभाल आ के, औसी राज न विच्च झवाल भाई ।।५३३।।
करके कम्म जेह्ड़ा लग्गे ताँ पिच्छों, चल्लिए किऊँ असी ऐसी चाल भाई ।
करनी देर *दिलशाद* न हुण चाहिए, कासद देविए जलद निकाल भाई ।।५३४।।

कासद आपने कोल बुला के ते, गुरु वसिष्ठ माह्राज फरमान लग्गे ।
जा के भरथ नूँ सद्द ले आ जलदी, कर ताकीद मैंझीद सुणान लग्गे ।।५३५।।
रामचन्दर दा जावँना विच्च बन दे, करीं झाहिर न तूँ समझान लग्गे ।
दस्सीं राजे दी मौत भी न जाके, पट्टी[5] एहो *दिलशाद* पढ़ान लग्गे ।।५३६।।

भरत का स्वप्न-दर्शन—

आई भरथ नूँ सुत्तेॲाँ ख्वाब रातीं, होया वेख के ख्वाब दिलगीर है जी ।
मैले कपड़े बाप दे नझर आए, नाल गोबर दे भरेॲा सरीर है जी ।।५३७।।
पए डिग्ग फिर उच्चे पहाड़ उत्तों, लग्गे रोन अक्खिओँ चलदा नीर है जी ।
पानी गोहे[6] दे भरे इक घड़े अन्दर, पए खान ग़ोते एह अखीर है जी ।।५३८।।
भरथ जाग के सोचदा विच्च दिल दे, इस ख्वाब दी बुरी ताँबीर है जी ।
रहिए दूर जितना *दिलशाद* भावें, जाणदा समझ झरूर झमीर है जी ।।५३९।।

दूत का पहुँचना—

कासद लै पैग़ाम फिर टुर पेॲा, सिद्धा तरफ कश्मीर रवान होया ।
दिन सत्तवें पौंह्चेॲा जा के ते, हाझर कोल भरथ दे आन होया ।।५४०।।
आ कासदा, खबर सुणा मैनूँ, भरथ हो हैरान पुरसान होया ।
दस्स हाल *दिलशाद* तूँ खोल सारा, वेख ख्वाब मैं ताँ परेशान होया ।।५४१।।

१. शक्ति । २. अच्छी तरह । ३. ताप । ४. अधिक । ५. पाठ । ६. गोबर । ७. लक्षण ।

दूत का निवेदन—

करो होर न कोई खेॲाल तुस्सी, गुरु वसिष्ठ माह्‌राज बुलाया जी।
इत्थे आएँआँ नूँ होए दिन बौह्‌ते, किऊँ असाँ नूँ तुस्साँ भुलाया जी ॥५४२॥
हर तरह खैरीअत है कहे कासद, तुसाँ फिकर माहराज किऊँ लाया जी।
करो देर *दिलशाद* न हुण इत्थे, चलो लैण मैं आपनूँ आएँया जी ।५४३॥

भरत का नाना से वचन—

झरा होई तसल्ली नहिँ दिल ताईँ, भावें कासद बौह्‌त छुपाया वे।
नाने आपने नूँ फिर भरथ जाके, हत्थ जोड़ के एह सुणाया वे ॥५४४॥
देॲो आगेॲा जावाँ अजुध्या मैं, कैंह्‌दा लैन कासद मैनूँ आया वे।
दस्सी गल्ल *दिलशाद* नहिँ उस कोई, केह्‌आ गुरु वसिष्ठ बुलाया वे ॥५४५॥

अयोध्या में भरत व शत्रुघ्न का पहुँचना—

राजे कैकेय एह भरथ दी गल्ल सुण के, तैयार सफर दा चा सामान कीता।
जो कुच्छ देवना सी ओ दे के ते, कासद नाल चा भरथ रवान कीता ॥५४६॥
छत्रघन ते भरथ पए टुर दोवें, विच्च दिल दे याद भगवान् कीता।
कोल अजुध्या दे *दिलशाद* जाके, तरफ शैहर दी भरथ धेॲान कीता ॥५४७॥

सुनसान[1] विच्च शैहर दे नझर आया, खुशी विच्च न कोई इन्सान डिट्ठा।
खुले केस ते मैंलड़े[2] वेस सारे, हर कोई रोंवदा करदा फग़ान डिट्ठा ॥५४८॥
पंछी बैठे ग़मगीन द्रखताँ ते, चरदा चारा न कोई हैवान डिट्ठा।
पेआ नझर *दिलशाद* नहिँ शाद कोई, जेहड़ा मिलेॲा ओही गिरैयान[3] डिट्ठा ॥५४९॥

भरथ हो हैरान फिर कैहन लग्गा, विच्च ग़म सारे गिरफ्तार दिसदे।
अजुध्या वाँग गुलझार दे आही जेह्‌ड़ी, अज्ज गुलाँ दी जगह ते खार दिसदे ॥५५०॥
भेद बाझों नहिँ गल्ल एह ताँ, मैनूँ उलटे पए आसार दिसदे।
आवे नझर *दिलशाद* न कोई हसदा, रोंदे पए सारे झारो-झार दिसदे ॥५५१॥

---

१. शून्यता (उजाड़)। २. मैले। ३. रोता हुआ।

मैहल बाप दे ते भरथ पाह्च के ते, चुपचाप डिट्ठे दरवान बैठे ।
रंग रूप न किसे दा मुँह उत्ते, गमगीन मलूल हैरान बैठे ॥५५२॥

रक्खे सिर सभनाँ उत्ते गोडेआँ[1] दे, लुटा साथ गोया कारवान[2] बैठे ।
कीती गल *दिलशाद* न कोई किस्से, सारे समझ तूँ बुत समेआन बैठे ॥५५३॥

भरत का द्वारपालों से प्रश्न—

लग्गा पुच्छन खलो के भरथ उत्थे, अज्ज एह के हाल बनाया वे ।
मैरे पिता माह्राज जी हीन कित्थे, दरस करन कारण भरथ आया वे ॥५५४॥

जाओ पुच्छो रनवास दे विच्च जाके, एह दरवानाँ ने अग्गों सुणाया वे ।
देसी दस्स *दिलशाद* कैकेई सारा, सुनसान जिस शैहर बनाया वे ॥५५५॥

भरथ सुण जवाब हैरान होया, कैंहदा केआ जाना एह के आन होया,
मैहल आपने वैल[3] रवान होया, पेआ कई खेआल विचारदा ए ।
कोई खबर अज तक नहिँ आई मैनूँ, नाहीँ कासद ने कोई सुनाई मैनूँ,
जानाँ केआ के रब्ब विखाई[4] मैनूँ, खेआली पेआ पतंग उडारदा[5] ए ॥५५६॥

मैरे वल धेआन नहिँ कोई धरदा, सिद्धा बोल के नाहिँ कोई गल्ल करदा,
नहिँ खबर होया के हाल घर दा, दिसदा होर कुछ रंग गुलज़ार दा ए ।
सुणेआ किधरे आवाज़ मैं ढोल दा नहिँ, पुच्छाँ किस कोलों कोई बोलदा नहिँ,
असली भेत नूँ भी कोई खोलदा नाहिँ, दिलों भरथ *दिलशाद* हुण हारेआ ए ॥५५७॥

गल सुण दरवानाँ दी टुर पेआ, विच्च राह दे किधरे नहिँ अड़दा[6] ।
गेआ समझ कुछ होया जरूर इत्थे, सिद्धा मैहल अपने विच्च जा वड़दा[7] ॥५५८॥

कैकेई वेख के देन असीस लग्गी, निमस्कार कर माताँ दे पैर पड़दा ।
विच्च दिल *दिलशाद* सी फिकर भारी, अन्दरों अन्दर कलेजड़ा पेआ सड़दा ॥५५९॥

भरत का माता से प्रश्न—

माताँ, सोग कैसा विच्च अजुध्या दे, सच्चो सच्च सभ दे बतला मैनूँ ।
ऐसा केआ अन्धेर हो गेआ इत्थे, पैहले एह तूँ दे सुणा मैनूँ ॥५६०॥

---

१. घुटनों । २. यात्रियों का समूह । ३. ओर । ४. दिखाई । ५. उड़ा रहा है । ६. रुकता । ७. प्रवेश करता है ।

शरण पिता जी दी लगाँ मैं जा के, कित्थे हीन बैठे फरमा मैनूँ ।
दे दस्स *दिलशाद* जो हाल होया, कर हुण ढिल न चा समझा मैनूँ ॥५६१॥

कैकेई का उत्तर—

करो दिल दे विच्च न फिकर कोई, राज-भाग नूँ लेओ संभाल प्यारे ।
जागे बख़्त बच्चा बैठ तख़्त उत्ते, लौ संभ[2] सारा धन-माल प्यारे ॥५६२॥

होए किऊँ गमगीन हैरान तुस्सी, करो दिल थीं दूर मलाल प्यारे ।
जीवन झूठ ते मरण है सच्च बेटा, झबरदस्त बली सभ थीं काल प्यारे ॥५६३॥

इत्थे रैहणा किसे नूँ नहिं मिलना, इक दिन फसना काल दे जाल प्यारे ।
ओ ताँ मर के भी झिन्दा हीन बच्चे, गए अपना धर्म जो पाल प्यारे ॥५६४॥

जेहड़ा आया चलना है उसने ताँ, इस दुनिआ दी एहो चाल प्यारे ।
प्याला मौत दा पीवना हर-इक ने, जीवे कोई भावें लक्ख साल प्यारे ॥५६५॥

होवे पीर फकीर हझार वली[3], सकदा मौत नूँ नहिं कोई टाल प्यारे ।
छड विसवास *दिलशाद* उदास न हो, कर तूँ राज बैह के मेरे लाल प्यारे ॥५६६॥

भरत का वचन—

आवे समझ दे विच्च न कुच्छ मैनूँ, करें तूँ पई जेहड़ी गल माताँ ।
मेरे दिल नूँ ताँ पेआ शक उत्थों, सद्देआ[4] जद्द मैनूँ कासद घल माताँ ॥५६७॥

कीती देर न पल दी मैं उत्थे, पेआ नाल कासद तुरत चल माताँ ।
दे हुण साफ सुणा *दिलशाद* मैनूँ, छड दे सारे वल-छल माताँ ॥५६८॥

कैकेई का उत्तर—

दस्साँ केआ माहराज दा हाल तैनूँ, सफर इस जहान थीं कर गए नीं ।
दारु[5] मौत दा नाहिं कोई कर सकेआ, पिता जी तेरे बच्चा मर गए नीं ॥५६९॥

सक्केआ नाल ना उन्हाँ दे जा कोई, ओ ताँ सागर अकेलड़े[6] तर गए नीं ।
झूठी दुनिआ नूँ छोड़ *दिलशाद* इत्थे, चले ओ अपने सच्चे घर गए नीं ॥५७०॥

भरत का विलाप—

मरना बाप दा सुण के माँ कोलों, ढाई मार भरथ पेआ रोवँदाई ।
सुट्टी[7] लाह[8] दस्तार[9] झमीन उत्ते, रो रो के जान नूँ खोवँदाई ॥५७१॥

---

१. भाग्य । २. संभाल । ३, सिद्ध । ४. भेज । ५. औषध । ६. अकेले । ७. फैंकी । ८. उतार । ९. पगड़ी ।

हत्थ मत्थे ते मार के पेॲा पिट्टे, अक्खिओं नीर न झरा खलोवँदाई ।
कोल बैठ *दिलशाद* कैकेई आखे, कर सबर बच्चा हुण के होवँदाई ॥५७२॥

झरा सबर नहिँ आवँदा दिल ताईँ, रो रो के भरथ दिलगीर होया ।
हाय ! टैहल नहिँ बाप दी कोई कीती, नाहीँ दरसन नसीब अखीर होया ॥५७३॥
वेखे फोल के कौन हुण आन अन्दरों, जिगर फट मेरा लीरलीर होया ।
शिकँवा केॲा *दिलशाद* है किसे उत्ते, एह ही लेख नसीब तहरीर होया ॥५७४॥
मैरा तुसाँ बिन पिता जी कौन है सी, मैनूँ किस दे आसरे छोड़ गएओ ।
होया केहड़ा कसूर गुलाम कोलों, तुस्सी मुँह जिस वासते मोड़ गएओ ॥५७५॥
करसी कौन प्यार हुण लाल मैरे, रिश्ते प्रेम दे नूँ तुस्सी त्रोड़ गएओ ।
पकड़े हत्थ *दिलशाद* न कोई मैरा, मैनूँ केहड़े कुँहेड़े वैहन विच्च बोड़ गएओ ॥५७६॥

कैकेई का वचन--

बाहों पकड़ कैकेई समझान लग्गी, बस बस दिल नूँ दे धीर बच्चा ।
ज़ालम मौत दा नहिँ इलाज कोई, जावे पेश न कोई तदबीर बच्चा ॥५७७॥
इस दुनिआ तों सभ ने चल जाना, केॲा शाह, गदा, वज़ीर बच्चा ।
भावें जीविए लक्ख हज़ार बरसाँ, ताँ भी छोड़ना एह सरीर बच्चा ॥५७८॥
आँद अन्त तक एहो चाल रैहसी, लै समझ तूँ गल्ल अखीर बच्चा ।
सक्के मिट मिटायाँ न एह कदी, लिखेॲा लेख जो कलम तकदीर बच्चा ॥५७९॥
जेहड़ा जम्मेॲा उस ज़रूर मरणा, केॲा पीर फकीर अमीर बच्चा ।
मोयाँ नाल *दिलशाद* नहिँ कोई मोया, होयों तूँ किऊँ एँड्डा दिलगीर बच्चा ॥५८०॥

भरत का वचन—

रामचन्दर माहराज सन गए कित्थे, उस्से वकत ओ किऊँ जुदा होए ।
पिता जी नूँ मरज़ जे आही एहो, किऊँ नाहिँ मरज़ दी फिर दवा होए ॥५८१॥
विद्यावान् माताँ ओ ताँ आहे पूरे, उत्ते बाप दे किऊँ न फिदा होए ।
आहे दूर भी जे *दिलशाद* किधरे, कासद किऊँ नहिँ फिर हवा होए ॥५८२॥

१. रुकता । २. टुकड़े-टुकड़े । ३. शिकायत । ४, टेढे । ५. प्रवाह । ६. आदि । ७. इतना । ८. पवन की भांति शीघ्रगामी ।

कैकेई का वचन—

रामचन्दर सीता नाले समझ लछमण, विच्च वन जाके बिराजमान होए।
कीता हुकम थीं नहिं अंदूल[1] उन्हाँ, ताबेअ बाप दे विच्च फ़रमान होए ॥५८३॥

दित्ता आप विच्च बन दे टोर पैहले, पिच्छों टोर के त पशेमान होए।
मिलदे दस्स *दिलशाद* ओ आण कित्थों, सुण के हुकम जा जंगल रवान होए ॥५८४॥

भरत का वचन—

आया समझ दे विच्च नहिं कुछ मैनूँ, माताँ एह जो तूँ सुनाया वे।
ब्रह्म-हत्या उन्हाँ थीं होई कोई, या के किसे दा धन दबाया वे ॥५८५॥

पर इस्त्री वेख बेदनीत[2] होए, या के होर कोई पाप कमाया वे।
गए किऊँ बनबास कहो साफ मैनूँ, विच्च गल दे वल किऊँ पाया वे ॥५८६॥

कैकेई का सत्य-कथन—

लै सुण मैथों तूँ हुण साफ बच्चा, तेरे वासते वेह्लणा[3] वेह्लेआ मैं।
किश्ती आस दी नूँ लै के नाम रब्ब दा, डूँघे[5] वैहण दे विच्च चा ठलेआँ[6] मैं ॥५८७॥

लेआ बाप तेरे नूँ कर काबू, बन के मांदरी[7] नाग नूँ सेलेआ[8] मैं।
मुहार[9] धर्म दी पाके विच्च नक दे, वाँग शुतर[10] दे चा नकेलेआ[11] मैं ॥५८८॥

जो दिल चाहेआ लेआ कर ओही, तेरे कारणे मेलना[12] मेलेआ[13] मैं।
तेरे वासते राज मैं लै रक्खेआ, रामचन्दर बनवास धकेलेआ[4] मैं ॥५८९॥

होयों किऊँ नाराज़ तूँ दस्स मैनूँ, कीता बुरा नाहिं कोई अलबेलेआ[14] मैं।
कर तूँ राज *दिलशाद* बेचिन्त होके, खातर आप दी जुआ एह खेलेआ मैं ॥५९०॥

रामचन्दर नूँ राज जद देन लग्गे, विच्च मुलकाँ दे चा एलान कीता।
राजतिलक विच्च देर न रही कोई, तैयार तुरत सारा सामान कीता ॥५९१॥

मैं बेखबर नूँ खबर न कोई होई, तेरे बाप ने जो फरमान कीता।
सुण के मन्थरा आई *दिलशाद* बाहरों, आ के कोल मेरे उस बेआन कीता ॥५९२॥

---

१. उल्लंघन। २. बुरे विचार वाले। ३. बेलना। ४. घुमाया। ५. गहरे। ६. डाल दिया। ७. मंत्र जानने वाला। ८. बांध लिया। ९. नकेल (नथ)। १०. ऊँट। ११. नाक में रस्सी डालना। १२. मेल। १३. मिलाया। १४. हे (मेरे) सुन्दर बच्चे।

तेरे बाप दे नाल फिर झगड़ के ते, एह राज तैनूँ दिलवाया मैं ।
रामचन्दर बनबास दे विच्च जावे, इस्से गल उत्ते झोर लाया मैं ॥५९३॥

गए हो मजबूर मनझूर कीता, हुकम उन्हाँ थीँ चा चढ़वाया मैं ।
लौ समझ *दिलशाद* यकीन करके, तुस्साँ वासते पूरणा-पाया मैं ॥५९४॥

भरत की दशा--

लइ गल्ल कैकई दी सुण जदों, हाय ! हाय !! करके भरथ रोण लग्गा ।
वाँग तीर गडआँ जिगर चीर गल्लाँ, बैह के वाल सिर दे हुण खोण लग्गा ॥५९५॥

डिग्गा खा पछाड़ झमीन उत्ते, रो रो अक्खिआँ थीँ खून चोण लग्गा ।
सैहलाँ विच्च *दिलशाद* पै शोर गेआ, लग्गे कैह्न सारे एह के होण लग्गा ॥५९६॥

भरत का माता से वचन—

लग्गा रो के कैह्न कैकई ताईँ, माताँ वड्डा अन्हेर एह पाया तूँ ।
सारे जग दे विच्च बदनाम होके, कलंक आपने आप नूँ लाया तूँ ॥५९७॥

पति-हत्या करेंदेआँ[3] न डरिओं, पाप अपने सिर चढ़ाया तूँ ।
जा के पुच्छें कोशल्या सुमित्राँ नूँ, एह ताँ राग अपुठड़ा गाया तूँ ॥५९८॥

लैना वैर केह्ड़ा आहेआ दस्स मैनूँ, दिल उन्हाँदड़े नूँ किऊँ दुखाया तूँ ।
दुख पुत्तराँ दे होंदे हीन डाढे, एह ताँ झालमेँ, झुलम कमाया तूँ ॥५९९॥

तेरे पेट विचों निजे[5] जमदा मैं, मैनूँ जीऊँदेआँ मार मुकाया[6] तूँ ।
मैरे पिता नूँ मार के *दिलशादा*, मैरे भाइआँ नूँ जंगल रुलाया तूँ ॥६००॥

आया हत्थ तेरे दस्स के मैनूँ, चालाँ किऊँ एह उलटिआँ कीतिआँ नीँ ।
दस्साँ केआ तैनूँ हुण खोल के मैं, मैरे नाल जो आन के बीतिआँ नीँ ॥६०१॥

चंगा उन्हाँ नूँ आखदा नहिँ कोई, जिन्हाँ कीतिआँ माएँ, अनीतिआँ नीँ ।
सिद्धे पाड़े *दिलशाद* सी लैन सारे, अपुठिआँ पाटिआँ किसे न सीतिआँ नीँ ॥६०२॥

इक जँट्ट दे कोल दो बैल आहे, नाल उन्हाँ दे हल चलावँदा सी ।
इक दा कद छोटा वड्डा आहा दूजा, पंजाली[11] दोहाँ दे गल ओ पावँदा सी ॥६०३॥

१. उकरना उकरा (है) । २. उखाड़ने । ३. करते हुए । ४. पूछ । ५. न । ६. समाप्त किया ।
७. हे मातः ! ८. फाड़ । ९. फाड़ें । १०. जाट (खेती करने वाला) । ११. गले में डालने का काष्ठ-यन्त्र ।

जोड़ी आही बराबर दी न पूरी, हेठ हल इकेट्ठेआँ लावँदा सी।
आहे बैल तकलीफ दे विच्च माताँ, झालम जट्ट भी रैहम न खावँदा सी ॥६०४॥
सुरभि[1] गां इक दिन आ गई उत्थे, जित्थे जट्ट ढाले[2] पेऑ गावँदा सी
दुखी वेख के बैलां नूँ रोवन लग्गी, दुख वेख के सेहा न जावँदा सी ॥६०५॥
छम[3]-छम अक्खिआँ थीँ हञ्जू चल रहिआँ, चारा चरण नूँ दिल न चाहवँदा सी।
गेऑा हो *दिलशाद* इतफाक ऐसा, राजा इन्दर किधरों पेआ आवँदा सी ॥६०६॥

रोँदी गौ निमानी नूँ वेख के ते, इन्दर दिल विच्च करन खेऑाल लग्गा।
दित्ता किस झालम है दुक्ख इस नूँ, गुस्से विच्च आ के होन लाल लग्गा ॥६०७॥
पए पूजदे इस नूँ लोक तिन्ने, एह सोचने दिल दे नाल लग्गा।
कोल गौ दे फिर *दिलशाद* आके, खड़ा हो सोचन दिल दे नाल लग्गा ॥६०८॥

इन्दर पुछदा गौ थीँ कोल जा के, दस्स किऊँ इत्थे तूँ रो रहीएँ।
दित्ता किस झालम ऐसा दुख तैनूँ, कारण किस बे-हाल तू हो रहीएँ ॥६०९॥
पानी अक्खिआँ थीं झरा खड़दाँ नहिं, चारा छड के किऊँ खलो रहीएँ।
होया के *दिलशाद* दस्स नाल तेरे, विच्च दुख केहड़े जान खो रहीएँ ॥६१०॥

कैंहदी गौ एह वेख दो पुत्तर मैरे, जेहड़े पए चलदे हेठ[5] हल दे नीँ।
इक निक्ड़ा[6] ते इक है वड्डा, इक दूसरे नाल न रलँदे[7] नीँ ॥६११॥
मार सोटिआँ[8] टोरदाए जट्ट झालम, खून दोहाँ नूँ वेख पए चलदे नीँ।
आए हत्थ कसाई *दिलशाद* दोवें, भांबड़[9] अग्ग दे मेरे अन्दर बलदे नीँ ॥६१२॥

लेऑा इन्दर ने सुण एह हाल जदों, गुस्से नाल सराप फिर चा देंदा।
गौ बैल नूँ देवेगा दुक्ख जेहड़ा, रैहसी तंग हमेश फरमा देंदा ॥६१३॥

---

१. कपिला। २. गाने। ३. निरन्तर। ४. रुकता। ५. नीचे। ६. छोटा। ७. मिलते ८. लाठिआँ। ९. आग की लपटें।

होसी कदी असायश[1] न उस ताईं, गज़बनाक होके बददुआ[2] देंदा ।
चारा चुग *दिलशाद* हैरान न हो, अग्गे गौ दे सीस लिवा देंदा ॥६१४॥

इस गौ दे ताँ कई पुत्तर आहे, दुक्खी वेख के दो के हाल कीता ।
रामचंदर बेटा इक कुशल्या दा, नहिँ तूँ ज़ालमे ँ, एह खॅआल कीता ॥६१५॥
दित्तोई[3] टोर ओही विच्च जंगलाँ दे, एह ज़ुलम तूँ उसदे नाल कीता ।
जा के पुच्छ खाँ उस दे दिल कोलों, दूर अक्खिआँ थीं जिस दा लाल कीता ॥६१६॥
रक्खी थोड़ी मैय्याद भी नहिँ कोई, यकॅ-लखत[4] हुक्म चौदाँ साल कीता ।
आया तरस न ज़ालमे ँ, ज़रा तैनूँ, ऐसा दिल तूँ पत्थॅर-मिसाल[5] कीता ॥६१७॥
दित्तो ई देस-निकॅालड़ा[6] पुत्तराँ नूँ, पति आपना आप हलाल कीता ।
कीता तूँ *दिलशाद* एह है जैसा, ऐसा कदी नहिँ किसे तिनँ-काल[7] कीता ॥६१८॥

गई खुल कलई मालूम होया, एह अन्धेर माताँ तूँ पाया ई ।
मैं ताँ कदी भी राज एह नहिँ करना, ऐवें ज़लिए दिल भरमाॅया[8] ई ॥६१९॥
वड्डे भाई दा हक है राजगद्दी, तैनूँ किस एह अकल सिखाया ई ।
वड्डे होन मौजूद ताँ दस्स माताँ, कदों छोटॅआँ राज कमाया ई ॥६२०॥
कित्थे गए झूठे ओ प्यार तेरे, तैनूँ ज़ालमे ँ, तरस न आया ई ।
पुत्तर पुत्तर बुलाँवदी नाँहें[9] थकदी, अज्ज एह के चँन्न[10] चढ़ाया ई ॥६२१॥
नौकर मैं हरदम रामचंदर दा हाँ, जिस नूँ जंगलाँ विच्च पटॅकाया[11] ई ।
मिलसी पाप दी सज़ा ज़रूर तैनूँ, समझ सच्च *दिलशाद* सुणाया ई ॥६२२॥

रामचन्दर माह्राज थीं मैं डॅराँ, ताँके[12] सुण के होण खफा नाहीँ ।
देंदा सिर माताँ मैं उतार तेरा, समझ सच्च एह झूठ ज़रा नाहीँ ॥६२३॥

---

१. सुख । २. शाप । ३. दिया है । ४. एक-दम । ५. पत्थर के समान । ६. देस-निकाला । ७. तीनों कालों में । ८. भ्रम-युक्त किया । ९. नहीं थी । १०. चांद । ११. भटकाया । १२. वैसा किए जाने पर ।

हो जा दूर एत्थों मैरी अक्खिआँ थीं, मैनूँ पापने[1], मुँह दिखला नाहीँ ।
साडी कुल दा नाश *दिलशाद* करके, हुण आपना नास करवा नाहीँ ॥६२४॥

मंत्रियों का आगमन—

खबर भरथ दे आउन दी सुण के ते, हाझर होए वझीर दीवान सारे ।
कीता अदब-अदाब अदा पैहले, हत्थ जोड़ के सीस निवान[2] सारे ॥६२५॥
गए बैठ फिर मातम दी सँफ[3] उत्ते, रो-रो के लगे परचाँन[4] सारे ।
गेआ हो *दिलशाद* जो होवना सी, पए बैठ के करन अरमान सारे ॥६२६॥

कैकेई का मान्त्रिओं से वचन—

झरा तुस्सी समझाओ चा भरथ ताईँ, नहिँ एह समझदा मैं समझा रही आँ ।
कन्न नहिँ धरदा मैरी गल्ल उत्ते, मैं ताँ झोर बतैरँड़ा[5] ला रही आँ ॥६२७॥
करे राज इकँन्त बे-चिन्त हो के, हत्थ जोड़ के वासते पा रही आँ ।
जावे पेश *दिलशाद* न कोई मैरी, कई ज्ञान उपदेश सुणा रही आँ ॥६२८॥

भरत का माता से वचन—

गुस्से नाल भरथ लालो लाल होया, मन-तन कैंहूदा मेरा साड़ेआ तूँ ।
दस्स हुण झालमेँ हत्थ के आयोई, राजभाग नूँ चा विगाड़ेआ तूँ ॥६२९॥
किस मुँह दे नाल पई करें गल्लाँ, घर-बार साडा सभ उजाड़ेआ तूँ ।
सुई अकल दी *दिलशाद* नहिँ सी सकदी, पाड़न एह अपुठड़ा पाड़ेआ तूँ ॥६३०॥

इतना आख के सबर न कर सकेआ, उच्चिआँ मार चीकाँ भरथ रोवण लग्गा ।
हाय रामचन्दर! हाय भाई लछमन!,हाय! हाय!! करके जान खोवन लग्गा ॥६३१॥
होया दिल बे-चैन कर वैंण रहा, रो-रो हन्जू दे हार परोवन लग्गा ।
होके खफा *दिलशाद* कैकेई उत्ते, रंवाँ तरफ कौशल्या दे होवन लग्गा ॥६३२॥

कौशल्या का आगमन—

सुण आवाझ कोशल्या रोवणे दी, फिक्करमंद हो होण हैरान लग्गी ।
कैंहदी रोवँदा है एह कौन पेआ, विच्च दिल दलील दौड़ान लग्गी ॥६३३॥

१ हे पाप करने वाली । २. झुकाने । ३. चटाई । ४. आश्वासन देना । ५. लगाता । ६. बहुत अधिक । ७. एकान्त, सर्वथा । ८. विलाप । ९. गति-युक्त ।

एह ताँ जापदा ए भरथ आ गेॲा, सद्द सुमित्राँ नूँ एह सुणान लग्गी ।
गई हो तासीर *दिलशाद* दिल नूँ, कोशल्या भरथ नूँ मिलने जान लग्गी ॥६३४॥

भरत का वचन—

आउँदा वेख कोशल्या माई ताईँ, भरथ डिग्ग कदमाँ उत्ते अरज़ करदा ।
मैरा माताँ जी नहिँ कसूर कोई, हर दम मैं तुसाडड़ा हाँ ब[1]रदा ॥६३५॥
मैरी माँ ने पाया फतूर सारा, पेॲा रो-रो के ठंडे सा[2]स भरदा ।
जे मैं नानके न *दिलशाद* जाँदा, होंदा फिर न कदी एह हाल घर दा ॥६३६॥

होई खबर माताँ नहिँ कोई मैनूँ, मैं ताँ [3]आस बैठा नानहा[4]ल अन्दर ।
आके वेखेॲा होया जो हाल इत्थे, है सी एह न ख्वाब खेॲाल अन्दर ॥६३७॥
घरबार बरबाद हो गेॲा साडा, गेॲा आ इकबाल ज़वाल अन्दर ।
कीता बुरा *दिलशाद* एह माँ मैरी, कुटे[5]ॲाँ लू[6]ण उसने गोया थाल अन्दर ॥६३८॥

मैं बे-खबर नूँ खबर न होई कोई, बैठी माँ मेरी झँख मार माताँ ।
रामचन्दर माहराज सिरताज मैरा, मैं ताँ हाँ उसदा खिदमतगार माताँ ॥६३९॥
रेहा तरस मैं दरस उन्हान्दड़े नूँ, नहिँ आऊँदा सबर करार माताँ ।
नहिँ कोई कसूर *दिलशाद* मैरा, है कसम मैनूँ निरं[8]कार माताँ ॥६४०॥

सौ-सौ खा कसमाँ भरथ पेॲा आखे, कर[9]द दरद पई जिगर नूँ चीरदी सूँ ।
मैरा नहिँ कसूर इस विच्च कोई, धारा चल रही अक्खिओं नीर दी सू ॥६४१॥
डिग्गा हो बेहोश ज़मीन उत्ते, रही सुरत न कोई सरीर दी सू ।
रो-रो क थक *दिलशाद* पेॲा, ताकत ज़ा[11]येल होगई तकदीर दी सू ॥६४२॥

कौशल्या का भरत से वचन—

रोंदा वेख कोशल्या भरथ ताईँ, कैंह्दी बस बच्चा घबरा नाहिँ ।
जो तूँ आखेॲा है ओ सच्च सारा, रो-रो के जान गँवा नाहिँ ॥६४३॥

---

१. भृत्य । २. साँस । ३. था । ४. ननिहाल । ५. कूटा । ६. लवण । ७. गलती । ८. निराकार (=ईश्वर) । ६. छुरी । १०. थी । ११. नष्ट ।

होया जो कीता ओ माँ तेरी, तेरी प्यारेआ कोई खता नाहिँ ।
दस्सां केआ *दिलशाद* जो उस कीती, मेरे होश हवास बजां नाहिँ ॥६४४॥

कीता माँ तेरी जो कुझ नाल मैरे, सुण भरथ प्यारे ओ ताँ नहिँ झुलदा ।
नींदर, भुख, आराम हराम होया, पेआ दुक्खाँ दा सिर ते झक्खड़ घुलदा ॥६४५॥

रामचन्दर प्यारा फरज़न्द मैरा, आज विच जंगलाँ फिरे ओ झुलदा ।
जांदी पेश *दिलशाद* नहिँ कोई मैरी, वेखाँ मुँह जाके कित्थों उस गुल दा ॥६४६॥

तेरे वासते राज जो लेआ उसने, नहिँ उसदा कोई अरमान बच्चा ।
रामचन्दर दे नाल जो हाल कीता, कराँ उसदा केआ बेआन बच्चा ॥६४७॥

ज़रा तरस बे-तरस नूँ नहिँ आया, लग्गी ज़ुलम दी तेग़ चलान बच्चा ।
शाही कपड़े उस दे लाह के ते, लग पई फकीर उसनूं बनान बच्चा ॥६४८॥

भगवी कफ़नी पा के विच्च गल दे, गए जंगल नूँ हो रवान बच्चा ।
नाल चीज़ न कोई उस लैन दित्ती, नाहिँ विस्तरा न सामान बच्चा ॥६४९॥

तेरी माँ अग्गे हत्थ जोड़ सारे, रहे आख वज़ीर दीवान बच्चा ।
होई कोई तासीर न दिल उसदे, पए ज़ोर अपना सारे लान बच्चा ॥६५०॥

तेरे बाप दी भी मन्नी न कोई, होए वेख के सभ हैरान बच्चा ।
इसे ग़म अन्दर हर दम रह्वाँ, गेआ भुल मैंनूं पैहन खान बच्चा ॥६५१॥

रक्खेआ दम कदम दे नाल लछमन, सुण गल्ल मैरी कर धेआन बच्चा ।
पेआ टुर ओ भी नाल रामचन्दर, पा पोशाक भगवी सच्च जान बच्चा ॥६५२॥

मददगार होया विच्च दुक्ख ओही, कीती भाई तों जान कुरबान बच्चा ।
विच्च दुक्ख ते ग़म *दिलशाद* इस्से, तेरे बाप ने भी दित्ती जान बच्चा ॥६५३॥

भरत का वचन—

एह ताँ सभ माताँ मैं सुण चुका, नहिँ मुँह मैरा कुछ कैह्न जोगा ।
नहिँ माँ मैरी है डैनं ओ ताँ, रक्खेआ नहिँ मैंनूं किधरे बैह्नं जोगा ॥६५४॥

---

१. ठीक । २. तूफान । ३. झुरता (=कष्ट पाता) हुआ । ४. तलवार । ५. फकीरों के वस्त्र । ६. पहिनना । ७. वही । ८. योग्य । ९. भूतनी । १०. बैठने ।

पीसाँ[1] झैहर प्योलड़ाँ[2] घोल के मैं, रेहा नहिँ लायक झिन्दा रैहून जोगा।
देसाँ जान *दिलशाद* गँवा अपनी, नहिँ मैं दुक्ख जुदाई दे सैहून जोगा ॥६५५॥

रामचन्दर माहराज ही हीन मालक, लै समझ एह राज उन्हाँदड़ाई।
मैं ताँ हाँ गुलाम बिनँ[3]-दाम माताँ, एह तख़त ते ताज उन्हाँदड़ाई ॥६५६॥

नहिँ मजाल मैरी जे मैं बोल सक्काँ, सारा जगत मोहताज उन्हाँदड़ाई।
रैहसाँ नौकराँ वांग *दिलशाद* मैं ताँ, राज भाग सभ साज उन्हाँदड़ाई ॥६५७॥

कोल उन्हाँ दे जाके आप माताँ, करके मिन्नताँ नाल ले आउसाँ मैं।
हत्थ जोड़ के अरझ गुझार होसाँ, गल्ल अपने पलड़ा पाँउसाँ[4] मैं ॥६५८॥

रामचन्दर माहराज नूँ राज दे के, वांग बँरदेआँ[5] टैहूल कमाउसाँ मैं।
दिलशाद जे मन्ननगे न मैरी, ताँ फिर अपनी जान गँवाउसाँ मैं ॥६५९॥

वसिष्ठ का भरत से वचन—

गुरु वसिष्ठ माहराज जी आ के ते, राजे भरथ नूँ बैठ समझान लग्गे।
दरशन पिता दी लाश दा करो चल के, नाले करो संस्कार फरमान लग्गे ॥६६०॥

लाश रक्खेआँ नूँ होए दिन बौहूते, करो देर न हुण सुणान लग्गे।
एहो चाल *दिलशाद* इस जगत दी ए, विच्च गेआन दे करन बेआन लग्गे ॥६६१॥

सुणो भरथ प्यारे देओ सबर दिल नूँ, इसे तरह समझो एह ताँ होवना सी।
जाना नानके अहा झरूर तुस्साँ, करके झिद कैकेई खलोवना सी ॥६६२॥

रामचन्दर नूँ अहा वनवास लिखेआ, लिखेआ लेख दस्सो किस धोवनाँ[6] सी।
विच्च दुक्ख जुदाई *दिलशाद* राजे, दसरथ अपनी जान नूँ खोवना सी ॥६६३॥

---

१. पिऊँगा। २. प्याला। ३. दाम के विना। ४. डालूँगा। ५. भृत्य। ६. मिटाना।

भरत-वचन—

है सच्च बेशक नहिँ झूठ कोई, जेह्ड़ा गुरु जी तुसाँ बेआन कीता ।
थोड़ी होई तसलेंड़ी दिल ताईं, जद गेआन दे वल्ल धेआन कीता ॥६६४॥

लिखे लेख मिटा नहिँ कोई सकदा, इस गल्ल नूँ मैं परवांन कीता ।
गेआ हो बदनाम मैं विच जग दे, इसे फिकर *दिलशाद* हैरान कीता ॥६६५॥

संस्कार—

कीती देर न पल दी फिर कोई, तुरत तैयार बवांन करवायो ने ।
लाश विच्च बवान दे रक्ख के ते, सरजू नदी ते चुक पौंहचायो ने ॥६६६॥

लकड़ी चर्नन देआर दी चिर्न उत्ते, रक्ख के लाश नूँ चा जलायो ने ।
विधि नाल सस्कार *दिलशाद* कर के, किरया करम ते भरथ बहायो ने ॥६६७॥

मंत्रिओं का वचन—

किरया करम दे बाद वज़ीर सारे, रल के भरथ दे कोल फिर आउँदे नीँ ।
दे गए पिता जी आप नूँ राज एह ताँ, बैठो तख़त ते पए सुणाउँदे नीँ ॥६६८॥

बाझ राजेआँ राज न रैह्न कॅदी, तरह तरह दे नाल समझाउँदे नीँ ।
मन्नदा भरथ *दिलशाद* नहिँ गल्ल कोई, ज़ोर पए वज़ीर सभ लाउँदे नीँ ॥६६९॥

भरत का वचन—

वड्डे भाई दा हक्क है राजगद्दी, मैं नहिँ भरमदा किऊँ भरमा रहे ओ ।
है रामचन्दर मालक तखत संदा, मैनूँ के एह तुसी सुणा रहे ओ ॥६७०॥

विच्च ग़म मेरा निकल दम रेहा, उत्तों आण के होर सता रहे ओ ।
दिलशाद मैं ताँ नौकर हाँ उस दा, मैनूँ किऊँ दीवाना बना रहे ओ ॥६७१॥

रामचन्दर माह्राज दे कोल अस्सी, विच वन रल के सारे जाविए जी ।
हत्थ जोड़ के मिन्नताँ चल करिए, गल अपने पल्लेड़ा पाविए जी ॥६७२॥

---

१. आश्वासन । २. प्रमाण । ३. अरथी (शव उठाने का तख़ता) । ४. चन्दन । ५. जोड़कर । ६. शव-दाह । ७. बिना । ८. पागल । ९. कपड़े का टुकड़ा ।

राजतिलक दा नाल सामान लै के, उसे जा ते तखत बहाविए[1] जी ।
उत्थे राज *दिलशाद* एह दे के ते, फिर अजुध्या नाल लै आविए जी ॥६७३॥

देओ हुकम सुणा एह फौज ताईं, नाल चलन नूँ ओ भी तैयार होवे ।
टोर देओ अग्गे पहले सफरमैनाँ[2], रस्ता साफ सुथरा हमवार[3] होवे ॥६७४॥
शुतर, फील, घोड़े, रथ नाल रक्खो, लैं लौ होर जे कुझ दरकार[4] होवे ।
करदा सोच[5] *दिलशाद* है लख बंदा, हौंदा ओही जो भाना[6] करतार होवे ॥६७५॥

डौंडी[7] फिरै जावे विच्च शैहर सारे, असाँ कल बनवास नूँ जाउना वेँ ।
रामचन्दर माहराज नूँ विच्च बन दे, उत्ते तखत दे चा बहाउना वेँ ॥६७६॥
चाहे दिल जिसदा दरशन करन कारण, बेशक आ जावे जिसने आउना वेँ ।
देसन बखश कसूर *दिलशाद* साडे, असाँ रुट्ठेआँ[9] नूँ चल मनाउना वेँ ॥६७७॥

कैकेई की अवस्था —

लग्गी करन अफसोस कैकई हुण ताँ, कैंहदी कम्म अवलड़ा कीतड़ाँ[10] मैं ।
वड्डी बैह्न कौशल्या दे लाल ताईं, कड्ढेआ जंगल दे विच्च चुपेतड़ाँ[11] मैं ॥६७८॥
समझ आई न हाय ! कोई ततेड़ी[12] नूँ, मुँकाला[13] मुख उत्ते मल लीतड़ाँ[14] मैं ।
होवे के *दिलशाद* हुण दस्स मैनूँ, एह ताँ झैहर प्यालड़ा पीतड़ाँ[15] मैं ॥६७९॥

पई टुर खलकत सारी नाल खुशी, वले[16] इक कैकई हैरान होई ।
कैंहदी मुँह मुकालड़ा मलेआँ[17] मैं, करनी आपनी ते पशेमान होई ॥६८०॥
दस्ससाँ मुँह किवें[18] रामचन्दर ताईं, विच्च फिकर इसे गलतान[19] होई ।
पेश गई *दिलशाद* न कोई उस दी, हो मजबूर फिर नाल रवान होई ॥६८१॥

---

१. बिठलाएँ। २. मार्ग की सफाई करने वाली सेना। ३. सम (एक जैसा)। ४. आवश्यकता। ५. विचार। ६. स्वीकार। ७. ढिंढोरा। ८. पिट। ९. रूठे हुओं को। १०. किया। ११. चुप-चाप। १२. दुष्ट। १३. कालिमा, स्याही। १४. लिया १५. पिया। १६. परन्तु। १७. मल लिया। १८. कैसे। १९. डूब गई।

वन को प्रस्थान—

नाल भरथ दे लोक अजुध्या दे, टुर पए नी पीरो[1] जवान प्यारे ।
चलदे हसदे खेडदे खुश होके, गीत खुशिआँ दे पए गान प्यारे ॥६८२॥

जागे भाग साडे आउँसन[2] रामचन्दर, चले भरथ जी आप मनान प्यारे ।
टुरिआँ राणिआँ गोलिआँ सारिआँ नी, पए टुर वज़ीर दीवान प्यारे ॥६८३॥

लै के नाम भगवान दा भरथ राजा, होया घर थीं निकल रवान प्यारे ।
आहा खलकत दा न शुमार कोई, छुँप्पेआ[3] धूँड़[4] दे नाल असमान प्यारे ॥६८४॥

नौ हज़ार हाथी इक्क लख घोड़ा, रथ सठ हज़ार लै जान प्यारे ।
किसे लोड़ दी थोड़ न रही बाकी, लेआ नाल तमाम सामान प्यारे ॥६८५॥

सिरङ्गवीरपुर दे विच्च पौहँच के ते, तंबू विच्च मैदान[5] चा लाँन[6] प्यारे ।
कंढे[7] गंगा उत्ते एह शैहर है सी, गुह उत्थे अहा हुक्मरान[8] प्यारे ॥६८६॥

सुण के खबर ओ भरथ दे आउने दी, होया विच्च खिदमत हाज़र आन प्यारे ।
वेख फौज कसीर[9] दिलगीर होया, विच्च दिल दे लगा घबरान प्यारे ॥६८७॥

एह ताँ मुआमला उलटा नज़र आवे, लग्गा भरथ नूँ फिर सुणान प्यारे ।
कीती तुस्साँ चढ़ाई एह किस उत्ते, चले किस नूँ तुस्सी डरान प्यारे ॥६८८॥

रामचन्दर माह्राज दे कोल तुस्साँ, जेकर जाउने दा है धेआन प्यारे ।
ताँ फिर एह लश्कर[10] दस्सो है कैसा, ऐसा जाउना नहिँ शायान[11] प्यारे ॥६८९॥

मैरे दिल अन्दर पेआ शक एह ताँ, उलटे दिसदे पए निशान प्यारे ।
दस्सो केआ खेआल है विच दिल दे, मैं ताँ वेख के होया हैरान प्यारे ॥६९०॥

केह्आ भरथ ने सुणो निखाद[12] राजे, दस्साँ केआ मैं कर बेआन प्यारे ।
लड़ना पुत्तर दा बाप दे नाल कैसा, तुस्सी लगे एह केआ फरमान प्यारे ॥६९१॥

नौकर मैं उन्हाँदड़ा हाँ हर दम, जद तक विच्च जुस्से[13] हैगी जान प्यारे ।
ताज तखत ते साँज[14] सभ नाल लै के, जावाँ उन्हाँ नूँ तखत बहान प्यारे ॥६९२॥

---

१. वृद्ध और। २. आएँगे। ३. छिप गया। ४. धूलि। ५. उसी समय। ६. लगा दिए। ७. किनारे। ८. राजा। ९. भारी। १०. सेना। ११. उचित १२. निषाद। १३. शरीर। १४. सामान।

भुल के माँ मैरी भख मार बैठी, मैं ताँ चल्लेआँ भुल्ल बखशान प्यारे ।
उन्हाँ बाझ *दिलशाद* न रह सकाँ, ओही जान ते ओही प्राण प्यारे ॥६९३॥

रामचन्दर माहूराज जी हीन कित्थे, जेकर है मालूम फरमा देओ ।
किस मकाम ते कर केआम बैठे, पता तुस्सी उन्हाँदड़ा ला देओ ॥६९४॥
करो मेहरबानी मैरे हाल उत्ते, मैनूँ उन्हाँ दे कोल पौंह्चा देओ ।
दिलशाद एहसान भुलावसाँ नाँ, है जो खबर ओ तुस्सी सुणा देओ ॥६९५॥

गुह का वचन—

रामचन्दर माहूराज गए लंघ[१] इत्थों, इस्से जा ते ओही केआम कर गए ।
लेआ बिस्तरा पलंघ न कोई उन्हाँ, उत्ते धरती दे रात विस्राम कर गए ॥६९६॥
कीती मेहरबानी मैरे हाल उत्ते, मैनूँ आपना ओ गुलाम कर गए ।
चौदां साल *दिलशाद* वनवास मिलेआ, मैरे नाल एह इक कलाम कर गए ॥६९७॥

कैंहदा गुह उस नूँ मैं खुश होया, रब देवे ताँ ऐसा भिरा देवे ।
दुक्ख विच्च जो भाई नूँ वेख के ते, जान अपनी कर फिदां[२] देवे ॥६९८॥
दुक्खी वेख भाई वंडे[३] दुक्ख नाहिं, ऐसे भाई नूँ मौत खुदा देवे ।
बुरेआँ भाइआँ थीं रब *दिलशाद* तैनूँ, कर के अपना फज़ल बचा देवे ॥६९९॥

दस्तबस्ता गुलाम मैं आप दा हाँ, नाल आप दे भरथ जी जाउसाँ मैं ।
जिस जगह ते होणगे रामचन्दर, ढूंड ढांड के चा पौंह्चाउसाँ मैं ॥७००॥
देसाँ होण तकलीफ न कोई तुस्साँ, नाल बरदेआँ टैह्ल कमाउसाँ मैं ।
पौसनं[४] जाग नसीब *दिलशाद* मैरे, दरशन जुदा उन्हाँदड़ा पाउसाँ मैं ॥७०१॥

भरत की भारद्वाज से भेंट—

दित्ती भरथ उतार पोशाक शाही, बाना[५] फकर[६] दा लेआ बना प्यारे ।
पेआ टुर उत्थों लै के नाम रब दा, कीता ज़रा न फिर अटका प्यारे ॥७०२॥

---

१. गुज़र । २. निछावर । ३. बांटे । ४. दया । ५. पड़ेंगे । ६. वेष । ७. साधु ।

गंगा जी दा पांट अबूर करके, रक्खेआँ पैर विच्च जंगल दे चा प्यारे।
पौंहते भारद्वाज दे कोल जाके, दित्ता कदमाँ ते सीस निवाँ प्यारे ॥७०३॥

करके बौह्त रिशी आदर मान अग्गों, लैंदा अपने कोल बहा प्यारे।
कहो भरथ जी आए हो किस तर्हा, देओ अपणा हाल सुणा प्यारे ॥७०४॥

मिलेआ आप नूँ राज अजुध्या दा, गए विच्च वन दे कैसे आ प्यारे।
किस वास्ते लै के फौज आए, देणी किस नूँ चाहो सज़ा प्यारे ॥७०५॥

रामचन्दर दे नाल या लड़न चल्ले, देओ दस्स न रक्खो छिपा प्यारे।
दित्ता देस निकालड़ा माँ तैरी, तूँ भी उसी दा पेट दा जाँ प्यारे ॥७०६॥

देओ साफ सुणा हुण गल्ल मैंनूं, उत्ते किस दे पए ओ धा प्यारे।
सक्केआ दे जवाब न भरथ कोई, रेह्आ विच्च दिल दे पेचँ खा प्यारे ॥७०७॥

आहिआँ तीर तफंग थीं तेझ गल्लाँ, गैइआँ कर कलेजड़े घा प्यारे।
झार झार लग्गा फिर रोण बह के, कैंह्दा नहिँ कोई मैरी ख़ता प्यारे ॥७०८॥

घर नानके मैं ताँ आँस बैठा, मैं बेखबर नूँ खबर नहिँ कों प्यारे।
मैं ताँ लैण हुण उन्हाँ नूँ चलेआ हाँ, है मालूम ताँ देओ बतला प्यारे ॥७०९॥

मिलसन किस मकाम ते रामचन्दर, देओ पता उन्हाँदडा ला प्यारे।
राज-भाग उन्हाँदडा है एह ताँ, समझो सच्च नहिँ झूठ झरा प्यारे ॥७१०॥

तख़त ताज मैं लै के नाल चल्लेआ, करसाँ पेश उन्हाँदडे जा प्यारे।
है राज *दिलशाद* एह चीझ केह्डी, देवाँ जान भी कर फिदा प्यारे ॥७११॥

ऋषि का वचन—

रिशी हस के अग्गों एह कैहन लग्गा, शाबास हझार हझार तुस्साँ।
जो केहा सो आपने सच्च केहा, रामचन्दर दे नाल प्यार तुस्साँ ॥७१२॥

दिन अज्ज दा रहो मेहमान इत्थे, करसाँ हाझर जो होसी दरकार तुस्साँ।
दिलशाद खबर रामचन्दर दी भी, देसाँ कर मैं गोश गुझार तुस्साँ ॥७१३॥

भरत का ऋषि से वचन—

लई रात गुझार मजबूर हो के, रिशी कोल भरथ सुबह आया वे।
हत्थ जोड़ पहले निमस्कार कीती, उत्ते कदमां दे सिर झुकाया वे ॥७१४॥

१. प्रवाह-स्थान। २. पार। ३. झुका। ४. ऋषि। ५. संतान। ६. चक्कर। ७. थीं। ८. कुल्हाड़ा। ९. घाव। १०. था। ११. कोई।

हुकम आप दा मोड़ न सकेॲा मैं, ले आ मन्न जो तुस्सां फरमाया वे ।
दिलशाद पता रामचन्दर जी दा, देॲो दस्स एह भरथ सुणाया वे ॥७१५॥

ऋषि का वचन—

रामचन्दर माह्राज नज़दीक रैंहदे, समझो नहिँ इत्थों कुछ दूर प्यारे ।
रैहणा खफा नहिँ तुस्साँ कैकई उत्ते, नहिँ उस दा कोई कसूर प्यारे ॥७१६॥
रामचन्दर दी भी एहो आही मरज़ी, हैसी उन्हाँ नूँ एह ही मनज़ूर प्यारे ।
भाना रब्ब दा जो *दिलशाद* होवे, टलदा नहिँ ओ होंदा ज़रूर प्यारे ॥७१७॥

चित्रकूट मकाम दस कोस इत्थों, उत्थे हीन बैठे ओ ताँ कब दे जी ।
मुड़ के खबर उन्हाँदड़ी नहिँ आई, गए लँघ इत्थों हीन जब दे जी ॥७१८॥
करो देर न तुस्सी हुण भरथ प्यारे, पौंह्चो कोल उन्हाँदड़े झँब दे जी ।
आशीर्वाद देनी *दिलशाद* मैरी, जाओ तुस्सी हवालड़े रब्ब दे जी ॥७१९॥

भरत का प्रस्थान—

लै के आगेॲा रिशी दी भरथ राजा, चित्रकूट नूँ होण रवान लग्गा ।
दित्ता सारेॲाँ ने कर कूँच उत्थों, रथ तेज़ सुमन्त चलान लग्गा ॥७२०॥
दे हुण रथ थीं हेठ उतार मैनूँ, एह सुमन्त नूँ भरथ सुणान लग्गा ।
हदें अदँब दी है *दिलशाद* एहो, प्यादापा हो के अग्गे जान लग्गा ॥७२१॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण से वचन—

रामचन्दर माह्राज नूँ नज़र आया, असमान ते गर्द गुबार चढ़ेॲा ।
मेरे भाई लछमन, ज़रा वेख खाँ तूँ, एह कौन करदा मारोमार चढ़ेॲा ॥७२२॥
या कि है राजा किसे देस दा एह, जेह्ड़ा लै लश्कर बेशुमार चढ़ेॲा ।
दुश्मन करन कोई ज़ेर *दिलशाद* चलेॲा, या कि खेडने कोई शिकार चढ़ेॲा ॥७२३॥

लक्ष्मण का निवेदन—

लछमन वेखदा रुखँ ते चढ़ के ते, वले उतर भी उत्तों शिताब आया ।
खबरदार माह्राज हो जाओ तुस्सी, लै कर भरथ लश्कर बेहिसाब आया ॥७२४॥

१. स्थान । २. शीघ्र । ३. सपुर्द । ४. प्रस्थान । ५. सीमा । ६. विनय ।
७. वृक्ष । ८. शीघ्र ।

लै के राज नूँ भी ओ ताँ नहिँ रज्जेआं, सानूँ करन विच्च जंगल खराब आया।
देसां मोड़ *दिलशाद* मैं मुँह इस दा, होया केआ जे वन के नवाब आया ॥७२५॥

रामचन्द का वचन—

प्यारे भाई लछमन बैह जा कोल मेरे, लैइए वेख पैहले अस्सी हाल इस दा।
लै के नाल लश्कर चढ़ेआ किऊँ इतना, है विच्च दिल दे केआ खेआल इस दा ॥७२६॥

नाल किस दे इत्थे लड़न आया, नहिँ वैर कोई साडे नाल इस दा।
पैहले वार *दिलशाद* नहिँ करन चंगी, लैना रंग चाहिए देख-भाल इस दा ॥७२७॥

भरत का चित्रकूट में पहुँचना—

चित्रकूट दे विच्च हुण पौंह्च के ते, आया नज़र दूरों इक मकान है जी।
रामचन्दर माह्राज जी बाहर बैठे वैठी कोल सीता लई पैह्चान है जी ॥७२८॥

खड़ा सामने वाँग दरबान[४] लछमन, विच्च हत्थ उस दे धनश वाण है जी।
गल विच्च कफनिआँ भगविआँ *दिलशादा*, होया वेख के भरथ हैरान है जी ॥७२९॥

भरत का वचन—

हालत भाई दी वेख बेताब[३] होया, रेहा सबर न दिलों घबराया ई।
बेपरवाह रब्बा कैंह्दा हैं डाढा, तेरा अन्त न किसे ने पाया ई ॥७३०॥

जेहड़े बैठदे मखमली फर्श उत्ते, उत्ते खाक दे उन्हाँ बहाया ई।
सिर उत्ते जिन्हाँदड़े छत्तर झुलदे, फकीर उन्हाँ नूँ चा बनाया ई ॥७३१॥

देंदों मौत जे तूँ चंगी आही इसथीँ, मैनूँ अज जो एह दिखलाया ई।
दिलशाद वाली ताज तखत जेह्ड़ा, विच्च जंगलाँ ओही रुलाया ई ॥७३२॥

मिलाप—

पेआ डिग्ग कदमाँ उत्ते आन के ते, रो रो के हाल गँवान लग्गा।
अकल होश हवास न रहे कायम, लेट लेट भँवालिआँ खान लग्गा ॥७३३॥

डोर सबर दी गई सू छुट्ट हत्थों, उच्चिआँ मार चीकाँ कुरलान लग्गा।
कीता पाप *दिलशाद* मैं दस केहड़ा, मैनूँ रब एह के दिखलान लग्गा ॥७३४॥

---

३. तृप्त हुआ। ४. द्वारपाल। ५. दुःखी। ६. स्वामी।

रामचन्द्र का वचन—

बाहों पकड़ छाती नाल ला लैंदे, कैंहदे भरथ प्यारे किधर खेआल है जी ।
राजगद्दी किऊँ छोड़ के आए इत्थे, दस्सो पिता जी दा केआ हाल है जी ॥७३५॥
कौशल्या माताँ कैकई सुमित्राँ दी, देओ दस्स के उन्हाँ दी चाल[1] है जी ।
केआ सलूक[2] *दिलशाद* कैकई करदी, कैसी वरतदी उन्हाँ दे नाल है जी ॥७३६॥

बैठो कोल मैरे भाई आ के ते, रक्खो हौसला किऊँ घबरा रहे ओ ।
कीता वेस फकीरी दा किऊँ तुस्साँ, कहो केआ एह रंग दिखला रहे ओ ॥७३७॥
किस वासते लाही पोशाक शाही, गल कफनिआँ कासैनूँ[3] पा रहे ओ ।
खाली तख़त नूँ छोड़ के *दिलशादा*, दस्सो किऊँ तुस्सी इत्थे आ रहे ओ ॥७३८॥

भरत का निवेदन—

दस्साँ केआ माहराज मैं हाल अपना, मैरी जान विच्च जिसम दे जल रही ए ।
सारी खलकत अजुध्या शैहर संदी, दरशन करन तुसाडड़ा चल रही ए ॥७३९॥
मैरी माँ कैकई ने बुरा कीता, विच्च अफसोस हुण ताँ हत्थ मल रही ए ।
ओ भी आई *दिलशाद* है नाल मैरे, ऐ पर विच्च शरमिन्दगी गल रही ए ॥७४०॥

पिता जी फराँक[4] तुसाडड़े विच्च, समझो सच ओ छोड़ संसार गए ने ।
दम आखरी तक तुहानूँ याद कीता, आखरकार सुरँग[5] सुधार गए ने ॥७४१॥
असां चौवाँ[6] विच्चों न सी कोल कोई, ओ ताँ कर सानूँ शर्मसारँ[7] गए ने ।
होई खबर *दिलशाद* नहिँ कोई मैनूँ, मैनूँ जीऊँदिआँ ई समझो मार गए ने ॥७४२॥

तुस्सी हो बजाए[8] हुण बाप मैनूँ, समझो आप दा भरथ गुलाम है जी ।
मैं ताँ होया बदनाम विच्च जग सारे, कीता माँ मैरी बुरा काम है जी ॥७४३॥

---

१. गति । २. बरताव । ३. किस कारण । ४. वियोग । ५. स्वर्ग । ६. चारों । ७. लज्जित । ८. स्थान पर ।

बखशो वासते रब्ब दे चा मैनूँ; चढ़ेआ सिर मैरे एह इलज़ाम है जी।
तुसाँ बाझ *दिलशाद* न रह सक्काँ, नींदर, भुख; आराम हराम है जी ॥७४४॥
उस वेलड़े[1] नूँ रब साड़ देंदा, जिस वकत कैकई ने जाया[2] मैं।
कीता उस माहराज अधर्म जेहड़ा, फल उस दा समझ लओ पाया मैं ॥७४५॥
भुल मुआफ करो असाँ भुलेआँ दी, हुण ताँ शरण तुसाडड़ी आया मैं।
लओ राज संभाल *दिलशाद* अपना, ताज-तख़त इत्थे नाल ल्याया मैं ॥७४६॥

रामचन्द्र का विलाप—

सुण के बाप दी मौत हैरान होए, ते ग़मगीँ हो आँसू बहान लग्गे।
होया दरस नसीब न अन्त सम्ये, विच्च दिल दे करन अरमान लग्गे ॥७४७॥
छत्रघन भी गेआ फिर पोंह्च आके, चारे रो रो हाल गँवान लग्गे।
बैठे आन वज़ीर दीवान सारे, नाल अफसोस *दिलशाद* परचान लग्गे ॥७४८॥

जलदी मौत ज़ालम कीती किऊँ इतनी, चौदाँ साल भी सबर न कर सक्की।
मैरे हाल ते रैहम न कोई कीता, न ओ रब दे खौफ थीं डर सक्की ॥७४९॥
मैरे बाप दी जान नूँ लैके ते, दस्सो घर केहड़ा ओ हुण भर सक्की।
पाया वख़त विच्च वख़त *दिलशाद* मैनूँ, किऊँ नहिँ मौत तँत्ती[3] आप मर सक्की ॥७५०॥

कर कर विलाप थक के ते, हो हैरान ग़मग़ीन[4] दलगीर बैठे।
गेआ पैंह्च डेरों पिच्छों आ सारा, आके कोल दीवान वज़ीर बैठे ॥७५१॥
बैह के कोल मावाँ[6] भी वेख रहिआँ, पुत्तर जिन्हाँ दे बन के फकीर बैठे।
करदे गल्ल *दिलशाद* नहिँ नाल किस्से, बेज़बानँ[7] हो मिसर्ल[8] तसवीर बैठे ॥७५२॥

भरत का निवेदन—

हत्थ जोड़ के भरथ फिर कैह्न लग्गा, करनी अरज़ एह मेरी कबूल भाई जी।
गेआ हो पूरा हुकम बाप दा भी, कीता नहिँ तुस्साँ अदूल भाई जी ॥७५३॥

---

१. समय। २. उत्पन्न किया। ३. क्रूर। ४. शोकातुर। ५. गण। ६. माताएँ। ७. शब्द-रहित। ८. भांति।

ताज तख़त नूँ लओ संभाल तुस्सी, देओ अपना वदल असूल[1] भाई जी ।
चलो परत *दिलशाद* अजुध्या नूँ, रैह्ना हुण बनबास फ़ज़ूल भाई जी ॥७५४॥

रामचन्द्र का वचन—

सुणो भरथ प्यारे मैरी गल्ल ताईँ, किस वासते होए हैरान तुस्सी ।
दे गए पिता जी राज एह आप ताईँ, ऐवें[2] लग्गे किऊँ राज गँवान तुस्सी ॥७५५॥
करो राज अजुध्या विच्च बैह के, मन्नो बाप दा भाई फ़रमान तुस्सी ।
अकलमंद, दाना होशेआर होके, किऊँ लग्गे ओ बनन नादान तुस्सी ॥७५६॥
मैं भी हुकम उन्हाँदड़ा कराँ पूरा, लओ गल्ल मैरी सच्च जान तुस्सी ।
लग्गे धर्म थीँ किऊँ हटान मैनूँ, उलटे दस्स के एह गेआन तुस्सी ॥७५७॥
जाना अजे[3] अजुध्या नहिँ मैं ताँ, लग्गे केआ एह मैनूँ सुणान तुस्सी ।
मुखतसर[4] *दिलशाद* है गल मैरी, करो भरथ जी बन्द बेआन तुस्सी ॥७५८॥

मौत पिता जी दा है अफसोस भारा, सबर बाज नहिँ कोई इलाज भाई ।
जो आया है उस ज़रूर चलना, इस जगत दा एहो रिवाज भाई ॥७५९॥
प्याला मौत दा पीवणा हर इक ने, कोई कल पीसी कोई अज भाई ।
ढायाँ दिल *दिलशाद* नहिँ कुछ बनदा, होणा मुस्तकिल[6] चाहिए मज़ाजे[7] भाई ॥७६०॥

कई बज़ुरग साडे राजे राज कर के, आखर हत्थ[8] जहान थीँ धो[9] गए नीँ ।
मांतम[10] प्यारेआँ दे इस्से तौर[11] कर के, साडे वाँग बैह के ओ भी रो गए नीँ ॥७६१॥
शाहज़ोर भारे बलवान कितने, रल के विच्च मिट्टी 'मिट्टी'[12] हो गए नीँ ।
दिलशाद नहिँ कदी जागदे ओ, जेहड़े मौत दी नींदरे सो गए नीँ ॥७६२॥
मैरे भरथ भाई वेख बाप वलों, कैसा अपना धर्म निभाँ[13] गए नीँ ।
दित्ता देस निकालड़ा चा मैनूँ, उत्ते तख़त तैनूँ बिठला गए नीँ ॥७६३॥

---

१. नियम । २. वृथा । ३. अभी । ४. संक्षिप्त । ५. समाप्त । ६. स्थिर ।
७. स्वभाव । ८. संबंध । ९. तोड़ । १०. शोक । ११. तरह । १२. नष्ट । १३. पूरा कर ।

कीता सुखन[1] ज़बान दा नहिँ झूठा, भावें अपनी जान गँवा गए नीँ ।
नहिँ धर्म थीँ हारेऑ *दिलशादा*, बोल अपना तोड़[2] चढ़ा गए नीँ ॥७६४॥

ऐसे बाप दे हुकम नूँ किऊँ मोड़ाँ, बोल उन्हाँदा तोड़ चढ़ावसाँ मैं ।
जाँवाँ परत अजुध्या नूँ न कद्दी, चौदाँ साल बनवास लँघावसाँ मैं ॥७६५॥
वापस हो जे तुस्साडड़े नाल चल्लाँ, मुँह किसे नूँ केऑ दिखलावसाँ मैं ।
दिलशाद जे रहेगी ज़िन्दगानी[3], कर मर्यांद[4] पूरी घर आवसाँ मैं ॥७६६॥

भरत का निवेदन—

करो मुआफ़ कसूर माहराज मैरे, हत्थ बन्ह[5] विच्च मुँह पाँ[6] घास आयाँ ।
माताँ अपनी दा कीता वेख के ते, लवाँ उत्ते मैरा हुण साँस आया ॥७६७॥
करो न निरास उदास ताईं, करके आँस मैं तुस्साँ दे पास आयाँ ।
देऑ बखश गुनाह *दिलशाद* मैरा, शरण आप दी आप दा दास आया ॥७६८॥

मैं ताँ हाँ नौकर हर दम आप संदा, राज अपना लओ संभाल तुस्सी ।
करो मेहरबानी मैरे हाल उत्ते, छड बनवास दा देऑ खेआल तुस्सी ॥७६९॥
अरज़ करो मनज़ूर ज़रूर मैरी, परत घर चल्लो मैरे नाल तुस्सी ।
आया शरण *दिलशाद* तुसाडड़ी मैं, भुल बख़श हो जाओ देआल[8] तुस्सी ॥७७०॥

रामचन्द्र जी का वचन—

मैरे भरथ भाई न कर ज़िद्द इतनी, मैनूँ राज एह समझ दरकार नाहीँ ।
दे गए पिता जी तख़त ते ताज तैनूँ, तेरे हक दा मैं ख्वाँदार[9] नाहीँ ॥७७१॥
हुकम बाप दा मन्नना फरज़ प्यारे, छड हठ तू कर तकरार नाहीँ ।
दिलशाद जो पूत सपूंत[10] होंदे, मन्नन आगेआ[11] करन इन्कार नाहीँ ॥७७२॥

---

१. वचन । २. सिरे तक । ३. जीवन । ४. अवधि । ५. बांध । ६. डाल । ७. आशा । ८. दयालु । ६. इच्छुक । १०. सुपुत्र । ११. आज्ञा ।

माँ कैकई दे नाल जद पिता जी ने, कीती शादी ताँ एही इकरार होया।
औलाद इस्से दी वारिस[1] तखत होसी, नाने आप दे नाल इज़हार[2] होया ॥७७३॥
एह ताँ समझ वायदे पैहले हो चुक्के, न सी कोई अजे पैदावार[3] होया।
तख़त ताज *दिलशाद* एह आप दा वे, राज करन थीं किऊँ इन्कार होया ॥७७४॥

भरत का निवेदन—

मैरे नाने दे कुझ अख्तेआर नाहिँ, मैरी मां दी भी सरोकार नाहिँ,
मैनूँ राज माहराज दरकार नाहिँ, जले दिलाँ नूँ किऊँ जला रहे ओ।
करनी अरज़ एह मैरी मनज़ूर तुस्साँ, देना बख़श जो होया कसूर तुस्साँ,
मैं ताँ लै के जाना ज़रूर तुस्साँ, मैनूँ के एह तुस्सी सुणा रहे ओ ॥७७५॥
मार झख बैठी मैरी माई[4] है जी, मैरी जान लबाँ उत्ते आई है जी,
सुध-बुध तमाम विसराई[5] है जी, दुखाँ विच्च किऊँ मैनूँ फसा रहे ओ।
रब आप दे दिल नूँ चा फेरे[6], देओ पट्ट बनवास थीं हुण डेरे,
चलो उठो *दिलशाद* जी नाल मैरे, मैं ग़रीब नूँ किऊँ रुला रहे ओ ॥७७६॥

कवि-वचन—

ताज तख़त दी नहिँ परवाह रखदे, बैठे धर्म दा पकड़ के राह दोंवें।
ठुड्डे[8] मार लुढ़कांऊँदे[9] गेंद वाँगो, नहिँ राज दी रखदे चाह दोंवें ॥७७७॥
रेहा लग झगड़ा फैसला नहिँ होंदा, समझो हीन डाँढे[10] बेपरवाह दोंवें।
अज हीन कितने भाई *दिलशाद* ऐसे, इक दूसरे दे ख़ैरख़्वाह[11] दोंवें ॥७७८॥

जाबाली ते होर वज़ीर जितने, कर कर मिन्नताँ होए लाचार सारे।
धर्मशास्त्र पए सुणान पढ़ के, तरह तरह दे करन विस्तार सारे ॥७७९॥
नहिँ जाउँदी किसे दी पेश कोई, थक्के मिन्नतां कर हज़ार सारे।
होंदी नहिँ मनज़ूर दिलशाद कोई, कर कर बहँसाँ[12] गए नी हार सारे ॥७८०॥

१. अधिकारी। २. प्रकट। ३. सन्तान। ४. माता। ५. भुलाई। ६. बदले। ७. उखाड़। ८. ठोकर। ९. लोट-पोट करते १०. बहुत। ११. हितचिन्तक। १२. शास्त्रार्थ।

भरत का निवेदन—

लओ सुण माह्राज जी अरज़ मेरी, करसाँ राज न कदी मनज़ूर मैं ताँ ।
नाहिँ परत अजुध्या विच्च जासाँ, रैह्साँ कदमाँ दे विच्च ज़रूर मैं ताँ ॥७८१॥

जित्थे रहोगे रहवाँगा नाल मैं भी, होसाँ तुस्साँ थीँ कदी[1] न दूर मैं ताँ ।
हत्थीँ आप *दिलशाद* मैं टैहल करसाँ, रैहसाँ हर दम हाजर हज़ूर मैं ताँ ॥७८२॥

कीती परत के गल्ल न फेर कोई, आसन घास दा तुरत विछा बैठा ।
झूठी हिरस जहान दी छोड़ के ते, चित्त भाई दे कदमाँ विच्च ला बैठा ॥७८३॥
बाना[2] फकर[3] दा ताँ कीतां अहा पैहले, अग्नि बाल के धूँनी धुखा बैठा ।
होए वेख हैरान *दिलशाद* सारे, भरथ रंग अजीब बना बैठा ॥७८४॥

रामचन्द्र का वचन—

उठ के पकड़ माह्राज ने लेआ बाहोँ, कर पेआर छाती नाल लान लग्गे ।
मेरे भाई भरथ करो ज़िद नाहिँ, जाओ परत के घर सुणान लग्गे ॥७८५॥

रल के नाल बनवासिआँ विच्च वन दे, राज-भाग किऊँ मुफत गँवान लग्गे ।
सांभो[6] तख़त ते ताज अजुध्या दा, मन्नो केहा *दिलशाद* समझान लग्गे ॥७८६॥

विच्च दिल दे केहड़िआँ[7] आइआँ नीँ, लैइआँ सुण जो तूँ सुणाइआँ नीँ,
कैहाँ[8] धूनिआँ आन रमाइआँ नीँ, वाह वाह रंग अजीब दिखला रेहोँ ।
मैं ताँ धर्म नूँ कदी भी छोड़ना नहिँ, धर्म छोड़ के ते सुख लोड़ना नहिँ,
मां बाप दे हुकम नूँ मोड़ना नहिँ, मैनूँ पेआरेआ के सुणा रेहोँ ॥७८७॥
चौदाँ साल बनवास गुज़ारना ऐँ, सिरों अपने भार उतारना ऐँ,
देख सख़तिआँ कदी न हारना ऐँ, रख हौसला किऊँ घबरा रेहो,
राज तद *दिलशाद* कमाँउसाँ मैं, कर मैयाद पूरा जद आउसाँ मैं,
छाती नाल तैनूँ आ के लाउसाँ मैं, एडी चिन्ता तूँ कास नूँ ला रेहोँ ॥७८८॥

---

१. कभी । २. वेश । ३. साधु । ४. आग । ५. जला (कर) । ६. संभालो ।
७. कौन सी (बातें) । ८. कैसी । ९. लगाई । १०. करूंगा । ११. किस (लिए) ।

होंदे मर्द जेहड़े हीन दिल वाले, वेख सखतिआँ नूँ कदी रुकदे नहिँ ।
खबर जिन्हाँ नूँ होवँदी धर्म दी ए, नेड़े ओ अधर्म दे ढुँकदे नहिँ ॥७८९॥
गेआन दिल जिन्हाँदड़े विच्च होवे, भार पाप दा कदी ओ चुकदे नहिँ ।
सालेस लओ बना *दिलशाद* कोई, विना सालसाँ झगड़े मुकदे नहिँ ॥७९०॥

जो कुझ कहे कौशल्या माँ मैरी, ओही भरथ जी मैनूँ मनझूर होसी ।
करना तुसाँ भि नहिँ इनकार कोई, मनना उसदा केहा झरूर होसी ॥७९१॥
गुरु वसिष्ट माहराज भी हीन बैठे, सच्च झूठ दा इत्थे झहूर होसी ।
करसी फिर *दिलशाद* न उझर कोई, होया फैसला ते झगड़ा दूर होसी ॥७९२॥

भरत का वचन—

कही गल्ल माहराज है खूब तुस्साँ, सारा झगड़ा ओही मिटा देसी ।
सौ वार मनझूर है ओ मैनूँ, माताँ जो इत्थे फरमा देसी ॥७९३॥
ताकत केआ मैरी जो बोल सकाँ, माता बोल के सच्च सुणा देसी ।
मन्नसी केहा *दिलशाद* जो न उसदा, उस नूँ रब झरूर सझा देसी ॥७९४॥

रामचन्द्र का माता से वचन—

माताँ दस्स मैनूँ चाहिए केआ करना, जे तूँ कहें ताँ धर्म थीँ हार जावाँ ।
बोल बाप दे नूँ चाँहड़ तोड़ देवाँ, हो बेधर्म या कर इनकार जावाँ ॥७९५॥
दम आखरी तक रक्खाँ भार सिर ते, या कि भार नूँ सिरों उतार जावाँ ।
नाल धर्म दे आख *दिलशाद* मैनूँ, माताँ तुध तो मैं बलहार जावाँ ॥७९६॥

कौशल्या की सोच—

पै गई सोच विच दिल दे गल सुण के, कैंहदी केआ मैं कराँ तदबीर रब्बा ।
जिस पुतर नूँ पालेआ नाल नाँजाँ, बन के ओही अज वैठा फकीर रब्बा ॥७९८॥
मन तन मैरा रेहा जल अन्दरों, जिगर पाट होया लीर लीर रब्बा ।
जिवेँ लकड़िआँ नूँ आरी चीरदी ए, रेहा ग़म मैनूँ तिवें चीर रब्बा ॥७९९॥

---

१. मनुष्य । २. आते । ३. मध्यस्थ । ४. समाप्त होते । ५. चढ़ा । ६. धर्महीन । ७. लाड-प्यार । ८. टुकड़े-टुकड़े । ९. वैसे ।

कराँ वैन दिन रैन बेचैन होके, नहिँ दिल नूँ आवँदी धीर रब्बा।
कन्द मूल खुराक उन्हाँदड़ी ए, खांदे आहे जेहड़े खण्ड-खीर रब्बा ॥८००॥
केहड़े पाप दा मिलेआ फल मैनूँ, लिखी केआ मैरी तकदीर रब्बा।
गइ किसे दी ज़रा न पेश कोई, थके अरज़ाँ कर वज़ीर रब्बा ॥८०१॥
मैं कहवाँ ता कहवाँ हुण केआ इत्थे, मेरे सिर ते आई अखीर रब्बा।
तुझ बाझ *दिलशाद* नहिँ होर कोई, मैं ताँ हाँ तेरी दामनगीर रब्बा ॥८०२॥

लग्गी कैहन मैरा दिल एह चाँहदा, धर्म आपना तोड़ चढ़ा देओ।
हुकम बाप दे नूँ कर देओ पूरा, चौदाँ साल बनवास लँघा देओ ॥८०३॥
खड़ावाँ[2] लै आई मैं नाल इत्थे, कदमाँ आपने नाल छुआँ[3] देओ।
दे के भरथ नूँ ओही *दिलशाद* तुस्सी, चले परत के घर सुणा देओ ॥८०४॥

रामचन्द्र का वचन—

खड़ावाँ माताँ थीँ लै के रामचन्दर, तुरत कदमाँ दे नाल छुआ देंदे।
लओ भरथ भाई छोड़ो ज़िद हुण ताँ, जाओ परत के घर सुणा देंदे ॥८०५॥
हुकम माताँ दा ज़रूर मन्नना है, करना नहिँ इनकार समझा देंदे।
दिलशाद गुज़ार के बरस चौदाँ, जासाँ मैं भी आ फरमा देंदे ॥८०६॥

भरत का निवेदन—

खड़ावाँ लै के भरत ने अरज़ कीती, हुकम आपदा मैं मनज़ूर कीता।
रेहा शक माहराज बेशक मैनूँ, तुस्साँ मुआफ नहिँ मैरा कसूर[4] कीता ॥८०७॥
मैं ताँ आया साँ आप नूँ लैण कारण, उलटा कदमाँ थीँ चा मैनूँ दूर कीता।
मैरी नहिँ ख़ैता *दिलशाद* कोई, मैरी माताँ कसूर ज़रूर कीता ॥८०८॥

रामचन्द्र का वचन—

सुणो भरथ प्यारे मैरी गल्ल ताईँ, तैरी माँ दी कोई ख़ता नाहिँ।
लिखे लेख समझो एही आहे मेरे, सकदा उन्हाँ नूँ कोई मिटा नाहिँ ॥८०९॥

१. आश्रित। २. पादुका। ३. स्पर्श करा। ४. अपराध।

होनहार बलवान है सभ उत्ते, पेश जावँदी चूँ-चँराँ नाहिँ ।
खबरदार *दिलशाद* कैकई उत्ते, रैह्ना कदी भी तुस्साँ खफा नाहिँ ॥८१०॥

भरत का वचन—

हत्थ जोड़ के भरथ फिर अरज़ करदा, तुस्साँ नाल माह्राज नहिँ ज़ोर कोई ।
रैंह्दा कदमाँ दे विच्च तुसाडड़े मैं, न सी खाहिश विच्च दिल दे होर कोई ॥८११॥
मननी किसे दी गल्ल नहिँ कोई तुस्साँ, भावें रह्वे करदा कितना शोर कोई ।
सुणे कौण फरयाद *दिलशाद* मैरी, आवे नज़र माह्राज न होर कोई ॥८१२॥

गल्लाँ दिल दिआँ दिल दे विच्च रहिआँ, मन्नी नहिँ मैरी कोई गल्ल तुस्साँ ।
लग्गा जान अजुध्या परत के मैं, पाया खूब विच्च गल्ल दे वल्ल तुस्साँ ॥८१३॥
चौदाँ साल उपरेन्त बनवास अन्दर, रैह्णा नहिँ माह्राज इक पल तुस्साँ ।
दिलशाद जासी नहिँ ताँ जान मैरी, कीता विच्च कलेजड़े सँल तुस्साँ ॥८१४॥

लौ सुण माह्राज यकीन करके, तुस्साँ बाज आराम हराम करसाँ ।
फल फुल खासाँ तुस्साँ वाँग मैं भी, दिलों दूर स्वाद तमाम करसाँ ॥८१५॥
लासाँ हत्थ न बिस्तरे पलंग ताईं, उत्ते धरती ते लेट बिस्राम करसाँ ।
गिन गिन दिन *दिलशाद* गुज़ारसाँ मैं, पेॲ याद तुस्साँ सुबह् शाम करसाँ ॥८१६॥

कीता हुकम मनज़ूर मजबूर होके, हुण परत अजुध्या जाउसाँ मैं ।
इसे हाल फकीरी दे विच्च रैह् के, समझो साल चौदाँ एह लँघाउँसाँ मैं ॥८१७॥
झायके कर ज़बान दे दूर सारे, कन्द मूल बैह् के पेॲ खाउसाँ मैं ।
चौदाँ साल गुज़ार जे न आए, ताँ फिर जान *दिलशाद* गँवाउसाँ मैं ॥८१८॥

---

१. टाल-मटोल । २. पश्चात् । ३. व्रण । ४. त्याज्य । ५. खाऊँगा । ६. सारे । ७. गुजारूँगा । ८. स्वाद ।

रुखसत मैं माहराज हुण तुस्साँ कोलोँ, एह पर अरज़ मेरी रखनी याद चाहिए।
रैहना नाहिँ दिलगीर विच्च गम कदी, हर दम दिल अपना रखना शाद चाहिए ॥८१९॥

पलक झलक विच्च गुज़रसन बरस चौदाँ, साईँ सच्चे दी होनी इमदाद[1] चाहिए।
ज़ायद[2] दिन *दिलशाद* न इक्क होवे, पूरी होवनी जदों मैयाद चाहिए ॥८२०॥

रामचन्दर माहराज दा हुकम लै के, भरथ परत अजुध्या जान लग्गा।
आँसू वाँग बरसात दे चल रहिआँ, हत्थ जोड़ के वासते पान लग्गा ॥८२१॥

चौदाँ बरस थीँ बाद नहिँ पल रैह्णा, करके मिन्नताँ एह सुणान लग्गा।
छोड़ आस नीरास *दिलशाद* होया, उत्ते कदमाँ दे सीस निवान लग्गा ॥८२२॥

भरत का अयोध्या को लौटना—

पक्के वायदे गए जद हो उत्थे, लग्गा भरथ अजुध्या जान प्यारे।
गई किसे दी पेश न कोई भाई, हो हैरान सभ होए रवान प्यारे ॥८२३॥

दित्ता सारेआँ ने कर कूच उत्थों, चीं मार के पए कुरलान प्यारे।
गए पौंह्च अजुध्या विच आके, आही आह नाला ते फुगाँ प्यारे ॥८२४॥

भरथ तँक[3] अजुध्या वल रोवे, सुँञे आउँदे नज़र मकान प्यारे।
दिस्से खुशी दा न आसार कोई, है सी विच्च नगरी सुनसान[4] प्यारे ॥८२५॥

कैंह्दा हाय ! रबा एह तूँ के कीता, लग्गा खाक विच्च सिर दे पान प्यारे।
ज़रा आवे करार न दिल ताईँ, बेकँरार[5] हो लग्गा घबरान प्यारे ॥८२६॥

पेआ तक्के दीवानेआँ वाँग यारा, चश्म[6] गिरँयान[7] जिगर[8] बिरयाँन[9] प्यारे।
पकड़ ओटँ[10] रव दी देओ धीर दिल नूँ, पए समझान वज़ीर दीवान प्यारे ॥८२७॥

होनी नाल नहिँ किसे दी पेश जांदी, करे एही फकीर सुलतान प्यारे।
ज़बरदस्त नूँ करदी ज़ेर होणी, होणी है सब तों बलवान प्यारे ॥८२८॥

सबर करो धीरज देओ दिल ताईँ, बैठो आसरा पकड़ भगवान प्यारे।
जे हुण तुस्साँ भी हौसला हार दित्ता, जासी हो फिर राज वीरान प्यारे ॥८२९॥

---

१. सहायता। २. अधिक। ३. देख। ४. शून्य। ५. अधीर। ६. आँख। ७. रो रही। ८. दिल। ९. फट रहा। १०. शरण।

कहे भरथ नहिँ आऊँदा सबर मैनूँ, करदा असर नहिँ कोई ज्ञान प्यारे।
रामचन्दर अन्दर रहे वस मैरे, मैरा उन्हाँ दी तरफ धेॲान प्यारे ॥८३०॥

विच तन ओही विच मन ओही, ओही जान ते ओही प्राण प्यारे।
नीदँर भुख अराम हराम होए, गेॲा भुल्ल मैनूँ पीन-खान प्यारे ॥८३१॥

गई पेश न इक मैं लख कीती, विच दिल दे सखत अरमान प्यारे।
कीता बुरा *दिलशाद* है माँ मैरी, रेहॉ हो मैं ताँ पशेमान प्यारे ॥८३२॥

भरथ सोचदा बैठ के विच्च दिल दे, रेहा कई दलीलाँ दौड़ा साईँ।
रंगारंग दे पए खेॲाल उठदे, गए सुख, मिले दुख धा साईँ ॥८३३॥

पेॲा सोच विचार हज़ार करे, जांदी पेश तदबीर नहिँ का साईँ।
लै के नाल वज़ीर दीवान सारे, खड़ा विच दरबार दे आ साईँ ॥८३४॥

खडावाँ रक्ख दित्तिआँ तखत शाही उत्ते, लई रब दी मन्न रज़ा साईँ।
छत्रघन लै के छत्र विच हत्थ दे, उत्ते तखत दे रेहा झुला[३] साईँ ॥८३५॥

कम्म कार सभ करो होशेॲार हो के, दित्ता हुकम वज़ीराँ नूँ चा साईँ।
होवे ज़ुलम न किसे गरीब उत्ते, रो रो के देवे सुणा साईँ ॥८३६॥

कष्ट होवे न कोई प्यारेॲाँ नूँ, करो रात ते दिन दुआ साईँ।
रामचन्दर माहराज बनवास अन्दर, इत्थे वास नहिँ मैरा रँवा साईँ ॥८३७॥

अजुध्या वेखने नूँ नहिँ दिल चाहँदा, मैनूँ मैहल भी रहे डरा साईँ।
दिनैं-रैन नहिँ आऊँदा चैनँ मैनूँ, हो बेचैनँ[६] मैं रेहा घबरा साईँ ॥८३८॥

रह्वाँ मैं अकेलड़ा जा किधरे, नहिँ रैहूण संदी इत्थे जा साईँ।
नन्दीगाम इक पिंडँ नज़दीक हैसी, डेरा देवँदा उत्थे लगा साईँ ॥८३९॥

सुबह उठ खड़ावाँ नूँ जा पूजे, निंत-नेम एह लेॲा ठैहरा साईँ।
दिलशाद विच्च भजन दे मगन होके, रेहा नाम भगवान धँया साईँ ॥८४०॥

---

१. कोई। २. हिला। ३. उचित। ४. दिन-रात। ५. शान्ति। ६. अशान्त। ७. गांव। ८. नित्य का नियम। ९. जप।

नन्दीगाम दे विच्च हुण भरथ आ के, छोड़ अजुध्या नूँ डेरा पा[१] बैठा।
करदा याद माह्राज नूँ हर वेले, चित्त तरफ उन्हाँदड़ी ला बैठा ॥८४१॥
पए दुक्ख चौफेरेऑं धा हुण ताँ, खुशी ऐश आराम भुला बैठा।
आवे वक्त *दिलशाद* ओ हत्थ कित्थों, हत्थीँ अपनी जेहड़ा गँवा बैठा ॥८४२॥

औंदा सबर इक पल नहिँ दिल ताईँ, बेआराम होके पेऑ डोलॆदा ने।
रामचन्दर माह्राज दे नाम उत्तों, पेऑ अपनी जान नूँ घोलदा ने ॥८४३॥
कदी हसदा ते कदी रोवँदा वे, चुन चुन के दुखड़े रोलॆदा[३] ने।
बाराँ माह *दिलशाद* फॅराक वाले, पेऑ भरथ बैह के उत्थे बोलदा ने ॥८४४॥

चेतर चिन्ता लगी हुण आण भारी, भरथ रोवँदा बैठ के झार-झारी,
कैंह्दा माँ मैरी है हत्यारी, हाय! उस के एह विचारेऑ वे।
रामचन्दर बनवास विच कढेऑ सू, मैरी झिन्दगी दा बूटा वड्ढेआँ[६] सू,
दिल नूँ त्रोड़ के फिर न गड्ढेआँ सू, मैनूँ जीउँदेआँ ई उस मारेऑ वे ॥८४५॥
रामचन्दर सिर मैरे दा ताज है जी, मालक ओही, एह उस्से दा राज है जी,
मेरा रैह्ण औखा उस दे बाज है जी, मन तन मैं ताँ उस ताँ वारेऑ वे।
एह के कीताई मैरेऑ साइआँ तूँ, जुदाइआँ पाइआँ सॆक्केआँ भाइआँ तूँ,
वाह! वाह! कुदरताँ एह विखाइआँ तूँ, भरथ दिलों *दिलशाद* हुण हारेऑ वे ॥८४६॥

विसाख बस चलेऑ नहिँ कोई मैरा, आया जंगल दे विच्च भी पा फेरा,
गेऑ नाल हैसाँ मैं ताँ लै डेरा, रैहसाँ कोल मैं भी एह खेऑल हैसी।
मैरा नहिँ माह्राज कसूर कोई, खता माँ मैरी थीँ झरूर होई,
देऑो बखश कसूर हझूर ओही, हत्थ जोड़ मैं पाया सवाल हैसी ॥८४७॥
मैं ताँ जानेऑ सी गल्ल मन्न लैसो, अजुध्या विच्च आके उत्ते तखत बैहसो,
लै के राज आपना मैरे कोल रैह्सो, एह उमीद विच्च दिल कमाल है सी।

१. डाल। २. दोलायमान होता। ३ छाँटता। ४. मास। ५. वियोग ६ काट दिया।
७. जोड़ दिया। ८. सगे।

गल्लाँ दिल दिआँ दिल दे विच्च रहिआँ, जो मैं सोचिआँ पेश न ओ गइआँ,
गल मुसीबताँ आन *दिलशाद* पइआँ, मैरा झोर केहड़ा तुस्साँ नाल हैसी ॥८४८॥

जेठ जान मैरी लबाँ उत्ते आई, मैनूँ किऊँ जुदाई एह सखत पाई,
वेखो हाल मैरा हुण ताँ आन भाई, तुस्साँ बाज दस्सो मैरा होर केहड़ा।
पिता जी भी सुरग सुधार गए ने, सागर दुखाँ थीं लंघ ओ पार गए ने,
मैनूँ डोब हुण शौंह विचकार गए ने, लै आवाँ कोल तुसाडड़े टोर केहड़ा ॥८४९॥
मैनूँ कोल आपने नहिं रैह्न दित्ता, नाहीं हाल कोई दिलदा कैह्न दित्ता,
कढेआँ तुरत उत्थों नहिं बैह्न दित्ता, हैसी नाल तुसाडड़े झोर केहड़ा।
कीता जनम किसे मैं ताँ पाप कोई, आया पेश मेरे *दिलशाद* ओही,
सुणे कौन जेहड़ी मैरे नाल होई, मेरे वाँग भिराँ दा चोर केहड़ा ॥८५०॥

हाड़ होश न रही सरीर दी ए, कैंरद हिजर पई जिगर नूँ चीरदी ए,
मैनूँ खबर न कोई तकदीर दी ए, कदों विछड़ेआँ दे फिर मिलाप होसन।
ताज तखत ते राज नूँ छोड़ के ते, मैनूँ दुखाँ दे वैहन विच बोड़ के ते,
गए टुर मुहब्बताँ तरोड़ के ते, फिरदे विच जंगलाँ चुपचाप होसन ॥८५१॥
कराँ केआ मैं पेश न कोई जावे, गोते जान मैरी हुण पई खावे,
पुच्छाँ किस नूँ नझर न कोई आवे, कदों दूर दुक्ख दरद सन्ताप होसन।
औसनँ कद *दिलशाद* दस्स मुड़ के जी, वैहंसन नाल मैरे फिर जुड़ के जी,
या के मैं मरसाँ चुड़-चुड़ के जी, मैरे कित्थों सुणदे विरलाप होसन ॥८५२॥

सावन सांग विच्च जिगर दे ला के ते, गए टुर इत्थों चित्त चा के ते,
किऊँ नाहिं सार लैंदे हुण आ के ते, डेरे विच्च बन दे जा के किऊँ लाए।
हैसां शरण विच्च आप दे आया मैं, पैरीं हत्थ भी आन के लाया मैं,
चलो परत के घर सुणाया मैं, नाले वासते रब दे कई पाए ॥८५३॥
मन्नी गल नहिं किसे दी कोई उत्थे, चाहेआ जो तुस्साँ कीता ओही उत्थे,
वाह ! वाह ! नाल असाडड़े होई उत्थे, असी हत्थ मलेंदड़े उठ आए।

१. सोता (नदी)। २. शक्ति। ३. भाई। ४. छुरी। ५. वियोग। ६. आयेंगे। ७. बैठेंगे। ८. क्षीण-क्षीण होकर। ९. भाला। १०. था। ११. मलते हुए।

बद्दल गरजदे ते बूँदाँ बरस रहिआँ, अक्खी मैरिआँ दरस नूँ तरस रहिआँ,
साथें[1] ओही *दिलशाद* हुण सरस[2] रहिआँ, मुड़ के कन्त[3] जिन्हाँदड़े[4] घर आए ॥८५४॥

भादों भार सिर पाप दा चाह्ड़ेआ ई, मैरे जिगर नूँ भी नाले साड़ेआ ई,
पाड़न एह अपुठड़ा पाड़ेआ ई, आया के तेरे दस्स हत्थ माए।
एह राज हैसी दस्स चीझ केहड़ी, डोबी किऊँ तूँ अपने आप बेड़ी,
अपुठी चाल एह ताँ खेडी[5] तूँ जेहड़ी, रक्खेओ ई दिल नूँ किऊँ न बस माए ॥८५५॥
हाँ नौकर उन्हाँदड़े दम दा मैं, रेहा नहिँ हुण ताँ किसे कम्म दा मैं,
तेरे पेट विच्चों निज जमदा मैं, पाई भरथ दे सिर विच[6] भस माए
किवें दुख जुदाई दे जराँगाँ[7] मैं, तड़फ तड़फ इत्थे हुण मरांगा मैं,
मैनूँ दस्स *दिलशाद* के करांगा मैं, होई दूर मैरी भुख-तस माए ॥८५६॥

असू आस न जीवन दी कोई रही ए, उत्ते लवाँ दे आ हुण जान गई ए,
गल्लां दिल दिआँ किस नूँ जा कही ए, सुणदा कौन है दुःख दुख्यारेआँ[8] दे।
झरा सुत्तेआँ नींद न आवँदी ए, तारे गिनदेआँ रात विहाँवँदी[9] ए,
कराँ केआ कुझ पेश न जावँदी ए, गए विछड़ सज्जन साथों वारेआँ वे ॥८५७॥
डोले विच्च दरया दे पेआ बेड़ा, बन्ने लाए उस नूँ बिना रब केहड़ा,
सदके मैं उस तों देवे दस्स जेहड़ा, दरशन होवँसन[10] कदों प्यारेआँ दे।
विच जंगलाँ दे मेरे रुलन भाई, कोई खबर उन्हाँदड़ी नहिँ आई,
दिलशाद जँनदी[11] मैनूँ निंजे[12] माई, पाए फल मैं ताँ पापाँ भारेआँ दे ॥८५८॥

कत्तें कैहर कीता ई डाढा साइआँ तूँ, मैनूँ पाइआँ सखत जुदाइआँ तूँ,
लछमन राम जेहाँ सुखदाइआँ तूँ, मैनूँ दस्स तेरे हत्थ के आया।
दे भेज मैरी मौत झँब[13] हुण तूँ, जे कर हैं मैरा सच्चा रब हुण तूँ,
नहिँ ताँ बना नेक सबब हुण तूँ, हत्थ जोड़ मैं तैनूँ सवाल पाया ॥८५९॥
बस हुण नहिँ मैं कुझ कैहन जोगा, रेहा नहिँ लायक किधरे बैहन जोगा,
नहिँ मैं दुख जुदाई दे सैहन जोगा, जिन्द नक आई दिल घबराया।

---

१. हम से। २. अच्छी। ३. स्वामी। ४. जिनके। ५. खेली। ६. राख। ७. सहूँगा। ८. दुःखियों। ६. गुज़र जाती। १०. होंगे। ११. उत्पन्न करती। १२. नाहिं। १३. शीघ्र।

मन्न लै अरज़ मैरी मैरे मालका तूँ, मैरे कुल जहान दे पालका तूँ,
लै समझ मैनूँ अपना बालका तूँ, *दिलशाद* मुड़-मुड़[1] तेरा जस गाया ॥८६०॥

मग्घर मैं तुसाडड़े कोल आके, कीती अरज़ हैसी पैरीँ हत्थ लाके,
चलो घर बनबास थीँ चित्त चाके, ज़रा मेह्र[2] न तुस्साँ दे दिल आई ।
कोल बैठ के मैं कुरला रेह्आ, कई तरह दे नाल समझा रेह्आ,
हत्थ जोड़ के वासते पा रेह्आ, मन्नी नहिँ मैरी इक गल्ल भाई ॥८६१॥
हुण ताँ जान मैरी इत्थे फडक रही ए, बिजली दुखाँ दी सिर ते कड़क रही ए,
हर वकत विच दिल दे रैड़क[3] रही ए, सांग हिजर जेह्ड़ी विच जिगर लाई ।
दिलशाद है तेरा अफसोस झूठा, देवेँ किस नूँ किऊँ तूँ दोस झूठा,
रख नाल न किस दे रोस[4] झूठा, विपता गल तैरे एह रब पाई ॥८६२॥

पोह पलक आराम नहिँ जान करदी, सागर दुखाँ दे विच्च पई ओ तरदी,
मिलदा नहिँ ऐसा किधरे कोई दरदी, मेले शॅमा[5] दे नाल परवानेआँ[6] नूँ ।
विच दुखाँ दे जो असीर[7] होए, जिगर फट जिन्हांदड़े लीर होए,
शाहिआँ[8] छोड़ के ते फकीर होए, छेड़ो न हुण उन्हाँ दीवानेआँ नूँ ॥८६३॥
हाल अपने दे विच्च मस्त जेह्ड़े, दित्ते दुनिआ दे जिन्हाँ छोड़ झेड़े[9],
नाल उन्हाँ दे कोई फिर किऊँ छेड़े, दुख देओ ना उन्हाँ निमाँनेआँ[10] नूँ ।
जो लकीर *दिलशाद* तकदीर दी ए, सके मेट, के[11] ताकत फकीर दी ए,
जांदी पेश न कोई तदबीर दी ए, नहिँ कोई जाणदा रब दे भाँनेआँ[12] नूँ ॥८६४॥

माँघ मौत मैरी कित्थे छिप रही ए, वेख दुख मैरे या ओ डर गई ए,
मैरी जान उस आन न किऊँ लई ए, हर जगह मैं ताँ उस नूँ लोड़ेआँ[13] वे ।
करदी मेह्रबानी जेकर आऊँदी ओ, मैनूँ दुखाँ थीँ चा छुड़ाऊँदी ओ,
जेह्ड़े झगड़े सभ मिटाऊँदी ओ, नहिँ खबर उस नूँ किस होडेआँ[14] वे ॥८६५॥
गैर नानके जे[15] मैं जाऊँदा नाँ, अज्ज रो के हाल गँवाऊँदा नाँ,
कदी एह दुक्खड़े गल पाऊँदा नाँ, बेड़ा आपना आप मैं बोड़ेआ वे ।

१. बार-बार । २. दया । ३. चुभ । ४. क्रोध । ५. दीपक । ६. पतंगे । ७. बंदी । ८. राज्य । ९. झगड़े । १०. दीनों । ११. क्या । १२. इच्छा । १३. खोज । १४. रोका । १५. यदि ।

होवे पेआ भावें पादशाह कोई, या के पीर फकीर गदा कोई,
करे लक्ख *दिलशाद* उपाह[1] कोई, होनहार नूँ किसे न मोड़ेआ वे ॥८६६॥

फग्गन फुल गुलशन गुलझार रहे नीं, मोर विच्च खुशी कर बहार रहे नीं,
मिल के नाल याराँ फिर यार रहे नीं, मैरे दिल दिआँ फुल्लिआँ[2] कलिआँ नहिँ।
जित्थे खेड के वकत गुझारदा साँ, पतंग चाढ़ अकाश उडारदा साँ,
कुद-कुद के ते छालाँ मारदा साँ, मैनूँ अज्ज पसंद ओ गलिआँ नहिँ ॥८६७॥

मैं ताँ झोर बतेरड़ा ला थकेआ, जाके कोल कसूर बखशा थकेआ,
रो रो के वासता पा थकेआ, जो मैं सोचिआँ पेश ओ चल्लिआँ नहिँ।
तोपाँ दुखाँ दिआँ सिर ते आन दगिआँ[3], आखरकार मैनूँ ओही आन लग्गिआँ,
कलमाँ धुर[4] दरगाह[5] थीं जो वगिआँ[6], एह हुण आख *दिलशाद* ओ टल्लिआँ नहिँ ॥८६८॥

चढ़दे *चेत* फुले सब खेत, फुल रही फुलवाड़ी ए,
झालस अग्ग बिछोड़े वाली, जान मैरी हुण साड़ी ए।
सकदी सीप[7] नहिँ ओ मैथों, अपुट्ठी जेहड़ी पाड़ी ए,
दोस केआ *दिलशाद* किसे नूँ, किसमत अपनी माड़ी[8] ए ॥८६९॥

चढ़े *विसाख* विसाखी[9] आई, खलकत खुशिआँ करदी ए,
दुख जुदाई वाले हर दम, जान मैरी पई जरदी ए।
बिछड़ गेआँ नूँ मुद्दत गुजरी, लई खबर न घर दी ए,
कहो *दिलशाद* कहवाँ मैं किस नूँ, रब बिन केहड़ा दरदी ए ॥८७०॥

जेठ जान दुखाँ ने मैरी, हुण ताँ आ के घेरी ए,
मुद्दत गुझरी पेआ उंडीकाँ[10], पाई परत न फेरी ए।
तरसन अक्खिआँ दरशन कारण, वाह! वाह! किस्मत मैरी ए,
दिलशाद खड़ा दर[11] तेरे उत्ते, आस रवा हुण तेरी ए ॥८७१॥

हाड़ होश न रही ए कोई, वाँग सोदाइआँ[12] रैंहदा मैं,
लगी ए साँग विछोड़े वाली, दुख पेआ हाँ सैंहदा मैं।

१. उपाय। २. खिलीं। ३. जल रही हैं। ४. परम। ५. पद। ६. चलीं। ७. सिल। ८. मन्द। ९. वैशाखी का पर्व। १०. प्रतीक्षा करता हूँ। ११. द्वार। १२. पागलों।

दम दम याद तुस्साँ नूँ करदा, सौंदा, उठदा, बैंहदा मैं,
पेआ सुणाँ जो आखे कोई, मुँहों कुझ न कैंहदा मैं ॥८७२॥

सावन समझ न आवे मैनूं, के रब ने एह कीती ए,
कौन सुणावे आण तुस्साँ नूं, नाल मैरे जो बीती ए।
विच्च विजोग[1] तुसाडे हुण ताँ, मैं फकीरी लीती ए,
भर *दिलशाद* हथीँ मैं आपे[2], झहर प्याली पीती ए ॥८७३॥

भादों भाह[3] प्रेम दी भड़के, तन मेरे नूँ साड़े जी,
इक भी पेश गई न मैरी, लक्ख कीते मैं हाड़े[4] जी।
होंदा हाल उन्हाँ दा एहो, दिन जिन्हां दे माड़े जी,
नहिँ मिलदे *दिलशाद* कदी भी, एह किसमत दे पाड़े जी ॥८७४॥*

१. वियोग। २. स्वयं। ३. आग की लपट। ४. मिन्नतें।

* टिप्पणी—यहां से आगे के छः पद्य खो गए हैं। —सम्पादक

—

अरण्य-काण्ड

पंचवटी वन में प्रवेश

चित्रकूट दे विचों फिर उठ के ते, पए अगाँ नूँ हो रवान प्यारे।
रिशी मुनी तपसी जो आहे ओथे, लगे रल[1] के सभ समझान प्यारे ॥ १ ॥

अग्गे बोह्त राखश आदमखोर[2] रैंहदे, भयानक शकल भारे बलवान प्यारे।
झिंदा आदमी नूँ ओह छोड़दे नहिँ, रामचन्दर नूँ लगे डरान प्यारे ॥ २ ॥

इस्से जा ते रहो आराम कर के, साडे नाल रल करो गुझरान प्यारे।
रामचन्दर माह्राज जी हस अग्गों, लगे रिशिआँ नूँ एह सुणान प्यारे ॥ ३ ॥

इस झिकर दा फिकर नहिँ कोई मैनूँ, निगहबान[3] हर हाल भगवान प्यारे।
रक्खेआ धर्म दे राह विच पैर मैं ताँ, है हुण मुशकल प्रिछे हटान प्यारे ॥ ४ ॥

धर्म बाज नहिँ आवनाँ कम कुछ भी, छड के जावनाँ एह जहान प्यारे।
लीला रब दी वेखिए चल फिर के, लई विच दिल दे मैं एह ठान प्यारे ॥ ५ ॥

रैह्ना विच बनवास है साल चौदाँ, होया एही मैनूँ फरमान प्यारे।
इतना आखके पए फिर टुर अगे, झरा देर न पलक दी लान प्यारे ॥ ६ ॥

डण्डक बन दे विच फिर पौंह्च के ते, रिशिआँ मुनिआँ दे दरशन पान प्यारे।
कर दे तप तपसी कई आहे इत्थे, जाके उन्हाँ नूँ सीस निवान प्यारे ॥ ७ ॥

अगों वेख ओ भी होए खुश बोह्ते, करके आदर कोल बिठलान प्यारे।
उस रोझ केआमँ[4] कर देन उत्थे, रल मिल के रात लंघान प्यारे ॥ ८ ॥

दिन दूसरे करके कूचँ[5] उत्थों, पए टुर लै के धनुष-बान प्यारे।
विच जंगलां दे पए चलदे नीँ, वेख अजुध्या दे हुक्मरान प्यारे ॥ ९ ॥

गदेले मखमलां ते जेह्ड़े लेटदे सन[6], झरीबाफ[7] तेँ[8] बिस्तरे पानं[9] प्यारे।
होके ओही फकीर अज वेख फिरदे, बिना बिस्तरे रात टपांन[10] प्यारे ॥१०॥

---

१. मिल। २. मनुष्य-भक्षी। ३. रक्षक। ४. निवास। ५. प्रस्थान। ६. थे। ७. सुनहरी बनात। ८. (के) ऊपर। ९. बिछाते थे। १०. गुजारते (थे)।

नौकर रैह्न जिन्हाँदड़े नाल हरदम, ओही अज अकलड़े जान प्यारे।
खांदे छैत्तरी[1] नेमताँ[2] आन जेह्ड़े, कन्द मूल ओही लगे खान प्यारे ॥११॥
आहे मालक जो कई खझानेआँ दे, ओही कौडिओं अज दरमाँन[3] प्यारे।
डरदा रब थीँ रहो हमेश बंदे, खबरदार मत करीं अभमान प्यारे ॥१२॥
ओही शाहाँ नूँ कर गदा देवे, ते गदा नूँ करे सुलतान प्यारे।
पावे पिञरेआँ दे विच शेर ओही, करे ओही कमझोर बलवान प्यारे ॥१३॥
वेख रंग उसदे अकल दंग[4] होवे, दाने[5] वेख के होन हैरान प्यारे।
ताकत नहिँ इत्थे दम मारने दी, निराली रब दी समझ तू शान प्यारे ॥१४॥
उस बे-अन्त दा अन्त न है कोई, उस दी कुदरताँ तोँ कुरबान प्यारे।
देवाँ एह गल्लाँ हुण छड इत्थे, कराँ हाल रामायण बेआन प्यारे ॥१५॥
विराध नाम राखश मिल गेआ अग्गोँ, हैसी बौह्त भारा एह शैतान प्यारे।
तिरसूल सी पकड़ेआ विच हत्थ दे, लगा वेख के शोर मचान प्यारे ॥१६॥
कैंह्दा, कौन तुस्सी, आए हो कित्थों, होया रब मैंते[6] मेहरबान प्यारे।
बौह्ती मुद्दत दे बाद एह अज्ज मिलेआ, मैरे खान नूँ मास इन्सान प्यारे ॥१७॥
खा के तुस्साँ नूँ भराँगा पेट ताईँ, इतना आख मुँह लगा फैलान प्यारे।
रामचन्दर माह्राज जी तीर खिच के, सिद्धा मारदे रक्ख[7] निशान प्यारे ॥१८॥
गुस्से नाल लछमन भी लाल होके, लग्गा ओ भी तीर चलान प्यारे।
नैंहिँ फटदाँ कटदा तीर कोई, राखश बोकदाँ[8] विच मैदान प्यारे ॥१९॥
जानी-जान[9] हर बात दे रामचन्दर, कैंह्दे सुण लछमन कर धेआन प्यारे।
करसी तीर तंफंग[10] न असर कोई, दित्ता ब्रह्मा उसनूँ वरदान प्यारे ॥२०॥
इसनूँ पकड़ झमीन विच दब देइए, निकल जाएगी इस दी जान प्यारे।
चट-पट झमीन नूँ खोद के ते, पकड़ राखश नूँ विच्च दबान प्यारे ॥२१॥
गेआ पौंह्च जहन्नम दवाँदेआँ ईं, मर गेआ राखश बेईमान प्यारे।
दिलशाद इस राखश नूँ मार के ते, पौंह्ते विच पंजवटी दे आन प्यारे ॥२२॥

---

१. छत्तीस (३६)। २. विशेष पदार्थ। ३. हीन, रहित। ४. हैरान। ५. बुद्धिमान्। ६. मुझ पर। ७. घाव करता। ८. शोर करता। ९ जानने योग्य को जानने वाले। १०. अस्त्र।

पंजवटी दे विच गए पौंह्च जदों, सद के लछमन नूँ फिर समझान लगे ।
करो जा पसंद कोई भाई मैरे, करिए जित्थे गुझरान सुणान लगे ॥२३॥
सुनेॲा ही राखश इत्थे बोहत हुंदे, ढूंड जगह माहफूझ फरमान लगे ।
बाराँ बरस *दिलशाद* गए गुझर साडे, हुण ताँ दिन नझदीक भी आन लगे ॥२४॥

लगा कैह्न लछमन हत्थ जोड़ अग्गों, जानी-जान तुस्सी हर इक बात दे ओ ।
नहिँ छपदी तुस्साँ थीं गल्ल कोई, वाकफ हर डाली हर पात दे ओ ॥२५॥
सारा नूर झहूर तुहाडड़ा ए, गोहर असल तुस्सी सच्ची झात दे ओ ।
नहिँ अकल *दिलशाद* जी कोई मैनूँ, जानींहार तुस्सी दिन-रात दे ओ ॥२६॥

रामचन्दर माह्राज ने सुण के ते, जगह कर पसंद दिखला दित्ती ।
लकड़ी चनन दयार दी कट लछमन, सुन्दर कुटिया तुरत बना दित्ती ॥२७॥
वाह वाह दर दीवार तैयार कर के, उत्ते भोजसंदी छत पा दित्ती ।
विचों नदी दे आन के *दिलशादा*, अग्गे कुटिआ दे नैह्र च ा दित्ती ॥२८॥

शूर्पणखा का आगमन—

सरूपनखां भी गई आ पौंह्च उत्थे, सूरत वेख के दिल नूँ हारेॲा वे ।
मोहने रूप नूँ वेख के मस्त होई, कामदेव अकल नूँ चा मारेॲा वे ॥२९॥
कैंह्दी दिसदे राजकुमार एह ताँ, बाना फकीर दा किऊँ चा धारेॲा वे ।
पुच्छिए इन्हाँ थीं कोल *दिलशाद* जाके, विच दिल फिर एह विचारेॲा वे ॥३०॥

कैंह्दी कौन तुस्सी दस्सो आए कित्थों, करो अपना हाल बेआन तुस्सी ।
केॲा कम्म तुसाडड़ा है इत्थे, पौंह्ते विच्च जंगल कैसे आन तुस्सी ॥३१॥
कीता वेस फकीरी दा किऊँ तुस्सी, राजे दिसदे ओ आलीशान तुस्सी ।
सच्चो सच्च सुणाओ *दिलशाद* मैनूँ, लैडे किऊँ इत्थे हो हैरान तुस्सी ॥३२॥

---

१. स्थान । २. सुरक्षित । ३. प्रकाश । ४. प्रकाशित । ५. रत्न ।
६. जानने वाले ।

रामचन्द्र जी का कथन—

राजे दसरथ दे हाँ फरज़न्द[1] असी, नहिँ झूठ है सच्च खेआल तेरा ।
सैर करन आए असी जगलाँ दी, होया ताँहीँ नसीब जमाल[2] तेरा ॥३३॥
हैं तूँ औरत किस कौम विचों, सुनिए असी भी ज़रा हुण हाल तेरा ।
दस्स के हाल *दिलशाद* जा नस्स इत्थों, नहिँ कम्म कोई साडे नाल तेरा ॥३४॥

कैंह्दी शाह रावण दी हाँ भैण मैं ताँ, है सरूपनखाँ समझो नाम मैरा ।
इस जंगल दे भी राजे भाई मैरे, अजकल उन्हाँ दे कोल केआम मैरा ॥३५॥
दिल भुलावने[3] नूँ आई साँ इत्थे, करना सैर हमेश है काम मैरा ।
सूरत वेख तुसाडड़ी मोहत होई, फस्सेआ दिल मुहब्बत दे दाम[4] मैरा ॥३६॥
रही नहिँ मैं ताँ घर जान जोगी[5], अक्ल होश भुलाया तमाम मैरा ।
लओ कर शादी मैरे नाल तुस्सी, बस सुख़[6]न एहो इखतैंताम मैरा ॥३७॥
तुस्सां बाज नहिँ आउना चैण मैंनूँ, गेआ हो आराम हराम मैरा ।
करो ग़म ख़तम हमदर्म[7] होके, रैह्सी दम *दिलशाद* गुलाम मैरा ॥३८॥

रामचन्दर मखौल दे नाल यारा, सरूपनखाँ नूँ सुखन एह बोल कैंह्दे ।
मैरी इस्त्री ताँ इक है अग्गे, लै वेख बैठी मैरे कोल कैंह्दे ॥३९॥
शादी नाल लछमन दे कर लै तूँ, ऐवें न दिलों पई डोल कैंह्दे ।
खिड़े गुल *दिलशाद* विच बाग हुसन, चुन चुन के भर लै झोल कैंह्दे ॥४०॥

लई सुण माह्राज दी गल्ल जदों, कोल लछमन दे फिर ओ आ कैंह्दी ।
मैरी जान कुरबान मैं तुध[8] उत्तों, करके नाज़ नखरे ते अदा कैंह्दी ॥४१॥
शादी नाल मैरे कर लै तूँ ही, मैं ताँ तुध तों होई फिदा कैंह्दी ।
होया दिल मायल *दिलशाद* मैरा, होई तुस्साँ ते मेह्रे-ख़ुंदा[10] कैंह्दी ॥४२॥

---

१. पुत्र । २. दर्शन (तेज) । ३. बहलाने । ४. जाल । ५. योग्य । ६. वचन । ७. समाप्त । ८. साथी । ९. तेरे । १०. ईश्वर की कृपा ।

लछमन आखदा सुण सरूपनखाँ, ऐसा कम्म करके पिच्छो तावसें तूं ।
मैं ताँ हाँ नौकर रामचन्दर जी दा, खिदमतगार फिर नाम धरावसें तूँ ॥४३॥
शादी अपनी नौकराँ नाल करके, शाह रावण नूँ वट्टा लगावसें तूँ ।
वांग गोलिआँ करेंगी कम जदों, विच शर्म *दिलशाद* मर जावसें तूँ ॥४४॥

गई समझ मखौल कर रहे एह ताँ, अग्ग गुस्से विच जान जलान लगी ।
नहिँ लेज्जदी[1] गज्जदी शेर वाँगोँ, भयानक शकल बना डरान लगी ॥४५॥
कैंह्दी चीर के तुस्साँ नूँ खा जावाँ, उच्चा बोल के शोर मचान लगी ।
जैसी करेंगा, भरेंगा *दिलशादा*, वेख करनी दा फल पान लगी ॥४६॥

उछल उछल के हमले करन लगी, तरफ सीता दे मुँह फैलाया वे ।
मेरे भाई लछमन लै पकड़ इस नूँ, रामचन्दर माहराज फरमाया वे ॥४७॥
इस बेशर्म नूँ शर्म न कोई आवे, प्यारी जानकी नूँ आ डराया वे ।
नक कन *दिलशाद* दे कट इसदे, किऊँ शोर इसने इत्थे पाया वे ॥४८॥

कीती देर न लछमन ने हुक्म सुण के, गुत्तों[2] पकड़ के तुरत गिरा देंदा ।
लैंदा कढ तलवार मेॲान विचों, कट के नक ते कन वगा देंदा ॥४९॥
चीकाँ मार के लगी फिर रोवन जदों, उत्तों डण्डे दो तीन लगा देंदा ।
जा सद लेआ भिरा हुण तूँ, मुँहों बोल *दिलशाद* सुणा देंदा ॥५०॥

नक कन कटवा के उठ दौड़ी, फिर झरा न उत्थे खलोवँदी ए ।
लहू चलदा, ठैलदा[3] नहिँ झरा, जाके कोल खर दूखन दे रोवँदी ए ॥५१॥
वेखो भाई जी, होया जो हाल मेरा, रो रो के घायल पई होवँदी ए ।
लगी करन फरयाद *दिलशाद* जाके, गोया बीज लड़ाई दा बोवँदी ए ॥५२॥

---

१. लज्जा करती । २. चोटी । ३. रुकता ।

दस्सो भैण जी एह के हाल होया, खर दूखन ने अगों सुनाया वे ।
चीर पांड़[1] के उस नूँ खा जाइए, तेरे दिल नूँ जिस दुखाया वे ॥५३॥
कीता खौफ असाडड़ा नहिँ जिसने, है ओ कौन ऐसा कित्थों आया वे ।
जलदी दस्स *दिलशाद* न देर कर तूँ, तैनूँ वेख के दिल घबराया वे ॥५४॥

शूर्पणखा का वचन—

हाल अपना दसाँ मैं केॲा तुस्साँ, मैं ताँ विच्च जंगल हवा खावँदी साँ ।
बैठे दो तपसी अज्ज आन उत्थे, जिस जगह ते मैं नित जावँदी साँ ॥५५॥
ओही जा पसंद सी वीर मैंनूँ, उत्थे बैठ के दिल पेरचावँदी[2] साँ ।
बैठा उन्हाँ नूँ वेख *दिलशाद* उत्थे, मैं हुण परत के घर पई आवँदी साँ ॥५६॥

इक औरत भी उन्हाँ दे नाल है जी, सोहना उस दा हुसन-जैमाल[3] भाई ।
उस दे हुसन दी सिफत नहिँ हो सकदी, मुख चौदहवें चन्द मसाल भाई ॥५७॥
लायक तुस्साँ दे है ज़रूर ओह ताँ, मेरे दिल विच होया खेॲाल भाई ।
लगी पुच्छन *दिलशाद* जद कोल जाके, कीता पकड़ के मेरा एह हाल भाई ॥५८॥

लेॲा सुण जद भैण थीं हाल सारा, गुस्से होके एह सुणाया वे ।
करो फौज तमाम फिलैफूर[4] हाज़र, चा वज़ीराँ नूँ हुकम फरमाया वे ॥५९॥
गए हज़ार चौदाँ राखश हो जमाँ, किसे चिर न पल दा लाया वे ।
खर गज्ज के बोलेआ शेर वाँगोँ, अग्ग गुस्से विच तन तपाया वे ॥६०॥
अज ज़ोर मैं तुस्साँ दा वेख लैसाँ, इसे वासते मैं बुलाया वे ।
घर बैठ के रहे अज तक खांदे, हुण वक़त आज़मॉइश[5] दा आया वे ॥६१॥
रामचन्दर ते लछमन नूँ मार के ते, लै आओ पकड़ सीता, समझाया वे ।
जाओ उठो *दिलशाद* न देर करो, मेरी भैण नूँ उन्हाँ दुखाया वे ॥६२॥

नाल अपने फौज नूँ लैके ते, पई सरूपनखाँ उत्थों चल भाई ।
कैंह्दी ओह बैठे देखो रामचन्दर, दूरों दसदी नाल उँगलँ[6] भाई ॥६३॥

१. फाड़ । २. बहलाती । ३. रंग-रूप । ४. तुरन्त । ५. परीक्षा । ६. उंगली ।

कटेआ इन्हाँ ने नक ते कन मैरा, रेह्आ खून हुण तक निकल भाई ।
बदला इन्हाँ थीँ लओ शताब तुस्सी, जावे निकल कलेजेओं सेल भाई ॥६४॥

रामचन्दर माह्राज भी वेख दूरों, कैंह्दे सुण लछमन मैरी गल भाई ।
लैके सीता नूँ बैठ तूँ दूर किधरे, मच जाएगा इत्थे तरथल भाई ॥६५॥

नहिँ राखशाँ दा कोई डर मैनूँ, इन्हाँ नाल मैं लैसाँ संभल भाई ।
लछमन सोचदा एह के आखेओ ने, गेआ समझ फिर नाल अकल भाई ॥६६॥

मौत राखशाँ दी सीता वेख के ते, करके रैह्म मत होवे मुखैल भाई ।
इस वासते दित्ता एह हुकम मैनूँ, लई समझ मैं रमझ असल भाई ॥६७॥

लैके सीता नूँ गेआ फिर उठ उत्थों, बैठा दूर जा विच्च जंगल भाई ।
राखश आन मुकाबला करन लगे, मचेआ जंगल दे विच दंगल भाई ॥६८॥

लगे कैह्न माह्राज फिर राखशाँ नूँ, निकले विच मैदान उछल भाई ।
बलदी अग्ग नूँ बालिए न कदी, बलिक धुखँदी ते पाइए जल भाई ॥६९॥

चले जाओ बचा के जान इत्थों, नहिँ विच लड़ाई दे फल भाई ।
मैरे तीर सरीर नूँ चीर जासन, विच खाक जासो तुस्सी रल भाई ॥७०॥

खड़ी मौत तुसाडड़े सिर उत्ते, पई उडीकदी ए घड़ी पल भाई ।
नहिँ सज्जन *दिलशाद* ओह है दुश्मन, दित्ता तुसाँ नूँ जिस इत्थे घलँ भाई । ७१॥

मौत आन जद किसे नूँ घेर दी ए, सुध बुध ते अकल नूँ फेरदी ए,
दिसदी गिद्दड़ वाँगों सूरत शेर दी ए, रैहूँदी खबर न नफे नुकसान दा ए ।
चले राह नूँ छोड़ कुराह ओही, नहिँ आउँदी उस नूँ समझ कोई,
चंगा समझदा बुरे नूँ है सोई, मारी जाऊँदी अकल इनसान दी ए ॥७२॥
इँन्हा राखशाँ दा एहो हाल है जी, आउँदा कुछ न विच खेआल है जी,
गेआ सारेआं दा आ काल है जी, वाह वाह माया अजीब भगवान दी ए ।
पौंदे राह अपुठड़े विच धा के, जान बुझ विच खूहे दे डिगन जा के,
मरन आप *दिलशाद* फिर ओही आके, मौत पकड़ के जिन्हाँ नूँ आणदी ए ॥७३॥

१. शल्य । २. खलबली । ३. बाधित । ४. रण । ५. धुआँ दे रही ।
६. भेज । ७. जाते हैं । ८. कुएँ ।

नहिँ राखशाँ ने मन्नी गल्ल कोई, इकट्ठे हो सारे घेरा पाऊँदे नीँ ।
रामचन्दर माहराज भी धनश फड़के, लगातार पए तीर चलाँउदे नीँ ॥७४॥

जाँदा झोर कोई पेश नहिँ राखशाँ दा, पए दिल दे विच घबराँउदे नीँ ।
कई रुक्ख उखाड़ के पए मारन, कई चुक के पत्थर वगाँउदे नीँ ।७५॥

कई दौड़दे बरछिआँ लै के ते, कई पकड़ तलवार पए आँउदे नीँ ।
पेश किसे दी जाउँदी नहिँ कोई, झोर अपना सभ पए लाँउदे नीँ ॥७६।

इक इक तीर दे नाल हझार राखश, रामचन्दर जी मार मुकाँउदे नीँ ।
राखश बच *दिलशाद* नहिँ कोई सकेआ, सारे अपनी जान गवाँउदे नीँ ॥७७।

हाल फौज दा वेख सरूपनखाँ, ग़मगीन होके पशेमान[1] होई ।
गैइआँ भुल चालाकिआँ सारिआँ सू, वापस मुड़ के फिर रवान होई ॥७८॥

रामचन्दर माहराज दी वेख ताकत, विच दिल दे सख़त हैरान होई ।
रोंदी पिट्टदी चीकदी *दिलशादा*, हाझर कोल खर दूखन दे आन होई ॥७९॥

डिठ्ठी रोवँदी अपनी भैण जदों, खर दूखन फिर आन के कोल बैंह्दे ।
होया के तैनूँ किऊँ रोवनी एँ, दस हाल सानूँ मुँहों बोल कैंह्दे ॥८०॥

मूली राम लछमन केह्ड़े बाग दी ए, किउँ खेआल तेरे डावाँडोल रैंह्दे ।
आउसी मार के फौज *दिलशाद* साडी, झरबें[2] हरबें[3] ख़ाली नहिँ ढोल सैंह्दे ॥८१॥

शूर्पणखा का कथन—

है ओ फौज केह्ड़ी जेह्ड़ी मार आउसी, ओ ताँ मर के होई फनाहँ[4] सारी ।
इक पल दे विच तपसिआँ ने, दित्ती मार के कर तबाह सारी ॥८२॥

हुण उस फौज नूँ वेखसो न तुस्सी, चली गई ओ मौत दे राह सारी ।
मैं भी मरांगी हुण *दिलशाद* इत्थे, बैठी जिउने दी चाह लाँह[5] सारी ।८३॥

---

१. निराश। २. चोट। ३. युद्ध। ४. नष्ट। ५. उतार।

शेखी वेख तुसाडड़ी लई सारी, पए बैठ के गल्लाँ बनाओ नाहीँ ।
गए डर तुस्सी इक आदमी थीँ, विच्च बहादुराँ नाम धराओ नाहीँ ॥८४॥

बैठो छप के मत कोई मार सट्टे, ऐवें मूरखो, जान गँवाओ नाहीँ ।
कोलों मेरेऑं उठ *दिलशाद* जाओ, मैनूँ अपना मुँह दिखलाओ नाहीँ ॥८५॥

आहिआँ[1] धार तलवार थीँ तेझ गल्लाँ, गइआँ कर कलेजड़े घां[2] भाई ।
वट्टन पए कचीचिआँ विच दिल दे, लगे मुच्छाँ नूँ देन फिर ता भाई ॥८६॥

कैहँदे केऑ इन्सान है असां अग्गे, देइए असी पहाड़ हिला भाई ।
शैंरक[3] ग़ैरब[4] ताईँ कोई वल्ल साडे, नहिँ सकदा हत्थ उठा भाई ॥८७॥

साडे झोर दा शोर जहान अन्दर, साथों छपन सारे डर खा भाई ।
इक पल दे विच्च एह राम लछमन, असी मार के देइए मुका भाई ॥८८॥

भावें चढ़ ओ जान असमान उत्ते, भावें छपन झमीन विच जा भाई ।
फिर भी बच नहिँ सकदे असां कोलों, लैसन पा झरूर सझा भाई ॥८९॥

सकसन झल न कदी ओ झाल साडी, गई मौत उन्हाँदड़ी आ भाई ।
दिलशाद शराब दे जाम[5] पीके, तित्तर भुन्ने[6] ओ रहे उडां भाई ॥९०॥

लई जमा कर फौज जो रही आही, होके खुश फिर बगलाँ वजान लग्गे ।
लैके शुतर घोड़े खच्चर ख़र हाथी, करके साझ संगार सजान लग्गे ॥९१॥

लए तीर तलवार तफंग नेझे, गज वज के कदम उठान लग्गे ।
होके आप तैयार *दिलशाद* हुण ताँ, कारण करन लड़ाई दे जान लग्गे ॥९२॥

पंजवटी दे विच गए पौंह्च जदों, नॉरे मारदे बाँहाँ उलारदे नीँ ।
जासें[7] छप के हुण तूँ दस्स किथे, निकल विच मैदान ललकारदे नीँ ॥९३॥

---

१. थीं। २. घाव। ३. पूर्व। ४. पश्चिम। ५. प्याले। ६. आग में भुने हुए।
७. खा।

नहिँ सोचने दा हुण वकत कोई, हो जा सामने पए वंगांरदे[1] नीँ ।
नहिँ ख़बर *दिलशाद* बेखबराँ नूँ, कूकाँ[2] अपनी मौत नूँ मारदे नीँ ॥९४॥

रामचन्दर माहराज फिर कैह्न लग्गे, दस्सो केॲा तुस्सी इत्थे करन आए ।
भला चाहो ताँ परत के जाओ पिच्छे, इत्थे आपने आप क्यों मरन आए ॥९५॥
किऊँ झिन्दगी थीँ अवांझार[3] होके, मैरे तीर दी पीड़ नूँ जरनें[4] आए ।
देवाँ बख़श *दिलशाद* कसूर सारे, जेकर कहो तुस्सी तेरी शरण आए ॥९६॥

खर बोलेॲा गज्ज के शेर वाँगोँ, दस्स किसनूँ तूँ डरा रेॅहों ।
आके कर मुकाबला नाल साडे, ऐंवेँ वकत किऊँ मुफत गँवा रेॅहों ॥९७॥
असाँ जीउँदा छोड़ना नहिँ तैनूँ, समझ मौत दे मुँह विच आ रेॅहों ।
कोई दम *दिलशाद*. मेहमान है तूँ, जो कुछ खाउना सी ओ तूँ खा रेॅहों ॥९८॥

दित्ता कर हॅल्ला[5] खर ने फौज लैके, पए चार चौफेरेॲों[6] धा के जी ।
मारन तीर तफंग बे-दीनें[7] राखश, गज्जदे विच मैदान दे आके जी ॥९९॥
कोई पकड़ बुर्गदा[8] पेॲा दौड़दा ई, कोई आउँदा पत्थर उठा के जी ।
लगदा नहिँ *दिलशाद* हथ्यार कोई, लैंदे वार माहराज बचा के जी ॥१००॥

रामचन्दर माहराज भी नाल गुस्से, गझबनाक होके लालोलाल होए ।
खिच्च झोर दा तीर इक मारेॲों ने, राखश कई हझार हलाल होए ॥१०१॥
तीर दूसरे दे नाल खर दूखन, उत्ते धरती दे डिग्ग बेहाल होए ।
होए वासँल[9] जहन्नम शैतान दोवेँ, डर दे नाल बाकी सभ नढालँ[10] होए ॥१०२॥
होंदा डरदा सामने नहिँ कोई, दिल विच होर दे होर खेॲाल होए ।
कैह्न बचन असाडड़ा है मुशकल, इसे ग़म दे विच पायमाल[11] होए ॥१०३॥

१. ललकारते । २. आवाजें । ३. बाधित, तंग । ४. सहना । ५. धावा । ६. चारों ओर से । ७. धर्म-हीन । ८. लम्बी छुरी । ९. प्राप्त । १० व्याकुल । ११. नष्ट ।

कई मोए ते कई नस्स गए उत्थों, बुरे हाल सारे बदखसाल[1] होए।
होया खाली मैदान *दिलशाद* जदों, खुश रामचन्दर खुशी नाल होए ॥१०४॥

रावण को सूचना—

सनें फाजें मर गए जद खर दूखन, ताँ इक राखश जान बचा के जी।
छपदा नस्सदा दौड़ेआ तरफ रावन, पौंह्ता विच लंका दे जा के जी ॥१०५॥
बैठा शाह रावण अहा तख़त उत्ते, शाही ताज सिर उत्ते लगा के जी।
आहे वज़ीर मशीर दीवान हाज़र, बैठा अहा दरबार सजा के जी ॥१०६॥
रिश्तेदार जो आहे नज़दीक दूरों, ओ भी कोल बैठे आहे आ के जी।
जो कुछ वरतेआ विच मैदान जंग दे, राखश देवँदा सभ सुना के जी ॥१०७॥
कैंह्दा खर दूखन गए मर लड़ के, मोई फौज भी जान गँवा के जी।
आए दो तपसी विच बन शाहा, बैठे कुटिआ ओ बना के जी ॥१०८॥
सरूपनखाँ भी उन्हाँ तपसिआँ थीं, आई नक ते कन कटवा के जी।
भाई आपदे भी उन्हाँ मार सुट्टे, दित्ती फौज भी मार मुका के जी ॥१०९॥
ज़ोर उन्हांदड़े दी नहिँ हद कोई, देवन चुक पहाड़ उडा के जी।
उन्हाँ नाल मुकाबला नहिँ होंदा, पए छपन राखश डर खा के जी ॥११०॥
लीरो लीर सरीर इक तीर करदा, नसदे शेर दिलेर घबरा के जी।
समझो सच्च माह्राज एह अरज़ मेरी, मैं भी आया हाँ जान छपा के जी ॥१११॥
बुरे हाल दे नाल मैं आन पौंह्ता, दित्ती आप नूँ खबर पौंह्चा के जी।
कीती गल अजे नहिँ कोई शाह रावण, सरूपनखाँ भी भाई मरवा के जी ॥११२॥
ढाईं मारदी रोवँदी आन पौंह्ती, आई खाक विच सिर दे पा के जी।
हत्थ मत्थे ते मार के पई पिट्टे, कट्टेआ नक ते कन दिखला के जी ॥११३॥
देखो भाई जी होया जो हाल मेरा, सकाँ आख न कुछ शरमा के जी।
खातर आप दी वणज *दिलशाद* कीता, देखो आई मैं नफा कमा के जी ॥११४॥

सुन्दर दो लड़के फिरन विच वन दे, मैथों उन्हाँ दा तुस्सी हुण हाल सुणो।
वेस साधुआँ दे विच हीन दोवें, छोटी उमर बालक खुरदसाल[2] सुणो ॥११५॥

---

१. बुरे भाव वाले। २. थोड़े वर्षों वाले।

औरत इक हुसीन[1] है नाल उन्हाँ, वाह वाह उसदा हुसन जमाल सुणो।
परिआँ वेख शरमान *दिलशाद* उसनूँ, सरू कद सोहणा खेत-खाल[2] सुणो ॥११६॥

उसदे हुसन दी नहिँ तारीफ होंदी, देओ छोड़ भाई तुस्सी होर गल्लाँ।
लायक आप दे है ओ दिल-मोहनी, एह भी सोचेआ तुस्साँ नूँ घल्लाँ[3] ॥११७॥
गई बैठ मैं उस दे कोल जा के, खुशामद कर उसदे पई पैर मल्लाँ।
मरज़ी दिल दी आही *दिलशाद* एहो, नाल आपने उसनूँ लै चल्लाँ ॥११८॥

लछमन वेखिआ बैठेआँ कोल जदों, गुत्तों पकड़ मैनूँ पराँ सट्टेआ वे।
कीता तुस्साँ दा खौफ़ न कोई भाई, नक कन मेरा चा कट्टेआ वे ॥११९॥
गुज्झी[4] मार कीती उत्तों सखत ऐसी, सारा जिसम मैरा अंदरों फट्टेआ वे।
खातर आप दी कार *दिलशाद* कीती, दस्सो मैं नफा केहड़ा खट्टेआ वे ॥१२०॥

मैरे हाल नूँ वेख के खर दूखन, उन्हाँ नाल लड़ाई मचाई जाके।
लै के फौज अपनी गए नाल सारी, हिम्मत विच मैदान दिखलाई जाके ॥१२१॥
लओ समझ लड़ के गए मर सारे, खर दूखन भी जान गँवाई जा के।
कीता खौफ *दिलशाद* नहिँ कोई तैरा, तैरी लक्ख दुहाई मैं पाई जाके ॥१२२॥

एह ताँ नक मैरा उन्हाँ नहिँ कट्टेआ[5], कट्टेआ नक सारे खान-दान दा ई।
तेरे जेहा राजा नहिँ होर कोई, न कोई विच दुनिआ तेरी शान दा ई ॥१२३॥
मैं हाँ भैन ते तूँ भिरा मैरा, एह ताँ जगत सारा पेआ जानदा ई।
मिली इज़्ज़त *दिलशाद* विच खाक तेरी, रेहा वक़त न देर लगान दा ई ॥१२४॥

रावण का क्रोध करना—

लेआ सुण रावण जदोँ हाल सारा, विच दिल दे होण हैरान लग्गा।
सुणी भाइआँ दी मौत भी नाल जदोँ, हो गमगीन[6] फिर आँसू वहाण लग्गा ॥१२५॥

१. सुन्दर। २. आकृति। ३. संदेश कह भेजूँ। ४. गुप्त। ५. काटा। ६. दुःखी।

सुखन भैन दे लग गए तीर वांगों, होण विच गुस्से कैहरवान लग्गा।
मैरे भाइआँ नूँ मारेआ है जिसने, जम्मेआ कौन ऐसा फरमान लग्गा॥१२६॥

मैरी भैन दा भी कट्टेआ नक उस ने, ओह हुण दुनिआ थीं समझो जान लग्गा।
मैरे ज़ोर नूँ शायद ओह जाणदा नहिँ, ताहीं नाल मैरे हत्थ पाण लग्गा॥१२७॥

ओ ताँ नहिँ बचायाँ बच सकदा, जेहड़ा मौत दे मुँह विच आन लग्गा।
मैरे अग्गे इनसान है चीज़ केहड़ी, गज के शेर दे वांग सुणान लग्गा॥१२८॥

आया अहा राखश जेहड़ा खबर लैके, ओही उठ के फिर समझान लग्गा।
सुण के सुखन शाह रावण दे *दिलशादा*, राखश अपनी खोलन ज़बान लग्गा॥१२९॥

राक्षस की रावण से बात—

देवाँ बात सुणा माहराज सच्ची, तुस्साँ होवना नहिँ खफा चाहिए।
नहिँ बराबरी आप दी नाल उस दे, मैरी मुआफ कर देनी खता चाहिए॥१३०॥

एह खाम[1] खेआल माहराज सारे, तुस्साँ दिल थीं देने हटा चाहिए।
जिस नूँ समझ के तुस्सी इनसान बैठे, उस नूँ समझना सख़त बला चाहिए॥१३१॥

जद ओ तीर चलाउँदा नाल गुस्से, लैना समझ एह सच्च सफा चाहिए।
निकलन तीर हज़ार इक तीर विच्चों, उस वकत बचाना खुदा चाहिए॥१३२॥

खाली उस दा तीर न कोई जावे, ओह ताँ समझना तीर क़ज़ा[2] चाहिए।
ऐसा शेर दिलेर नहिँ होर कोई, लैना वेख बेशक अज़मा चाहिए॥१३३॥

रखनी नीयत लड़ाई दी नहिँ तुस्साँ, लड़े ओ ताँ जाना वला[3] चाहिए।
कदी विच लड़ाई न हारसी ओ, करनी सोच माहराज ज़रा चाहिए॥१३४॥

मारी फौज अकल्लेआँ उस साडी, अन्दाज़ा आप तुस्साँ लैना ला चाहिए।
करना सोच के कम *दिलशाद* पैहले, लगना जिसदा ना पिच्छोंता चाहिए॥१३५॥

कविवचन—

इस होणी दिआँ हीन पंज उंगलाँ, जिस वकत एह वरतँदी आ भाई।
दो रख देंदी दुहाँ अक्खिआँ ते, तुरत देउँदी अन्हों बना भाई॥१३६॥

पा के दो विच कन्नाँ दे करे डोराँ, गल सुणन नहिँ देउँदी का भाई।
इक रख ज़बान ते *दिलशादा*, आखे चुप कर डण्ड न पा भाई॥१३७॥

---

१. कच्चे विचार। २. मौत। ३. टाल। ४. पड़ती। ५. अन्धा। ६. बहरा।

वरती ओही होनी आक नाल रावण, नूरंभरे[1] दीदे[2] कीते कोरें[3] उस दे।
समझ झूठ बैठा वेखो सच्च ताईं, हो गए ग़लत खे़आल ते तौरें[4] उस दे ॥१३८॥
लगा बैठ के करन लाफझॅनी[5], खुशामद करन लगे मुफतखोर उस दे।
नहिं खबर *दिलशाद* बेखबर है ओ, लटक पैर रहे विच गोरें[6] उस दे ॥१३९॥

रावण का वचन—

पई भड़क फिर गुस्से दी अग यारा, मुड़ के भैन वलों जदों तक्केआ वे।
डिठ्ठी रोवँदी खोवँदी वाल सिर दे, दुख वेख के सह न सक्केआ वे ॥१४०॥
देवाँ कहे सझा झरूर उस नूँ, मैरे खौफ थीं जो न झुक्केआ वे।
आई मौत *दिलशाद* बेशक उस दी, समझो जिउने थीं ओ ताँ अक्केआ[7] वे ॥१४१॥

लगा गज्जन दरबार दे विच बैह के, कैंह्दा सुणो मैं सच्च सुणा देवाँ।
मैरे झोर दी खबर नहिं कोई उस नूँ, शैखी उस दी सभ हटा देवाँ ॥१४२॥
कोई झल नहीं सकदा झाल मैरी, ब्रह्मण्ड नूँ मैं हिला देवाँ।
मैरी भैन दा कट्टेआ नक जिस ने, उस नूँ मैं झरूर सझा देवाँ ॥१४३॥
केआ चीझ तपसी एह है हुण यारो, इक फूक दे नाल उडा देवाँ।
कीती एह अनीती है उन्हाँ जेह्ड़ी, मझा इस दा मैं चखा देवाँ ॥१४४॥
कदी जीउँदा छोड़सां न उस नूँ, जा के खाक दे विच मिला देवाँ।
दिलशाद चपेड़ इक मार के ते, दुधं[8] [9] माँ दा याद करा देवाँ ॥१४५॥

महा सैनिकों का वचन—

उठे बोल सिपहसालार[10] अग्गों, किस बाग़ दी दस्सो ओ हीन मूली।
कीता कम्म माह्‌राज जो है उन्हाँ, दित्ता अपना आप चढा सूली ॥१४६॥
देओ हुकम चल मारिए उन्हाँ ताईं, बोटी[11] मास दी होई नसीब कूली[12]।
बचन कदी *दिलशाद* न असाँ कोलों, सिर आन उन्हाँदड़े मौत झूली ॥१४७॥

रावण का उत्तर—

रावण कहे है शर्म दी गल्ल यारो, लके तुस्साँ नूँ जे मैं नाल जावाँ।
देओ छोड़ भेड़ा[13] है कम्म केह्ड़ा, किऊँ मैं अपने आप नूँ दाग़ लावाँ ॥१४८॥

---

१. प्रकाश से युक्त। २. नेत्र। ३. कोरे (प्रकाश-हीन)। ४. उपाय (तरीके)। ५. शेख़ी (गर्वोक्ति)। ६. कबर। ७. तंग आया है। ८. मार। ९. दूध। १०. सेनापति। ११. टुकड़ी। १२. कोमल। १३. झगड़ा।

मैरी कुव्वत[1] बाझूं[2] हर कोई जाणदा ए, इक उँगली नाल पहाड़ चावाँ[3]।
लोड़ किसे दी नाहिँ दिलशाद मैनूं, जा के आप अकलड़ा मार आवाँ ॥१४९॥

रावण का गमन—

लेआ रथ मंगवा फिर तुरत उत्थे, उत्ते रथ दे हो सवार गेआ।
रथ नाल हवा दे करे गल्लाँ, गोया उडदा तेझ रफ्तार गेआ ॥१५०॥
कीती सोच विचार न कोई रावण, लै के तीर तफंग तलवार गेआ।
डरें किऊँ दिलशाद कह साफ दे तूं, मौत आपनी करन तैयार गेआ ॥१५१॥

मारीच से भेंट—

लेआ रथ उडा हवा वाँगों, पौंह्ता विच जंगल इक जा प्यारे।
करदा जित्थे सी तप मरीच बैहके, उसे जा ते पौंह्चेआ आ प्यारे ॥१५२॥
अगों उठ मरीच ताजीम[4] कीती, लाया अदब अदाब बजा प्यारे।
रावण आखेआ दस्सो मरीच भाई, रहे दिन किस तौर लंघा प्यारे ॥१५३॥
इक कम्म तुसाडड़े नाल मैरा, करो ओ तुस्सी हुण चा प्यारे।
रामचन्दर लछमन आए विच बन दे, बैठे कुटिआ ओ बना प्यारे ॥१५४॥
मैरी भैन दा कट्टेआ नक उन्हाँ, दित्ते मार मैरे दो भिरा प्यारे।
करें मदद जे तूं हुण चा मैरी, सीता लै आवाँ मैं उठा प्यारे ॥१५५॥
लवाँ लै बदला मैं उन्हाँ कोलों, एही दिल दी है मुदआ[5] प्यारे।
सुण के बोल शाह रावण दे हौल[6] पेआ, गेआ दिलों मरीच घबरा प्यारे ॥१५६॥
कंबनै[7] बदन लगा थर थर उस दा सी, होए होश हवास ख़ता प्यारे।
कैंह्दा सुणो माह्राज जी गल्ल मैरी, देवाँ आप नूं सच्च सुणा प्यारे ॥१५७॥
उन्हाँ नाल साडी पूरी नाहिँ पौंदी, समझ लओ है गल्ल सफा प्यारे।
खबरदार करना नाहिँ कम्म ऐसा, नाहिँ ताँ बैठसो जान गँवा प्यारे ॥१५८॥
कराँ हाल बेआन इक रोझ दा मैं, झरा सुणो खाँ दिल नूं ला प्यारे।
रैंह्दे आहे तपसी जो विच बन दे, हैसन असाँ दी ओ ग़िझा प्यारे ॥१५९॥
जाइए नित सताइए उन्हाँ ताईं, इक दिन रिशी गए गुस्सा खा प्यारे।
राजे दसरथ दे कोल फिर जाके ते, देंदे आपना हाल बतला प्यारे ॥१६०॥

---

१. शक्ति। २. भुजा। ३. उठा लूँ। ४. सत्कार। ५. अभिप्राय। ६. डर। ७. कांपने। ८. भोजन।

दित्ता राखशां ने कैंहदे दुख सानूं, हर वकत ओ रहे सता प्यारे।
मंगन दाद फरयाद नूँ करके ओ, कैह्न दुःख एह देओ हटा प्यारे ॥१६१॥
रामचन्दर ते लछमन नूँ फिर राजे, लेआ अपने कोल बुला प्यारे।
कैंह्दा रिशिआँ दे दुःख नूँ दूर करो, राखश मार के देओ मुका प्यारे ॥१६२॥
हुकम बाप दा सुण पए टुर दोवें, लैंदे तीर कमान उठा प्यारे।
कह्वाँ केआ जो उन्हाँ ने हाल कीता, राखश नस्सदे जान छपा प्यारे ॥१६३॥
कई मोए लड़ के कई होए झखमी, गई किसे दी पेश न का प्यारे।
हाथी इक हझार दा झोर मैनूँ, मेरी होश भीं दित्ती भुला प्यारे ॥१६४॥
जुर्रत फुर्रत मेरी होई दूर सारी, न कोई चल सकेआ मेरा दा प्यारे।
सुट्टेआ चुक समुँदरों पार मैनूँ, ऐसा तीर इक दित्ता चला प्यारे ॥१६५॥
उस वकत उमर है सी साल पंद्रह, हुण ताँ होणगे दून सवा प्यारे।
छेड़ो नाल उन्हादड़े न तुस्सी, मन्नो वासता इक खुदा प्यारे ॥१६६॥
जेकर चाहो भला मुड़ जाओ पिच्छे, देवाँ आप नूँ मैं समझा प्यारे।
सकसो झल *दिलशाद* न झाल कदी, कर सो बैठ के फिर पिच्छोता प्यारे ॥१६७॥

रावण का क्रोध—

रावण कहे खामोश हो बक नाहीँ, जैसा बीजिआई वैसा चाँवसें तूँ।
कीती तूँ बेअदबी है बौह्त मेरी, सझा समझ लै इस दी पावसें तूँ ॥१६८॥
होना मुआफ कसूर एह नहिँ तेरा, भावें पआ लख बार बखशावसें तूँ।
दिलशाद मैह्मान कोई पल दा हैं, इक दम विच दम गँवावसें तूँ ॥१६९॥

लई खिच तलवार मेआन विचों, ले एह वेख तलवार दिखला कैंह्दा।
कीती तूँ तारीफ हरीफ़ै दी जो, मझा उस दा वी लै पा कैंह्दा ॥१७०॥
हत्थीँ रामचन्दर है मनझूर मरना, देवाँ सिर या मैं उडा कैंह्दा।
चाहे दिल *दिलशाद* हुण केआ तेरा, जलदी दस फिर देर न ला कैंह्दा ॥१७१॥

मारीच का वचन—

गेआ हो यकीन मरीच कैंह्दा, दुश्मन लोक सारे यारो सच्च दे नेँ।
झूठ गुड़ ते सच्च बेशक मिरचाँ, सच्च बोलेआँ भाँबड़ मचँदे नेँ ॥१७२॥

१. हौसला। २. दाँव। ३. उठाएँगा। ४. शत्रु। ५. भोग। ६. आग की लपटें। ७. जलती हैं।

टक्कर नाल पत्थर जदों लग जावे, जांदे त्रुट भांडे[1] फिर कैंच[2] दे नें।
मुँह मौत विच आए *दिलशाद* जेहड़े, ओ बचायाँ कदे न बचदे नें ॥१७३॥

नहिँ झोर माहराज कोई नाल तुस्साँ, जो कुझ आखसो सोई मनझूर करसाँ।
कूके[3] मौत तुसाडड़े सिर उत्ते, सच्च बोलने थीँ फिर भी न डरसाँ ॥१७४॥

हत्थीँ आप दे मौत मनझूर नाहीँ, रामचन्दर दे हत्थ थीँ जा मरसाँ।
झलसाँ[4] वार *दिलशाद* तलवार दा न, पीड़ तीर दी विच सरीर जैरसाँ[5] ॥१७५॥

रावण की प्रसन्नता—

लई सुण मरीच दी गल्ल जदों, विच दिल अनन्द खुरसन्द होया।
कैंहदा रास हो गए सभ कम्म मैरे, चेहरा नाल खुशी दोचन्द[6] होया ॥१७६॥

गेआ आ एह दा दे विच मैरे, एह डराउना भी सूदमँन्द होया।
गेआ डर मरीच *दिलशाद* मैथों, दिलों इस दे दूर घमंड होया ॥१७७॥

रावण का वचन—

होके खुश मरीच नूँ नाल आपने, उत्ते रथ दे चा बिठलाया वे।
जिस जा उत्ते आहे रामचन्दर, उसे बन विच जा पौंह्चाया वे ॥१७८॥

करो देर मरीच न हुण तुस्सी, धारो हरन दा रूप सुनाया वे।
कोल कुटिआ दे *दिलशाद* जाके, चलो चाल अजीब फरमाया वे ॥१७९॥

मारीच हिरण के रूप में—

बन के हरन सोह्णा लगा भरन[8] चुंगिआँ[9], सोने वांग जिसम सारा चमक रेहा।
थँमक-थमक[10] चले पैर थँमँ[11] के ते, वेले[12] मौत दे खौफ थीँ धँमक[13] रेहा ॥१८०॥

चाह जिउने दी बैठा लाह दिलोँ, हुण ते अजल दे चाह विच लमकँ[14] रेहा।
गई पेश *दिलशाद* न कोई उस दी, गुस्से नाल अन्दरों अन्दर तँमक[15] रेहा ॥१८१॥

---

१. पात्र। २. काँच। ३. शब्द करती है। ४. सहन करूँगा। ५. सहूँगा। ६. प्रसन्न (दो चाँद)। ७. लाभदायक। ८,९. चौकड़ी भरने लगा=उछलने लगा। १०. ठहर-ठहर। ११. ठहरा कर। १२. मानो। १३. डर। १४. लटक। १५. तप।

सीता का वचन—

वेख हरन सुनैह्री दा रंग सोह्णा, दिल सीता दा आन ललचाया वे ।
अज तक ऐसा मिरग खूबसूरत, कदी नज़र माह्राज न आया वे ॥१८२॥
जिउँदा देॲो मैनूँ एह पकड़ तुस्सी, मेरे दिल नूँ इस लुभाया वे ।
उठो जाओ *दिलशाद* न देर करो, सीता कर इसरार[1] सुणाया वे ॥१८३॥

केॲा मिरग माह्राज है खूब सोह्णा, एह ताँ अपने कोल है रक्खन जोगा[2] ।
देसो पकड़ ताँ रक्खाँगी जकड़ इसनूँ, रैह्सी फिर न किधरे नस्सन जोगा ॥१८४॥
चौदाँ बरस बनवास गुज़ार के ते, अजुध्या बाशिआँ नूँ है एह दस्सन जोगा ।
रक्खसाँ मैह्लाँ दे विच *दिलशाद* जाके, एह ताँ विच जंगलाँ नहिँ वस्सन जोगा ॥१८५॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माह्राज ने सुण के ते, केॅहा तक ज़रा इस दे वल सीता ।
नहिँ वेखेॲा अजतक मिरग ऐसा, एह ताँ जापदा है कोई छल सीता ॥१८६॥
होंदी चाल चरिन्दे[3] दी नहिँ ऐसी, एह चाल जैसी रेहा चल सीता ।
दे छोड़ खेॲाल *दिलशाद* इसदा, लै मन्न मेरी एह तूँ गल सीता ॥१८७॥

सीता का वचन—

रहे केॲा माह्राज फरमा तुस्सी, लीला भगवत अपन-अँपार[4] है जी ।
उस बेअन्त दा अन्त न लेॲा किसे, नाहिँ कुदरत दा कोई शुमार है जी ॥१८८॥
देवे ओही बना जो दिल चाहे, मालक ओही खालक करनहार है जी ।
वेख रंग उसदे अकल दंग होवे, एह *दिलशाद* बेसूदे[5] विचार है जी ॥१८९॥

रामचन्द्र का वचन—

मगर हरन दे लगा मैं जान लछमन, रैह्णा पिच्छों तुस्साँ खबरदार चाहिए ।
ज़िद राखशां दी है नाल साडे, करनी ग़फलत न रैह्णा होशिआर चाहिए ॥१९०॥
होंदे सख़त शरीर बेपीर राखश, रक्खना अपना आप तैयार चाहिए ।
लछमन कहे *दिलशाद* नहिँ फिकर कोई, होना साईँ सच्चा मददगार चाहिए ॥१९१॥

---

१. हठ । २. योग्य । ३. घास चरने वाला पशु । ४. अज्ञेय । ५. वृथा ।

रामचन्द्र का हिरण के पीछे जाना—

रामचन्दर माह्राज उठ मगर लगे, उछल उछल छालाँ हरन मार रेहा।
घड़ी घड़ी पिच्छों [1]परत परत तक्के, दरशन कर कर जन्म सँवार रेहा ॥१९२॥
रही कोई उमीद नहिँ जिउने दी, मौत अपनी दिल विच धार रेहा।
कित्थों बचे *दिलशाद* ओ दस्स मैनूँ, हत्थ अजल जो आ शिकार रेहा ॥१९३॥

लगा तीर फड़क के डिग पेआ, सुध बुध ते होश भुलाई प्यारे।
"आ हुण पौहँच लछमन जलदी दौड़ के तूँ, इतनी [2]कासनूँ देर लगाई प्यारे ॥१९४॥
मैं ताँ आया साँ हरन दे मारने नूँ, उलटी अपनी जान गँवाई प्यारे।
कर [3]इमदाद *दिलशाद* [4]शताब आके, मेरी सुण दुहाई तूँ भाई प्यारे" ॥१९५॥

सीता सुण के हो हैरान गई ए, कैंह्दी केआ आवाज़ एह आ रही ए।
पिच्छे हरन दे किऊँ मैं भेज बैठी, गुज़र वक़्त गेआ पिच्छों ता रही ए ॥१९६॥
नहिँ खबर के वरतसी नाल मेरे, मैनूँ केआ तकदीर दिखला रही ए।
उठ लछमना खबर लेआ जाके, मेरी जान *दिलशाद* घबरा रही ए ॥१९७॥

लक्ष्मण का वचन—

हत्थ जोड़ के लछमन ने अरज़ कीती, छोड़ फिकर न हो उदास माताँ।
सकदा हत्थ नहिँ उन्हाँ नूँ पा कोई, भावें चढ़ के आवे अगास[5] माताँ ॥१९८॥
होसन आउँदे मार के हरन ताईँ, जासन[6] पौह्‌च ओ ताँ तेरे पास माताँ।
नहिँ डर खतरा *दिलशाद* कोई, बैठा कोल तेरे तेरा दास माताँ ॥१९९॥

सीता का वचन—

जा के कोल भिरा दे पौह्‌च जलदी, इत्थे बैठ के गल्लाँ बना नाहीँ।
होई गल्ल ज़रूर कोई है उत्थे, विच इसदे झूठ ज़रा नाहीँ ॥२००॥
औखे वकत कर जाके मदद भैय्या, होके [7]बुँझदिल दिल चुरा नाहीँ।
जा उठ *दिलशाद* न बैठ इत्थे, गल्लाँ झूठिआँ पेआ सुणा नाहीँ ॥२०१॥

---

१. मुड़ कर। २. किस लिए। ३. सहायता। ४. शीघ्र। ५. आकाश। ६. जायंगे। ७. कायर।

लक्ष्मण का वचन—

मन तन कुरबान है उन्हाँ उत्तों, देवाँ जान भी अपनी घोल[1] माताँ ।
पलक-झलक विच जानगे पौंहच् इत्थे, ज़रा सबर कर दिलों न डोल माताँ ॥२०२॥
जावाँ किवें अकल्याँ छोड़ तैनूँ, गए छड जद के तेरे कोल माताँ ।
खतरनाक *दिलशाद* एह जंगल भारा, पए फिरन राखश मुँह खोल माताँ ॥२०३॥

सीता का वचन—

लगी कैहृन सीता फिर गुस्से होके, बैठी समझ मैं ताँ हाँ नीत तेरी ।
इसे वासते आया तूँ नाल साडे, वेख लई झूठी एह परीत तेरी ॥२०४॥
होए होर खेॲाल विच दिल तेरे, गई आ नज़र उलटी रीत तेरी ।
खासें सख़त शिकस्त[3] *दिलशाद* भारी, होसी कदी न इस विच जीत तेरी ॥२०५॥

लक्ष्मण का वचन—

सुख़न सीता दे सुण के डर गेॲा, कहे केॲा एह मैंनूँ सुणाया तूँ ।
ऐसे बोल अवलड़े बोल के ते, मेरे तन नूँ चा तपाया तूँ ॥२०६॥
कराँ जान कुरबान मैं भाई उत्तों, एह केॲा माताँ फ़रमाया तूँ ।
दिलशाद मैं ताँ नौकर हाँ हरदम, ऐसा किऊँ खेॲाल दौड़ाया तूँ ॥२०७॥

लेॲावाँ खबर माहराज दी जा के ते, लेॲा मन्न मैं तेरा फ़रमान माताँ ।
देवाँ खिचें[4] लकीर चौफेर कुटिआ, कैंहदा सुण मैं लगा ई सुणान माताँ ॥२०८॥
जाना बाहर लकीर थीं नहिं तुस्साँ, इस गल्ल दा रखना धेॲान माताँ ।
जासी अन्दर लकीर *दिलशाद* जेहड़ा, हो ओ भस्म जासी सच्च जान माताँ ॥२०९॥

रावण का आगमन—

पेॲा दुर लछमन धनशवान लै के, फिर देर न उस ज़रा कीती ।
हैसी ख़बर ग़रीब नूँ न कोई, जेहड़ी चाल होणी इत्थे चा कीती ॥२१०॥
रावन तकदा दाओं सी बैठ ओहॅले[5], पूरी रब उसदी हुण मुर्दॅआ[6] कीती ।
दिलशाद फकीर नूँ दे भिच्छेॲा, कोल कुटिआ दे आण सदा[7] कीती ॥२११॥

१. न्योछावर । २. तुरन्त । ३. हार । ४. खींच । ५. ओट में । ६. भिक्षा । ७. आवाज़ ।

सुणी अवाज़ फकीर दी जद सीता, फल फुल झोली विच पा के ते।
साधु वेख महात्मा खुश होई, लगी कैहन फिर सीस निवां के ते ॥२१२॥
है मौजूद इत्थे जो कुझ कोल मेरे, लै जाओ तुस्सी अन्दर आ के ते।
बाहर निकलने दा नहिँ हुकम मैनूँ, देवे साफ *दिलशाद* सुणा के ते ॥२१३॥

रावण का वचन—

कीता वेस संन्यास दा अहा रावन, सीता नाल पेआ गुफ़्तगू[2] करदा।
मनाह है फकीर नूँ अन्दर जाना, विच गेआन चरचा रूबरू[3] करदा ॥२१४॥
होंदी खबर फकीर दी नहिँ जिसनूँ, ऐसे कम्म रानी समझ ओ करदा।
करे अरथ *दिलशाद* शलोक पढ़ के, मकर भरे ओह सुखन खलो करदा ॥२१५॥

कम फकीर दा मंग के खाण दा ई, उत्ते दर अलॅख जगान दा ई,
अन्दर हुकम न उसनूँ जाण दा ई, अंदर किवें रानी दस्स मैं आवाँ।
बाहर आके भिच्छेआ पा दे तू, लगी भुख दी अग बुझा दे तूँ,
नहिँ ताँ साफ जवाब सुणा दे तूँ, खाली दर तेरे तोँ चला जावाँ ॥२१६॥
लगी जिन्हाँ भगवान दी लगन रानी, रैंह्दे भजन दे विच ओ मगन रानी,
मगर दुनिआ कदी न लग्गन[4] रानी, चादर फकॅर[5] नूँ कास नूँ दाग़ लावाँ।
फकरँ[6] फिकर कोलों रैंह्दे दूर सदा, हर हाल *दिलशाद* मसरूरँ[7] सदा,
रहे घर एह तेरा भरपूर सदा, किसे होर दाँते[8] कोलोँ मंग खावाँ ॥२१७॥

बाहर आके भिच्छेआ दे मैनूँ, करना दान जे हई मनज़ूर रानी।
अन्दर आउने दी नहिँ लोड़ कोई, फकर फिकर कोलों रैंह्दे दूर रानी ॥२१८॥
गेआ मिल ताँ संत ने खा लेआ, नहिँ ताँ बिच फाके[9] मसरूर रानी।
दिलशाद खाली चला जाउसाँ मैं, रह्वे घर तेरा भरपूर रानी ॥२१९॥

रावण-द्वारा सीता-हरण—

मिटदी नहिँ लकीर तकदीर कदी, भावें गेआ लछमन लीकँ[10] पा भाई।
दाने होण दीवाने तकदीर अग्गे, देवे अकल तकदीर भुला भाई ॥२२०॥

---

१. झुका। २. बात-चीत। ३. एक दूसरे के सामने। ४. लगते हैं। ५. साधु की। ६. साधु। ७. प्रसन्न। ८. दानीं से। ९. उपवास। १०. लकीर।

लगी सोचने दिल दे विच सीता, गेॲा अज साधु इत्थे आ भाई ।
देनी भिच्छेॲा है झरूर उस नूं, खाली टोरना नहिँ रवा भाई ॥२२१॥

निकल बाहर सीता लगी देन भिच्छिॲा, लगा लैण रावण हत्थ फैला भाई ।
कपड़े भगवें लाह के सुट दित्ते, रूप असली लेॲा बना भाई ॥२२२॥

बाहों पकड़ लैंदा चुक मोढेॲाँ ते, देवे रथ ते आन बहा भाई ।
लाया झोर पर पेश न गई कोई, सीता रोवँदी घत्त खा भाई ॥२२३॥

रामचन्दर माह्राज दी याद अन्दर, रही कूँज दे वांग कुरला भाई ।
झार झार रोवे पई विच रथ दे, रावन देवँदा रथ चला भाई ॥२२४॥

लगी झेवर उतार के सुटन सीता, जावे पेश न उस दी का भाई ।
सुणे कौन फरयाद *दिलशाद* उस दी, रो रो के गई घबरा भाई ॥२२५॥

जटायु-द्वारा रुकावट—

बैठा अहा जटाऊ विच राह अग्गे, सुणेॲा रोवने दा जद आवाझ उसने ।
उड के रावन दे सिर ते आन खला, दित्ते तरोड़ सारे साजं-साझ[1] उसने ॥२२६॥

मार ठोकराँ सखत कर तंग दित्ता, दित्ते भुला सारे नखरे नाझ[2] उसने ।
भला चाहें *दिलशाद* जे आपना तूँ, केॅहा रावना आ जा बाझ उसने ॥२२७॥

दे छोड़ सीता मन लै गल्ल मेरी, नहिँ ताँ अपनी जान गँवावसेँ तूँ ।
गेॲा वकत न औसिआ हत्थ मुड़के, उस वेलड़े नूँ पिच्छोतावसेँ तूँ ॥२२८॥

रामचन्दर माह्राज दे नाल लड़ के, समझ कुल दा नास करवावसेँ तूँ ।
रखीं सुखन *दिलशाद* एह याद मेरा, जेहा बीजिआ ई वैसा चावसेँ तूँ ॥२२९॥

रावण का आक्रमण—

गुस्से नाल रावन उठ खड़ा होया, लई पकड़ तलवार दरदस्त[3] झालम ।
लगा लड़न जटाऊ दे नाल आ के, करे वार तलवार कमवखत झालम ॥२३०॥

कट पैर[4] गिराया झमीन उत्ते, दे शिकस्त उसनूँ होया मस्त झालम ।
दिलशाद बुनयाद दे गालने दा, चलेॲा खूब करके बन्दोबस्त[5] झालम ॥२३१॥

१. घोड़ों के साधन । २. चोंचले । ३. हाथ में । ४. पंख । ५. प्रबंध ।

सीता-द्वारा शोक—

झखम खा झमीन ते डिग पेॲा, सीता वेख रोवन झार झार लग्गी ।
मेरे वास्ते होया एह हाल इसदा, होण विच दिल दे शर्मसार लग्गी ॥२३२॥

इस जिउने थीँ मर जाण चंगा, मैरी झिन्दगी होण खवार लग्गी ।
आवे मौत *दिलशाद* शताव मैरी, अगे रब दे करन पुकार लग्गी ॥२३३॥

रावण की लंका में पँहुच—

झखमी कर जटाऊ नूँ शाह रावन, पौंहता विच लंका दे आन यारा ।
कैंहदा पूरी मुराद हो गई मैरी, गेॲा दिल दा निकल अरमान यारा ॥२३४॥

इक महल अजीब सी खूब सोहना, लगा सीता नूँ ओही दिखलान यारा ।
हैसी हीरेॲाँ दे नाल जड़त सारा, चमक लाल रहे बदखशान यारा ॥२३५॥

सोने चांदी दे दर दीवार सारे, हैसी बाँग बहिश्त मकान यारा ।
नैहरां मार लैहरां विच चलन पैईआँ, विचे बाग़ सोहने दिल लोभान यारा ॥२३६॥

फल फुल हर किसम दे आहे लगे, पंछी बोलदे खुश अलैंहान यारा ।
उस महल दे विच *दिलशाद* आके, रावण सीता नूँ लगा सुणान यारा ॥२३७॥

रावण का वचन—

रावण आखदा सीता नूँ खुश हो जा, किस वासते फिकर तूँ कर रही एँ ।
किऊँ ग़म दे विच ग़लतान हो के, हञ्जू नाल कपड़े कर तर रही एँ ॥२३८॥

हीन राम लछमन दरुस चीझ केहड़ी, किऊँ वासते उन्हाँ दे मर रही एँ ।
मैरे शान दा नहिँ कोई विच दुनिआ, देख-भाल तूँ कर नझर रही एँ ॥२३९॥

पातशाहाँ दा मैं हाँ शाह रानी, है एह सच्च तूँ बेखबर रही एँ ।
शादी नाल मैरे मनझूर कर लै, केहड़ी गल्ल कोलों हैं डर रही एँ ॥२४०॥

दिल जान थीँ मैं कुरबान तैथों, ठंडे सास काहनूँ बैह के भर रही एँ ।
कर गुझरान *दिलशाद* शादान होके, उत्ते गोडेॲाँ सिर किऊँ धर रही एँ ॥२४१॥

बत्तरी करोड़ जवान है कोल मैरे, ते बलवान् सारे शाहझोर रानी ।
दस दस दिलेर फिर शेर वांगोँ, इक इक दे कोल ने होर रानी ॥२४२॥

१. शीघ्र। २. चमकीले। ३. रहीं। ४. मधुर कण्ठ वाले। ५. मग्न। ६. आँसू। ७. घुटनों। ८. बत्तीस (३२)।

मैरे नाल बराबरी कौन करे, मैरे ज़ोर दा जगत विच शोर रानी ।
होके खुश *दिलशाद* रहो कोल मैरे, कीता ई दिल नूँ किऊँ कठोर रानी ॥२४३॥

सीता का वचन––

पादशाहाँ दा जे पादशाह आहेँ, वेस साधुआँ दा फिर बनाया किऊँ ।
हैसी ज़ोर ताँ सामने लै आउँदोँ[1], वाँग चोर चुरा ले आया किऊँ ॥२४४॥
नहिँ गधेआ शरम हया तैनूँ, नक भैन दे नूँ कटवाया किऊँ ।
आहें मरद ता रैंहदों खड़ा उत्थे, इत्थे आन *दिलशाद* छपाया किऊँ ॥२४५॥
रामचन्दर माहराज दी मैं रानी, मैनूँ समझ तूँ कोई कनीझ[3] नाहीँ ।
मैरा दम उन्हाँदड़े नाल दम दे, उन्हाँ बाज कोई होर अज़ीज़ नाहीँ ॥२४६॥
करें किऊँ पेॲा एडी लाफजनी, तैनूँ एहमका कोई तमीज़ नाहीँ ।
फौज बत्तरी करोड़ *दिलशाद* तेरी, अगे रामचन्दर कोई चीज़ नाहीँ ॥२४७॥

रावण का वचन—

मैरी भैन दा कट्टेॲा नक उन्हाँ, मैं हुण सिर उन्हाँदड़ा कट्टना एँ ।
करसन केॲा मुकाबला नाल मैरे, गिद्दड़ाँ शेर कोलों केॲा खट्टना एँ ॥२४८॥
वाँग बकरे दोहाँ नूँ पकड़ के मैं, समझ सच्च हलाल कर सुट्टना एँ ।
मास हिल्लाँ[4] ते काँगाँ[5] *दिलशाद* खासन, लहू राखशाँ उन्हाँ दा चट्टना एँ ॥२४९॥

सीता का वचन—

हो जा दूर इत्थोँ मैरिआँ अक्खिआँ थीँ, ऐवेँ मूरखा ओए पेॲा बक नाहीँ ।
गए आ माहराज जिस वकत इत्थे, फिर विच इसदे कोई शक नाहीँ ॥२५०॥
एह ग़रूर तेरा होसी दूर सारा, नाला सके दरया नूँ डक[6] नाहीँ ।
देसन सिर उतार *दिलशाद* तेरा, देर लाउसनँ इक पलक नाहीँ ॥२५१॥

रावण का वचन—

औसर्न कित्थों तेरे दस्स राम लछमन, जे कर आए ते जान गँवानगे नीँ ।
देसाँ खाक दे विच मिला दोवेँ, जद आण के शकल दिखलानगे नीँ ॥२५२॥
पिच्छों समझ लैसाँ फिर नाल तेरे, बाराँ मास जदों गुज़र जानगे नीँ ।
दिलशाद मैय्याद इक साल देवाँ, फिर एह मास तेरा राखश खानगे नीँ ॥२५३॥

---

१. किया है। २ आता। ३. नीच। ४. चीलें। ५. काक (कौआ)। ६. रोक। ७. लायँगे। ८. आएँगे।

सीता का वचन—

उन्हाँ नाल बराबरी कर सके, इतना मूरखा हौसला है किस दा।
मैंनूँ रावणा होया यकीन पूरा, गेआ आ तेरा हुण काल दिसदा ॥२५४॥

जेह्ड़ा लै आइओं मैंनूँ विच लंका, एह ताँ पीताई प्यालड़ा तूँ विस दा।
उस नूँ नहिँ परवाह *दिलशाद* कोई, होंदा रब रखवालड़ा है जिस दा ॥२५५॥

रावण की चिन्ता—

गेआ सोच दे विच्च फिर पै रावण, औरत मारनी आखदा नहिँ मरदी।
दित्तिआँ धमकिआँ भावेँ हज़ार मैं ताँ, किसे गल्ल थीं भी एह ताँ नहिँ डरदी ॥२५६॥

कराँ गल्ल जे इक मैं नाल इस दे, बदले इक दे अगों एह चार करदी।
नरमी नाल भी आख *दिलशाद* थक्केआँ, मैरी गल्ल उत्ते नहिँ एह कन्न धरदी ॥२५७॥

रावण राखशिआँ नूँ फिर सद्द के ते, अशोक बाग़, कहे, लै जाओ इसनूँ।
दिल दुखाओ सताओ, न तरस खाओ, हर तरह इझ्ञा पहुँचाओ इसनूँ ॥२५८॥

शादी नाल मैरे कर मनज़ूर लवे, दिन रात एही समझाओ इसनूँ।
लवे मन्न *दिलशाद* एह गल्ल जदोँ, मैरे कोल उस वकत लै आओ इसनूँ ॥२५९॥

लेआ राखशिआँ ने फिर पकड़ बाहोँ, विच बाग़ दे जा पौंह्चायो ने।
हरे भरे फल फुल्लाँ दे बाग़ अन्दर, हेठ द्रखत दे आन बिठलायो ने ॥२६०॥

भयानक शकल बना डरान लगिआँ, घेरा चार चोफेरेओं पायो ने।
डरदी नहिँ डरायाँ *दिलशाद* सीता, लक्ख ज़ोर भावेँ पेआ लायो ने ॥२६१॥

रामचन्द्र का वृत्तान्त—

रामचन्दर जी हरन नूँ मार के ते, वापस कुटिआ दे वल आन लगे।
गेआ मिल लछमन विच राह आ के, उसनूँ वेख के होण हैरान लगे ॥२६२॥

कहो सीता नूँ छोड़ अकल्याँ तूँ, आयोँ किऊँ एह दस फरमान लगे।
हैसी जगह एह ताँ भारे खौफ वाली, विच दिल दे सख़त घबरान लगे ॥२६३॥

---

१. रक्षक। . वीरता। ३. कष्ट।

विच कुटिआ नज़र नहिँ आई सीता, ग़मग़ीन हो आँसू बहान लगे ।
वड़नं अन्दर कदी कदी बाहर निकलन, तरह तरह दे फिकर दौड़ान लगे ॥२६४॥
कदी बैठ ज़मीन दे वल तकदे, कदी वेखने तरफ असमान लगे ।
भारी कर ग़फ़लत *दिलशाद* बैठों, तूँ एह लछमना फिर सुणान लगे ॥२६५॥

भरेआ जंगल सारा नाल राखशाँ दे, सारे हीन एह ताँ आदम[2] खान वाले ।
अकल्याँ सीता नूँ छोड़ तूँ किऊँ गेओं, तेरी अकल नूँ कित्थों वज गए ताले ॥२६६॥
बैठे खा सीता जेकर हीन राखश, मैरी जान भी जासिआ समझ नाले ।
चंगा मरन *दिलशाद* है कई हिस्से, जांदे दुःख जुदाई दे नहिँ जाले[3] ॥२६७॥

चला जा अजुध्या तू लछमन, जाके सारेआँ नूँ दे दस्स प्यारे ।
लिखे लेख मैं भोगँसाँ पेआ आपे, मैरे नाल न दुःखाँ विच पिस प्यारे ॥२६८॥
सीता बाज नहिँ आउँदा चैन मैनूँ, गई नस्स मैरी भुख-तैंस प्यारे ।
कराँ केआ *दिलशाद* नहिँ कुझ सुझदा, नहिँ दिल मैरा मैरे वस प्यारे ॥२६९॥

लक्ष्मण का वचन—

अगोँ रो के लछमन ने अरज़ कीती, मैरी नहिँ माह्राज तकसीर कोई ।
अरज़ां कर बतेरिआँ मैं थक्केआ, मन्नी माताँ नहिँ गल अखीर कोई ॥२७०॥
अकल्याँ छोड़ना मैं भी नाहँस चाँहदा, मैं नादान नहिँ साँ मैरे वीर कोई ।
मैरे नाल *दिलशाद* गई वरत होणी, मैरी पेश नहिँ गई तदबीर कोई ॥२७१॥

जो कुझ वरतेआ लछमन दे नाल हैसी, सचो सच ओ दित्ता सुणा सारा ।
दस्से खोल सीता दे बोल सारे, अक्खिओँ चलदी सू पई नीर धारा ॥२७२॥
जिगर चीरिआ ताँनेआँ तीर वाँगोँ, पौहँता सदमा दिल नूँ सख़त भारा ।
जलदा बलदा *दिलशाद* मैं उठ आया, चलेआ नहिँ माह्राज जी कोई चारा ॥२७३॥

१. घुसते थे । २. मनुष्य-भक्षी । ३. सहन किए जाते । ४. भोगूंगा । ५. भूख-प्यास । ६. बहुत सी । ७. नहीं था । ८. कटु वचन (व्यंग्य वचन) । ९. दुःख । १०, उपाय ।

हुण ताँ कीता कसूर मैं लख वारी, करो रब दे वासते मुआफ मैंनूं ।
तुस्साँ बाज माह्राज है कौन मैरा, लगे देण जवाब किऊँ साफ मैंनूं ॥२७४॥

रक्खो कदमाँ दे विच गुलाम ताईं, पए किऊँ दस्सो लाम-काफ[1] मैंनूं ।
सुण के सुखन *दिलशाद* तुसाडड़े एह, होया जिगर दे विच शगाफ[2] मैंनूं ॥२७५॥

तुस्साँ बाज अजुध्या दे विच जाके, मैंनूं दस्सो माह्राज केॲा कराँगा मैं ।
मैरा दम तुसाडड़े नाल दम दे, कदी दुःख जुदाई न जराँगा मैं ॥२७६॥

दुःख-सुख मैरा तुस्साँ नाल है जी, समझो मरण थीं भी नहिँ डराँगा मैं ।
मैंनूं छेड़ *दिलशाद* जे गए तुस्सी, तड़फ-तड़फ पिच्छों इत्थे मराँगा मैं ॥२७७॥

रामचन्द्र का वचन—

लेॲा सुण मैं ग़ौर दे नाल सारा, कीता हाल बेॲान जो तूं भाई ।
पैंसो-पेश[3] न औरताँ तक्कन कदी, होंदी औरताँ दी एहो खौ[4] भाई ॥२७८॥

कहे औरताँ ते चल्ले न जेहड़ा, अकलमन्द होंदा मरद सो भाई ।
तेरी नहिँ तकसीर कोई वीर मैरे, लई अकल तेरी होणी खो[5] भाई ॥२७९॥

गरदश गरदन ते है सवार मैरे, एह फिर आवसी कोह्-वँको[6] भाई ।
लिखिआ कलम तक़दीर दा जो होवे, नहिँ मिट सकदा कदी ओ भाई ॥२८०॥

जिस गल्ल कोलों रेहा मैं डरदा, अज गल्ल ओही गई हो भाई ।
उठ ढूँडिए चल *दिलशाद* सीता, बैह के बौह्त इत्थे लेॲा रो भाई ॥२८१॥

सीता की खोज—

छोड़ कुटिआ नूँ पए टुर दोवें, लगे फिरन दिवाँनेआँ[7] वाँग सज्जनाँ ।
करन वैण माह्राज बेचैन होके, लगी हिजर[8] दी जिगर विच साँग[9] सज्जनाँ ॥२८२॥

लछमन भाई मैरे पकड़ हत्थ मैरा, चढ़ी आण के ग़माँ दी काँग[10] सज्जनाँ ।
चल उठ *दिलशाद* मिला मैंनूं, देंदी बैह्न नहिँ सीता दी ताँग[11] सज्जनाँ ॥२८३॥

उन्माद—

पुच्छन रुक्खाँ नूँ दस्सो चा तुस्सी, किधर गई सीता, किधर गई सीता ।
भला पँछिओ देॲो बतला तुस्सी, किधर गई सीता, किधर गई सीता ॥२८४॥

---

१. टाल-मटोल । २. छिद्र । ३. आगे-पीछे (उचित-अनुचित) । ४. स्वभाव । ५. छीन । ६. सर्वत्र । ७. उन्मत्त (पागल) । ८. वियोग । ९. शल्य । १०. बाढ़ । ११. प्रतीक्षा ।

है खबर जो देॲो सुणा तुस्सी, किधर गई सीता, किधर गई सीता।
पता देॲो *दिलशाद* कोई ला तुस्सी, किधर गई सीता, किधर गई सीता ॥२८५॥

विलाप—

मिलेॲा कोई जवाब न जद अगोँ, झार झार बह के फिर रोण लगे।
हाए प्यारी सीता मैरी गई कित्थे, चीकाँ मार बेहाल फिर होण लगे ॥२८६॥
पता लगदा किधरे नहिँ कोई, बैह्र फिकर विच जान डुबोण लगे।
पानी हञ्जू दे नाल *दिलशाद* बैह के, मल-मल दाग़ जुदाई दे धोण लगे ॥२८७॥

लक्ष्मण का निवेदन—

हत्थ जोड़ खड़ा लछमन कोल हैसी, कैंह्दा केॲा माह्राज फरमा रहे ओ।
इत्थे बाज रब दे दस्सो है केहड़ा, एह किस नूँ तुस्सी सुणा रहे ओ ॥२८८॥
चलो सीता नूँ चल के ढूँडिए जी, इत्थे बैठ के केॲा बना रहे ओ।
जासी ढूँडिआँ मिल *दिलशाद* सीता, रखो हौसला किऊँ घबरारहे ओ ॥२८९॥

रामचन्द्र का वचन—

नहिँ सुझदा लछमना कुझ मैनूँ, ऐंवेँ पेॲा नसीअताँ दस्स नाहीँ।
सीता बाज नहिँ आउँदा चैन मैंनूँ, सुञाँ दिल मैरा मैरे वस नाहीँ ॥२९०॥
दिस्से चार चुफेर अन्धेर भाई, मैरे हाल नूँ वेख के हस नाहीँ।
दरद हिजर दी करद विच जिगर लगी, रही कोई *दिलशाद* भुक्ख-तस नाहीँ ॥२९१॥

लक्ष्मण का वचन—

कदमाँ विच तुसाडड़े मैं हाझर, झरा दिल नूँ देॲो हुण धीर तुस्सी।
तलाश कीतिआँ जाएगी मिल सीता, होए किऊँ माह्राज दिलगीर तुस्सी ॥२९२॥
इत्थे बैठ के करांगे केॲा अस्सी, करो सोच झरा मैरे वीर तुस्सी।
ढायाँ दिल *दिलशाद* नहिँ कुझ बनदा, करो उठके कोई तदबीर तुस्सी ॥२९३॥

जटायु से भेंट—

विच जंगल तलाश फिर करन लगे, पए उठ के टुर भिरा दोवेँ।
डिग्गा पेआ जटाऊ सी जिस जा ते, उस जा ते पौंह्चदे आ दोवेँ ॥२९४॥

१. शून्य। २. हारने से।

होके ज़ख्मी[1] जटाऊ सी तड़फ रेहा, कोल उसदे पुछदे जा दोवें ।
किसने मारेऑ दस्स *दिलशाद* तैनूं, कैंहदे अपना हाल सुणा दोवें ॥२९५॥

जटायु का वचन—

जटाऊ आखेऑ केआ माह्राज दस्साँ, मैं ताँ बैठा हाँ जाण गँवा के जी ।
सिरफ दर्शन तुसाडड़ा करन कारन, रखे सास मैं हीन अटका के जी ॥२९६॥

सक्केऑ पेश नहिँ चल कोई झोर मैरा, रावण सीता लै गेऑ चुरा के जी ।
करनी मेहरबानी *दिलशाद* इतनी, मैरी लाश नूँ जाना जला के जी ॥२९७॥

मैं साँ जंगल दे विच माह्राज बैठा, उत्थे एह आवाझ सुण पाया मैं ।
सीता रोवँदी आप नूँ याद करके, रोणा उस दा सुण घबराया मैं ॥२९८॥

उड के रावण दे सिर ते जा पौहँता, चलदे रथ नूँ चा अटकाया मैं ।
कीती सख़्त लड़ाई *दिलशाद* जाके, समझो उस दा अकल भुलाया मैं ॥२९९॥

गुस्से नाल रावण उठ खड़ा होया, मैनूँ मार तलवार चा फट्टेऑं जी ।
जुर्रत फुर्रत मैरी सारी दूर करके, पर कट झमीन ते सट्टेऑ जी ॥३००॥

रही हिम्मत विच जिस्म दे न जदों, तदों पिछे माह्राज मैं हट्टेऑ जी ।
रावण नाल लड़ाई *दिलशाद* करके, वेखो मैं नफा जेहड़ा खट्टेऑ जी ॥३०१॥

रामचन्द्र का खेद—

लेऑ सुण जटाऊ थीं हाल जदोँ, फिर बैठ के करन वरलापे[2] लगे ।
लैंदे रख जटाऊ नूँ विच झोली, पूँजने[3] खून उसदा हत्थीँ आप लगे ॥३०२॥

जिसने इस नूँ मारेऑ भाई लछमन, किऊँ न उसनूँ इसदा सराप लगे ।
नहिँ खबर *दिलशाद* है कौन रावण, पता किवेँ सानूँ चुपचाप लगे ॥३०३॥

जटायु का वचन

रावण है र ना बड़े बल वाला, कहे जटाऊ भारा झबरदस्त है जी ।
हत्थ उसनूँ नाहँ कोई पा सकदा, हर इक नूँ कीता उस पर्स्त[4] है जी ॥३०४॥

१. ज़ख्मी किया । २. विलाप । ३. पोंछने । ४. पराजित ।

लंका विच उसदी है राजधानी, झोर आपनै विच ओ मस्त है जी।
लै के सीता नूँ गेआ *दिलशाद* ओही, आके विच बन दे कमबख़्त[1] है जी ॥३०५॥

जटायु की मृत्यु—

दित्ती जान जटाऊ ने विच झोली, कीती फिर न उस कोई गल यारा।
सभें अन्त दरशन कर मुक्त होया, मिलिआ वेख उसनूँ कैसा फल यारा ॥३०६॥
चिख़ा[2] जोड़ जलाँउदे लाश उसदी, करन देर न फिर इक पल यारा।
हत्थीँ आप संस्कार *दिलशाद* करके, उठ अगाँ नूँ पए फिर चल यारा ॥३०७॥

कवि-वचन—

दोवेँ पए फिरदे विच जंगलां दे, बिना रब दे नहिँ मद्दगार कोई।
पता सीता दा लगदा नहिँ किधरे, नझर आउँदा नहिँ आसार कोई ॥३०८॥
कदी रोवँदे ते कदी हसदे नीँ, सुणदा उन्हाँ दी नहिँ पुकार कोई।
विच सुख *दिलशाद* हझार साथी, वकत दुःख नहिँ बनदा यार कोई ॥३०९॥

जंगल फिरदेआँ नूँ होए दिन बौह्ते, रब आनैं[3] सबब बनान लगा।
खतरनाक ऐसे भारे विच बन दे, ग़मख़्वार[4] रफ़ीक़[5] मिलान लगा ॥३१०॥
दिन दुःखां दे भी पूरे होण लगे, समाँ खुशिआँ दा हुण आन लगा।
उसनूँ दस्स परवाह *दिलशाद* किस दी, जेह्ड़ा दिल थीँ शरण भगवान लगा ॥३११॥

अरण्य काण्ड समाप्त।

१. मन्दभाग्य। २. चिता। ३. आकर। ४. सहानुभूति रखने वाले। ५. साथी।

किष्किन्धा काण्ड

सुग्रीव का समाचार

बैठा अहा सुग्रीव पहाड़ उत्ते, डर के वाली थीँ जान बचा आपनी।
पंज-सत वज़ीर भी कोल हैसन, बैठे मिल के सभा लगा आपनी ॥ १ ॥

खौफ वाली दे थीँ नस्स आए सारे, लई ग़ार विच्च जगह बना आपनी।
रामचन्दर लछमन नूँ वेख दूरोँ, दित्ती सारेआँ होश भुला आपनी ॥ २ ॥

लगा कैहन सुग्रीव नहिँ झूठ भाई, देवाँ[2] सच्च मैं बात सुणा आपनी।
एह ताँ वाली दे हीन जासूस[3] यारो, सानूँ ढूँडदे शकल वटा[4] आपनी ॥ ३ ॥

दस्सो नस्स के जाविए किस पासे, कित्थे बैठिए जिन्द छपा आपनी।
सोचन बैठ के पए तजवीज़ सारे, रहे अकल *दिलशाद* दौड़ा आपनी ॥ ४ ॥

हनुमान् का वचन—

हनुमान एह सुण के कैहन लगा, तुस्सी केआ एह सब सुणा रहे ओ।
होंदे नहिँ मालूम जासूस एह ताँ, दिल आपना कासनूँ ढाँ रहे ओ ॥ ५ ॥

आवाँ पुछ मैं इन्हाँ थीँ हाल सारा, रक्खो हौसला किऊँ घबरा रहे ओ।
जे जासूस भी हीन ते केआ होया, एडा डर *दिलशाद* किऊँ खा रहे ओ ॥ ६ ॥

सुग्रीव का वचन—

जाओ, उठो, फिर ढिल न करो इत्थे, करो तुस्सी पैह्ले एहो काम जा के।
कित्थोँ आए ते जाउना है कित्थे, समझ सोच के करनी कलाम जा के ॥ ७ ॥

किस वासते फिरन एह विच जंगलाँ, पुछो इन्हाँ थीँ हाल तमाम जा के।
हिकमँत नाल *दिलशाद* लै भेत लैना, करना कम नहिँ तुस्साँ ख़ाम जा के ॥ ८ ॥

हनुमान् द्वारा प्रश्न —

ब्राह्मण वेस बना के विच राह दे, मिलिआ आन अग्गोँ हनुमान भाई।
आए कित्थोँ माहराज है कित्थे जाना, लगा पुछन विच शीरीँ[9] ज़बान भाई ॥ ९ ॥

---

१. कंदरा। २. दूँ। ३. गुप्तचर। ४. बदल कर। ५. जाएँ। ६. गिरा।
७. उपाय। ८. कच्चा। ९. मधुर।

फिरो विच जंगलाँ पए किऊँ तुस्सी, करो आपना हाल बेआन भाई ।
हो सके ताँ करांगा मदद मैं भी, लगा एह *दिलशाद* सुणान भाई ॥१०॥

रामचन्द्र का वचन—

कैंह्दे केआ दस्सिए असी हाल तैनूं, कौन सुणदा ई दुःख दुखारेआँ दे ।
औखे वकत नहिँ होवँदा कोई साथी, पुछ हाल न तूँ औगुणहारेआँ[1] दे ॥११॥
अस्सी आपने हाल विच मस्त फिरदे, विछड़ गए सज्जन साथों वारेआँ दे ।
करिए पए तलाश *दिलशाद* उस दी, खोज शायद मिल जाण प्यारेआँ दे ॥१२॥

रावण है राजा कोई विच लंका, लै सीता नूँ गेआ चुरा के ओ ।
असी ढूँडदे उसे नूँ हाँ फिरदे, नहिँ खबर बैठा कित्थे जा के ओ ॥१३॥
आहे करदे गुज़रान विच बन असी, गेआ दुख सानूँ एह पा के ओ ।
नींदर भुक्ख *दिलशाद* आराम नाहीँ, गेआ तीर कलेजड़े ला के ओ ॥१४॥

हनुमान् का वचन—

लेआ सुण माह्‌राज मैं हाल सारा, करसाँ मदद मैं भी जित्थों तीकँ[3] होसी ।
चलो कोल सुग्रीव दे हुण तुस्सी, सारा कम्म तुसाडड़ा ठीक होसी ॥१५॥
तुस्साँ वाँग ओ भी समझो है दुःखिया, विच दुःख दे ओ भी शरीक होसी ।
उसे भेजेआ है *दिलशाद* मैनूँ, बैठा मैरी ओ विच उडीकँ[4] होसी ॥१६॥

इस बन दा है सुग्रीव राजा, इत्थे उसे दा तख़त ते ताज है जी ।
बाली भाई उसदा वड्डे[2] बल वाला, लेआ खोह[5] उसने उस दा राज है जी ॥१७॥
औरत उस दी भी बैठा कर काबू, उस बेशरम नूँ आई न लाज है जी ।
धक्के मार *दिलशाद* निकाल दित्ता, अज ओही सुग्रीव मोहताज है जी ।१८॥

रामचन्द्र का वचन—

जो कैह्न ओ ही मनज़ूर सानूँ, लई मन्न तेरी असाँ गल्ल भाई ।
जिस जा ते है सुग्रीव बैठा, सानूँ कोल उस दे लै चल भाई ॥१९॥

१. अवगुण-युक्त । २. वड्ड । ३. तक । ४. प्रतीक्षा । ५. छीन ।

सुण के दुःख उस दा कहिए दुःख अपना, बहिएं[1] दुःखिए दे नाल रल भाई।
नहिँ आसरा कोई *दिलशाद* साडा, असी आए हैं घरों निकल भाई ॥२०॥

सुग्रीव से भेंट—

होया खुश महावीर एह सुण के ते, कैंह्दा रब सबब[2] बना दित्ता।
बैठा अहा सुग्रीव उदास जित्थे, उसे जा ते चुक पौंह्चा दित्ता ॥२१॥
अगों उठ सुग्रीव ताझीम कीती, उत्ते कदमां दे सीस निवा दित्ता।
हत्थ तुस्साँ दे लाज *दिलशाद* मैरी, हाल आपना सारा सुणा दित्ता ॥२२॥

परस्पर समझौता—

रामचन्दर माह्राज ने पकड़ बाहोँ, लेंआ सुण, कैंह्दे तेरा हाल प्यारे।
बाहाँ पकड़ने दी है लाज तुस्साँ, रखना कहे सुग्रीव खेआल प्यारे ॥२३॥
हनुमान ने मौकेआँ[3] वेख के ते, दित्ती तुरत अग्नि उत्थे बाल प्यारे।
आपस विच कसम कर लओ कैंह्दे, सुखन आपने नूँ देना पाल प्यारे ॥२४॥
पैह्ले उठ सुग्रीव सुगन्द कीती, मैरा दम है तुस्साँ दे नाल प्यारे।
दुःख सुख मैरा आप नाल होसी, हटां पिच्छे मैं, केआ मजाल प्यारे ॥२५॥
परम ब्रह्म परमात्मा है साखी[4], करसां सदके[5] जान ते माल प्यारे।
हुकम आप दा मन्नसाँ सिर उत्ते, होसी कदी न टालमटाल प्यारे ॥२६॥
रामचन्दर माह्राज फिर कैह्न लगे, समझ मैरी भी एहो मसाल प्यारे।
रखीं याद *दिलशाद* एह बात मैरी, करसां दूर सभ तेरे मलाल प्यारे ॥२७॥

सुग्रीव का वचन—

जित्थे नीत परीत दी हो जावे, नेक बद दी करनी टटोल[6] चाहिए।
जिस नूँ मित्र बुलाविए चा मुँहों, जिंद जान देनी उसतों घोल[7] चाहिए ॥२८॥
रखिए शक माह्राज न विच दिल दे, गल्ल शक वाली देणी खोल चाहिए।
हटन मरद न कदी *दिलशाद* पिच्छे, तोड़[8] आपना चाढ़नां[9] बोल चाहिए ॥२९॥

१. बैठें। २. निमित्त। ३. अवसर। ४. साक्षी। ५. न्योछावर। ६. जाँच।
७. न्योछावर। ८. सिरे तक। ९. पहुँचाना।

राज भाग मैरा सारा खंस के ते, दित्ता कढ बाली मैनूँ घर विचोँ ।
मैरी प्राणप्यारी रानी आही जेहड़ी, लई कढ ओ भी मेरे बरं विचोँ ॥३०॥

हरदम अग फराक दी जान साड़े, रहे निकलदी आह जिगर विचोँ ।
नहिँ जा मैनूँ कोई रैहण जोगी, खून टपकदा पेॲा बसरं विचोँ ॥३१॥

मैनूँ जीउँदा समझो न तुस्सी, रेहा मैं माहराज हां मर विचोँ ।
नज़र मेहर दी नाल *दिलशाद* तुस्साँ, देना कढ मैनूँ इस डर विचोँ ॥३२॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माहराज फिर कैहण लगे, खौफ बाली दे थीँ तू डर नाहीँ ।
देसां मार झरूर मैं उस ताईँ, झरा विच दिल रक्ख खतर नाहीँ ॥३३॥

केॲा चीझ बाली है भिरा तेरा, इक तीर मैरा सके जर नाहीँ ।
आपना कर तूँ राज *दिलशाद* बैह के, ऐवेँ डर डर के पेॲा मर नाहीँ ॥३४॥

सुग्रीव द्वारा भूषण प्रस्तुत करना—

होया खुश सुग्रीव एह सुण के ते, उत्ते कदमाँ दे सीस नवान लगा ।
झेवरँ आहे पंज-सत्तं जो कोल उसदे, अगे रख के ओही दिखलान लगा ॥३५॥

आँदे चुक एह वानरां वन विचोँ, तुस्सी करो पैहचान सुणान लगा ।
औरत इक माहराज लै गया रावण, पते ठीक *दिलशाद* ओ लान लगा ॥३६॥

कवि-वचन—

रक्खे सामने जद सुग्रीव झेवर, लगी वेख के दिल नूँ चोट है जी ।
लाए पते सुग्रीव ने ठीक सारे, कीती विच न कोई मिलोटं है जी ॥३७॥

रावण सीता नूँ लै झरूर गेॲा, रॅबा हुण मैनूँ तेरी ओट है जी ।
लगे रोण *दिलशाद* बेताब हो के, गिरेॲा दिल थीँ सबर दा कोटं है जी ॥३८॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण से वचन—

लछमन वीर मैरे तू पैहचान झेवर, मैनूँ वेख के होश न कोई रही ए ।
केॲा जाना के होवसी नाल मैरे, बिजली दुःखाँ दी त्रुट के आन पई ए ॥३९॥

---

१. छीन । २. आलिंगन । ३. जलाती है । ४. दुःख का उच्छ्वास । ५. नेत्र ।
६. भय । ७. आभूषण । ८. पांच-सात । ९. मिलावट । १०. आच्छादन ।

अकल, फिकर, सबर होए दूर मैथों, सुध-बुध मैनूं सारी भुल गई ए।
रावण बाझ नहिं कोई लै गेआ सीता, बात सच *दिलशाद* सुग्रीव कही ए ॥४०॥

लक्ष्मण का वचन—

एह ताँ मुँह ते गल दे हीन झेवर, सकदा इन्हाँ नूँ नहिं पैह्चान मैं ताँ।
कदम माताँ दे नित उठ वेखदा साँ, कीता होर[१] नहिं किधरे धेआन मैं ताँ ॥४१॥
होंदे पैराँ दे ताँ अरज़ कर देंदा, होया वेख के एह हैरान मैं ताँ।
कदमाँ बाज *दिलशाद* नहिं खबर कोई, करसाँ झूठ न कदी बेआन मैं ताँ ॥४२॥

कसम धर्म दी है माहराज मैनूं, झेवर एह पैह्चान मैं सकेआ नहिं।
सुबह उठ नित वेखदा कदम है साँ, मुँह माताँ वलों कदी तकेआ नहिं ॥४३॥
चलो करिए मुकाबला नाल रावण, है ओ कौन साथों जेह्ड़ा झुकेआ नहिं।
आई मौत *दिलशाद* बेशक उस दी, नाले कदी दरिआ नूँ डकेआ नहिं ॥४४॥

रामचन्द्र का वचन—

कराँ केआ तदबीर नहिं कोई सुझदी, नाहिं दिल नूँ आवे सबर भाई।
नहिं मालूम लंका है किस पासे, नहिं राह दी कोई खबर भाई ॥४५॥
सीना[२] चाक[३] फराक दे विच होया, चढ़ेआ दुःखाँ दा सिर ते अंबर[४] भाई।
दुश्मन सामने नहिं *दिलशाद* कोई, कराँ किस नूँ झेरो झबर भाई ॥४६॥

सुग्रीव का वचन—

उठ के अरज़ सुग्रीव हत्थ जोड़ कीती, धरो धीर न दिल नूँ ढाओ[५] तुस्सी।
मैनूँ रावण दा हाल है खबर सारा, रक्खो हौसला न घबराओ तुस्सी ॥४७॥
चलसाँ नाल मैं आपदे फौज लै के, ज़रा फिकर न दिल ते लाओ तुस्सी।
मेरे दुःखां नूँ दूर *दिलशाद* कर के, मेरी जान नूँ चा बचाओ तुस्सी ॥४८॥

रामचन्द्र का वचन —

लगे जिस नूँ जाणदा है सोई, लई सुण जेह्ड़ी तेरे नाल होई,
कर फिकर सुग्रीव न हुण कोई, रक्ख हौसला दिलों न हार मित्रा।

१. ओर। २. छाती। ३. टुकड़े-टुकड़े। ४. मेघ। ५. गिराओ।

कराँ सुख़न हुण एह झबान थीँ मैं, करसाँ मदद तेरी दिल जान थीँ मैं,
बाली विदा कर देसाँ जहान थीँ मैं, कराँ नाल एह तेरे करार[1] मित्रा ॥४९॥

तैनूँ दुःख हुण कोई न सैहून देसाँ, बाली जिउँदा कदी न रैहून देसाँ,
उसनूँ डोब विच मौत दे वैहून देसाँ, समझ सच्च एह मैरी गुफ्तार[2] मित्रा ।

होसी ओही *दिलशाद* जो रब भासी[3], तेरा राज तैनूँ फिर मिल जासी,
कीते झुलम दी झालम सझा पासी[4], दे तू पिछले दुःख वसार[5] मित्री ॥५०॥

समझो सच्च सुग्रीव जी गल्ल मैरी, कीता नाल किसे मैं नहिँ छल कदी ।
सच्च बोलना सदा है धर्म मैरा, कीती मैं झूठी नाहँ गल कदी ॥५१॥

झिन्दा बाली नूँ रैहून न मैं देसाँ, भावें इन्दर ब्रह्मा आवे चल कदी ।
जावे चढ़ *दिलशाद* असमान भावें, या ओह जा छप्पे विच जल कदी ॥५२॥

सुग्रीव का वचन—

किस तौर देसो तुस्सी मार बाली, ओ ताँ है वड्डा बलवान् प्यारे ।
सुणो ग़ौर दे नाल ख़ेआल कर के, उस दे झोर दा कराँ बेआन प्यारे ॥५३॥

दुन्दभि राखश इक अहा भारा, दित्ता ब्रह्मा उस नूँ वरदान प्यारे ।
हाथी दस हझार दा झोर उस नूँ, झरा सुणना कर धेआन प्यारे ॥५४॥

सुट्टे रुक्ख उखाड़ के घास वाँगोँ, लगा परबताँ[6] नूँ ओ हिलान प्यारे ।
सैानी दिस्से न उस नूँ कोई अपना, हर इक नूँ लगा सतान प्यारे ॥५५॥

इक दिन शाह बाली दे कोल जा के, लग्गा उस नूँ एह सुणान प्यारे ।
अग्गे उस दे ठैहरदा न कोई, हैसी सख़त बला तूफान प्यारे ॥५६॥

मैनूँ जोड़ आपना नहिँ कोई मिलदा, थका ढूण्ड मैं विच जहान प्यारे ।
एही सुण्या है मैं बोह्तेरेआँ थीँ, है तूही भारा पैहलवान प्यारे ॥५७॥

समझेँ आपने तुल न होर कोई, रखें झोर दा तूँ अभमान प्यारे ।
कर नाल मैरे दो-हत्थ[8] आ के, निकल आ जलदी विच मैदान प्यारे ॥५८॥

१. प्रतिज्ञा । २. वचन । ३. चाहेगा । ४. पाएगा । ५. भुला । ६. पर्वत ।
७. बराबर । ८. मुकाबला ।

आया लड़न कारण मैं हाँ इत्थे, लेआँ लभ मैं आपना हान प्यारे ।
हटदे मरद वेङ्गारेआँ[1] नहिँ पिच्छे, न ओ औरताँ वाँग शरमान प्यारे ॥५९॥
मैरे ज़ोर नूँ भी लै वेख ज़रा, जे तूँ हैं शाहज़ोर जवान प्यारे ।
गल्ल राखश दी सुण के शाह बाली, खड़ा सामने उसदे आन प्यारे ॥६०॥
राखश वेख के गज्जेआ शेर वांगोँ, लग्गा कुदँ[3] के शोर मचान प्यारे ।
वांग चिड़ी दे राखश नूँ पकड़ बाली, लग्गा गेंद दे वाँग रुलान प्यारे ॥६१॥
कदी तरफ असमान दे चुक सुट्टे, लग्गा ज़मीन ते कदी पटकान प्यारे ।
कदी सट्ट के झपदा[5] हत्थ उत्ते, पेआ खेडदा वाँग तिफलान[6] प्यारे ॥६२॥
राखश दम नूँ तरोड़ बेदम होया, निकल उसदे गए प्राण प्यारे ।
उत्थों चुक वगाँया इस जा उत्ते, वेखो एह उसदे उस्तख़्वान[8] प्यारे ॥६३॥
करदा इक रिशी इत्थे तप है सी, अहा मगन विच भजन भगवान प्यारे ।
रिशी राखश दी लाश नूँ वेख के ते, होया नाल गुस्से कैह्रवान प्यारे ॥६४॥
गुस्से विच सराप एह चा देंदा, लओ सुण मैरे मेह्रबान प्यारे ।
सुट्टेआ जिस इस लाश नूँ चुक इत्थे, कीता दिल मैरा परेशान प्यारे ॥६५॥
इत्थे आउसी ताँ मर जाउसी ओ, होसी सच्च एह मैरी ज़बान प्यारे ।
बाली सुण के हाल सराप संदा, कर अरमान होया पशेमान प्यारे ॥६६॥
इत्थे आ नहिँ सकदा ओ कदी, है एह महफूज़[9] मकान प्यारे ।
इस वासते मैं भी बैठ इत्थे, लग्गा आपनी जान बचान प्यारे ॥६७॥
ज़ोर उस दे दी नहिँ हद कोई, देवे तवंक[10] हिला असमान प्यारे ।
देसो मार *दिलशाद* किस तौर तुस्सी, इस्से फिकर विच मैं हैरान प्यारे ॥६८॥

एह हड्डिआँ हीन माह्राज ओही, तुस्सी उठ के ते कोल आ वेखो ।
जासी हो मालूम फिर तुस्साँ ताईँ, आ के कोल मैरे एह उठा वेखो ॥६९॥
मैरी गल्ल दा भी हो यकीन जासी, ज़रा इक नूँ तुस्सी हिला वेखो ।
सुट्टी बाली *दिलशाद* सी लाश एहो, करो वज़्न[11] इस दा हत्थ ला वेखो ॥७०॥

---

१. समान बल तथा आयु वाला । २. ललकारने पर । ३ उछल । ४. फैंकने । ५ पकड़ता । ६. बच्चों । ७. फैंका । ८. हड्डिआँ । ९. सुरक्षित । १०. पहाड़ । ११. जाँच-तोल ।

रामचन्द्र का वचन—

ठोकर पैर दी मार के रामचन्दर, वाँग कक्ख दे हड्डी उड़ा देंदे।
गई हड्डी सुग्रीव है दस्स कित्थे, अग्गों हस के एह सुणा देंदे ॥७१॥
गए समझ अज़माइश एह कर रेहा, शक उस दे सारे हटा देंदे।
दस्स होर *दिलशाद* के वेखना ई, जलदी बोल के कहो फरमा देंदे ॥७२॥

सुग्रीव का वचन—

इस हड्डी दे विच नहिँ कुझ रेहा, एह ताँ मुद्दताँ दी इत्थे पई हुई ए।
ताहीँ कक्ख दे वाँग उठाई तुस्साँ, पई पई इत्थे सुक्क[१] गई हुई ए ॥७३॥
सुक्कीआँ वज़न माह्राज नहिँ कोई रैहूंदा, विचों खोखली एह हो रही हुई ए।
अजे नहिँ यकीन *दिलशाद* आउँदा, जेहड़ी गल्ल तुस्साँ मैनूँ कही हुई ए ॥७४॥

ऐसा तीर माह्राज चलाओ तुस्सी, द्रखताँ सत्ताँ[२] थीं निकल जो पार जावे।
देवे तीर जद चीर द्रखत सत्ते, समझो तद मैनूँ एतबार आवे ॥७५॥
अक्खीँ आपनी लवाँ एह वेख जदों, बेकरार फिर दिल करार पावे।
जावे हो यकीन *दिलशाद* मैनूँ, सज़ा जुरम दी फिर सज़ावार पावे ॥७६॥

रामचन्द्र का वचन—

जो केहा सो अस्साँ ने सच्च केहा, साडी झूठ न समझ ज़बान भाई।
तीर धनश दे विच फिर जोड़ के ते, सुग्रीव नूँ लगे दिखलान भाई ॥७७॥
लगा ई होण हवा हुण तीर मैरा, रक्खीँ इस दे वल धेआन भाई।
इतना आख के तीर चला दित्ता, गेआ गूँज ज़मीन असमान भाई ॥७८॥
तीर चीर द्रखत कई निकल गेआ, उत्थे सत्ताँ दा केआ बेआन भाई।
दित्ता तीर पहाड़ हिला सारा, होया वेख सुग्रीव हैरान भाई ॥७९॥
कैहूंदा नहिँ डिठ्ठा अज तक किधरे, ऐसे ज़ोर वाला इन्सान भाई।
देसन मार ज़रूर बेशक बाली, गेआ हो मैनूँ इतमीनान[३] भाई ॥८०॥
अग्गे इन्हाँ दे केआ है चीज़ बाली, देसन कड्ढ एह इसदे प्राण भाई।
गए बदल ख़ेआल फिर वेख उसदे, लग्ग पेआ आपूँ डर खान भाई ॥८१॥

१. सूख। २. सातों। ३. आश्वासन।

किधरे मार मुंका न देण मैनूँ, लग्गा दिल दे विच घबरान भाई।
नाल खौफ दे कंबन *दिलशाद* लग्गा, डिग्गा उत्ते कदमाँ दे आन भाई ॥८२॥

सुग्रीव का वचन—

लग्गा कैह्‌न कदमाँ उत्ते डिग के ते, मैनूँ आसरा आप दी ज़ात दा वे।
देसो मार बेशक ज़रूर वाली, हुण यकीन मैनूँ इस बात दा वे ॥८३॥
होए फिकर माह्‌राज सब दूर मैरे, ते मेहमान वाली दिन या रात दा वे।
सकसी बच *दिलशाद* न तुस्साँ कोलों, भावें टुकड़ा ओ अफात दा वे ॥८४॥

आओ बैठ माह्‌राज सलाह करिए, करना केह्‌ड़ा चाहिए सानूँ कम पैह्‌ले।
सुण के कैह्‌न लग्गे फिर रामचन्दर, होना दूर चाहिए तेरा ग़म पैह्‌ले ॥८५॥
उठ बाली नूँ तूँ ललकार जा के, मार विच मैदान दे ख़म पैह्‌ले।
होसन कम्म असाडड़े पए पिच्छों, कीती नाल तेरे है कसम पैह्‌ले ॥८६॥
बोल आपना चाहिए तोड़ अस्सी, तैनूँ मेलिए तेरा सनम पैह्‌ले।
एही दिल दी है *दिलशाद* मरज़ी, करिए बाली दा कम ख़तम पैह्‌ले ॥८७॥

सुग्रीव का बाली से युद्ध—

होके खुश फिर दौड़ सुग्रीव पेॲा, जा के बाली नूँ चा ललकारेॲा सू।
आया निकल मैदान दे विच बाली, मुक्का विच छाती आ के मारेॲा सू ॥८८॥
गरदन पकड़ गिराया ज़मीन उत्ते, मार मार के खूब सँवारेॲा सू।
खा के मार सुग्रीव फिर नस्स आया, तोबा-तोबा *दिलशाद* पुकारेॲा सू ॥८९॥

सुग्रीव का रामचन्द्र से वचन—

इस गल्ल दी खबर न आही मैनूँ, कर मखौल मैरे नाल हसना सी।
डर बाली दा अहा जे विच दिल दे, मैनूँ पैह्‌ले माह्‌राज चा दस्सना सी ॥९०॥
कर के सबर रैंह्‌दा इत्थे मैं बैठा, किस वासते कमर नूँ कसना सी।
ज़ोर आपने दी है सी खबर मैनूँ, खा के मार *दिलशाद* किऊँ नसना सी ॥९१॥

---

१. समाप्त कर। २. सत्ता। ३. भूत-पिशाच। ४. प्रदर्शित कर। ५. उत्साह। ६. प्रिय। ७. समाप्त। ८. त्राहि-त्राहि।

लओ वेख माहूराज जी हाल मैरा, मेरा बदन हिलायाँ नहिँ हिलदा।
होया झखमी सरीर तमाम मैरा, चले खून पेॲआ झरा न ठिलदा ॥९२॥
झबरदस्त बाली मैथोँ है भारा, मैरा झोर उस दे नाल नहिँ चलदा।
कहे तुसाडड़े ते गेॲआ आह्स मैं ताँ, रेहा केॲआ एतबार *दिलशाद* गल्ल दा ॥९३॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माहूराज सुण हाल सारा, कैंह्दे नहिँ मैरा कोई कसूर भाई।
इको जेही तुसाडडी शकल हैगी[3], मैं ताँ वेखदा साँ बैह के दूर भाई ॥९४॥
इस वासते तीर नहिँ मारेॲआ मैं, मत के तूहीँ होंदोँ चकनाँ-चूर भाई।
रख निशान *दिलशाद* जा फिर हुण तूँ, देसाँ मार इस वार झरूर भाई ॥९५॥

सुग्रीव का पुनः लड़ने जाना—

गेॲआ लड़न सुग्रीव फिर वार दूजी, हार फुल्लाँ दे गल विच पा के जी।
वाँग शेर दे दिल दलेर कर के, गज्जेॲआ विच मैदान दे जा के जी ॥९६॥
सुणी आवाझ सुग्रीव दी जद बाली, निकल बाहिर आया गुस्सा खा के जी।
आयों फिर बेशरमा किऊँ इत्थे, पैह्ले नस्सेओँ जान बचा के जी ॥९७॥
अज्ज जिउँदा छोड़साँ न तैनूँ, देसाँ खाक दे विच मिला के जी।
लेॲआ पकड़ सुग्रीव नूँ फिर बाली, मारे उत्ते झमीन पटका के जी ॥९८॥
गेॲआ बैठ छाती उत्ते चढ़ के ते, लेॲआ हेठ सुग्रीव दबा के जी।
रामचन्दर माहराज भी आहे बैठे, हेठ द्रखत दे शिस्त लगा के जी ॥९९॥
दित्ता तीर कड्ढा चला उत्थोँ, छाती विच निशाना जमा के जी।
बैठा पकड़ सीना तीर पुर कीना, सुट्टेॲआ वाली नूँ उस गिरा के जी ॥१००॥
आया झखम कारी गई होश मारी, लग्गा करन झाँरी घबरा के जी।
हेठों रुक्ख दे उठ के रामचन्दर, खड़े कोल फिर उस दे आ के जी ॥१०१॥
रामचन्दर माहूराज नूँ वेख के ते, लग्गा कैहून बाली एह सुणा के जी।
बेगुनाह[6] नूँ मारेॲआ किऊँ तुस्साँ, मैरी देॲओ तकसीर बता के जी ॥१०२॥
मेरे नाल आही तुस्साँ झिद केह्ड़ी, देॲओ दस्स झरा फरमा के जी।
छप के मारेआ किऊँ *दिलशाद* मैनूँ, आया हत्थ के पाप कमा के जी ॥१०३॥

१. रुकता था। २. था। ३. है। ४. टुकड़े-टुकड़े। ५. विलाप। ६. निरपराध।

बाली का वचन—

जेह्ड़ा छप के मारेऑ तीर मैनूँ, समझो तुस्साँ एह बड़ा अधरम कीता।
सूरज वंस दी कुल विच जन्म लै के, खोटा[1] एह माह्राज है करम कीता ॥१०४॥
होके सामने मारना अहा मैनूँ, केह्ड़ी गल्ल दा दस्सो खाँ भरम[2] कीता।
करन छप के वार *दिलशाद* [3]गीदी, तुस्साँ ज़रा भी नहिँ है शरम कीता ॥१०५॥

खबर है सारी माह्राज मैनूँ, है तुस्साँ दे दिल विच ग़म केह्ड़ा।
किस तरह लड़सी जा के नाल रावण, है ग़रीब सुग्रीव विच दम केह्ड़ा ॥१०६॥
वेख रावन नूँ निकलसी जान इस दी, उस दे सामने मारसी ख़म केह्ड़ा।
यारी मरद दे नाल लगाउनी सी, करसी दस *दिलशाद* एह कम्म केह्ड़ा ॥१०७॥

करदे हुकम माह्राज जे चाँ[4] मैनूँ, रावण पकड़ के मैं मंगवा देंदा।
मेरे सामने केॲआ सी चीज़ रावण, तुरंत[5] कदमाँ दे विच पौंह्चा देंदा ॥१०८॥
देंदा होण तकलीफ न कोई तुस्साँ, इत्थे बैठ के सीता मिला देंदा।
मन्नदा केहा *दिलशाद* जे न रावण, लंका सणे[6] समुंदर डुबा देंदा ॥१०९॥

यारी नाल सुग्रीव दे लाई तुस्साँ, नफा तुस्साँ नूँ केॲआ पौंह्चाएगा ओ।
नाल डर दे निकलसी जान उस दी, हत्थ रावण नूँ केॲआ जा पाएगा ओ ॥११०॥
उस दी झल न सकेगा झाल कदी, किधरे बैठ के जान छपाएगा ओ।
दित्ता मार *दिलशाद* जिस वासते मैं, कदी कम न तुस्साँ दे आएगा ओ ॥१११॥

रामचन्द्र का बाली से वचन—

रामचन्दर माह्राज ने सुण के ते, केॅहा सुण बाली कर धेॲआन प्यारे।
नहिँ धरम अधरम दी खबर तैनूँ, लग्गा केॲआ एह मैनूँ सुणान प्यारे ॥११२॥
गुरु बाज नहिँ होवँदी गँत्त[7] कदी, पँत[8] शाह दे बाज न जान प्यारे।
तेरा राज मातहत अजुध्या दे, उत्ते असी तेरे हुक्मरान प्यारे ॥११३॥

---

१. बुरा। २. संदेह। ३. कायर। ४. यदि। ५. शीघ्र। ६. समेत।
७. गति। ८. मान।

सज़ा उन्हाँ नूँ मिलनी ज़रूर चाहिए, बेगुनाहाँ नूँ जो सतान प्यारे।
ज़ालम पापी बदकार नूँ मार देना, धर्मशासतर दा फ़रमान प्यारे ॥११४॥

छोटे भाई दी इस्त्री नाल जो तूँ, रंग रलिआँ लग्गा मणान प्यारे।
ओ भरजाई[1] छोटी बेटी आही तेरी, लई पाप उसे तेरी जान प्यारे ॥११५॥

छोटा भाई फरज़ंद दे वाँग होंदा, वड्डा भाई है बाप समेआँन[2] प्यारे।
मैनूँ तेरी इमदाद दी लोड़ केहड़ी, रखसी लाज मेरी भगवान प्यारे ॥११६॥

है सुग्रीव कमज़ोर ताँ केॲा होया, है मौजूद मेरा धनश-बान प्यारे।
मरण आपने दा कर ग़म नाहीँ, नाहिँ रख विच दिल अरमान प्यारे ॥११७॥

समझ पाप तेरे होए दूर सारे, मनु रिशी दा है दरिष्टान[3] प्यारे।
मरे राजेआँ दे हत्थीँ आ जेहड़ा, जावे सिद्धा विच सुरग[4] पैह्चान प्यारे ॥११८॥

आहें ज़ोर दे विच मग़रूर फिरदा, कीता चूर तैनूँ अभमान प्यारे।
देंदा मार दिलशाद हंकार जलदी, वले[5] समझदा नहिँ इनसान प्यारे ॥११९॥

बाली का वचन—

लई गल्ल जद इतनी सुण बाली, गई होश उसनूँ फिर आ प्यारे।
कैह्दा सच बेशक एह केहा तुस्साँ, मैं थीँ होई ज़रूर ख़ता[6] प्यारे ॥१२०॥

मैं ताँ ज़ोर अपने विच मस्त है साँ, नेकँ-बद[7] दी खबर न का प्यारे।
इस बार जद निकलन बाहर लग्गा, रानी पकड़ के लेॲा अटका प्यारे ॥१२१॥

लग्गी कैह्न अज जाओ न बाहर तुस्सी, दित्ता साफ एह उस सुणा प्यारे।
रामचन्दर माह्राज दे नाल सुणेॲा, यारी लाई सुग्रीव लगा प्यारे ॥१२२॥

ज़ोर उन्हाँदड़े दे नहिँ हद्द कोई, ब्रह्मण्ड नूँ देण हिला प्यारे।
मददगार सुग्रीव दे हीन ओही, ताहीँ रेहा ओ अज बुला प्यारे ॥१२३॥

बिनाँ हौसले कदी ओ आउँदा न, गेॲा कल हैसी मार खा प्यारे।
चलसी ज़ोर न उन्हाँ दे नाल कोई, जान देॲोगे मुफ्त गँवा प्यारे ॥१२४॥

मन्नो वासता अज न बाहर निकलो, दित्ता आख रानी एह सफा प्यारे।
हैसी ज़ोर दा सख़त ग़रूर मैनूँ, दित्ती होणी ने अकल भुला प्यारे ॥१२५॥

---

१. भौजाई। २. समान। ३. दृष्टान्त। ४. स्वर्ग। ५. परन्तु। ६. ग़लती। ७. अच्छे-बुरे।

मन्नी गल्ल न उसदी मैं कोई, ओ ताँ रही सी वौह्त समझा प्यारे ।
आया निकल मैदान दे विच्च जलदी, पॅल्ला झोर दे नाल छुड़ा प्यारे ॥१२६॥

इत्थे आन के दम न लैण मिलिआ, दित्ता मार के तुस्साँ मुक्का प्यारे ।
हैसी झिद केहड़ी तुस्साँ नाल मैरे, झरा बोल के देॲो फरमा प्यारे ॥१२७॥

हो के सामने जे तुस्सी वार करदे, मैं भी देउँदा मझा चखा प्यारे ।
हत्थ सक्केॲा मैं न कर कोई, रेहा एही अफसोस जला प्यारे ॥१२८॥

वरॅम दिल दा दिल दे विच रेहा, हाए बेखबर नूँ मारेॲा चा प्यारे ।
इक दिन मरना माह्‌राज झरूर हैसी, रैह्णा इत्थे नहिँ किसे सदा प्यारे ॥१२९॥

कोई अज्ज मोया कोई कल मरसी, नहिँ किसे दी कोई बॅक्का प्यारे ।
लैंदा कड्ढ *दिलशाद* अरमान दिल दा, मरदा न एह खा के ताँ प्यारे ॥१३०॥

रैह्सी गल्ल झरूर एह विच दुनिआ, रामचन्दर भी नहिँ हत्थ पा सके ।
छप के उन्हाँ भी मारेॲा अहा बाली, सनमुख हो नहिँ तीर चला सके ॥१३१॥

इस विच झूठ भी नहिँ माह्‌राज कोई, सामने नहिँ मैरे तुस्सी आ सके ।
हैसी झोर *दिलशाद* जे विच तुस्साँ, दस्सो किऊँ नहिँ फिर दिखला सके ॥१३२॥

नहिँ आपने मरण दा ग़म मैनूँ, सुलग जिसमॅं विच्च मोह दी अग्ग रही ए ।
बेटे अंगद नूँ पालेॲा नाल नॅाझाँ, छिकॅं उसे फरझन्द दी लग रही ए ॥१३३॥

सक्केॲा तक नहिँ उसदे वल कोई, जद तक सिर मैरे ते पॅग रही ए ।
हुण बेवस *दिलशाद* नहिँ वस कोई, वेखो झॅग मैरे मुँहों वॅग रही ए ॥१३४॥

दित्ता कर सपुर्द तुसाडड़े मैं, माह्‌राज तुस्साँ झुमावार रैह्णा ।
होवे कोई तकलीफ न अंगद ताईँ, हर वकत उस दा मददगार रैह्णा ॥१३५॥

खिदमत आप दी करेगा ओह पूरी, करदे उस दे नाल प्यार रैह्णा ।
दिलशाद मरणा इक दिन सारेॲाँ ने, इत्थे किसे नहिँ पैर पसॅार रैह्णा ॥१३६॥

---

१. आँचल । २. क्रोध । ३. नित्यता । ४. ताप । ५. सामने । ६. शरीर
७. लाड-प्यार । ८. चिन्ता । ९. पगड़ी । १०. झाग । ११. बह । १२. फैला ।

तू भी सुण सुग्रीव एह लै मैथों[1], सदा दुनिआ ते किसे न जीउना ईं ।
अज मैं मोया कल तूँ मरसें, प्याला मौत दा सब ने पीउना ईं ॥१३७॥
लाए सिर असमान दे नाल जिन्हाँ, इक दिन उन्हाँ भी समझ लै नीउना ईं ।
जांदे मिल पाड़े[2] सारे *दिलशादा*, पाड़ मौत दा किसे न सीउना ईं ॥१३८॥

बुग़ुंझ[3] दिल दे नूँ दिलों दूर करके, रखीं अंगद नूँ आपने कोल भाई ।
मैरे वाँग दिलासड़ा दईं उसनूं, जावे न दिलों कदी डोल भाई ॥१३९॥
कीता ई कौल जेह्ड़ा नाल रामचन्दर, तोड़ चाह्ड़ देवीं आपना बोल भाई ।
हटसें पिच्छे *दिलशाद* ते ख़ता खासें, दुनिआ त्रँकड़ी[5] दा है तोल भाई ॥१४०॥

सुग्रीव का वचन—

रखसाँ अंगद नूँ पुत्तर बना के मैं, उस नूँ कोई तकलीफ न होण देसाँ ।
रैह्सी हसदा खेडदा हर वेले, ज़रा उस नूँ कदी ना रोण देसाँ ॥१४१॥
पढ़सी विद्या नेक उस्ताद कोलों, बुरेआँ कोल न कदी खलोण देसाँ ।
वारिस[6] तखत दा एहो *दिलशाद* होसी, इस दा हक न किसे नूँ खोह्ण देसाँ ॥१४२॥

बाली की मृत्यु—

सकेआ होर न कोई गल्ल कर अगों, बंद गई सू हो ज़बान यारा ।
रंग ज़रद[7] ते जिसम हो सरद गेआ, गई निकल शाह बाली दी जान यारा ॥१४३॥
लग्गे रोवन पिट्टन ढाईं मार सारे, सने अंगद वज़ीर दीवान यारा ।
मैह्लाँ विच *दिलशाद* कुरलॅट[8] पेआ, होया शैह्र सारा सुनसान यारा ॥१४४॥

रानी का विलाप—

शाह बाली दे मरण दी खबर सुण के, ढाईं मार रानी कुरलान[9] लग्गी ।
रोंदी पिट्टदी निकल के बाहर आई, बुकं[10] मिट्टी दे भर सिर पान लग्गी ॥१४५॥
उत्ते लाश दे आण के डिग पई ए, रो रो के हाल गँवान लग्गी ।
करे वैण[11] *दिलशाद* बेचैन[12] होके, हञ्जू वाँग बरसात बरसान लग्गी ॥१४६॥

---

१. झुकना । २. फाड़ । ३. द्वेष । ४. धीरज । ५. तराज़ू । ६. अधिकारी । ७. पीला । ८. चीत्कार ९. विलाप करने । १०. अञ्जलि । ११. विलाप । १२. अशान्त ।

मन्नी गल्ल मैरी नहिँ कोई तुस्साँ, मैं ताँ बौहुत माहराज समझा रही साँ ।
रही आख मैं बाहर न जाओ तुस्सी, हत्थ जोड़ के वास्ते पा रही साँ ॥१४७॥

मददगार सुग्रीव दा है कोई, बारम्बार मैं एह सुणा रही साँ ।
जासी पेश *दिलशाद* न नाल उस दे, पल्ला पकड़ के ते अटका रही साँ ॥१४८॥

मुँहों बोल के करो हुण गल्ल कोई, चुप-चाप पियां[1] ! किऊँ हो रहे ओ ।
ज़रा खोल अक्खीँ वेखो हाल मैरा, होके मस्त किऊँ नींद विच सो रहे ओ ॥१४९॥

खेॅआल किस पासे अज ला बैठे, विच दलील दिल दे केहड़ी ढो रहे ओ ।
दिलशाद उजाड़ के बाग मैरा, केहड़े चमन विच जा के खलो रहे ओ ॥१५०॥

गल्ल किसे दी मन्नदे न सेआं[2], ते मगरूर विच आपने ज़ोर आहो ।
नज़र किसे ते ठैहर दी न आही, आपने तुल न समझदे होर आहो ॥१५१॥

दित्ती जान अज विच मैदान उसे, जित्थे आन करेंदड़े[3] शोर आहो ।
उसे मार फना *दिलशाद* कीता, गए पाण जिसनूं विच गोरें[4] आहो १५२॥

रानी का रामचन्द्र से वचन—

इस के गँवाया सी तेरा, बेगुनाह नूँ दस्स तूँ मारेॅआ किऊँ ।
हैसी ज़िद केहड़ी तेरे नाल इस दी, कीता ज़ुलम एह राजदुलारेॅआ किऊँ ॥१५३॥

तैनूँ मैं धरमात्मा जाणदी साँ, कर अधर्म तूँ धर्म थीँ हारेॅआ किऊँ ।
आया हत्थ के दस्स *दिलशाद* तेरे, मैरे पति नूँ खाक कर डारेॅआ किऊँ ॥१५४॥

रामचन्द्र का वचन—

देवाँ केॅआ मैं तैनूँ जवाब इस दा, होणी कदी न किसे थीँ टली रानी ।
चलदा ज़ोर नहिँ किसे दा इस उत्ते, गए हार इस थीँ पीरँ[5] वली रानी ॥१५५॥

खोटे कर्म दा फल ज़रूर मिलदा, मारन पापी दे पाप महाँ बली रानी ।
दिलशाद मरना इक दिन सारेॅआँ ने, सिर ते मौत हर इक दे खली[7] रानी ॥१५६॥

१. प्रिय ! २. थे । ३. करते थे । ४. कबर । ५. महन्त । ६. सन्त ।
७. खड़ी ।

प्याला सबर दा पी के चुप हो जा, रख हौसला दिल न ढाह रानी ।
कई होए ते होवसंन[1] कई अग्गों, इस दुनिया उते बादशाह रानी ॥१५७॥
तेरे बाप-दादा दस्स गए कित्थे, दुनिआ है मकान फना[2] रानी ।
रैह्ना बैठ नहिँ किसे *दिलशाद* इत्थे, चलना सारेआँ ने इसे राह रानी ॥१५८॥

सदा बुलबुलाँ बाग़ बहार नाहीँ, रैंह्दे नहिँ सदा खिड़े फुल रानी ।
तख़त ताज ते राज न रैह्ण सदा, है जहान फ़ानी[3] समझ कुल रानी ॥१५९॥
मर के विच्च मिट्टी मिलना सारेआँ ने, वेख रंग महल न भुल रानी ।
जाँदी पेश *दिलशाद* नहिँ कोई किसे, पौंदी मौत दी वैं[4] जद घुल रानी ॥१६०॥

कवि-वचन—

धर कन्न सुणिआँ रानी सब गल्लाँ, आ दिल नूँ गई सू धीर यारा ।
राज़ी रब दी होई रज़ा उत्ते, कीती फिर न कोई तकरीर यारा ॥१६१॥
चुप-चाप हो के गई बैठ उत्थे, रेहा चल अक्खिओं छम छम नीर यारा ।
तक्के पई *दिलशाद* हैरान हो के, जिगर फट होया अन्दरों लीर यारा ॥१६२॥

दाह-संस्कार—

ढाईँ मार के रोवँदे पए सारे, एह्लकार[5] दीवान वज़ीर यारा ।
इस्से जा ते कर संस्कार दइए, एहो सोचदे पए तदबीर यारा ॥१६३॥
तूल देउने दा नहिँ वकत एह ताँ, मुख़तासिर कर देवाँ तहरीर यारा ।
दिलशाद चिख़ा उत्ते जोड़ के ते, दित्ता बाली दा फूक सरीर यारा ॥१६४॥

रामचन्द्र द्वारा सुग्रीव का राज्य-अभिषेक—

इस कम्म कोलोँ फारग़[6] हो के ते, उत्ते तख़त सुग्रीव बहायो ने ।
अफसर फौज दा अंगद नूँ चा कीता, बोल आपना तोड़ चढ़ायो ने ॥१६५॥
बाहाँ अंगद दी हत्थ सुग्रीव दे के, अच्छी तरह उसं नूँ समझायो ने ।
तू हुण बाप ते एह है पुत्तर तेरा, रखना याद *दिलशाद* फरमायो ने ॥१६६॥

१. होंगे । २. नाशवान् । ३. नाशवान् । ४. वायु । ५. कर्मचारी ।
६. निवृत्त ।

लग्गे कैह्न सुग्रीव नूँ रामचन्दर, गेॲ मौसम बरसात दा आ भाई।
बद्दल गज्जदे पए असमान उत्ते, रही झुल अजीब हवा भाई॥१६७॥

लगातार बारश शुरु आन होई, नाले नदिआँ रहे लहरा भाई।
आउन-जान वाले राह बंद होए, होया विच तलाश अटका भाई॥१६८॥

इस वकत तलाश चा बंद करिए, लइए दिन बरसात लंघा भाई।
किधरे जाउणे दा नहिँ मौकेआ एह, पैर रखने दी नहिँ जा भाई॥१६९॥

नहिँ हुकम सानूँ रैह्णा विच मैह्लाँ, एह भी देविए तैनूँ सुणा भाई।
रैह्णा बरस चौदाँ विच बन अस्साँ, साडा रैह्ण नहिँ इत्थे रवा भाई॥१७०॥

पक्का खोज सीता दा कड्ढ के तूँ, देवीँ असाँ नूँ खबर पौहँचा भाई।
बोल आपना चाढेॲ तोड़ अस्साँ, दित्ता बाली नूँ मार मुका भाई॥१७१॥

तू भी आपने कौल नूँ करीँ पूरा, खबरदार मत देवीँ भुला भाई।
करो काम तमाम अंजाम तुस्सी, इत्थे बैठ के दिल लगा भाई॥१७२॥

रक्खीं यादगीरी साडी विच दिल दे, लगे होण हाँ अस्सी जुदा भाई।
उत्ते इक पहाड़ *दिलशाद* जा के, लैंदे आपना डेरा जमा भाई॥१७३॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण से वचन—

गेॲ गुझर चौमासा बरसात वाला, हुण ताँ सुन्दर मौसम खुशगुआर आया।
केॲ जाना के होया सुग्रीव ताईँ, शायद याद नहिँ उस नूँ करार आया॥१७४॥

केह्ड़ी गल्ल दा होया ग़रूर उस नूँ, कदी मिलन भी नहिँ इक बार आया।
बैठा किऊँ वसार[1] *दिलशाद* सानूँ, किऊँ नहिँ लैण असाडड़ी सार आया॥१७५॥

मैरे भाई लछमन जाके पुच्छ खाँ तूँ, केह्ड़ी गल्ल दा उस नूँ ग़रूर है जी।
बैठा किऊँ वसार करार आपना, किस नशे दे विच मखमूर[2] है जी॥१७६॥

मैं ताँ बोल आपना कर दित्ता पूरा, बाली मारेॲ बेशऊर[3] है जी।
लैसाँ समझ *दिलशाद* मैं फिर पिच्छों, पैह्ले उस नूँ पुच्छना ज़रूर है जी॥१७७॥

१. भुला कर। २. मस्त। ३. मतिहीन।

लक्ष्मण की सुग्रीव से भेंट —

सुण के हुकम पेॲा फिर उठ लछमन, पौंह्ता कोल सुग्रीव दे आन सज्जनाँ ।
गुस्से नाल चेहरा होया लाल उस दा, लग्गा विच दिल दे वट्ट खान सज्जनाँ ॥१७८॥

कैंह्दा अकल सुग्रीव दी गई मारी, कीती उस नहिँ कोई पैह्चान सज्जनाँ ।
लै के राज *दिलशाद* हो मस्त बैठा, देवाँ उस दा तोड़ अभमान सज्जनाँ ॥१७९॥

सुग्रीव का वचन —

विच गुस्से दे लछमन नूँ वेख के ते, डर खा सुग्रीव घबरान लग्गा ।
होए बाखेता होश हवास उस दे, हत्थ जोड़ दोवें शरणीं आन लग्गा ॥१८०॥

कीती मैं ग़फलत बेशक भारी, होण विच दिल दे पशेमान लग्गा ।
हाँ गुलाम *दिलशाद* तुसाडड़ा मैं, करो मुआफ कसूर सुणान लग्गा ॥१८१॥

लक्ष्मण का वचन —

दित्ती इतनी मुद्दत गुझार तुस्साँ, मिली खबर न कोई मफ़ँकूद³ है जी ।
कर करार जो देवे वसार पिच्छों, नहिँ ओ मरद, ओ मरद मरदूद है जी ॥१८२॥

लेॲा वेख अक्खीँ चलदा तीर तुस्साँ, कीता बाली नूँ जिस नाबूद⁵ है जी ।
खबरदार *दिलशाद* होश्यार हो जा, ओही तीर ते धनश मौजूद है जी ॥१८३॥

दिल दुःखिआँ दा नहिँ दुखान चंगा, मित्तर उन्हाँ नूँ देण दिलासड़ा ई ।
जिन्हाँ ठगिआँ कीतिआँ नाल मित्तराँ, कुंभी नरक उन्हाँदड़ा वासड़ा ई ॥१८४॥

केहड़ी गल्ल दा करे ग़ुरूर बंदा, हर इक पानी दे विच पतासड़ा ई ।
उन्हाँ नहिँ परवाह *दिलशाद* कोई, रक्खेॲा रब दा जिन्हाँ अढासड़ा ई ॥१८५॥

सुग्रीव का वचन —

हत्थ जोड़ सुग्रीव खलो रेहा, कैंह्दा हाँ गुलाम तुसाडड़ा मैं ।
विना आप दे आसरा नहिँ कोई, लै लै जीउँदा नाम तुसाडड़ा मैं ॥१८६॥

माल जान कुरबान है तुस्साँ उत्तों, सारा करांगा काम तुसाडड़ा मैं ।
केॲा मजाल *दिलशाद* इनकार करौं, नौकर हाँ बिन दाम तुसाडड़ा मैं ॥१८७॥

१, क्रोध । २. उड़न्त । ३. गुम चुकी (सीता जी) । ४. मरा समान । ५. नष्ट
६. धैर्य । ७. निवास । ८. बताशा । ९. आश्रय ।

रामचन्दर माहराज दा हाँ नौकर, होंदी उन्हाँ दी नहिँ तारीफ है जी।
रैहमदिल आदिल दयावान् पूरे, उन्हाँ जेहा न कोई शरीफ[1] है जी ॥१८८॥
झोर उन्हाँदड़े दी नहिँ हद्द कोई, केॲा चीझ फिर रावण हरीफ[2] है जी।
औंदा आप *दिलशाद* मैं विच कदमाँ, कीती किऊँ एह तुस्साँ तकलीफ है जी ॥१८९॥

लक्ष्मण का वचन—

अरझ सुण सुग्रीव दी खुश होया, गुस्सा दिल दा दिलों हटाया सू।
नरमी वेख होई गरमी दूर सारी, वेख मिन्नतझारी शर्म आया सू ॥१९०॥
सक्केॲा होर कोई गल्ल न कर लछमन, बलँदी[3] अग्ग नूँ चा बुझाया सू।
रामचन्द्र माहराज दे कोल चलो, मैरे नाल *दिलशाद* सुणाया सू ॥१९१॥

सुग्रीव का हनुमान् को निर्देश—

हनुमान् नूँ केॅहा सुग्रीव राजे, खबर भेज के फौज बुलवाओ जलदी।
उत्तर, दक्खिण अते पूरब पछम विचों, हर इक नूँ इत्थे सदवाओ जलदी ॥१९२॥
रह्वे कोई जवान न विच घर दे, डोंडी तुस्सी एह चा करवाओ जलदी।
करके जमा *दिलशाद* फिर फौज सारी, रामचन्दर दे कोल ले आओ जलदी ॥१९३॥

सुग्रीव का रामचन्द्र के पास पहुँचना—

सुग्रीव रथ ते हो सवार गेॲा, लछमन आपने नाल बिठलाया सू।
रामचन्दर माह्राज दे कोल जा के, उत्ते कदमाँ दे सिर झुकाया सू ॥१९४॥
नाल आजझी बेनती करन लगा, करके मिन्नतझारी एह सुणाया सू।
करो मुआफ कसूर *दिलशाद* मैरे, हत्थ जोड़ के वासता पाया सू ॥१९५॥

रामचन्द्र का वचन—

उत्ते पिट्ठ दे हत्थ फिर फेर के ते, कैंह्दे, सुण सुग्रीव घबरा नाहीँ।
बुरे दिन अजे बाकी हीन मैरे, तेरी प्यारेॲा कोई ख़ता नाहीँ ॥१९६॥
लई सार असाडड़ी न कदी, विच दोसती एह रवा नाहीँ।
कौल आपने नूँ दे कर पूरा, मुँहों बोलेॲा बोल भुला नाहीँ ॥१९७॥

१. सज्जन। २. शत्रु। ३. जल रही।

ख़बर सीता दी आन के दे मैनूँ, पेॲा होर दी होर सुणा नाहीँ ।
सीता बाज नहिँ आउँदा चैण दिल नूँ, नींद भुक्ख अराम ज़रा नाहीँ ॥१९८॥
मस्ती विच हस्ती नहिँ करन चंगी, ताज तख़्त ते राज सदा नाहीँ ।
करन दग़े[2] *दिलशाद* जो नाल मित्तराँ, होंदा उन्हाँ दा कदी भला नाहीँ ॥१९९॥

वेखो हुण ताँ साफ असमान होया, होए दूर तमाम अब्र[3] मित्तरा ।
गए खुल रसते आमद-रफ़त वाले, गेॲा मौसम बरसात गुज़र मित्तरा ॥२००॥
कराँ वैण दिन-रैण बेचैन हो के, औंदा दिल नूँ नहिँ सबर मित्तरा ।
दिलशाद थक्किआँ राह तक अक्खिआँ, लई तुस्साँ नहिँ आन खबर मित्तरा ॥२०१॥

सुग्रीव का वचन—

सक्केॲा मुँह थीँ गल्ल न कर कोई, हो हैरान होया चुप-चाप सज्जनाँ ।
दूजी वार फिर कदमाँ ते डिग के ते, लगा करन सुग्रीव विरलाप सज्जनाँ ॥२०२॥
गल विच पा पल्ला हत्थ जोड़ खला, बख़शनहार[5] कसूर हो आप सज्जनाँ ।
किसे जन्म दे भाग *दिलशाद* जागे, होया आप दे नाल मिलाप सज्जनाँ ॥२०३॥

नौकर हरदम मैं तुसाडड़ा हाँ, सुख दुःख मेरा तुस्साँ नाल है जी ।
देसाँ जान कुरबान कर आपनी मैं, विच दिल मेरे एह ख़ेआल है जी ॥२०४॥
रावण मिलेगा बाली दे नाल जा के, खड़ा सिर उस दे उत्ते काल है जी ।
मैं ताँ हो तैय्यार *दिलशाद* आया, कराँ उज़र मैं केॲा मजाल है जी ॥२०५॥

कवि-वचन—

गल्ल सुण सुग्रीव दी खुश होए, गुस्सा दिल थीँ चा हटायो ने ।
झट पट दित्ते वट्ट सिट सारे, बाहोँ पकड़ छाती नाल लायो ने ॥२०६॥
मदद नाल तैरी होसन कम मैरे, गेॲा आ यकीन फरमायो ने ।
मेहरबान दयाल *दिलशाद* हो के, कोल आपने फिर बिठलायो ने ॥२०७॥

१. जीवन-यापन । २. कपट । ३. मेघ । ४. यातायात । ५. क्षमा करने वाला । ६. क्रोध ।

सुग्रीव का वचन—

बन्दोबस्त सारा मैं ताँ कर आया, होए किऊँ माह्राज दिलगीर तुस्सी ।
रक्खो हौसला न घबराओ इतना, झरा दिल नूँ देॲो हुण धीरं तुस्सी ॥२०८॥

रावण नाल मुकाबला है साडा, लओ सुण एह बात अखीर तुस्सी ।
लंका विच *दिलशाद* किस तौर जाइए, सोचो बैठ के कोई तदबीर तुस्सी ॥२०९॥

हनुमान् का सेना-सहित आगमन—

हनुमान् जी फौज नूँ लै के ते, हो के कोल सुग्रीव तैय्यार आए ।
गई पौंह्च प्यारेॲा फौज सारी, नाल कई हझार सरदार आए ॥२१०॥

आहे शेर दे वाँग दिलेर सारे, पिछे छोड़ तमाम घर बार आए ।
हैसी अन्त *दिलशाद* न फौज संदा, कई करोड़ पैदल ते सवार आए ॥२११॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माह्राज जी वेख के ते, हो के खुश फिर एह फरमान लग्गे ।
है सुग्रीव बेशक एह फौज भारी, कमी रही न कोई सुणान लग्गे ॥२१२॥

ल्यावे खबर कोई जा के विच लंका, करिए फिर चढ़ाई समझान लग्गे ।
ऐसा कम्म नहिँ कदी *दिलशाद* करना, जिस दे कीतेॲाँ पिछों अरमान लग्गे ॥२१३॥

होई न सीता जेकर विच लंका, उत्थे जा के दस्स के कराँगा मैं ।
साड़े अग्गे जुदाई दी जान मैरी, इसे जा ते समझ लै मरांगा मैं ॥२१४॥

कर मलूम पैह्ले सीता है कित्थे, तेरी दोस्ती दा दम भरांगा मैं ।
पुख़्ता खबर *दिलशाद* गई मिल जदों, लड़न मरण थीँ फिर न डराँगा मैं ॥२१५॥

सुग्रीव सोचेॲा, है एह गल्ल सच्ची, जो कुछ माह्राज फरमाया वे ।
खबर सीता दी करए मलूम पैह्ले, रावण जगह किस जा बिठलाया वे ॥२१६॥

दइए भेज जासूँस कोई विच लंका, उठ के फौज दे विच फिर आया वे ।
इकट्ठी करके फौज *दिलशाद* सारी, मुँहों बोल सुग्रीव सुणाया वे ॥२१७॥

१. धैर्य । २. निश्चित । ३ गुप्तचर ।

सुग्रीव का निर्देश—

तुस्साँ[1] विच जवान बलवान् केहड़ा, जेहड़ा विच लंका इसे दम जावे।
करे सीता दी जा तलाश उत्थे, लै के खबर असाडड़े कोल आवे ॥२१८॥
जावे दिल दलेर कर शेर वाँगोँ, खौफ मौत दे नूँ दिल ते न लावे।
करे कम *दिलशाद* जो एह साडा, मुँहों मंगे इनाम नूँ ओ पावे ॥२१९॥

सक्केआ दे जवाब न कोई अग्गोँ, बद सारेआँ दी हुण झबान होई।
नहिँ हिम्मत समुंदर दे टप्पने[2] दी, मुशकल कैह्‌ण भारी एह आन होई ॥२२०॥
एक दूसरे दे बल पए तक्कन, एह पंड नहिँ किसे थीँ चाणी[3] होई।
चुप-चाप *दिलशाद* हो गए सारे, सुण के हुकम एह फाज हैरान होई ॥२२१॥

नील आखदा कम है बड्डा औखा, हत्थ इस नूँ पा नहिँ सकदा मैं।
कोई कहे सौ जोजनँ[4] है दम मैरा, परे इस थीँ जा नहिँ सकदा मैं ॥२२२॥
अंगद बोलेआ पार ताँ लँघ जासाँ, वापस परत के आ नहिँ सकदा मैं।
मुशकल पेश *दिलशाद* एह आई भारी, बीड़ा इस दा चा नहिँ सकदा मैं ॥२२३॥

जामवन्त का वचन—

जामवन्त एह आन सुणान लग्गा, तुस्साँ फिकर माह्‌राज किऊँ लाया वे।
हनुमान् जवान बलवान् भारा, करसी कम्म जो तुस्साँ फरमाया वे ॥२२४॥
उस दे बाझ नहिँ होर कोई कर सकदा, नाह झूठ मैं सच्च सुणाया वे।
पवन-पुत्र *दिलशाद* हो पवन[5] जासी, अंजनी माताँ अपछराँ[6] दा जाया वे ॥२२५॥

सुग्रीव का हनुमान् से वचन—

गेआ आ पसंद सुग्रीव ताईँ, जामवन्त ने जो बेआन कीता।
हनुमान् नूँ सद्द के कोल आपने, हो के खुश सुग्रीव फरमान कीता ॥२२६॥
रामचन्दर माह्‌राज दे नाल मैं ताँ, तेरे रूबरू एहद-पैमानँ कीता।
हो शरीक दुक्ख दा रैह्‌साँ नाल हरदम, हटसाँ पिछे न कौलँ[7] झबान कीता ॥२२७॥

१. हमारे। २. उल्लङ्घन करने। ३. उठाने योग्य। ४. योजन (=चार कोस)।
५. (वायु-समान) द्रुत-गति। ६. अप्सरा। ७. प्रण।

बोल आपना चाहड़ेआ तोड़ उन्हाँ, वाली मुलके-अदम[1] रवान कीता।
उत्ते तख़त बिठा के मैं ताईं, मैनूँ चा ममनूँ-एहसान कीता ॥२२८॥
हुण वार मेरी सिर वारने दी, इसे फिकर ने आन हैरान कीता।
तेरे सामने फौज दे विच आके, लेआ ई सुण जो मैं ऐलान[2] कीता ॥२२९॥
जा के विच लंका लावे खबर केहड़ा, हर इक दे वल धेआन कीता।
बैठे कर इनकार दिल हार सारे, किसे हौसला नहिँ जवान कीता ॥२३०॥
होया मैं बेताब जवाब सुण के, रही ताब[3] नहिँ दिल परेशान कीता।
तेरे हत्थ *दिलशाद* है लाज मेरी, तैथों जान ते माल कुरबान कीता ॥२३१॥

गरदन खर्म[4] कीती सुण के सारेआँ ने, खड़ा नहिँ मैदान विच जर्म[5] कोई।
ल्यावे खबर सीता जाके विच लंका, नहिँ कर सकदा इतना कम कोई ॥२३२॥
गए डर समुंदर नूँ वेख सारे, नहिँ टप्पने दा रखदा दम कोई।
इतनी फौज दे विच लै सुण मैथों, सक्केआ मार *दिलशाद* नहिँ खम कोई ॥२३३॥

तेरे बाज नहिँ सकदा कर कोई, गेआ हो एह मैनूँ यकीन है जी।
रही कोई उमीद न फौज उत्ते, कीती बौहत मैं ताँ छान[6]-बीन है जी ॥२३४॥
रेहा शरम दे विच हाँ मर मैं ताँ, होया दिल दिलगीर ग़मगीन है जी।
मिले खबर *दिलशाद* न जद तोड़ी, बैठा छोड़ मैं खान ते पीन है जी ॥२३५॥

हनुमान का वचन——

देओ फिकर माहराज कर दूर सारे, इसे वकत लंका विच जावसाँ मैं।
सीता माताँ दी लैके खबर सारी, परत कोल तुसाडड़े आवसाँ मैं ॥२३६॥
एह कम्म केहड़ा एडा है मुशकल, बीड़ा इस दा समझ लओ चावसाँ[7] मैं।
डरसाँ मरण थीं न *दिलशाद* कदी, झरा खौफ न दिल ते लावसाँ[8] मैं ॥२३७॥

लई गल्ल महाँबीर दी सुण जदों, होए उसदे दूर फिकर भाई।
रामचन्दर माहराज दे कोल आके, लग्गा बैठ के करन जिकर भाई ॥२३८॥

---

१. यम-लोक। २. घोषणा। ३. उत्साह। ४. नीची। ५. स्थिर होकर। ६. खोज। ७. उठाऊँगा। ८. लाऊँगा।

हनुमान् ने रक्खेआ ई मान मैरा, आँदा तैय्यार मैं उसनूँ कर भाई ।
दिलशाद ओही लंका विच जाके, देसी सीता दी आन खबर भाई ॥२३९॥

राम का हनुमान् को निदश—

गल्ल सुण सुग्रीव दी खुश होए, हनुमान नूँ कोल बुलायो ने ।
तूहीँ आहेँ मिलिआ सानूँ आन पैह्ले, करसें कम्म एह तूहीँ फरमायो ने ॥२४०॥
एह लै मुँदरी[1] रख तूँ कोल मैरी, एह ही है निशानी सुणायो ने ।
चले जाओ *दिलशाद* बेखौफ होके, उत्ते पिठ्ठ दे थापणा[2] लायो ने ॥२४१॥

उत्ते पिठ्ठ दे हत्थ जद फेर्यो ने, खुश विच दिलदे हनुमान् होया ।
रेहा डर ते खौफ न कोई उसनूँ, विच दिल दे हौसला आन होया ॥२४२॥
लगा कैह्न कुरबान कर जान देवाँ, देखो आन के तुरत गेआन होया ।
पेआ उठ *दिलशाद* फिर हुक्म लै के, सिद्धा लंका दे तरफ रवान होया ॥२४३॥

लै के मुँदरी रख लई कोल आपने, हत्थ जोड़ के अरज़ फिर करन लग्गा ।
मैनूँ आसरा तुस्साँ दे नाम दा है, मैं ताँ आप दा आण शरण लग्गा ॥२४४॥
ल्यावाँ खबर माताँ जाके विच लंका, इतना आख सिर कदमाँ ते धरन लग्गा ।
रखना याद विच दिल *दिलशाद* मैनूँ, म हुण दम गुलामी दा भरन लग्गा ॥२४५॥

हनुमान् का पार पहुँचना—

लाके हत्थ कदमाँ उत्ते टुर पेआ, लेआ नाम रब दा दिल विच धार बेली[3] ।
गेआ उत्ते समुंदर दे पौंह्चा जदोँ, लग्गा बैठ के करन विचार बेली ॥२४६॥
लेआ वेख समुंदर नूँ गौर करके, आवे नज़र न कोई कनार[4] बेली ।
मैरी शरम परमात्मा है तैनूँ, तूहीँ तूहीँ मैरा मददगार बेली ॥२४७॥
तेरा नाम लैके करन कम्म आया, गए बैठ जदों सारे हार बेली ।
दे हुण पार उतार दयाल होके, अग्गे रब दे करे पुकार बेली ॥२४८॥
गेआ चढ़ फिर इक पहाड़ उत्ते, रेहा शेर दे वाँग ललकार बेली ।
मार छाल[5] *दिलशाद* हवा होया, गेआ टप्प समुंदरों पार बेली ॥२४९॥

१. अंगूठी । २. थपकना ३. हे मित्र ! ४. किनारा । ५. छलांग ।

हनुमान् राक्षसी की पकड़ में—

पैह्रा राखशी दा हैसी तरफ दूजे, साया पकड़ कीता गिरफतार उसने।
लेऑा कर असीर¹ महावीर ताईँ, दित्ता सामने आन खिलार उसने ॥२५०॥
कैंह्दी पेट मेरे विच आ जा तूँ, इतना आख मुँह लेऑा पसार उसने।
हुक्म रावण दा है *दिलशाद* एहो, रक्खेऑा कर मैनूँ जिम्मावार उसने ॥२५१॥

लग्गा सोचने दिल दे विच फिर एह, कराँ केऑा मैं हुण तदबीर इत्थे।
राह जावने दे नूँ लेऑा रोक इसने, रक्खेऑा कर मैनूँ इस असीर इत्थे ॥२५२॥
फुरसत² नहिँ मैनूँ झरा बैठने दी, दित्ता किऊँ अटका बेपीर इत्थे।
हो हैरान *दिलशाद* खलो रेहा, पेऑा सोच दे विच महाबीर इत्थे ॥२५३॥

कैंह्दा कम्म झरूरी इक है मैनूँ, जान दे हुण तूँ अटका नाहीँ।
औसाँ परत के फिर मैं कोल तेरे, होसी इसदे विच खता नाहीँ ॥२५४॥
जो कहेंगी करांगा फिर ओही, समझ सच्च एह झूठ झरा नाहीँ।
रखना रोक मुसाफराँ जांदिआँ नूँ, तैनूँ एह *दिलशाद* रवाँ³ नहीँ ॥२५५॥

कैंहदी मकर फरेब नूँ छोड़ दे तूँ, मैं नहिँ सुणदी के सुणा रेहोँ।
आ जा पेट मेरे दे विच जलदी, किऊँ एह हीले बहाने बना रेहोँ ॥२५६॥
गए हो झगड़े जेह्ड़े साफ तेरे, हुण ताँ मौत दे मुँह विच आ रेहोँ।
देसाँ कदी *दिलशाद* न जाण अग्गे, ऐवें शोर इतना काहनूँ पा रेहोँ ॥२५७॥

हनुमान् का विचार—

औरत नाल मुकाबला नहिँ चंगा, कैंह्दा मरद दे वासते शरम है जी।
कराँ मिन्नत मैं पेऑा हझार भावें, इस ताँ होवना नहिँ कदी नरम है जी ॥२५८॥
नेक-बद नूँ समझदे नहिँ राखश, खोटा इन्हाँ दा होवँदा करम है जी।
वार औरत ते कराँ *दिलशाद* किवें⁴, विच दिल दे एहो भरम है जी ॥२५९॥

१. बंदी। २. अवसर। ३. उचित। ४. कैसे।

मननी इस मैरी नहिँ गल्ल कोई, भावें इस नूँ लख सुनाविए जी ।
आया मैं इत्थे करन कम्म केहड़ा, ऐवें वक़्त किऊँ मुफत गँवाविए जी ॥२६०॥
सिरों मारना इस नूँ नहिँ चाहिए झरा आपना झोर दिखलाविए जी ।
दिलशाद फिर सीता दी खबर लैके, वापस कोल माहराज दे जाविए जी ॥२६१॥

हनुमान् का वचन—

गरदन पकड़ के हेठ दबा लैंदा, कैंह्दा दस्स तूँ के सुणा रही एँ ।
देवाँ कड्ढ इत्थे मैं जान तेरी, एह किस नूँ तूँ डरा रही एँ ॥२६२॥
केह्ड़े झोर ते आहेँ मगरूर बैठी, कहो बोल के किऊँ शरमा रही एँ ।
गई मौत *दिलशाद* हुण आ तेरी, जो कुझ खावना सी ओ तूँ खा रही एँ ॥२६३॥

वेख राखशी झोर महावीर दे नूँ, हो हैरान विच दिल दे डरन लग्गी ।
कैंह्दी बखश गुनाह मैं भुल गई आँ, पावे वासते, मिन्नताँ करन लग्गी ॥२६४॥
तेरे नाल बराबरी नहिँ मैरी, हत्थ जोड़ सिर कदमाँ ते धरन लग्गी ।
गई पेश *दिलशाद* जद नहिँ कोई, ताँ फिर दम गुलामी दा भरन लग्गी ॥२६५॥

राक्षसी का वचन—

कैंह्दी रोकदी नहिँ हुण मैं तैनूं, जा हुण कर तूँ आपना कम्म भैय्या ।
करसी कम्म तेरे रब रास सारे, झरा दिल ते लाईँ न ग़म भैय्या ॥२६६॥
डरीं राखशाँ नूँ न वेख के तूँ, गज्ज वज्ज के मारने खम्म भैय्या ।
रोशन रहेगा नाम *दिलशाद* तेरा, खलकत पूजसी तेरे कदम भैय्या ॥२६७॥

हनुमान् का आगे बढ़ना—

पेऑ टुर अग्गे दिलों खुश होके, नाम रब्ब दे नूँ याद कर यारा ।
रेहा कोई बिसवास[1] न विच दिल दे, हुए दूर सब खौफ खतर यारा ॥२६८॥
गेऑ चढ़ फिर इक पहाड़ उत्ते, तरफ लंका दे करे नझर यारा ।
लंका विच *दिलशाद* किस तौर जावाँ, लग्गा बैठ के करन फिकर यारा ॥२६९॥

ऐसे तौर जे कर मैं चला जावाँ, राखश वेख के होसन मखॅल[2] सज्जनाँ ।
रखसन रोक खलार विच राह मैनूँ, पए आन अग्गोँ जेहड़े मिल सज्जनाँ ॥२७०॥

१. संशय । २. बाधक ।

पौसी[1] करन लड़ाई फिर नाल उन्हाँ, लग जायगी मुफत दी ढिल सज्जनाँ ।
कराँ कोई तझवीझ *दिलशाद* इत्थे, करन सोच लगा विच दिल सज्जनाँ ॥२७१॥

आया उतर फिर उस पहाड़ उत्तों, सिद्धा लंका दे वल रवान होया ।
रख ओट[2] रब दी लई विच दिल दे, होर तरफ न किसे धेआन होया ॥२७२॥
पेआ नझर सुन्दर सोहना शैहर बांका[3], रंग ढंग नूँ वेख हैरान होया ।
खड़ी लंकनी आही *दिलशाद* अग्गे, उस दे नाल मुकावला आन होया ॥२७३॥

लंकनी राक्षसी का वचन—

कैंहदी कौन हैं तूँ, कित्थों आया हैं तूँ, दस्स है इत्थे केह्ड़ा कम्म तेरा ।
भला चाहें ताँ परत के जा पिच्छे, देसाँ जान न अग्गे कदम तेरा ॥२७४॥
आयों मौत दे मुँह विच्च किऊँ आपे, देवाँ मार के कड्ढ मैं दम तेरा ।
मैरे पेट दे विच *दिलशाद* जा के, होसी एह सरीर भसम तेरा ॥२७५॥

हनुमान् का वचन—

कैंहदा केआ दस्साँ तैनूँ हाल आपना, मैरे सिर उत्ते पंड भारिए नीँ ।
मन्न बासंता[4] रासता छोड़ मैरा, न तूँ रोक मैनूँ रब दी मारिए नीँ ॥२७६॥
औरत वेख तैनूँ आवे शरम मैनूँ, ताहीँ समझ दलील मैं हारिए नीँ ।
वरना चीझ *दिलशाद* तूँ हैं केहड़ी, चल हट पिच्छे रन्ने[5] डारिए[6] नीँ ॥२७७॥

लई लंकनी सुण एह गल्ल जदोँ, गुस्सा खा खँखाके[7] पै गई ए ।
गेआ लग मुक्का इक आऊँदी नूँ, अपुट्ठी हो झमीन ते जा पई[8] ए ॥२७८॥
नक मुँह विचों लहू वगन लग्गा, होश कोई सरीर दी न रही ए ।
रही हिम्मत *दिलशाद* न उठने दी, कीते आपने दी सझा पा लई ए ॥२७९॥

लंकनी का वचन—

तैनूँ रोक नहिँ सकदी मैं कदी, चला जा जित्थे तूँ जावना है ।
रामचन्दर माह्राज दा कराँ दरशन, मैरे दिल दी समझ एह भावना है ॥२८०॥

---

१. पड़ेगी । २. आश्रय । ३. सुन्दर । ४. प्रार्थना । ५. हे स्त्रि ! ६, निर्लज्ज ।
७. 'खा-खा' शब्द करके । ८. पिल पड़ी ।

कीता बुरा रावण बेशक भारा, फल उस दा उस ने पावना है।
बीज जौं[1] *दिलशाद* किस कनेंक[2] चाई[3], जो जिस बीजिआ ओही उस चावना है ॥२८१॥

हनुमान् का विचार—

दो जगह थीं ताँ बची जान मैरी, नहिँ खबर मैनूँ अग्गों कौण मिलसी।
इसे तौर सिद्धा जे मैं चला जावाँ, किधरे न मैनूँ भौनं-भौन[4] मिलसी ॥२८२॥
खान-पीन अन्दर दिक्कत पेश औसी, न अराम किधरे न फिर सौनं[5] मिलसी।
भावें मार मुका *दिलशाद* देसाँ, विच राह मैरे आके जौनं[6] मिलसी ॥२८३॥

किष्किन्धा काण्ड समाप्त

---

१. धान्य विशेष। २. गेहूँ। ३. उठाई। ४. घूमना-फिरना। ५. सोना। ६. जो।

सुन्दरकाण्ड

हनुमान् का लंका-प्रवेश—

सुज्झी[1] होर तदबीर न कोई जदों, रूप आपना चा बदलावँदा ई।
हो बे-खौफ दाखल होया विच लंका, ज़रा खौफ न दिल ते लावँदा ई॥ १॥

चांदी सोने दी आही[2] तामीर सारी, वाह वाह शैहर सोहना दिल नूँ भाँवदा ई।
हीरे लाल जवाहर याक़ूत लग्गे, सूरज वेख के चमक शरमाउँदा ई॥ २॥

गली कूचेआँ दे विच फर्श ज़रीं, थम थम के पैर उठांउदा ई।
विश्वकर्मा ने आही बनाई लंका, कोई अन्त हिसाब न आऊँदा ई॥ ३॥

पेआ करे तलाश हर तरफ फिरदा, कोई भेत न उस दा पाउँदा ई।
लगदा पता *दिलशाद* न कोई किधरे, फिक्रमंद[3] हो अकल दौड़ावँदा ई॥ ४॥

लगा ढूण्डने घरां दे विच जा के, रक्खेआ विच तलाश नहिँ फरक तिल दा।
आही खबर न कोई मॉलूम उसनूं, बिना आसरे पेआँ दरया ठिलदा[4]॥ ५॥

रेहा फिर दीवानेआँ वाँग यारा, पता नहिँ उसनूँ किधरे कोई मिलदा।
करे सोच *दिलशाद* फिर खड़ा होके, कराँ केआ मैं ज़ाहर खेआल दिलदा॥ ६॥

गेआ गुज़र तलाश विच दिन सारा, पई रात काली उत्तों आन साईँ।
गली कूचेआँ घराँ विच ढूण्ड थक्केआ, मिलेआ नहिँ किधरे कोई निशान साईँ॥ ७॥

रँखी घर होवे शायद शाह लंका, होया दिल दे विच गुमान[5] साईँ।
पादशाही महल्लाँ विच ढूण्डने नूं, पेआ उठ के हो रवान साईँ॥ ८॥

महल शाही दरवाज़े ते नज़र आए, खड़े कई हज़ार जवान साईँ।
रंगा रंग दी वरदिआँ पा के ते, पए देन पैहरा दरबान साईँ॥ ९॥

---

१. सूझ पड़ी। २. थी। ३. चिन्ता-युक्त। ४. तैरने लग पड़ा था।
५. कल्पना।

किसे [1]डांग रखी चुक [2]मोढेआँ ते, कई [3]पैए तलवार लशकान साईं ।
किसे हत्थ बुगदर किसे कोल नेझा, किसे पकड़ेआ तीर कमान साईं ॥१०॥
उचा कद्द है सी उन्हाँ सारेआँ दा, झबरदस्त सारे पैहलवान साईं ।
[4]झरक-बरक नूँ वेख के ग़रक होया, विच बैह्र फिकराँ हनुमान साईं ॥११॥
कैंह्दा केआ जवान अजीब सोहने, [5]इको जेहे सारे बलवान् साईं ।
नहिँ फरक इन्हाँदड़े विच कोई, डील-डौल अन्दर यॅकसान साईं ॥१२॥
मैं ताँ इक ते कई हझार एह ताँ, लगा दिल दे विच घबरान साईं ।
इन्हाँ नाल बराबरी किवें करसाँ, रखसी लाज मेरी भगवान् साईं ॥१३॥
चला गेआ अन्दर [6]हिक्मत नाल उत्थोँ, कीता किसे न कोई धेआन साईं ।
जो कुछ रंग महल दे विच डिट्ठा, करां उस दा हुण बेआन साईं ॥१४॥
[7]सैहनें महल दे विच इक बाग़ सोहना, फल फुल लगा उत्थों खान साईं ।
रंगा रंग दे आहे द्रखत सोह्ने, हर इक दिल नूँ पए लोभान साईं ॥१५॥
अंब, अनार, आड़ू अते खुरमानी, सुर्ख सेब सोह्ने खुरासान साईं ।
अलूचा, आलूबुखारा ते नासपाती, पक्के जामनू दिल ललचान साईं ॥१६॥
निओझे, पिस्ता, बदाम, अंगूर हैसन, मिट्ठा, खट्टा संगतरा भी जान साईं ।
निम्बू, गिलगिल, छुहारा, खजूर आहा, नाल फल भरपूर पेचतानें साईं ॥१७॥
बग्गूगोशा, गिलास ते फालसे भी, केला लाऊँदा हत्थ आसमान साईं ।
कई किसम दे फुल भी आहे ओथे, मुशक नाल होवे ताझा जान साईं ॥१८॥
चम्बा, मोतिया किधरे गुलाब [10]खिड़ेआँ, रेहा खिड़ किधरे [11]झाहफरान साईं ।
किधरे गुल नरगिस अते गुल लाला, पए अपनी शान दिखलान साईं ॥१९॥
लैह्राँ मार नैह्राँ पइआँ चलन विचे, है सी उत्थे हर इक सामान साईं ।
कित्थोँ ताईं कराँ झिकर बाग दा मैं, ताकत नहिँ विच मेरी झबान साईं ॥२०॥
सिफत बाग दी सके न हो मैथोँ, हुई कलम भी वेख हैरान साईं ।
होसी बाग़ ऐसा न कोई विच दुनिआ, लै गल्ल मेरी सच्च मान साईं ॥२१॥

---

१. लाठी । २. कन्धों । ३. चमका रहे थे । ४. चमक-दमक । ५. एक जैसे । ६. उपाय । ७. आंगण । ८. चमकीले । ९. ओत-प्रोत । १०. खिला था । ११. केसर ।

सैर बाग़ दा कर विच महल वड़ेआ, फिर फिर वेखदा पेआ मकान साईँ।
रंग महल दा वेख के दंग होया, हैसी महल भारी आलीशान[1] साईँ ॥२२॥
बनेआ आहा सुवर्ण दे नाल सारा, गोया अहा सुवर्ण दी कान[2] साईँ।
जड़त हीरे, जवाहर, याक़ूत, मोती, लगे लाल आहे बदखशान साईँ ॥२३॥
सोहणी चान्दनी चन्न दे नूर वाँगोँ, आहे कई रोशन शैमादान[3] साईँ।
लगा ढूण्डने महल दे विच फिरके, वेख वेख हो रेहा शादान साईँ ॥२४॥
ढूण्डे हेठ कदी कदी चढे उत्ते, होया विच तलाश गलतान साईँ।
मिल्या पता *दिलशाद* जद नहिँ कोई, लगा फिर दलीलाँ दौड़ान साईँ ॥२५॥

हैसी बाग़ सोहणा दूजा होर भारा, विच उस दे पौंह्चेआ जा के ते।
बैठी हेठ द्रखत दे आही सीता, लई वेख नज़ीर लगा के ते ॥२६॥
पैह्ने लैंत्ते[4] मलीन यकीन कर तूँ, रही खोद ज़मीन घबरा के ते।
आहिआँ बैठिआ राखशिआँ कोल उसदे, भेड़ाँ[5] रूप करूप बना के ते ॥२७॥
रहिआँ दिल दुखा, सता उसनूँ, घेरा चार चौफेरिओँ पा के ते।
कर कबूल शाह रावण नूँ लै हुण तूँ, पैइआँ कैंह्दिआँ एह सुणा के ते ॥२८॥
जासी जान नहिँ ताँ इसे जा उत्ते, दित्ता ई सच्च एह असाँ बता के ते।
बेदीन लईनँ[6] बदमुआश रन्नाँ, करन हमले पैइआँ डरा के ते ॥२९॥
अग्गोँ देवे जवाब न कोई सीता, गोया आई सी साथ लुटा के ते।
नीवीँ नज़र कर के चुपचाप बैठी, नहिँ वेखदी अख उठा के ते ॥३०॥
ग़मगीन मलूलँ[7] दिलगीर हैसी, सीने दाग़ जुदाई दे खा के ते।
ले आ वेख महावीर *दिलशाद* जदोँ, चढ़ेआ उत्ते द्रखत दे जा के ते ॥३१॥

रावण का आगमन—

लगी गुज़रने रात परभात होई, ज़िकर करन पौंह्ची सच्ची ज़ात मित्तरा।
विच बाग़ दे पौंह्चदा आन रावण, लगा नाल सीता करन बात मित्तरा ॥३२॥

---

१. ऊञ्चा। २. खनि। ३. दीपक। ४. वस्त्र। ५. बुरा। ६. बहिष्कृत, निन्दित।
७. शोकातुर।

आके सामने रेहा खलो उस दे, सुण ओ बोलेआ जो कलमात[1] मित्तरा ।
हनुमान् *दिलशाद* चढ़ रुख उत्ते, विच छप बैठा डाले-पांत[2] मित्तरा ॥३३॥

रावण का सीता को वचन--

दिल जान थीं मैं कुरबान होया, मेहरबान हो तूं कैहरवान न हो ।
मैं गुलाम बिन दाम मदाम[3] रैहसाँ, मनसाँ हुकम तेरा तूं कहेंगी जो ॥३४॥

रखसाँ कदम तेरे चुम अक्खिआँ ते, विच ग़म हर दम पई जान न खो ।
मैहलाँ विच *दिलशाद* रहो कोल मेरे, इत्थे बैठ अकलड़ी न पई रो ॥३५॥

ख़बरे हीन झिन्दा या के मर गए नीं, हर दम याद जिन्हांदड़ी कर रही एँ ।
कित्थों मिलनगे दस ओ आन तैनूं, विच ग़म जिन्हाँदड़े मर रही एँ ॥३६॥

खुशीनाल गुज़ार लै दिन इत्थे, ठंडे सांस बैह के काह्नूँ भर रही एँ ।
चल उठ *दिलशाद* रहो घर मेरे, केहड़ी गल कोलों दस्सनूं डर रही एँ ॥३७॥

विच फराक जिन्हाँदड़े मर रही एँ, मिलना उन्हाँदा समझ मुहाल है नीं ।
पंछी पर नहिँ सकदे मार इत्थे, फिर इनसान दी केआ मजाल है नीं ॥३८॥

कदी मिल नहिँ सकदे ओह तैनूँ, तेरे दिल दा झूठा खेयाल है नीं ।
नज़र मेहर दी कर *दिलशाद* मैंते, मेरे नाल एह कैसा मलाल है नीं ॥३९॥

रत्न-जड़त महल दे विच तैनूं, मेरी जान, लै जा बिठलाउसाँ मैं ।
पई कर हुकम बैह के पलंग उत्ते, मालक सबदा तैनूं बनाउसाँ मैं ॥४०॥

कदी होण तकलीफ न कोई देसाँ, हत्थीं आपनी टैहल कमाउसाँ मैं ।
करसाँ ज़रा अदूल *दिलशाद* नाहीं, तेरा हुकम बजा लैआउसाँ मैं ॥४१॥

रामचन्दर लछमन हीन चीज केहड़ी, मेरे अग्गे आ कदी न अँड़नगे[4] ओ ।
मेरे ज़ोर दा शोर जहान अन्दर, सूरत वेख मेरी शरण पड़नगे ओ ॥४२॥

१. वचन । २. टहनिआँ और पत्ते । ३. सदा । ४. ठहर सकेंगे ।

विच इक पल दे कर फना देसाँ, हो के सामने जद आ लड़नगे ओ ।
सकसन झल दिलशाद न झाल मेरी, सुक्के[1] पत्तराँ[2] दे वाँग झड़नगे ओ ॥४३॥

सीता का वचन—

तीलाँ[3] हत्थ दे विच इक पकड़ सीता, कैंह्दी कक्ख दे वाँग मिसाल तेरी ।
तेरे सिर ते मौत स्वार होई, रही दस्स अपुट्ठड़ी चाल तेरी ॥४४॥

रामचन्द्र महाराज दी करें निंदेआं, हे रावणा, केआ मजाल तेरी ।
होसी जद मुकाबला *दिलशादा*, कदी गल न सकेगी दाल तेरी ॥४५॥

करें किऊँ एडी पेआ लाफ़ज़नी, कैहर रब दे थीं ज़रा डर झलेआ ।
तखतों वखत पावे ओही राजेआं नूँ, जो ओ चाहे सके ओही कर झलेआ ॥४६॥

उस बेअन्त दा अन्त न है कोई, पेआ दम खुदाई न भर झलेआ ।
मिल के खाक विच खाक *दिलशाद* होसें, राह अपुट्ठड़े पैर न धर झलेआ ॥४७॥

रत्न जड़त मकान जो दस्स रेहों, चंगिआँ उस थीं मैनूं अरूड़िआँ[4] नीं ।
फर्श मखमली ज़री क़िस कम्म मेरे, मैनूँ समझ पसंद एह फूड़िआँ[5] नीं ॥४८॥

उस शाह दा नहिँ इतबार कोई, कर अधर्म जिस जोड़िआँ[6] मोड़िआँ[7] नीं ।
बाझ धर्म दे सुण *दिलशाद* मैथों, होर सब गल्लाँ इत्थे कूड़िआँ[8] नीं ॥४९॥

देवें धमकिआँ नित किऊँ आन के तूँ, मैनूँ आपने मरन दा डर नाहीं ।
बेकस[9] ग़रीब मज़लूम उत्ते, कदी किसे ने कीता जबर[10] नाहीं ॥५०॥

लंका सोने दी दा जे है मान तैनूँ, मेरे अग्गे ओ मिट्टी दा घर नाहीं ।
मैं नहिँ जाणदी, है तू चीज़ केहड़ी, पेआ झूठिआँ शेखिआँ कर नाहीं ॥५१॥

खड़ी मौत उडीकदी राह तेरा, तैनूँ इस दी कोई खबर नाहीं ।
बैठों समझ फकीर हकीर[11] जिन्हाँ, वार उन्हाँ दा सकेंगा ज़ेर[12] नाहीं ॥५२॥

---

१. सूखे । २. पत्तों । ३. तिनका । ४. कूड़े के ढेर । ५. चटाइआँ । ६. युगल (दम्पति) । ७. तोड़ीं । ८. मिथ्या । ९. अनाथ । १०. बलात्कार । ११. तुच्छ । १२. भील ।

कई हज़ार राखश तेरे मार सुट्टे, सकेंआ हो कोई जानवर नाहीँ ।
ग़फलत छोड़ *दिलशाद* न हो ग़ाफल, बिनाँ मौत आई आपे मर नाहीँ ॥५३॥

चल दूर होजा मैरी अक्खिआँ थीँ, मैरे सामने किउँ खलो रेहोँ ।
आए दिन आखीर बेपीर तेरे, लुकमा मौत दा समझ तूं हो रेहोँ ॥५४॥
फल उसदा तूँ ज़रूर पासेँ, हत्थीँ आपनी बीज जो बो रेहाँ ।
उठ जाग *दिलशाद* है वकत अजे, विच नीँद ग़फलत काहनूँ सो रेहोँ ॥५५॥

रावण का वचन—

होया सुण के सख़त नाराज़ दिलोँ, कैंहदा सुख़न अवलड़े बोल नाहीँ ।
आवे रैहम मैनूँ तेरे हाल उत्ते, बस चुप हो जा मुँह खोल नाहीँ ॥५६॥
रामचन्दर लछमन हीन चीज़ केहड़ी, कदी आ सकदे मेरे कोल नाहीँ ।
दे खाम ख़ेआल हटा दिलोँ, पई विच शरबत ज़हर घोल नाहीँ ॥५७॥
दिन सठ देवाँ मोहलत होर तैनूँ, डिग्गे तिल विच रेत दे रोलेँ नाहीँ ।
तैनूँ समझ जे फिर भी न आई, करसी उसदी कोई पैरचोल नाहीँ ॥५८॥
तेरी गरदन ते मैरी तलवार होसी, समझ सच्च एह गल्ल मखौल नाहीँ ।
आई मौत *दिलशाद* बेशक तेरी, कोई वचने दी दिसदी डौलँ नाहीँ ॥५९॥

लगा जान वापस मैं ताँ हाँ इत्थोँ, समझ सोच लै तूँ वेह के नाल दिल दे ।
जिन्हाँ वासते हो हैरान रही एँ, नहिँ ओ मिल सकदे मोहरम हाल दिल दे । ६०॥
रहना कोल मेरे कर मनज़ूर लै तूँ, कर दे दूर तमाम ख़ेआल दिल दे ।
मैरे बाझ *दिलशाद* है कौन तेरा, दे हुण प्यारिए वैहम निकाल दिल दे ॥६१॥

हनुमान् की सीता से भेंट—

इतना आख रावण आया उठ उत्थोँ, वले विच दिल दे पशेमान होया ।
दित्तिआँ धमकिआँ पेश न गई कोई, निकल बाग़ थीँ वापस रवान होया ॥६२॥

---

१. ग्रास । २. अवकाश । ३. इकट्ठे करना । ४. पड़ताल । ५. स्थिति । ६. के जानकार ।

उत्ते रुख दे बैठ के वेख रेहॉ, गल्लाँ सुण गुस्से हनुमान् होया ।
जपन राम दा नाम *दिलशाद* लगा, विच शीरीँ झबाँ गोयान होया ॥६३॥

रामचन्दर दे नाम नूँ सुण के ते, सीता वेखने कर उची गिच्चे[1] लगी ।
कनीँ पेआ अवाझ एह अज्ज कित्थोँ, करन सोच एह दिल दे विच लगी ॥६४॥
सज्जे-खब्बे[2] दीवानेआँ वाँग तक्के, देखो आन मुहब्बत दी खिच्चे[3] लगी ।
आया नझर *दिलशाद* नहिँ कोई जदोँ, फिकरमंद हो के होन दिच्चे[4] लगी ॥६५॥

कीती देर महाँबीर न फिर झरा, फौरन विच झोली सुट पाई सुंदरी ।
सीता वेख के होन हैरान लगी, कैंह्दी केआ जाना कित्थोँ आई सुंदरी ॥६६॥
चुम चट के रखदी अक्खिआँ ते, नाझक हत्थ दे नाल उठाई सुंदरी ।
दे दस्स *दिलशाद* ओ है कित्थे, मैनूँ आण के जिस दिखलाई सुंदरी ॥६७॥

कैंह्दी सुंदरी लै जे आया हैं, हो जा सामने शरम हटा दे तूँ ।
मेरे प्राण-प्यारे सज्जन हीन कित्थे, सारा हाल-एहवाल सुणा दे तूँ ॥६८॥
डुबदी दुखाँ दे वैह्न विच मैं जांदी, बाहों पकड़ के बन्ने[5] लगा दे तूँ ।
रेहोँ छुप *दिलशाद* दस्स किऊँ मैथोँ, मैनूँ आपणा मुँह दिखला दे तूँ ॥६९॥

उत्तों रुख दे हेठ फिर उतर के ते, हत्थ जोड़ के आण प्रणाम करदा ।
करदे फिक्कर दिल दे दिलों दूर माताँ, होके सामने पेआ कलाम करदा ॥७०॥
रामचन्दर माह्राज पए आँउंदे नीँ, समझ सच्च एह अरझ गुलाम करदा ।
लैण खबर *दिलशाद* हाँ मैं आया, बैह के हाल बेआन तमाम करदा ॥७१॥

अजकल सुग्रीव दे कोल बैठे, फौज बानराँ दी बेशुमार लै के ।
शाहझोर जवान बलवान् सारे, बैठे हो तैय्यार हथ्यार लै के ॥७२॥

---

१. ग्रीवा । २. दाएं-बाएं । ३. खींच । ४. दिक़ । ५. किनारे ।

लड़न मरण थीँ डरनगे न कदी, गजसन विच मैदान तलवार लै के ।
औसन कर चढ़ाई *दिलशाद* सारे, मैं जद जाउसाँ आप दी सार लै के ॥७३॥

चूड़ामणं[1] दित्ता फौरन कड्ढ सीता, कैंह्दी रख इस नूँ आपने कोल प्यारे ।
रामचन्दर माह्राज नूँ दे के ते, जो कुभ्क वेखिआई दस्सीँ खोल प्यारे ॥७४॥
महीने दो झिन्दगी हुण ताँ रही मैरी, वज्जेआ मौत दा सिर ते ढोल प्यारे ।
बस एह पैग़ाम *दिलशाद* मैरा, देणा उन्हाँ नूँ जाके बोल प्यारे ॥७५॥

ग़लती होई माह्राज बेशक एह भी, कोलोँ आपने लछमन नूँ टोर बैठी ।
हैसी होर खेॅआल विच दिल मैरे, होणी कर उत्थे कुछ होर बैठी ॥७६॥
गेॅआ वकत नहिँ आउँदा हत्थ मुड़ के, हुण ताँ भूरेंदी हाँ वाँग मोर बैठी ।
करो मुआफ *दिलशाद* तकसीर मैरी, मैं ताँ हो तुसाडड़ी चोर बैठी ॥७७॥

देॅओ रब दे वासते बखश तुस्सीँ, मैं माह्राज कसूर जो कर रहो आँ ।
रही कोई उम्मीद नहिँ जीउने दी, समभ्को सच तुस्सीँ मैं ताँ मर रही आँ ॥७८॥
दिल दुखावे सतावे नित आन मैनूँ, झुलम रावण दे वेख के डर रही आँ ।
करो बंद आझाद *दिलशाद* मैरी, मैं ताँ दुख बतेरड़े जर रही आँ[2] ॥७९॥

अच्छा जाओ हवालड़े रब तुस्सी, मैरा जा पैग़ाम पौंह्चा देणा ।
अक्खीँ आपनी जो कुझ वेखेॅआ ने, सारा बैठ के हाल समभ्का देणा ॥८०॥
केहा जो रावण लेॅआ सुण तुस्साँ, ओ भी जा के सभ बतला देणा ।
जीउना दो महीने *दिलशाद* मैरा, नहिँ एह भूठ यकीन दिलवा देणा ॥८१॥

हनुमान् का लंका में कार्य—

रुखसत सीता थीँ प्यारेॅआ हो के ते, परत बाग़ दे विच हनुमान् आया ।
झरा रावण नूँ भी खबर कर चलिए, विच दिल दे फिर एह धेॅआन आया ॥८२॥

१. शिर का भूषण । २. शोकातुर हो रही ।

ओ के जाणसी आया सी कौन इत्थे, कमज़ोर या कोई बलवान् आया।
चुपचाप *दिलशाद* नहिँ जाण चंगा, जावाँ दस्स मैं खबर-रसान[1] आया ॥८३॥

लगा गूँजने बाग़ दे विच आ के, दित्ते बेल-बूटे सभ उखाड़ यारा।
सुट्टे पट्ट के रुख ज़मीन उत्ते, दित्ता बाग तमाम उजाड़ यारा ॥८४॥
डरदा माली नहिँ आउँदा कोई नेड़े, रहे वेख दूरों[2] तोड़-ताड़ यारा।
होंदा सामने नहिँ *दिलशाद* कोई, गए कोल रावण दामन[3] पाड़ यारा ॥८५॥

रावण कोल जा माली पुकार करदे, लओ सुण फरयाद सरकार साडी।
वानर इक अज बाग दे विच आया, दित्ती होश अकल उस मार साडी ॥८६॥
दित्ता कर वीरान उस बाग सारा, कोशश होई तमाम बेकार साडी।
ज़बरदस्त *दिलशाद* ओ है भारा, उस थीँ गई जमायत[4] सब हार साडी ॥८७॥

अरज़ मालिआँ दी सुण के शाह रावण, कीते बीस जवान तैय्यार जलदी।
है ओ कौन यारो, आया है कित्थोँ, लै आओ कर उसनूँ गिरफ्तार जलदी ॥८८॥
दित्ता बाग़ उजाड़ उस किऊँ मैरा, जा के लओ तुस्सीँ उसदी सार जलदी।
देसाँ मैं सज़ा *दिलशाद* उसनूँ, पकड़ पेश करो गुनहगार जलदी ॥८९॥

सुण के हुकम हो पए रवान उत्थों, दस-बीस फिर तुरत जवान सज्जनाँ।
लगा वेख के गज्जन फिर शेर वाँगोँ, खड़ा सामने आ हनुमान् सज्जनाँ ॥९०॥
करन वार हथ्यार होशियार हो के, यकबार राखश बेईमान सज्जनाँ।
कई तीर नेज़े मारन खिच्च के ते, कई लगे तलवार चलान सज्जनाँ ॥९१॥
कई गदा नूँ रख के मोढेआँ ते, पए उछलदे विच मैदान सज्जनाँ।
लगदी चोट महावीर नूँ नहिँ कोई, पए जोर आपना राखश लान सज्जनाँ ॥९२॥

१. दूत। २. ध्यान से। ३. वस्त्र। ४. गण।

सनेँ जड़ां[1] उखाड़ के रुख प्यारे, हनुमान् जवान बलवान् सज्जनाँ ।
मारोमार चौफेरेॲों करन लग्गा, लैके नाम विच दिल भगवान् सज्जनाँ ॥ ९३ ॥
दित्ते कट्ट राखश गाजर वांग सारे, सक्केॲा कोई बचा नहिँ जान सज्जनाँ ।
इक छुप के नस्स *दिलशाद* गेॲा, लगा रावण नूँ हाल सुणान सज्जनाँ ॥ ९४ ॥

लग्गा कैह्न राखश हत्थ जोड़ के ते, वानर नहिँ एह कोई बला है जी ।
नहिँ पेश साडी गई नाल उस दे, उसदे ज़ोर दा अंत न का है जी ॥ ९५ ॥
कोई जीउँदा छोड़ेॲा नहिँ उसने, सभो मार के दित्ते मुका है जी ।
आया छप के मैं *दिलशाद* इत्थे, दित्ता आप नूँ सच्च सुणा है जी ॥ ९६ ॥

हो गेॲा हैरान विच दिल रावण, आके राखश जद हाल बेआन कीता ।
जुंबू बाली वज़ीर सी कोल बैठा, तरफ उसदे फिर धेॲान कीता ॥ ९७ ॥
वेखो जा तुस्सी है एह कौन कोई, मैरे बाग़ नूँ जिस वीरान कीता ।
करो पकड़ के उसनूँ पेश मेरे, गुस्से नाल रावण फरमान कीता ॥ ९८ ॥
थोड़ी फौज भी नाल लगा के ते, देखो हुण वज़ीर रवान कीता ।
नचदा टपदा बाग दे विच आया, मार तीर झख्मी हनुमान् कीता ॥ ९९ ॥
तीर लगदिआँ ईँ आया जोश दिल नूँ, महांबीर मुकाबला आन कीता ।
थम्मे[2] लोहे दा इक *दिलशाद* फड़के, सनें फौज वज़ीर बेजाने[3] कीता ॥१००॥

सनेँ फौज वज़ीर दी मौत सुण के, कर अफसोस रावण दिलगीर होया ।
कैंह्दा किसनूँ दस्साँ मैं हाल दिलदा, जिगर फट मैरा लीर लीर होया ॥१०१॥
इतनी फौज दी गई न पेश कोई, राही मुल्के अदम वज़ीर होया ।
पकड़े जा *दिलशाद* दस्स कौन उसनूँ, एह ताँ मुआमला बाहर तदबीर होया ॥१०२॥

बेटा रावण दा अहा मौजूद उत्थे, 'अच्छे' नाम उसदा बाँहाँ उलार उठा ।
ल्यावाँ पिता जी पकड़ के मैं उसनूँ, लै के हत्थ दे विच तलवार उठा ॥१०३॥

१. मूलों के साथ । २. स्तम्भ । ३. जीवन-हीन ।

छोटी उमर जवान नौखेझ[1] सोहणा[2], फौरन बाप दी सुण गुफतार उठा।
होया लाल चेहरा गुस्से नाल उसदा, वाँग शेर *दिलशाद* ललकार उठा ॥१०४॥

गल्ल पुत्तर दी सुण के खुश होया, रावण पिट्ठ उत्ते हत्थ फेर कैंह्दा।
आफरीन[3] हज़ार शाबाश तैनूँ, तेरे जेहा नहिँ कोई दिलेर कैंह्दा ॥१०५॥
एह फौज भी लैके नाल आपने, जलदी जा न कर हुण देर कैंह्दा।
लैणा पकड़ बेशक बेडर होके, घेरा घत्त *दिलशाद* चौफेर कैंह्दा ॥१०६॥

नाल आपने फौज नूँ लै के ते, पेॲा चल हुण राजकुमार यारा।
अठ्ठाँ[4] घोड़ेॲाँ वाले रथ उत्ते, चढ़के पौंह्चेॲा बाग़ विचकार यारा ॥१०७॥
लग्गा वेख हस्सन हनुमान् अग्गोँ, कैंह्दा किवेँ कराँ इस ते वार यारा।
सकसी झल *दिलशाद* न झाल मैरी, एह ताँ है बालक शीरख़ार यारा ॥१०८॥

हनुमान् समझान एह लग्गा उसनूँ, लड़न किसदे नाल नादान आयोँ।
मैरी झल न सकेगा झाल कदी, ऐवेँ चुक के तीरोकमान आयोँ ॥१०९॥
आवे तरस मैनूँ तैनूँ वेख के ते, जा नस्स गँवान किऊँ जान आयोँ।
चाहेँ भला *दिलशाद* जा परत पिच्छे, किऊँ तँतड़ी मौत जगान आयोँ ॥११०॥

सुण के गल्ल महाँबीर दी जोश आया, गुस्से नाल फिर तीर चलान लग्गा।
हैसी खबर बेखबर नूँ न कोई, उछल उछल के सामने जान लग्गा ॥१११॥
घेरा चार-चौफेरेॲाँ पा के ते, हत्थ जा महाँबीर नूँ पान लग्गा।
जांदी पेश *दिलशाद* नहिँ कोई उसदी, सारा झोर सरीर दा लान लग्गा ॥११२॥

लेआ पकड़ महाँबीर ने बाहोँ आके, कपड़े धोबी दे वाँग उलारेआ[6] सू।
गेॲा पेश फिर झोर न कोई उसदा, चुक उत्ते झमीन दे मारेॲा सू ॥११३॥

---

१. नव-जात। २. बहुत अच्छा। ३. डाल कर। ४. आठ। ५. बुरी। ६. उठा फैंका।

पिंजरे जिसम दे नूँ चकना चूर करके, पंछी रूह[1] दा विचों उडारेआ सू।
थम्म लोहे दा फिर *दिलशाद* फड़के, विच फौज दे आन ललकारेआ सू ॥११४॥

लग्गा मारने थम्म दे नाल जाके, वेख सारेआँ होश भुलाई आपणी।
कई मोए ते कई हो गए ज़ख्मी, कैइआँ नस्स के जान बचाई आपणी ॥११५॥
शाह रावण दे कोल फिर जा के ते, हालत राखशाँ जा सुनाई आपणी।
सकेआ पकड़ *दिलशाद* नहिँ कोई उसनूँ, ऐसी हिम्मत महाँबीर दिखलाई आपणी ११६॥

प्यारे पुत्तर दे मरण दी खबर सुण के, धर रुमाल अक्खिआँ उत्ते रोण लगा।
सुण के नाम मैरा कंबन लोक तिन्ने, नहिँ खबर मैनूँ एह के होण लग्गा ॥११७॥
गेआ आ कित्थोँ एह अज्ज ऐसा, वैहरे[3] फिकर विच अकल डुबोन लग्गा।
दुःख पुत्तरां दे *दिलशाद* डाँढे[4], विच ग़म रावण जान खोने[5] लग्गा ॥११८॥

मेघनाथ नूँ हुण बुला के ते, शाह रावण फिर एह हुकम कीता।
गेआ अज्ज वानर इक आ इत्थे, नक विच सारेआँ दा उस दम कीता ॥११९॥
जुम्बु वाली वज़ीर नूँ मार के ते, राही फौज नूँ मुलके अदम कीता।
तेरे भाई नूँ भी उस मार सुट्टेआ, मैनूँ चा असीर[6] विच ग़म कीता ॥१२०॥
सकेआ उसनूँ हत्थ नहिँ पा कोई, सिर सारेआँ दा उस कलम[7] कीता।
जेहड़ा गेआ *दिलशाद* नहिँ परत आया, मार सभनाँ नूँ उस खतम कीता ॥१२१॥

तुस्सी जा के पकड़ ल्याओ उसनूँ, पुच्छाँ मैं उस थीँ कित्थोँ आया वे।
केआ कम्म है उसदा विच लंका, इतना शोर किऊँ उस आ पाया वे ॥१२२॥
सनें फौज वज़ीर नूँ मार के ते, मेरे पुत्तर नूँ खाक मिलाया वे।
वेखाँ कौन एह है *दिलशाद* ऐसा, जिसनूँ वेख हर इक घबराया वे ॥१२३॥

१. जीव। २. उड़ा दिया। ३. समुद्र में। ४. दारुण। ५. खोने। ६. बंदी। ७. काट दिया।

गेआ आ गुस्सा इतनी गल सुण के, उठ बाग दे विच मेघनाथ आया ।
चल के वेखिए है एह कौन कैंह्दा, लै के फौज नूं भी अपने साथ आया ॥१२४॥

लग्गा गज्जन विच बाग दे जा के ते, पकड़ नंगी तलवार विच हत्थ आया ।
उसनूँ दस्स परवाह *दिलशाद* किस दी, जेह्ड़ा पकड़ के ओट रघनाथ आया ॥१२५॥

मेघनाथ महाँबीर नूँ वेख के ते, फिकरमंद हो होण दिलगीर लग्गा ।
झबरदस्त एह ताँ कैंह्दा है भारा, सूरत वेख के कंबन सरीर लग्गा ॥१२६॥

मारे डर दे हत्थ नहिँ पा सकदा, सोचन दिल दे विच तदबीर लग्गा ।
ब्रह्मफाँस *दिलशाद* विच हत्थ लैके, हो के सामने करन तकरीर लग्गा ॥१२७॥

वेख धर्म दी फाही[1] विच हत्थ मैरे, मेघनाथ कैंह्दा इसनूं तोड़ना नहिँ ।
धर्म बाझ कोई चीझ नहिँ नाल जानी, धर्म छोड़ कदी सुख लोड़ना नहिँ ॥१२८॥

आ के फस जा इसदे विच हुण तूँ, डर के मौत कोलों मुँह मोड़ना नहिँ ।
जासें नस्स के दस्स *दिलशाद* कित्थे, जीउँदा मैं तैनूं कदी छोड़ना नहिँ ॥१२९॥

हनुमान् का वचन—

भला चाहें ते परत के जा डेरे, झूठे अहमका एह नीँ बोल तेरे,
है कुझ झोर ते सामने हो मैरे, जान बुझ तैनूं मैं हाँ छोड़ देंदा ।
तेरे बाप दे नाल है कम्म मैरा, नहिँ ताँ लाह सुटदा इत्थे चम्म[2] तेरा,
पाँदों परत के घर न चा फेरा, गरदन पकड़ मैं तेरी मरोड़ देंदा ॥१३०॥

होंदी ख्वाहिश जे न विच दिल दे एह, मैनूं कर सकदोँ फिर दस्स तूं के,
इसे वकत तैनूं इत्थे पकड़ के ते, तेरा सारा घमंड मैं तोड़ देंदा ।
रंग खूब तैनूँ इत्थे चाढ़दा मैं, पकड़ धरती ते चा पछाड़दा मैं,
उत्ते चढ़ *दिलशाद* लताड़दा मैं, सारा खून एह तेरा नचोड़ देंदा ॥१३१॥

मेघनाद का वचन—

मोड़ मूँह जद जावें तूँ धर्म कोलों, मझा फिर मैं तैनूं चखा देवाँ ।
सुट्टाँ चीर इक तीर दे नाल तैनूं, झोर आपना मैं दिखला देवाँ ॥१३२॥

---

१. फांस । २. चमड़ा ।

मैनूँ होरणाँ दे वाँग समझ नाहीँ, जुरॅत फुरॅत एह तेरी भुला देवाँ।
जासें परत के घर दिलशाद नाहीँ, समझ सच्च मैं तैनूँ सुणा देवाँ ॥१३३॥

हनुमान् का वचन—

मुँह संभाल के मूरखा बोल ज़रा, हिम्मत नहिँ तैनूँ मैनूँ पकड़ने दी।
दित्ती रब ताकत मैनूँ है इतनी, मुशकां[1] बन्ह इत्थे तैनूँ जकड़ने दी ॥१३४॥
रक्खाँ ख्वाहिश मैं रावण दे मिलन संदी, नहिँ सलाह पौंदी ताहीँ अकड़ने[2] दी।
नहिँ ताँ आहेँ दिलशाद तूँ चीझ केह्ड़ी, देंदा दे नसीअत त्रिकड़ने दी ॥१३५॥

लेॲा सोच महाँबीर ने विच दिल दे, मैनूँ कर एह नहिँ गिरफतार सकदा।
करदा जे मुकाबला आन मेरा, कदी इस कोलोँ न मैं हार सकदा ॥१३६॥
मददगार रघनाथ जी हीन मेरे, नहिँ कोई मैनूँ फिर मार सकदा।
मन्नाँ गल्ल दिलशाद जे न इसदी, पौंह्च रावण दे नहिँ दरबार सकदा ॥१३७॥

कीती गल्ल महाँबीर नहिँ फिर कोई, लई विच गल दे फाही पा यारा।
मन्न गल्ल लई तेरी मैं कैंह्दा, जित्थें चाहे उत्थे लै जा यारा ॥१३८॥
होके सामने जे तूँ आन लड़दा, ताँ मैं देंवदा मज़ा चखा यारा।
आयोँ नज़र दिलशाद कमज़ोर जदोँ, सक्केॲा नहिँ मैं हत्थ उठा यारा ॥१३९॥

फसेॲा होया महाँबीर नूँ वेख के तै, राखश खुश हो बग़ौलाँ[3] बजाँन लग्गे।
कैह्न, आ काबू गेॲा एह साडे, घेरा आण चौफेरेॲां पाण लग्गे ॥१४०॥
लेॲा ज़ालमाँ पकड़ के जकड़ उत्थे, उत्तों लत्त घुँसुन्ने[4] चलाण लग्गे।
मुशकाँ बन्ह दिलशाद ला लेॲा अग्गे, पकड़ विच दरबार लै जाण लग्गे ॥१४१॥

मेघनाद का रावण से वचन—

करन अरज़ लग्गा मेघनाथ आके, हाज़र पिता जी लओ गुनहगार है जी।
करना रैह्म ज़रा नहिँ इस उत्ते, देॲो सज़ा इसनूँ सज़ावार है जी ॥१४२॥

१. पक्के बन्धन। २. अकड़ने। ३. खुशी मनाने। ४. मुक्के।

सनें फौज वज़ीर इस मारेॲा वे, मैरे भाई नूँ भी दित्ता मार है जी।
दस्साँ केॲा मैं हाल *दिलशाद* इसदा, दग़ाबाज़ एह भारा मक्कार है जी ॥१४३॥

रावण का वचन—

रावण पुच्छदा दस्स खाँ कौन है तूँ, कित्थों आयों ते के है नाम तेरा।
किस गल्ल कारन इत्थे आया तूँ, हैसी विच लंका केह्ड़ा काम तेरा ॥१४४॥
ज़ाहरा पकड़ के मौत लै आई तैनूँ, होया ज़िन्दगी दा पुर अज जाम तेरा।
लवाँ सुण मैं हाल *दिलशाद* पैह्ले, पिच्छों कराँगा काम तमाम तेरा ॥१४५॥

हनुमान् का वचन—

पकड़ अहा न सकदा कोई मैनूँ, रक्खाँ हिम्मत समुंदर दे ठिल्लने दी।
रखदा पकड़ के जकड़ जो भेजेॲा सी, रैंह्दी न ताक़त उसनूँ हिल्लने दी ॥१४६॥
वले कम्म मैरा हैसी नाल तेरे, हैसी ख्वाहिश मैनूँ तैनूँ मिलने दी।
तैरे कोल *दिलशाद* मैं ताँहें आया, है उमीद विच दिल गुल खिलने दी ॥१४७॥

ब्रह्मफाँस दस्सो है सी चीज़ केह्ड़ी, जे दिल चाँहोदॉ फौरन तरोड़ देंदा।
आया अहा जेह्ड़ा मैरे पकड़ने नूँ, उस दी पकड़ के गरदन मरोड़ देंदा ॥१४८॥
ए पर अहाँ मतलब तैरे नाल मैरा, नहिँ ताँ शेखी मैं उसदी घुसोड़ देंदा।
बिनाँ कम्म *दिलशाद* न कदी औंदा, मैनूँ लक्ख कोई भावें करोड़ देंदा ॥१४९॥

रावण का वचन—

मैरे नाल तैरा हैसी कम्म केह्ड़ा, जलदी दस्स किऊँ मग़ज़ खपा रेहों।
मैं नाहिँ जाणदा है तूँ कौन कोई, मैनूँ केॲा एह तूँ सुणा रेहों ॥१५०॥
खड़ी मौत उडीकदी सिर तेरे, ऐवें वक़त किऊँ मुफत गँवा रेहों।
जासें बच *दिलशाद* न कदी इत्थों, हुण ताँ मौत दे मुँह विच आ रेहों ॥१५१॥

हनुमान् का वचन—

मैनूँ मार नहिँ सकदा कोई शाहा, लै सुण मैं तैनूँ सुणा देवाँ।
जे तूँ कहें ताँ लंका नूँ पट्ट के ते, विच सागर दे सुट्ट डुबा देवाँ ॥१५२॥

१. दण्ड के योग्य। २. भरा हुआ।

देवाँ कर ग़रूर सब दूर तेरे, तैनूँ आपणा झोर दिखला देवाँ ।
सीता लै के उठ चल नाल मेरे, तेरी भुल *दिलशाद* बखशा[1] देवाँ ॥१५३॥

रामचन्दर माहराज दा हाँ नौकर, बीड़ा इस गल्ल दा समभ चाया[2] मैं ।
देवाँ सीता दी खबर लैआके ते, कारण इस लंका विच आया मैं ॥१५४॥
समभ सोच लै तूँ अजे है वेला, तैनू रावणा सच्चा सुणाया मैं ।
तासें पिच्छों *दिलशाद* इस वेलड़े नूँ, नहिँआँ[3] भूठ जो एह समझाया मैं ॥१५५॥

बाली आहा राजा केहँड़े[4] बलवाला, इक तीर दे नाल मुका दित्ता ।
सकेँआ परत के गल्ल न कर कोई, उत्ते धरती दे तुरत सँवा[5] दित्ता ॥१५६॥
आपने आप नूँ समभ तूँ केआ बैठों, तैरा अकल तकदीर भुला दित्ता ।
सकसें भल्ल न उन्हाँ दी भाल कद्दी, कहे *दिलशाद* मैं सच्च सुणा दित्ता ॥१५७॥

वैर नाल उन्हाँदड़े पाके ते, समभ आपणी जाण गँवाउसें तूँ ।
गेऑ वकत न औसिँआ[6] हत्थ मुड़ के, इस वेलड़े नूँ पिच्छोंताउसें तूँ ॥१५८॥
सीता लै चल मिल न ढिल कर तूँ, नहिँ ताँ आपना नास करवाउसें तूँ ।
देसन बख़श कसूर *दिलशाद* तेरे, जदों शरण उन्हाँदड़ी जाउसें तूँ ॥१५९॥

रावण का क्रोध—

गुस्से नाल शाह रावण ने हुकम कीता, इसदा सिर फिल अलफूर उतार देँओ ।
कीती इस बेअदबी[7] बौह्त मैरी, इसे वकत इस नूँ इत्थे मार देँओ ॥१६०॥
उत्ते सूली दे चा चढ़ाओ इस नू, हिकें[8] तोप दे आग्गे खलार[9] देँओ ।
साड़ो अग्ग दे विच *दिलशाद* सुट के, नहिँ ताँ वार तलवार चला देँओ ॥१६१॥

विभीषण का वचन—

विभीछन आखेंआ उठ के भाई साहब, करनी अरझ एह मैरी मनझूर है जी ।
दित्ता हुकम नाजायझ एह है तुस्साँ, राजनीति असूल थीं दूर है जी ॥१६२॥

१. क्षमा करना । २. उठाया । ३. नहीं है । ४. कौन से । ५. सुला । ६. आयगा ।
७. अपमान । ८. अथवा । ९. खड़ा कर ।

कदी कासिद नूँ मारेऑं नहिँ किसे, करनी इस विच सोच झरूर है जी।
दित्ता इस पैगाम *दिलशाद* आके, दस्सो इसदा केहड़ा कसूर है जी ॥१६३॥

रावण का वचन—

रावण आखेऑं केहा है सच तुस्साँ, रहे अन्दर मेरे भांवड़ मच भाई।
कासद मारेऑं नहिँ बेशक किसे, नहिँ एह झूठ एह ताँ है सच भाई ॥१६४॥
नहिँ कासदाँ वालड़ी डोल इसदी, एह ताँ रेहा अपुठड़ा नच भाई।
देसाँ मार झरूर *दिलशाद* इस नूँ, जासी न कदी इत्थोँ बच भाई ॥१६५॥

दित्ता हुकम रावण कैह्रवाण होके, इस नूँ अग्ग दे विच्च जला देओ।
इकट्ठी रुई ते लकड़िआँ करो इत्थे, उत्ते घ्यू[1] भी इसदे पा देओ ॥१६६॥
देओ बाल के अग्ग लगा जलदी, इसनूँ चुक्क के विच वगा[2] देओ।
नाहीँ तीर तफंग तलवार मारो, बलदी अग्ग दे विच्च वहा देओ ॥१६७॥

सुण के हुकम राखश पए दौड़ उत्थोँ, करके रुई इकट्ठी लैआन लग्गे।
लए लेफ[3] पुराने भी कर जमाँ, विच मैदान अंबार आ लान लग्गे ॥१६८॥
बिच अग्ग दे इक्क नूँ साड़ना ए, जेह्ड़ा पुच्छदा एह सुणान लग्गे।
दिलशाद अचम्भे दी गल्ल सुण के, वेखन लोग तमाशड़ा जाण लग्गे ॥१६९॥

जमाँ लकड़ी राखशाँ कर दित्ती, विच मैदान अंबार लगा दित्ता।
रक्खी रूँ भी नाल मिला उसदे, मनाँमूँहीँ[4] उत्ते घ्यू पा दित्ता ॥१७०॥
ब्रह्मफाँस नूँ गल थीँ कड्ढ के ते, हनुमान् नूँ कोल खलवा दित्ता।
सुट्टो चुक के विच *दिलशाद* इसनूँ, हुकम एह रावण फिर चा दित्ता ॥१७१॥

हुकम सुणदेआँ सार फिर झालमाँ ने, अग्ग बाल के तुरत लगा दित्ती।
लगा रावण नूँ कैह्न महाँबीर हस्स के, ब्रह्मफाँस किऊँ तुस्साँ लहा[5] दित्ती ॥१७२॥

१. घी। २. फैंक। ३. रजाई। ४. मनों (के तोल) में। ५. उतार।

ऐसा है वज़ीर दाना केहड़ा, जिसने एह सलाह बतला दित्ती ।
रेहा खौफ मैनूँ नहिँ हुण कोई, सिद्धी साफ मैं गल्ल सुणा दित्ती ॥१७३॥
इतना आख फिर गज्जेआ शेर वाँगों, वलदी अग्ग चौफेर उड़ा दित्ती ।
दाहड़ी मुच्छ हर इक दी उस जा ते, चुआती[1] अग्ग दी मार जला दित्ती ॥१७४॥
लग पेआ फिर शैहर दे साड़ने नूँ, वेखो रब उस नूँ हिम्मत चा दित्ती ।
कोई डरदा हत्थ नहिँ पा सकदा, धुम विच लंका दे पा दित्ती ॥१७५॥
गेआ मच थरथल विच शैह्र सारे, समझो सच केआमत[2] मचा दित्ती ।
रावण वेख के सोचदा विच दिल दे, अच्छी इसनूँ मैं सज़ा दित्ती ॥१७६॥
मैं तां मारना इसनूँ लोड़ेआ सी, मेरी अकल तकदीर भुला दित्ती ।
आही वाँग गुलज़ार *दिलशाद* लंका, ओही खाक स्याह बना दित्ती ॥१७७॥

रावण हो ग़मगीन दिलगीर कैंह्दा, इसदे अगे नहिँ कोई खलो सकदा ।
पेआ मारदा साड़दा सभनाँ नूँ, कोई वाल इसदा नहिँ खो[3] सकदा ॥१७८॥
देंदा जान कुरबान कर उस उत्तोँ, इस वकत इसनूँ पकड़ जो सकदा ।
हत्थीँ आपनी आप जद कर बैठा, फिर कहो *दिलशाद* की हो सकदा ॥१७९॥

लंका साड़ के खाक स्याह कीती, राखश वेख सारे गए डर यारा ।
छप्पे जा के कई पहाड़ उत्ते, कई विच जंगलाँ छोड़ घर यारा ॥१८०॥
तिरियाँ[4] मरद बच्चे कई विच अग दे, सड़ के प्यारेआ गए नीँ मर यारा ।
होया रोज़ मैह्शर गोया विच लंका, तोबा-तोब *दिलशाद* रहे कर यारा ॥१८१॥

हनुमान् का चिन्तन—

लगा अग्ग दा सेक नहिँ ज़रा उसनूँ, कुदरत रब दी वेख हैरान होया ।
जो चाहे ईश्वर देवे कर ओही, विच दिल दे आन गेआन होया ॥१८२॥
उत्ते पानी दे गेआ फिर बैठ जाके, नहा धोके दिलोँ शादान होया ।
देवाँ खबर *दिलशाद* पौंह्चा हुण मैं, कैंह्दा बौहत अरसाँ[5] मैनूँ आन होया ॥१८३॥

१. जलती हुई लकड़ी । २. प्रलय । ३. उखाड़ । ४. स्त्रियां । ५. समय ।

हनुमान् का लौट आना—

गेॲा चढ़ फिर इक पहाड़ उत्ते, लैके नाम विच दिल भगवान् मित्तरा।
मार छाल हवा हो गेॲा उत्थों, पौंह्ता पार समुंदरों आन मित्तरा ॥१८४॥

रामचन्दर माह्राज दे कोल आके, लगा कदमाँ ते सीस निवान मित्तरा।
आया खबर *दिलशाद* मैं लै सारी, लगा बैठ के हाल सुणान मित्तरा ॥१८५॥

बैठी बाग़ दे विच माह्राज सीता, रावण दुःख उसनूँ बौह्ते दे रेहा।
दिल दुखावे सतावे नित आन के ओह, सिर आपने पा ओ खेह[1] रेहा ॥१८६॥

देसी जान माताँ बेशक उत्थे, एही हाल उसदे नाल जे रेहा।
चलो उठो *दिलशाद* न देर करो, दस्सो शक तुस्सी हुण के रेहा ॥१८७॥

रेहा मास नहिं जिसम ते ज़रा उसदे, सुक वाँग कुरंङ्ग[2] हो गई ए जी।
विच बेकरारी रोवे ज़ार ज़ारी, हरदम आपनूँ याद कर रही ए जी ॥१८८॥

गुज़री सुद्दत बीती दुःख भोगदी नूँ, तुस्साँ सार न उसदी लई ए जी।
लओ खबर *दिलशाद* शताब चलके, ओ ताँ दरस नूँ तरसदी पई ए जी ॥१८९॥

महीने दी दित्ती मोहलत होर रावण, इस थीं बाद ओ मार मुका देसी।
औसी तरँस[3] बेतरँस[4] नूँ ज़रा नाहीं, फौरन वार तलवार चला देसी ॥१९०॥

जाना फिर तुसाडड़ा कस्म केह्ड़े, रावण झगड़ा जद मुका देसी।
अजे आस *दिलशाद* है विच दिल दे, शायद विछड़े रब मिली देसी ॥१९१॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माह्राज फिर कैह्ण लगे, मैनूँ लंका दा हाल सुणाओ तुस्सी।
रंग ढंग कैसा है शैह्र संदा, नकशा खिच के ज़रा दिखलाओ तुस्सी ॥१९२॥

जाइए विच लंका असी राह केह्ड़े, हालत रावण दी भी बतलाओ तुस्सी।
जो कुछ वेखेॲा है *दिलशाद* उत्थे, सारा हाल एहवाल समझाओ तुस्सी ॥१९३॥

---

१. मिट्टी। २. हड्डी मात्र! ३. दया। ४. दया हीन।

हनुमान् का वचन—

कराँ अरज़ माहराज मैं केॲा इत्थे, न ज़बान नूँ हिम्मत तकरीर दी ए ।
उत्थे जाके जो कुझ वेखेॲा मैं, न ओ कलम नूँ ताकत तेॅहरीर दी ए ॥१९४॥
फौज हद्द हिसाब थीं बाहर डिट्ठी, समझो गल्ल एह मेरी अखीर दी ए ।
हार-जीत *दिलशाद* विच हत्थ रब दे, जांदी पेश न इत्थे तदबीर दी ए ॥१९५॥

चांदी सोने दी है तामीर सारी, वाह वाह शैहर सोहणा दिल नूँ भावँदा ए ।
जड़त हीरे जवाहर याकूत मोती, चमक वेख के सूरज शरमावँदा ए ॥१९६॥
लगे फर्श ज़री विच कूचिआँ दे, कोई अन्त हिसाब न आवँदा ए ।
पैॅहरेदार *दिलशाद* हज़ार खड़े, बिना हुकम कोई अन्दर न जावँदा ए ॥१९७॥

हिकमत नाल माहराज मैं लंघ गेॲा, विच शैहर तलाश जा करन लग्गा ।
मैहल रावण दे भी लए वेख सारे, हो बेखौफ कदम हर जाह धरन लग्गा ॥१९८॥
मिल्या नहिं पता जद कोई किधरे, बैहर फिकर विच डुब के मरन लग्गा ।
फिर इक बाग़ दे विच *दिलशाद* जा के, उत्थे माताँ दी मैं शरण लग्गा ॥१९९॥

गेॲा आ रावण उसे जा उत्ते, आके माताँ नूँ ओह धमकान लग्गा ।
मिले खूब जवाब मुँह तोड़ अग्गों, गुस्से होके फिर डरान लग्गा ॥२००॥
महीने दो कैंहदा मोहलत होर देवाँ, गज्ज के शेर दे वाँग सुणान लग्गा ।
देसाँ मार फिर मैं *दिलशाद* तैनूँ, इतना आख वापस उत्थों जाण लग्गा ॥२०१॥

इतना आख रावण आया टुर उत्थों, निकल बाग थीं वापस रवान होया ।
कीती देर माहराज न फिर ज़रा, हाज़र माताँ दे कोल मैं आन होया ॥२०२॥
दित्ता हाल एहवाल सुणा सारा, वले वेख के मैं हैरान होया ।
करे याद *दिलशाद* हर दम तुस्साँ, ते हराम उसनूँ पीण-खान होया ॥२०३॥

---

१. नीति ।

दित्ता हौसला मैं माह्राज जा के, दिलों सख़त माताँ घबराई होई ए।
जिवें फुल दी आंव नहिँ विच धुप दे, इसे तरह ओ भी मुरझाई होई ए ॥२०४॥

नींदर, भुख, आराम नहिँ ज़रा उसनूँ, सुध-बुध तमाम भुलाई होई ए।
उठो चलो *दिलशाद* न देर करो, उस दी जान लबाँ उत्ते आई होई ए ॥२०५॥

रुख़सत माताँ थीँ हो माह्राज फिर मैं, वापस चलन नूँ होया तैय्यार जदोँ।
चलाँ नाल रावण करके गल्ल कोई, एह विच दिल दे आया विचार तदोँ ॥२०६॥

उस बेखबर नूँ खबर न कोई रैह्सी, आया कौण हैसी लैण सार कदोँ।
जांदी बार *दिलशाद* समझा जावाँ, रखे पैर न बाहर पसार हदोँ ॥२०७॥

एही सोच के आया मैं उठ उत्थोँ, आके बाग़ तमाम उजाड़ दित्ता।
माली सामने होया न कोई डरदा, ऐसा सारेआँ नूँ समझो ताड़[2]दित्ता ॥२०८॥
राखश भेजे जो रावण ने पकड़ने नूँ, मार सारेआँ नूँ मैं पछाड़ दित्ता।
गल्लाँ कीतिआँ नाल *दिलशाद* रावण, फिर मैं शैह्र लंका सारा साड़ दित्ता ॥२०९॥

रामचन्द्र का वचन—

लेॲआ सुण महाँबीर थीँ हाल जदोँ, लगे सोचने फिर तदबीर भाई।
देइएँ[3] केॲआ इणाम हुण इस ताईँ, असी हाँ अजकल फकीर भाई ॥२१०॥

पकड़ बाहोँ फिर लाँउदे नाल छाती, लगे खुश हो करन तक़रीर भाई।
साडा दम *दिलशाद* है नाल तेरे, दित्ता सदके कर सरीर भाई ॥२११॥

दित्ता हाल सुणा महाँबीर जदोँ, हो उदास विच दिल घबरान लगे।
हालत सीता दी लई जद सुण सारी, फिकरमंद हो आँसू बहान लगे ॥२१२॥
करनी देर सुग्रीव जी नहिँ चाहिए, चलो करो चढ़ाई फरमान लगे।
एही वकत *दिलशाद* इमदाद दा है, हटना पिछे नहिँ तुसाँ सुणान लगे ॥२१३॥

१. चमक। २. बलपूर्वक दबा दिया। ३. देवें।

सुग्रीव का वचन—

सद के अंगद नूँ कहे सुग्रीव राजा, देओ फौज नूँ हुकम सुणा जलदी ।
हो जान तैय्यार फिलफूर सारे, वाजा कूच दा देओ बजवा जलदी ॥२१४॥
कीती देर न अंगद ने हुकम सुण के, गेॲा फौज दे विच फिर आ जलदी ।
करके जमा *दिलशाद* फिर अफसरां नूँ, दित्ता शाही फरमान बतला जलदी ॥२१५॥

मुंनतझिर[1] आही बैठी फौज सारी, हुकम सुणदेॲाँ ई ँ पई धा यारा ।
कर कूच दित्ता उत्थो ँ सारेॲाँ ने, पौंह्ते उत्ते समुंदर दे आ यारा ॥२१६॥
कंढां[2] पार दा नझर न कोई आवे, रहे वेख नझीर लगा यारा ।
अग्गे दस्स *दिलशाद* किस तौर जाइए, रहे बैठके अकल दौड़ा यारा ॥२१७॥

रावण के हाँ की स्थिति—

शाह रावण दे कोल फिलफूर जाके, दित्ती मुंखबराँ[3] खबर पौंह्चा साईं ँ ।
रामचन्दर माह्राज जी फौज लै के, पौंह्ते उत्ते समुंदर दे आ साईं ँ ॥२१८॥
अज कल लंका विच पौंह्च जासन, असाँ आपनूँ दित्ता सुणा साईं ँ ।
झिकर सुण फिकर गेॲा लग ,भारा रेहा दिल दे विच घबरा साईं ँ ॥२१९॥
उसे वकत दरबार दे विच आके, लए वझीर मशीर बुला साईं ँ ।
कैंह्दा दस्सो तझवीझ हुण केॲा करिए, आया चढ दुशमन करके धा साईं ँ ॥२२०॥
इस नूँ समझना नहिँ कमझोर चाहिए, एह ताँ है कोई सखत बला साईं ँ ।
खर-दूखन नूँ भी इसे मारेॲा वे, दित्ती फौज भी मार मुका साईं ँ ॥२२१॥
कीती मदद सुग्रीव दी इस आके, दित्ता बाली नूँ खाक मिला साईं ँ ।
अग्गे इक कासद इसदा आया सी, गेआ लंका नूँ ओ जला साईं ँ ॥२२२॥
लैके नाल सुग्रीव हुण चढ़ आया, देवे इस थीं ँ रब बचा साईं ँ ।
दस्सो हुण करिए तझवीझ केह्ड़ी, सके अग्गे न कदम वँधा[4] साईं ँ ॥२२३॥
अग्गों ँ करन वझीर एह अरझ सारे, फिकर देॲो एह तुस्सी हटा साईं ँ ।
नहिं बलवान् कोई कुंभकरण जैसा, है आपदा ओह भिरा साईं ँ ॥२२४॥

१. प्रतीक्षा में। २. तट। ३. गुप्तचरों ने। ४. बढ़ा।

करसी इक लुकमा इन्हाँ सारेआँ दा, दइए उसनूँ हुण जगा साईँ ।
मेघनाथ भी है मौजूद इत्थे, देसी जाके एही उडा साईँ ॥२२५॥
इन्दर जेहे राजे गए हार इस थीँ, रही कुल दुनिआ डर खा साईँ ।
साडे अग्गे भी नहिँ ओ चीझ कोई, तुस्सी फिकर बैठे काहनूँ ला साईँ ॥२२६॥
देओ हुकम सानूँ जाके सारेआँ नूँ, असी आविए मझा चखा साईँ ।
सुणदा रेहा विभीछण खामोश होके, कीती कोई न चूँ-चरा साईँ ॥२२७॥
आखरकार फिर उठ के कैह्न लग्गा, अग्गे शाह रावण सिर झुका साईँ ।
सुणो भाई साहब एह अरझ मेरी, देवाँ आपनूँ मैं समझा साईँ ॥२२८॥
करसन केॲा बहादुरी एह जाके, रहे शेखिआँ जो दिखला साईँ ।
कासद इक अग्गे उन्हाँ भेजिआ सी, सके हत्थ उसनूँ किऊँ नहिँ पा साईँ ॥२२९॥
लंका साड़ उस खाक स्याह कीती, चल्या झोर नहिँ किसे दा का साईँ ।
उस वकत आहे गए एह कित्थे, चाहिए करनी सोच झरा साईँ ॥२३०॥
नाल फौज मुकावला केॲा करसन, एह ताँ आपनूँ रहे भरमा साईँ ।
बैठे समझ नादान इन्सान जिसनूँ, है ओ विच जहान यकता साईँ ॥२३१॥
तुस्साँ कीती ज्यादती बौह्त भारी, नहिँ उन्हाँ दी कोई खता साईँ ।
सरूपनखाँ जे छेड़दी न जा के, औंदी कदी न नक कटवा साईँ ॥२३२॥
झोर उन्हाँदड़े दी नहिँ हद्द कोई, ब्रह्मण्ड नूँ देण हिला साईँ ।
देओ छोड़ गल्लाँ मैं भी नाल चलाँ, सीता नाल लैके मिलिए जा साईँ ॥२३३॥
साडी नहिँ बराबरी नाल उसदे, देवाँ बात सुणा सफा साईँ ।
शरण आयाँ दी रख ओ लाज लैसनँ, देसाँ भुल *दिलशाद* बख़शा साईँ ॥२३४॥

मेघनाद का वचन—

मेघनाथ एह सुण के कैह्ण लग्गा, करनी चाचा जी सोच के गल्ल चाहिए ।
मैनूँ बाप बराबरी हो तुस्सी, तकनाँ झरा तुस्साँ मेरे वल चाहिए ॥२३५॥
होवे हौसला जे न दिल अन्दर, विच बहादुराँ बैह्णा न रल चाहिए ।
अकला लड़ाँगा मैं *दिलशाद* जाके, लैणा वेख तुस्साँ अजकल चाहिए ॥२३६॥

१. नचु-नच । २. अद्वितीय । ३. लेंगे । ४. देखना । ५. बैठना । ६. मिल

विभीषण का वचन—

कीता जिस ग़रूर अज़ीज़ मैरे, बेशक समझ लै तूँ ओ चूर होंदा ।
ज़बरदस्ताँ नूँ कीता ज़ेर जिसने, इक दिन आप भी ज़ेर ज़रूर होंदा ॥२३७॥
नहिँ दुनिआ दी तैनूँ खबर कोई, परदे ग़ैब थीँ केॲा ज़हूर होंदा ।
नेक बद *दिलशाद* नहिँ जाणदा ओ, विच नशे दे जो मखमूर होंदा ॥२३८॥

रावण का वचन—

लत्त मार कैंहदा रावण नाल गुस्से, चल दूर हो जा फिलफूर इत्थोँ ।
मुँह डिट्ठा ते कंडे[1] दिखला मैनूँ, देसाँ कड्ढ नहिँ ताँ बुरे तौर इत्थोँ ॥२३९॥
जा नस्स नसीअताँ दस्स नाहीँ, नहिँ ताँ मिलसिआँ[2] मौत दा दौरँ[3] इत्थोँ ।
देसाँ सर उतार *दिलशाद* तेरा, रखसेँ बचने दी न कोई बौरँ[4] इत्थोँ ॥२४०॥

कर एहमका चुप, न बक ऐवेँ, रामचन्दर मूली केहड़े बाग़ दी ए ।
मैरे सामने नहिँ कोई हो सकदा, मैरा नाम सुण के खलकत भागदी ए ॥२४१॥
देवाँ द्रखत उखाड़ मैं घॉ[5] वाँगोँ, क़दर केॲा इत्थे पत्तर साग दी ए ।
जा उठ *दिलशाद* न बैठ इत्थे, सुत्तड़ी मौत तेरी पई जागदी ए ॥२४२॥

विभीषण का वचन—

बिभीछण सुण के एह उठ खड़ा होया, कैंहदा होवे बुलंद इकबाल तेरा ।
दुशमन रैहण हरदम ज़ेर पा तेरे, होवे न कदी डिंगा वाल तेरा ॥२४३॥
मैं ताँ लंका नूँ छोड़ के चलन लग्गा, उलटा वेखेॲा जद खेॲाल तेरा ।
खॅटसें[6] नफा न कुझ *दिलशाद* लड़के, चलसी ज़ोर न कोई उन्हाँ नाल तेरा ॥२४४॥

पेॲा चल माह्राज मैं हाँ इत्थोँ, बिभीछण उठ के एह सुणान लगा ।
रहो खुश खुरसन्द अनन्द तुस्सी, मैं ताँ लंका नूँ छोड़ के जाण लगा ॥२४५॥
हो गेॲा यकीन नहिँ शक रेहा, समा अन्त तुसाडड़ा आण लगा ।
जाओ समझ *दिलशाद* ताँ है वेला, नहिँ ताँ वकत समझो हत्थोँ जाण लगा ॥२४६॥

१. पीठ । २. ३. मिलेगा । प्याला । ४. रास्ता । ५. घास । ६. पाएँगा ।

आया उठ बिभीछण दरबार विचों, पुष्प बवान[1] ते आण स्वार होया।
दित्ता चाहड़ बवान अकाश उत्ते, तुरत लंघ समुंदरों पार होया ॥२४७॥

रामचन्दर दी फौज दे विच जा के, एह खेॲाल उसनूँ मैरे यार होया।
मिले कोई वकील दलील वाला, करे मदद जो एह विचार होया ॥२४८॥

मिल्या जा सुग्रीव नूँ ढूण्ड के ओह, दस्स के हाल सारा मिन्नतवार होया।
शाह रावण दा मैं भिरा कैंहूदा, मेरा भाई दे नाल तकरार होया ॥२४९॥

मन्नी गल्ल उस नहिँ है कोई मेरी, उस दा दूर नहिँ अजे अहंकार होया।
लंका छोड़ आया इसे वास्ते मैं, उत्थे रैहूण थीँ दिल अवाझार होया ॥२५०॥

रामचन्दर माहूराज दी शरण आया, झुलम भाई दे वेख लाचार होया।
देॲो खबर पौंहूचा *दिलशाद* मेरी, करो अरझ हाझर खिदमतगार[2] होया ॥२५१॥

सुग्रीव का वचन—

रामचन्दर माहूराज दे कोल जा के, हत्थ जोड़ सुग्रीव सुणाया वे।
बिभीछण भाई शाह रावण दा है जेहड़ा, लंका छोड़ इत्थे ओ आया वे ॥२५२॥

नहिँ राखशाँ दा कोई एतबार सानूँ, एह ते जापदा छल बणाया वे।
दइए मार मुका *दिलशाद* इसनूँ, विच दिल साडे शक पाया वे ॥२५३॥

भिरा नाल इसदे असी लड़न चले, कद[3] इसनूँ एह पसंद है जी।
होसी दग़ा झरूर विच दिल इसदे, रखना नाल इसनूँ भारा गंद है जी ॥२५४॥

एह ताँ कर फरेब कोई आया ए, दिसदा एह इसदा मॅकरपंद[4] है जी।
दुश्मन उत्ते एतबार *दिलशाद* करी, कीता नहिँ किसे अकलमंद है जी ॥२५५॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माहूराज फरमान लगे, मैनूँ एह के आण सुणाया ए।
तेरे भाई नूँ भी असाँ मारॅआ सी, तूँ फिर नाल साडे काहूनूँ आया ए ॥२५६॥

तेरे उत्ते एतबार भी नहिँ चाहिए, वाह, वाह सबक एह मैनूँ सिखाया ए।
तूँ भी लैन बदला आया नाल होसें[5], कीताई खूब जो चा बतलाया ए ॥२५७॥

---

१. विमान। २. सेवक। ३. कब। ४. कपट-बन्ध। ५. होगा।

सुणी गल्ल माहराज दी एह जदों, विच दिल सुग्रीव घबराया ए।
कदम पकड़ के अरज़ फिर करन लगा, मैनूँ के एह तुसाँ फरमाया ए ॥२५८॥
नौकर मैं माहराज जी आपदा हाँ, मैं ताँ आप तों घोल घुमाया ए।
गेआ भुल्ल *दिलशाद* देओ बख़्श मैनूं, हत्थ जोड़ के वासता पाया ए ॥२५९॥

लगे हस्स के कैहण सुग्रीव ताईं, किऊँ सुण के गए घबरा प्यारे।
तेरी गल्ल दा दित्ता जवाब मैं ताँ, किऊँ फिकर इतना लेआ ला प्यारे ॥२६०॥
असाँ मित्तर बुलाया है तैनूं, साडे दिल विच नहिं दगा प्यारे।
होके खुश कर कम्म न डर ऐवें, शक्क शुभे सभ दे हटा प्यारे ॥२६१॥
लै नीयत बिभीछण दी वेख पहले, मुमकन[1] है ओ होवे सफा प्यारे।
शरण लग्गेआँ दी है लाज मैनूं, देवाँ सच्च एह तैनूं सुणा प्यारे ॥२६२॥
करनी मदद उस दी है फ़र्ज़ मेरा, जावे विच पनाह जो आ प्यारे।
मेरे कोल पौंह्चा दे उस ताईं, जा उठ हुण ढिल ना ला प्यारे ॥२६३॥
पुच्छाँ उसथीं आया ओ किऊँ इत्थे, देवे आपणा हाल बता प्यारे।
होया साफ *दिलशाद* जे दिल उसदा, लैसाँ आपणे नाल रला प्यारे ॥२६४॥

विभीषण का वचन—

बिभीछण नाल सुग्रीव नूँ लैके ते, रामचन्दर माहराज दे पास आया।
पकड़ कदम माहराज दे कैहन लगा, करो मेहर[2] मैं करके आस आया ॥२६५॥
ओट आप दे बाज नहिं होर कोई, जनमभूमका[3] दा छोड़ वास आया।
रखो चरणाँ दे विच *दिलशाद* मैनूँ, कोल आप दे आप दा दास आया ॥२६६॥

सुण के खबर तुसाडड़े आउने दी, रावण लए बुला वज़ीर सारे।
लड़िए आप दे नाल किस तौर कैंह्दे, बैह के सोचदे पए तदबीर सारे ॥२६७॥
आवे मुँह जो किसे दे कहे ओही, बेवकूफ एहमक बँदखमीर[4] सारे।
खबर उन्हाँ नूँ नहिं *दिलशाद* कोई, लाफाँ[5] मारदे पए बेपीर सारे ॥२६८॥

१. संभव। २. दया। ३. जन्मभूमि। ४. दुष्कुलीन। ५ शेखिआँ।

मैं भी विच दरबार दे आही बैठा, करदे शेखिआँ जित्थे नादान हैसन ।
न कोई खबर ते न कोई सार उन्हाँ, कैंह्दे आपनूँ तुच्छ इनसान हैसन ।।२६९।।
हो बेफ़िक्र[1] रहे मुँहों बक सारे, नशे विच [2]मदहोश मस्तान हैसन ।
मन्नी गल्ल *दिलशाद* नहिँ कोई मैरी, [3]तुखमबद बदज़ात शैतान हैसन ।।२७०।।

मैं ताँ बोह्त तकरार माह्राज कीता, भाई आपने नूँ समझाया मैं ।
विच लड़ाई भलयाई नहिँ कोई तेरी, हत्थ जोड़ के वासता पाया मैं ।।२७१।।
चलो मिलिए लैके नाल सीता, करिए मिन्नतज़ारी एह सुणाया मैं ।
आई समझ बेसमझ नूँ नहिँ कोई, भावें ज़ोर बतेरड़ा लाया मैं ।।२७२।।
दित्ता कड्ढ दरबार थीँ बाहर मैनूँ, लत मार के चा गिड़ाया मैं ।
तुस्साँ बाझ *दिलशाद* है कौन मेरा, हुण ताँ शरण तुसाडड़ी आया मैं ।।२७३।।

रामचन्द्र का वचन—

लेॲा सुण बिभीछण दा हाल जदोँ, करके मेह्रबानी हो दयाल कैंह्दे ।
दित्ता राज लंका असाँ दे तैनूँ, करदे होर तूँ दूर खेॲाल कैंह्दे ।।२७४।।
छोड़ आस, उदास निरास न हो, रहो खुश हो के साडे नाल कैंह्दे ।
सके तक *दिलशाद* जे तरफ तेरी, है रावण दी केॲा मजाल कैंह्दे ।।२७५।।

है फौज कितनी विच दस्स लंका, ज़रा एह तूँ दे समझा सानूँ ।
किस कदर ताकत है विच रावण, सारा हाल एहवाल वतला सानूँ ।।२७६।।
[5]किवेँ इस समुँदरों पार जाइए, है कुछ खबर ते दे सुणा सानूँ ।
सच्चो सच्च *दिलशाद* जे दस्स देसेँ, जासी समझ इतबार फिर आ सानूँ ।।२७७।।

विभीषण का वचन—

सुणो सच्च मैथोँ ज़रा गौर करके, सच्चो सच्च मैं कराँ बेआन साईँ ।
झूठ बोलने दी है लोड़ केह्ड़ी, लओ सुण मैं लगा सुणान साईँ ।।२७८।।
विच ज़ोर दे है मगरूर रावण, तिन्ने लोक उसथीँ डर खान साईँ ।
कोई उसनूँ हत्थ नहिँ पा सकदा, ब्रह्मा दित्ता उसनूँ वरदान साईँ ।।२७९।।

---

१. निडर । २. चेतमाहीन । ३. नीच-सन्तान । ४. बहुत ५. कैसे ।

हर इक नूँ कर उस पसत दित्ता, देवते मन्न बैठे उस दी आन साईं ।
मेघनाथ जेहड़ा है पुत्तर उस दा, गेॲा इन्दर उसथीँ हार मान साईं ॥२८०॥
हो अक्खियाँ थीँ फौरन ग़ैब जावे, है ओ सख़त बला तूफ़ान साईं ।
करे वार हत्थ्यार होशेॲार हो के, आवे नज़र न विच मैदान साईं ॥२८१॥
एंही विद्या उस विच है भारी, होंदा वेख हर इक हैरान साईं ।
कुंभकरण इक है भिरा साडा, ओ भी है भारा बलवान साईं ॥२८२॥
उसदे ज़ोर दी भी नहिँ हद्द कोई, कद्द वाँग पहाड़ दे जान साईं ।
इस वकत मौजूद है विच लंका, समझो दस करोड़ जवान साईं ॥२८३॥
कूके मौत उन्हाँदड़े सिर उत्ते, कोई दिन दे हीन मेहमान साईं ।
कदमाँ विच *दिलशाद* जी मैं आया, करसाँ तुस्साँ तोँ जान कुरबान साईं ॥२८४॥

रामचन्द्र का वचन—

इस गल्ल दा फिकर नहिँ कोई मैनूँ, रखसी लाज मैरी भगवान समझीँ ।
रावण है बलवान ताँ केॲा होया, जासी उस दा मिट निशान समझीँ ॥२८५॥
कदी जीउँदा छोड़साँ न उस नूँ, मैरी सच्च एह तूँ ज़बान समझीँ ।
देसाँ खाक मिला *दिलशाद* सारे, लड़सन नाल मेरे जेहड़े आन समझीँ ॥२८६॥

किस तरह समुँदरोँ पार जाइए, दस्सो इस दी कोई तदबीर तुस्सी ।
हत्थ जोड़ बिभीछण ने अरज़ कीती, माह्राज किऊँ होए दिलगीर तुस्सी ॥२८७॥
करसी मुशकल रब आसान सारी, डरो न डूँघा वेख नीर तुस्सी ।
सोचेॲाँ राह *दिलशाद* एह दे देसी, ज़रा दिल नूँ देॲो हुण धीर तुस्सी ॥२८८॥

सुग्रीव का वचन—

कीती अरज़ सुग्रीव ने आके ते, माह्राज किऊँ होए हैरान तुस्सी ।
नल-नील वज़ीर दो नाल मेरे, सुणो गल्ल मेरी कर धेॲान तुस्सी ॥२८९॥
कारीगर पूरे इस कम्म दे ओ, करो उन्हाँ नूँ एह फ़रमान तुस्सी ।
देसन पुल बना *दिलशाद* ओहीं, समझो सच्च मेरा एह बेॲान तुस्सी ॥२९०॥

---

१. गहरा ।

रामचन्द्र का वचन—

नल-नील नूँ सद्द के कैहण लगे, जलदी कोल मैरे दोनों आओ तुस्सी ।
मुशकल पेश भारी गई आ इत्थे, मैरे फिकर नूँ चा हटाओ तुस्सी ॥२९१॥
नहिँ राह कोई पार लंघने दा, हिम्मत करके पुल बनाओ तुस्सी ।
सुणी सिफत *दिलशाद* तुसाडड़ी मैं, मैंनूं आपना जोहर दिखलाओ तुस्सी ॥२९२॥

पुल का निर्माण—

चुक्क पत्थर आँदे जाके वानरां ने, विच मैदान दे ला अम्बार देंदे ।
कारीगर मेअँमार[1] विच आहें जेहड़े, घड़के पत्थराँ नूँ कर हमवार देंदे ॥२९३॥
नल चुक्क के रक्खदा उत्ते पानी, पत्थर आन वानर वारो वार देंदे ।
कोल शिस्त लगाके नील खला, सिद्धी साफ सोहणी बन्ह कतार देंदे ॥२९४॥
सने जड़ां उखाड़ के रुक्ख भारे, उत्ते आन के ओही खलार देंदे ।
दिनां सत्तां दे विच *दिलशाद* फिर ओह्, कर पुल अजीब तैय्यार देंदे ॥२९५॥

कविवचन—

आहे ऐही दोवेँ पुल बणान वाले, इक नील ते दूसरा नल यारा ।
कीती पुल तैय्यार समुँद्र उत्ते, गेआ हो मतलब सारा हल यारा ॥२९६॥
रेहा शक ते शुभा न कोई किसे, नाहीँ विच गल्लदे पेआ वल यारा ।
लेआ सुण *दिलशाद* है हाल एह ताँ, हुण तूँ पार समुँद्रों चल यारा ॥२९७॥

लगी देर न प्यारेआ फिर कोई, वाह ! वाह !! पुल अजीब बनायो ने ।
अकल दंग होवे ढंग वेख पुल दा, ऐसा आपना जोहर दिखलायो ने ॥२९८॥
रामचन्दर माहराज दे कोल जाके, उत्ते कदमां दे सीस निवायो ने ।
होई पुल तैय्यार *दिलशाद* सारी, हत्थ जोड़ के जा सुणायो ने ॥२९९॥

सुन्दर काण्ड समाप्त

---

१. भवन-निर्मायक ।

युद्धकाण्ड

समुद्र पार करना—

कीती देर न पल दी खबर सुण के, गए हो फिर तुरत तैय्यार साईँ ।
इष्ट देव भगवान नूँ याद करके, गए लंघ समुंदरों पार साईँ ॥ १ ॥
कई करोड़ां दौड़दे आ पौंह्चे, न सी फौज दा कोई शुमार साईँ ।
कैम्प[1] विच मैदान दे ला दित्ता, बैठे आप लगा दरबार साईँ ॥ २ ॥
रावण सुण के खबर हैरान हो ।, करे दिल दे विच विचार साईँ ।
लगा कैह्न नहिँ आउँदी समझ मैनू, किस तरह एह आए उरार[2] साईँ ॥ ३ ॥
लैहर कैहर[3] दी वेख के बैहर[4] संदी, जांदे शेर दिलेर भी हार साईँ ।
किस तरह लेॲा बन्ह पुल इन्हाँ, दित्ता पत्थराँ नूँ किवेँ तार साईँ ॥ ४ ॥
हैसी हौसला एही विच दिल मैरे, गेॲा टुट ओ भी आखरकार साईँ ।
वकत सोचने दा नहिँ हुण कोई, रेहा बाहर दुश्मन ललकार साईँ ॥ ५ ॥
सद के सुक अते सारण राखशाँ नूँ, कैंह्दा सुणो मैरी गुफ्तार साईँ ।
तुस्सी दुश्मन दी फौज दे विच जाके, ल्याओ कर गिनती नंबरवार साईँ ॥ ६ ॥
करो जाँच पड़ताल तमाम तुस्सी, कितने हीन सिपाह-सालार साईँ ।
रखन हौसला कितना विच दिल दे, केॲा नाल ले आए हथ्यार साईँ ॥ ७ ॥
विच दिल सुग्रीव ख़ेआल कैसे, कौन कौन उसदा सलाहकार साईँ ।
देओ खबर लैआ शताब मैनूँ, करनी ढिल हुण नहिँ दरकार साईँ ॥ ८ ॥
शाह रावण दे हुकम नूँ सुण के ते, सकेॲा कर न कोई इन्कार साईँ ।
सुण शाही फरमान रवान होए, रूप वानराँ दा लेॲा धार साईँ ॥ ९ ॥
करन केॲा शुमार नहिँ अन्त कोई, पए फौज दे फिरन विचकार साईँ ।
तक्कन जिस पासे झरा नझर भर के, वानर दिस्सन हझाराँ हझार साईँ ॥१०॥
किसे रुख उखाड़ के है चुकिआ, रेहा सिल भारी कोई उखाड़ साईँ ।
कहे कोई शाह रावण नूँ पकड़ के ते, देसाँ मैं अकलड़ा[5] मार साईँ ॥११॥

---

१. शिविर । २. इस पार । ३. प्रलय । ४. समुद्र । ५. अकेला ।

कोई कहे लंका नूँ पुट के मैं, सुटसाँ विच समुंदर उलार साईं ।
मिलसी हुकम सानूँ किस वकत कैंह्दे, पए करन सारे इन्तज़ार साईं ।।१२।।

वेख फौज कसीर[1] दिलगीर होए, होया दूर तमाम हंकार साईं ।
बिभीछण वेख दूरों लए पैह्चान दोवें, कीता आन फौरन गिरफतार साईं ।।१३।।

कीते पेश माह्राज दे जा के ते, कैंह्दा हीन दोवें सज़ावार साईं ।
शाह रावण दे एह ताँ हीन नौकर, समझो बड़े मक्कार अय्यार[2] साईं ।।१४।।

फिरदे फौज साडी विच आहे दोवें, पकड़ पेश कराँ गुनहगार साईं ।
छडना इन्हाँ नूँ नहिं *दिलशाद* कदी, एहो अरज़ मेरी बारम्बार साईं ।।१५।।

नौकर एह शाह रावण दे हीन दोवें, आए भेत असाडड़ा लैण दोवें,
देंदे करन नहिं किसे नूं चैन दोवें, दग़ेबाज़ शैतान मक्कार एह ताँ ।
रूप वानराँ दा वेखो धार आए. करन फौज दा इत्थे शुमार आए,
इसे कस्म कारण बदकार आए, फिरदे फौज दे आहे विचकार एह ताँ ।।१६।।

लेॲा इन्हाँ नूँ पकड़ पह्चान के मैं, जासूस शाह रावण दे जान के मैं,
कीते पेश तुसाडड़े आण के मैं, दे देॲो सज़ा सज़ावार एह ताँ ।
रावण कोल हुण परत के जान नाहीं, साडा हाल *दिलशाद* सुणान नाहीं ।
लाज़मँ[3] तरस इन्हाँ उत्ते खान नाहीं, रक्खो करके कैद सरकार एह ताँ ।।१७।।

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माह्राज ने हस्स के ते, कीता राखशाँ थीं इस्तफसार साईं ।
मेरी फौज दे विच किऊँ आए तुस्सी, सच्चोसच्च करदेॲो इज़हार[4] साईं ।।१८।।

नाले डर दे कंबदे पए दोवें, होए होश हवास फरार साईं ।
हत्थ जोड़ के अरज़ फिर करन लगे, कैंह्दे हाँ अस्सी गुनहगार साईं ।।१९।।

शाह रावण ने भेजेॲा है सानूँ, असी हाँ उसदे एहलकार साईं ।
नहिं कोई कसूर माह्राज साडा, होए असी नाहक[5] ख्वार[6] साईं ।।२०।।

करो जान बख़शो दयावान होके, एहो अरज़ साडी सरकार साईं ।
करो मुआफ एह चा कसूर साडा, देॲो बख़श तुस्सी बखशन हार साईं ।।२१।।

१. बहुसंख्यक । २. छलिया । ३. उचित । ४. प्रकट । ५. वृथा । ६. अपमानित ।

लगे कैहण माह्राज न डरो तुस्सी, रक्खो दिल आपना बरकरार[1] साईँ ।
कीता मुआफ कसूर तुसाडड़ा मैं, गेॲा आ मैंनूँ एतबार साईँ ।२२॥
देॲो रावण नूँ एह सनेझा जाके, खबरदार हो जाए होशेॲार साईँ ।
सीता नाल लैके अवे कोल मेरे, देवे छोड़ इसरार तकरार साईँ ॥२३॥
देसाँ कर कसूर मैं मुआफ उसदा, औसी शरण जदों शर्मसार साईँ ।
नहिँ वैर कोई उसदे नाल मेरा, रही उस नूँ मौत पुकार साईँ ॥२४॥
करसी चूर झरूर ग़रूर उसनूँ, होसी रब मेरा मददगार साईँ ।
जिउँदा छोड़साँ न *दिलशाद* कदी, देसाँ मार मैं सने[2] परवार साईँ ॥२५॥

गुप्तचरों का लौट जाना—

दिता छोड़ माह्राज जद राखशाँ नूँ, सिद्धा लंका दे वल रवान होए ।
तकेॲा परत के पिच्छों न फिर उन्हाँ, शुकरगुझार बचा के जान होए ॥२६॥
गोया निकल के मौत दे मुँह विचोँ, हाझर विच दरबार दे आन होए ।
जो कुझ वेख के आए *दिलशाद* उत्थोँ, शाह रावण दे कोल गोयान होए ॥२७॥

करिए अरझ माह्राज जी केॲा असी, साडा होश ते अकल फरार है जी ।
कोहाँ चालिआँ दे विच फौज लत्थी, न कोई अन्त ते न कोई शुमार है जी ॥२८॥
है सुग्रीव राजा उस फौज संदा, अंगद उसदे अगे मुखतार है जी ।
कित्थों ताईँ दसिए माह्राज असी, नाल कई हझार सरदार है जी ॥२९॥
ताकतवर जवान बलवान भारे, समझो सच्च साडी गुफतार है जी ।
देवे इक हिला पहाड़ ताईँ, एह ताँ समझो कई हझार है जी ॥३०॥
सानूँ फिरदेॲाँ फौज विच वेख के ते, बिभीछण आन कीता गिरफतार है जी ।
आई शर्म माह्राज न कोई उसनूँ, कीता पेश जा विच दरबार है जी ॥३१॥
शाह रावण दे हीन जासूस एह ताँ, रूप वानराँ दा लेॲा धार है जी ।
लैन भेत असाडड़ा आए इत्थे, बिभीछण आखदा बाहाँ उलार है जी ॥३२॥
देॲो हुकम सझा सुणा इन्हाँ, कीता मुखफी[3] राझ इझहार है जी ।
रामचन्दर माह्राज फिर पुछन लगे, दस्सो केॲा इत्थे सरोकार है जी ॥३३॥

१. धैर्ययुक्त । २. समेत । ३. गुप्त ।

सच्च-झूठ सुणा के फिर अस्साँ, लेॲा आपणा वक्त गुझार है जी ।
दित्ता छोड़ सानूँ मेहरवान होके, होया रब साडा मददगार है जी ॥३४॥
रैह्मदिल आदल दयावान् पूरे, नहिँ उन्हाँ दे दिल विच खार है जी ।
रेहा नूर झहूर हो मुँह उत्ते, नेक-बखती दा जो[1] असार है जी ॥३५॥
इस कदर इकबाल बलंद हो के, फिर भी उसनूँ नहिँ हंकार है जी ।
सुलह करो *दिलशाद* न लड़ो तुस्सी, इस जेही न होर कोई कार है जी ॥३६॥

कीता सखत बिभीछण ने तंग उत्थे, वाँग बिच्छू दे मारेॲा डंग उत्थे,
दित्ता उलट सारा उस रंग उत्थे, सानूँ पकड़ के पेश हझूर कीता ।
दुशमन आपदा ओह सरकार बनेॲा, रामचन्दर दा जा के यार बनेॲा,
इत्थों नस्स उसदा मददगार बनेॲा, दिलों खौफ तुसाडड़ा दूर कीता ॥३७॥
रामचन्दर तोँ असी कुरबान होए, नरमी उसदी वेख हैरान होए,
उत्ते असाँ दे ओह मेह्रबान होए, सुणके हाल चा मुआफ कसूर कीता ।
रामचन्दर दा वड्डा इकबाल है जी, कई हझार वानर उसदे नाल है जी,
मुशकल झलनी उसदी झाल है जी, सच्च बेॲान *दिलशाद* झरूर कीता ॥३८॥

रावण का वचन—

रहो चुप न करो बकवास इत्थे, झरा तुस्साँ नूँ शर्म हया नाहीँ ।
कित्थों आई ताकत बनवासिआँ नूँ, मिलदी जिन्हाँ नूँ कोई गिझा नाहीँ ॥३९॥
कंद-मूल खुराक उन्हाँदड़ी ए, मिले रैह्ण कारण कोई जा नाहीँ ।
[2]सानी विच दुनिआ नहिँ कोई मैरा, मैनूँ सकदा कोई हत्थ पा नाहीँ ॥४०॥
करसन केॲा मुकाबला नाल मैरे, सकसन आपणी जान बचा नाहीँ ।
देसाँ मार मुका *दिलशाद* सारे, होसी बात एह मैरी खता नाहीँ ॥४१॥

रावण का दरबार—

सारण सुक थीँ सुण के हाल सारा, रावण विच दरबार दे जा बैठा ।
लए सद्द दीवान वझीर सारे, तन वाँग तंदूर तपा बैठा ॥४२॥

१. चिह्न । २. जोड़ ।

खबरदार होशिआर हो जाओ तुस्सी, दुशमन सिर उत्ते कैंह्दा आ बैठा।
दिलशाद समुंदरों पार हो के, कंप विच मैदान दे ला बैठा ॥४३॥

रावण कहे लडिए किवें नाल दुशमन, देॲो सोच के एह बतला साईं।
इन्हाँ बानराँ थीं डरो न तुस्सी, एह ताँ तुसाँ दी हीन गिझा साईं ॥४४॥
माल्यवान् वझीर सी कोल बैठा, गेॲा जोश उसनूँ सुणके आ साईं।
नाना अहा शाह रावण दा एह लगदा, कैंह्दा सुणो मैं देवाँ सुणा साईं ॥४५॥
पादशाहाँ दा तूँ पादशाह है वें, तेरे झोर दा अन्त नहिँ का साईं।
राजनीति असूल दे उत्ते चलना, है राजेआँ एह रवा साईं ॥४६॥
जिन्हाँ धर्म नूँ छोड़ अधर्म कीता, खांदे ओ झरूर ख़ता साईं।
तिन क़िसम दे होवँदे हीन दुशमन, लै सुण झरा दिल लगा साईं ॥४७॥
इक कमझोर, बराबर है दूजा, झबरदस्त तीजा समझ चा साईं।
लड़दा नाल कमझोर दे है जेह्ड़ा, नहिँ ओ सकदा इझत वधा साईं ॥४८॥
सॉवें[1] नाल लड़ाई है समझ चंगी, लैंदे झोर नूँ दोवें अझमा साईं।
झबरदस्त दे नाल नहिँ लड़न चंगा, देंदा मार के ओह मुका साईं ॥४९॥
रामचन्दर भारा झबरदस्त है जी, देॲो खाम खेॲाल हटा साईं।
रैह्म दिल आदल दयावान् है ओ, खलकत देवँदी पई दुआ साईं ॥५०॥
नहिँ मकर-फरेब उस विच कोई, दिल उसदा है सफा साईं।
दुशमन जग सारा तेरी जान दा वे, रहे सभ नूँ तुस्सी सता साईं ॥५१॥
दे देॲो सीता मन्नो गल्ल मैरी, लेॲो अपनी जान बचा साईं।
दित्ता सच्च सुणा *दिलशाद* मैं ताँ, अगों आप दी जो रझा साईं ॥५२॥

रावण का क्रोध—

रावण कहे तूँ उठ घर बैठ जाके, जेकर नहिँ लड़ाई दी ताब तैनूँ।
है सच्च नहिँ बुड्ढे नूँ होश रैंह्दी, दे गई है अकल जेवाब[2] तैनूँ ॥५३॥
बिभीछण जांदेॲा सबक दे गेॲा कोई, गेॲा चढ़ या नशा शराब तैनूँ।
कर हुण चुप *दिलशाद* न बक ऐवें, नहिँ ताँ करांगा मैं खराब तैनूँ ॥५४॥

---

१. तुल्य। २. निषेध-वचन।

रावण गज्ज के बोलेआँ नाल गुस्से, सीता देवनी है मुहाल यारो।
ताकत केआँ तपसिआँ विच होसी, लड़सन केआँ आके मैरे नाल यारो ॥५५॥

देसाँ मार मुका भिरा दोवें, करसाँ बकरे वाँग हलाल यारो।
डरो तुस्सी *दिलशाद* न इन्हाँ कोलों, रखो आपना दिल संभाल यारो ॥५६॥

राम-शिविर में परामर्श—

सद्द के राजे सुग्रीव नूँ कोल आपने, करके मान आदर विठलायो ने।
नल-नील अंगद हनुमान् ताईं, जामावंत समेत बुलायो ने ॥५७॥

नाले होर अफसर जंगी आहे जेहड़े, उन्हाँ सारेआँ नूँ सदवायो ने।
कौंसल होई मुकम्मल *दिलशाद* जदों, ताँ फिर बोल के एह फरमायो ने ॥५८॥

लड़िए नाल रावण किस तौर असी, इस गल्ल नूँ पहिले विचारिए जी।
कीती अरज़ अगों उठके सारेआँ ने, दस्सो एह मुशकल केहड़ी भारिए जी ॥५९॥

देओ हुकम साँनूँ दइए कर धावा, पकड़ विच लंका रावण मारिए जी।
पूरा बोल ज़बान दा कर दइए, मन, तन तुस्साँ उत्तों वारिए जी ॥६०॥

एहो ख्वाहिश माहराज है विच दिल दे, सिरों आपने भार उतारिए जी।
केआ चीज़ *दिलशाद* एह हीन राखश, सिर्फ हुकम संदी इन्तज़ारिए जी ॥६१॥

मैनूँ है एतबार माहराज कैंहदे, जो केहा तुस्साँ है सच्च भाई।
दइए रावण नूँ असी समझा पैहले, केहड़ी गल्ल उत्ते रेहा मैच भाई ॥६२॥

करसी चूर गरूर ज़रूर उसनूँ, रेहा किऊँ अपुट्ठड़ा नच भाई।
सुत्तड़ी मौत नूँ किऊँ जगान लगा, बैठा पैंक नूँ समझ किऊँ कँच भाई ॥६३॥

खोटे कर्म दा फल ज़रूर पासी, कदी पाप नहिं सकदा पच भाई।
चलसी चाल *दिलशाद* जे न सिद्धी, सकसी न साथों कदी बच भाई ॥६४॥

राजनीति असूल भी है एहो, दुशमन आपने नूँ समझा दइए।
विच लड़ाई भलयाई नहिं कोई तेरी, नेक बद उस नूँ बतला दइए ॥६५॥

१. पूर्ण। २. उबल। ३. पक्का। ४. कच्चा।

करिए जबर बेखबर ते न कदी, सुत्ते होए नूँ पैह्ले जगा दइए।
मन्ने गल्ल दिलशाद जद ना कोई, फिर बेशक हथ्यार चला दइए ॥६६॥

हत्थ जोड़ के रहे खलो सारे, कैंह्दे आप दा हुकम मनज़ूर है जी।
लओ अरज़ माह्‌राज जी सुण साडी, करना मुआफ़ नहिँ उसदा कसूर है जी ॥६७॥
देओ भेज कासद कोई कोल उसदे, है नज़दीक रावण नहिँ दूर है जी।
करनी सुलह *दिलशाद* नहिँ उस कदी, ओ ताँ ज़ोर दे विच मग़रूर है जी ॥६८॥

कीती अरज़ अंगद होके दस्तबस्ता, मैनूँ विच लंका दे टोर देओ।
करो कम्म तुस्सी जल्दी एह पैह्ले, गल्लाँ छोड़ माहराज जी होर देओ ॥६९॥
देवाँ रावण नूँ मैं समझा जाके, मेरे हत्थ इस कम्म दी डोर[1] देओ।
दिलशाद जद मन्नेगा न कोई, तरोड़ फिर तुस्सी उसदा ज़ोर देओ ॥७०॥

रावण की ओर पत्र—

गोश होश दे खोल के शाह रावण, लै सुण मेरी गुफतार नूँ तूँ।
दे छोड़ मस्ती, हस्ती है पस्ती[2], झूठा समझ लै इस संसार नूँ तूँ ॥७१॥
विद्यावान् इतना ज्ञानवान् हो के, बैठा किऊँ त्याग विचार नूँ तूँ।
ज़ेरों ज़बर अते ज़बरों ज़ेर हुँदे, दे अहमका छोड़ हंकार नूँ तूँ ॥७२॥
नहिँ वैर कोई साडा नाल तेरे, बदले फुल हत्थ पाएँ किऊँ खार नूँ तूँ।
बनें किऊँ रकीब[3] तबीब[4] हो के, दारू दे शफा बीमार नूँ तूँ ॥७३॥
दे भेज सीता जलदी कोल मेरे, लै बचा अपने परिवार नूँ तूँ।
बैह के बाग दी वेख बहार मूरख, ऐवें न उजाड़ गुलज़ार नूँ तूँ ॥७४॥
इस वणज विच ताँ घाटा जाण दा ई, दे छोड़ इस झूठे बपार नूँ तूँ।
रैह्म कर रिआया दे हाल उत्ते, कर वीरान[5] न वसदी दयार[6] नूँ तूँ ॥७५॥
घड़ी पाप दी चुक के मर नाहीँ, दे सिरों उतार इस भार नूँ तूँ।
अजे है वेला तेरे समझने दा, तासेँ पिछोँ वरना आखरकार नूँ तूँ ॥७६॥

१. संभाल (=उत्तरदायिता)। २. पतन। ३. शत्रु। ४. वैद्य। ५. उजाड़। ६. नगरी।

देसाँ कर कसूर मैं मुआफ तेरे, जे कर चलेंगा सिद्धी रफतार नूँ तूँ।
आई समझ *दिलशाद* जे न तैनूँ, देसैँ सिर फिर समझ तलवार नूँ तूँ ॥७७॥

लिख मरासला[1] अंगद नूँ कैह्‌ण लगे, एह कम्म भैय्या कर आ हुण तूँ।
करना खौफ नहिँ ज़रा भी किसे गल्ल दा, हो बेधड़क लंका चला जा हुण तूँ ॥७८॥

हाज़र कोल शाह रावण दे हो के ते, आ मरासला एह पौंह्‌चा हुण तूँ।
मुआफी मंग *दिलशाद* ओ लवे आके, आवीँ उसनूँ एह सुणा हुण तूँ ॥७९॥

अंगद और रावण—

लै के आग्या पेऑ फिर टुर उत्थोँ, तरफ लंका दे कदम उठाया सू।
गेऑ पौंह्‌च दरबार दे विच जाके, कोई खौफ न दिल ते लाया सू ॥८०॥

अंगद नाम मैरा पुत्तर हाँ बाली, पैहले आपणा आप बतलाया सू।
रामचन्दर माह्‌राज दा मैं कासद, कड्ढ मरासला हत्थ फड़ाया सू ॥८१॥

लओ पढ़ जो लिखेऑ विच इस दे, शाह रावण नूँ आख सुणाया सू।
मंग लओ मुआफी देवाँ आख साफी[2], करो दूर ग़रूर समझाया सू ॥८२॥

बैठा विच गुस्से अगे अहा रावण, उत्तों जा के फिर तपाया सू।
ऐसे बोल *दिलशाद* जा अंगद बोले, गोया बैलदी[3] उत्ते तेल पाया सू ॥८३॥

गल्लाँ अंगद दिआँ सुण के अंगद ताईँ, गुस्से हो रावण दुँरकारेऑ[4] ए।
जा उठ दिखला न मुँह मैनूँ, किऊँ शर्म बेशर्मा उतारेऑ ए ॥८४॥

आयों बन कासद उसदा कोल मैरे, जिस बाप तेरे नूँ मारेऑ वे।
दित्ता राज सुग्रीव नूँ खोह तेरा, तेरा दस्स उस के संवारेऑ वे ॥८५॥

लैंदोँ बदला बाप दा उस कोलोँ, मन, तन उलटा उस तोँ वारेऑ ए।
शाह बाली दा पुत्तर सपुत्तर हो के, केह्‌ड़ी गल्ल उत्तोँ दिल हारेऑ ए ॥८६॥

देंदा मदद मैं भी जे तूँ आन मंगदोँ, दस्स काँ एह तूँ के विचारेऑ ए।
दित्ताई डोब *दिलशाद* तूँ नाम बाली, बैठोँ बुरा कर कम्म निकारेऑ[5] ए ॥८७॥

१. पत्र। २. स्पष्ट। ३. ज्वाला। ४. तिरस्कार किया। ५. हे नीच कर्म वाले।

अंगद का वचन—

मैरे बाप दी मौत सी इसे तरह, है सभी उत्ते ज़बरदस्त होणी।
दौलतमंदाँ नूँ करे कंगाल ऐही, पादशाहाँ नूँ पाउँदी वखत होणी।८८॥
करदी किसे दी नहिँ परवाह कदी- रैंह्दी मस्त सदा अलमस्त[1] होणी।
खबर इसदी किसे नूँ नहिँ कोई, हर इक दे नाल पेवस्त[2] होणी॥८९॥
नहिँ चलदा ज़ोर कोई नाल इसदे, है बलवान् भारी एह सख़त होणी।
वेख कर अन्हा[3] दित्ता इस तैनूं, कीते बखत तेरे बैरगश्त होणी॥९०॥
विच्च ज़वाल इकबाल आ गेॲा तेरा, लगी खोन तैंथों तेरा तख़त होणी।
समझ सच्च *दिलशाद* यकीन करके, लगी ओही तैनूँ करन पस्त होणी॥९१॥

रही ताब न ज़रा जुआब सुण के, रावण विच दिल दे वट्ट खान लग्गा।
मैथों कंबदी, आखदा खलक सारी, है एह कौन जो मैनूँ डरान लग्गा॥९२॥
इसनूँ पकड़ के मौत लै आई इत्थे, एह हुण इस जहान तोँ जान लग्गा।
गुस्से नाल *दिलशाद* फिर लाल होके, रामचन्दर दे वल लिखवान लग्गा॥९३॥

पत्र का उत्तर—

तेरे खत दा देवाँ जवाब तैनूँ, सुण गल्ल मैरी लै सफा हुण तूँ।
भला चाहें जे अपनी जान सदा, बन्न्ह[5] बोरिआ बिस्तरा चा हुण तूँ॥९४॥
आयोँ मरण किऊँ अपने आप इत्थे, केहा मन्न मैरा नस्स जा हुण तूँ।
नहिँ ताँ जाएँगा घर न परत मुड़के, गेऒँ मौत दे मुँह विच आ हुण तूँ॥९५॥
ताकत केॲा निँमाणेॲाँ वानराँ दी, आँदे नाल जो इत्थे चढ़ा हुण तूँ।
एह ताँ राखशाँ दी सच्च सुण मैथोँ, आयोँ लै के नाल गिज़ा हुण तूँ॥९६॥
गिद्दड़-भँबकिआँ नाल नहिँ कोई डरदा, रेहोँ किसनूँ दस्स डरा हुण तूँ।
मैरे जिऊँदिआँ सीता दा मिलन औखा, लख ज़ोर भावेँ लै ला हुण तूँ॥९७॥
कदी झल न सकेंगा झाल मैरी, बैठों झूठे खेआल जमा हुण तूँ।
करसेँ केॲा मुकाबला नाल मैरे, भुन्ने[8] तित्तर न पेॲा उडा हुण तूँ॥९८॥

१. निश्चित। २. जुड़ी हुई। ३. अन्धा। ४. विपरीत। ५. बांध ले। ६. तुच्छ। ७. गीदड़ की ललकारें (कोरी शेखियां)। ८. भूने गए।

सुत्ती आपणी मौत जगा नाहीँ, राह अपुट्ठड़े पैर न पा हुण तूँ ।
आखे लग *दिलशाद* जा परत पिच्छे, जान आपनी न गँवा हुण तूँ ॥९९॥

गुस्से हो रावण कैंह्दा अंगद ताईँ, हो जा दूर इत्थोँ उठ जा जलदी ।
तैरी शकल मैं वेखणी नहिँ चाँह्दा, डिट्ठा मुँह ते कंड वखा जलदी ॥१००॥
लैके ख़त दा एह जुआब मैथोँ, रामचंदर नूँ जा पौंह्चा जलदी ।
जे कुझ ज़ोर *दिलशाद* है विच उसदे, लड़े विच मैदान दे आ जलदी ॥१०१॥

अंगद का वचन—

दस्सो गल्ल केह्ड़ी एडी एह भारी, कारण जिस झगड़ा तुस्सी पा बैठे ।
लैके नाल सीता चलो मिलिए जी, किऊँ इतनी ज़िद वधा बैठे ॥१०२॥
कई करोड़ जानाँ ज़ाया हो जासन, उलटे किऊँ ख़्यॆआल जमा बैठे ।
दिलशाद चल के लॅओ मंग मुआफी, ओ ताँ विच लंका हुण आ बैठे ॥१०३॥

रावण का वचन—

हो जा दूर इत्थोँ तैनूँ आखॆआ मैं, पॆआ बोल अवलड़े बोल नाहीँ ।
कोई शरम बेशरमा नहिँ तैनूँ, बस चुप हो जा, मुँह खोल नाहीँ ॥१०४॥
केॅआ चीज़ तपसी एह हीन तेरे, कदी आ सकदे मैरे कोल नाहीँ ।
समझ सच्च *दिलशाद* नहिँ झूठ ए ताँ, सीता लैवंणी[1] कोई मखौल नाहीँ ॥१०५॥

अंगद का वचन—

मैंनूँ कहें बेशरम, नहिँ शरम तैनँ, तेरी भैन भी नक कटवा आई ।
इन्हाँ तपसिआँ नाल कहेड़े[2] केते, भाई आपने दोहँ मरवा आई ॥१०६॥
रोंदी पिट्टदी चीकदी कोल तेरे, विच सिर दे मिट्टी ओ पा आई ।
देवाँ सच्च *दिलशाद* सुणा तैनूँ, समझ रावणा तेरी कज़ा आई ॥१०७॥

रावण का वचन—

आवे रह्म मैनूँ तेरे हाल उत्ते, नहिँ ताँ सिर मैं तेरा उडा देंदा ।
बोले बोल अवलड़े एह जेह्ड़े, मज़ा इन्हाँ दा तैनूँ चखा देंदा ॥१०८॥

---

१. लेनी । २. छेड़ कर ।

हैसी यार मैरा बाली बाप तेरा, इसे वासते नहिँ सझा देंदा ।
औंदोँ जे *दिलशाद* तूँ कोल मैरे, तैनूँ राज मैं तेरा दिला देंदा ॥१०९॥

वाँग गीदिआँ दिल किऊँ हारेऑा ई, पुत्तर बाली संदा नेक नाम हो के ।
दित्ता बाप मरवा जिस आप तेरा, रेहोँ उस दे कोल गुलाम हो के ॥११०॥
हुण भी कोल मैरे बेशक आ जा तूँ, कर काम मुख़्तार तूँ आम हो के ।
झरा कर खे़आल *दिलशाद* कुझ्झ ताँ, फिरें मूरखा किऊँ बेलगाम[१] हो के ॥१११॥

अंगद का वचन—

मैनूँ है मालूम माह्‌राज सारा, मैरे उत्ते तुस्सी मेहरबान आहो ।
महीने छः रहे कोल बाप मैरे, घर असाडड़े विच मेहमान आहो ॥११२॥
मैनूँ दोसती दी नहिँ खबर कोई, उत्थे कैद तोँ विच झिन्दान[२] आहो ।
करो याद *दिलशाद* उस वेलड़े नूँ, पांदे वासते जदोँ भगवान् आहो ॥११३॥

लॅओ सुण माह्‌राज जी सच्च मैथोँ, इन्हाँ गल्लाँ नूँ इत्थे न छेड़िए जी ।
विच गल्ल पराई तद हत्थ पाइए, गल्ल आपनी पैह्‌लोँ निबेड़िएँ[३] जी ॥११४॥
समझ सोच के रखना पैर चाहिए, नाहिँ खूह अपुट्ठड़ा गेड़िएँ[४] जी ।
हार मन्न *दिलशाद* बेशक लड़ए, नाल डाढेऑं न कहेड़िएँ[५] जी ॥११५॥

रावण का वचन—

बनेंऑं गिद्दड़ किऊँ शेर दा पुत्तर होके, होके हंस काह्‌नूँ बन लग्गड़[६] रेहोँ ।
लत्थी-चढ़ी[७] दी नहिँ कोई खबर तैनूँ, एवेँ बन्ह सिर ते एडा पग्गड़ रेहोँ ॥११६॥
के लगदे दस ओ हुण तेरे, जिन्हाँ वासते इतना झगड़ रेहोँ ।
इन्हाँ तिलाँ विच्च तेल *दिलशाद* नहिगाँ, पाके विच लंगरी जेहड़े रगड़ रेहोँ ॥११७॥

अंगद का वचन—

झूठे दिल दे छड्डु खे़आल दे तू, पैर राह अपुट्ठड़े पा नाहीँ ।
लै भुल बखशा चल नाल मैरे, एवें आपनी जान गँवा नाहीँ ॥११८॥

---

१. उच्छृङ्खल । २. बंदी । ३. पूरी कर लें । ४. घुमाएँ । ५. झगड़ा करें ।
६. बगला । ७, उतार-चढ़ाव (मान-अपमान) ।

नहिँ ताँ जाउसी पेश न कोई तेरी, समझ सच्च एह झूठ ज़रा नाहीँ ।
आखे लग *दिलशाद* मन्न गल्ल मेरी, पेॲा सुत्तड़ी मौत जगा नाहीँ ॥११९॥

रावण का वचन—

अगे तुध थीँ भी इक आया सी, उस भी आण के एहो सुणाया सी,
शकल देख मेरी घबराया सी, गेॲा नस्स फिर जान बचा के ते ।
नहिँ ताँ मज़ा मैं उसनूँ चखा देंदा, सिर उसदा इत्थे उड़ा देंदा,
कदी खबर न परत के जा देंदा, रखदा जेल दे विच या पा के ते ॥१२०॥
उसे वाँग तेरा मैंनूँ हाल दिसदा, तेरे दिल दा ओही खेआल दिसदा,
खड़ा सिर तेरे उत्ते काल दिसदा, वापस पौंहचसें न इत्थों जा के ते ।
करके चुप *दिलशाद* उठ जा हुण तूँ, ऐवें पेॲा न मैंनूँ सता हुण तूँ,
जा नस्स ते देर न ला हुण तूँ, नहिँ ताँ जाएँगा जान गँवा के ते ॥१२१॥

अंगद का वचन—

कीता चंगा एह याद करवाया ई, मैंनूँ आपने आप बतलाया ई,
हाल उसदा चा सुणाया ई, एह ताँ मुआमला समझ कुछ होर बनेॲा ।
मतलब अहा न कोई समझाउने दा, उसनूँ हुकम सी लंका जलाउने दा,
मुशकाँ[1] बन्ह के तैनूँ लेआउने दा, जानाँ केॲा ओ किऊँ कमज़ोर बनेॲा ॥१२२॥
नहिँ खबर बैठा कित्थे छुप के ओ, कीता कैद या किसे ने नप के ओ,
डुबेॲा हिके[2] समुंदर नूँ टप के ओ, घर-बार नूं छोड़ लैटोर[3] बनेॲा ।
साडे कोल ओ परत के आया नहिँ, जद के हुकम नूँ तोड़ चढाया नहिँ,
ताहीं मुंह *दिलशाद* दिखलाया नहिँ, सारी फौज संदा समझो चोर बनेॲा ॥१२३॥

रावण का वचन—

आवे समझ दे विच न कुछ मैंनूँ, तूहीँ दस्स इत्थे तूँ के करन आया ।
आयों बन कासद या के हैं दुशमन, पानी खड़े दरया दा भरन आया ॥१२४॥
बन उसताद या आयों सिखान मैंनूँ, या के तूँ इत्थे मेरी शरण आया ।
आँदा पकड़ के मौत *दिलशाद* तैनूँ, किऊँ आपने आप तूँ मरण आया ॥१२५॥

---

१. पकड़ । २. अथवा । ३. घुमक्कड़ ।

अंगद का वचन —

बैठों पकड़ चाले जेहड़े एह हुण तूँ, लै समझ एह सभ अवलड़े नीँ।
तेरे जहे राजे शाहझोर कितने, आखर विच मिट्टी जाके रैलड़े नीँ ॥१२६॥
नहिँ सौरदे उन्हाँ दे कम्म कदी, जेहड़े चाल अपुठ्ठड़ी चलड़े नीँ।
होया बचन मुहाल *दिलशाद* तेरा, तैनूँ मौत सँनेहड़े घँलड़े नीँ ॥१२७॥

कह्वाँ होर माह्राज ताँ केँआ कह्वाँ, आख आख के मैरी झबान थक गई।
होया असर अफसोस नहिँ कोई तुस्साँ, ताकत झायल होई मैरी जान अक गई ॥१२८॥
गेँआ हो यकीन झरूर मैनूँ, आ हुण मौत तुसाडड़ी बेशक गई।
असी कट्टन नूँ आए *दिलशाद* इत्थे, तैरी झिन्दगी दी समझ रेहूड़ँ पक गई ॥१२९॥

कवि-वचन —

आहे मौजूद वझीर दीवान उत्थे, नाल होर जरनैल करनैल कितने।
गल्लाँ अंगद दिआँ सुण के कंबन लगे, गए डर सारे उत्थे आहे जितने ॥१३०॥
कोई बोल के गल्ल नहिँ कर सकदा, बैठे आहे दरबार दे विच इतने।
आपस विच *दिलशाद* पए कैह्ण सारे, पए जाग कित्थों अचन चेत फितने ॥१३१॥

अंगद का वचन —

लओ सुण माह्राज जी गल्ल मैरी, देवाँ झगड़े नूँ मैं मिटा इत्थे।
तुस्साँ कोल जवान बलवान् जेहड़े, उन्हां सारेँआँ नूँ लओ बुला इत्थे ॥१३२॥
रक्खाँ पैर झमान ते आपना मैं, देवे उसनूँ कोई हिला इत्थे।
चले जावाँगे छोड़ के फिर सीता, लवे पैर जो कोई उठा इत्थे ॥१३३॥
होया फैसला ते गए मिट झगड़े, दित्ती शर्त्त मैं एह लगा इत्थे।
एह लो फिर *दिलशाद* मैं रक्ख दित्ता, ताकत अपनी देओ दिखला इत्थे ॥१३४॥

रावण का वचन —

रावण सुण के गल्ल एह कैह्ण लग्गा, दिल लड़ाई थीँ इन्हाँ दे डोलेँआ वे।
"देँओ चुक्क बहादुरो, पैर इस दा", वांग शेर दे गज्ज के बोलेँआ वे ॥१३५॥

---

१. आचार (कर्म)। २. मिल गये। ३. सिद्ध होते। ४. संदेश। ५. भेजे। ६. तंग। ७. खेती। ८. शरारती।

झोर तुसाडड़े दी नहिँ खबर इसनूँ, ताहीँ तुस्साँ नूँ इस टटोलेआ वे ।
देओ तरोड़ अभमान *दिलशाद* इसदा, एडा कुफ़र[1] काफ़र[2] काह्नूँ बोलेआ वे ॥१३६॥

बैठे आहे दरबार दे विच जेहड़े, झोर आपने नूँ अझमान लगे ।
वारो वार सुण यार गुफ्तार मैरी, आके अंगद दा पैर उठान लगे ॥१३७॥
हलदा पैर नहिँ झरा झमीन उत्तों, झोर सारे सरीर दा लाण लगे ।
गए हो शर्मिन्दे *दिलशाद* सारे, विच दिल दे होण हैराण लगे ॥१३८॥

हो हैराण लगा कैह्ण शाह रावण, तन गुस्से दी अग्ग दे विच जलेआ ।
लाया झोर सरीर दा सभनाँ ने, झरा पैर झमीन तों नहिँ हलेआ ॥१३९॥
इझत खाक दे विच गई मिल मैरी, झोर किसे दा इस ते नहिँ चलेआ ।
करनहार *दिलशाद* जद आप होवे, सके पैर उठा फिर कौन भलेआ ॥१४०॥

शर्मसार होके उठेआ शाह रावण, देखो पैर हुण आप उठान लग्गा ।
उतर तख़त तों सामने आन खला, हत्थ अंगद दे पैर नूँ पाण लग्गा ॥१४१॥
लेआ पैर नूँ अंगद उठा जलदी, होके नीवां[3] जद सिर भुकान लग्गा ।
पैह्ले गल्ल *दिलशाद* लै सुण मैरी, अंगद रावण नूँ फिर सुणान लग्गा ॥१४२॥

अंगद का वचन—

मैरी शरण लगेआँ नहिँ कोई फायदा, शरण रामचन्दर विच जा हुण तूँ ।
लैके नाल सीता चल नाल मैरे, भुल आपणी लै बखशा हुण तूँ ॥१४३॥
है भलयाई तेरी मन्न गल्ल मैरी, जान आपणी लै बचा हुण तूँ ।
थोड़ी बात दे वासते *दिलशादा*, नास आपणा न करवा हुण तूँ ॥१४४॥

रावण का तलवार निकालना—

सुखन सुण के अंगद दे तैश[4] आया, हत्थ विच मेआन दे पाया सू ।
लई कड्ढ तलवार मेआन विचों, अंगद मारने नूँ दिल चाहेआ सू ॥१४५॥

१. झूठ । २. झूठा । ३. नीचा । ४. क्रोध ।

अंगद मार के छाल हवा होया, चिर ज़रा भी फिर न लाया सू ।
रामचन्दर माह्राज दे कोल आके, सारा हाल *दिलशाद* सुणाया सू ॥१४६॥

अंगद का रामचन्द्र से वचन—

अंगद आखेॲा रावण दे नाल मैरा, होया विच दरबार तकरार है जी ।
नहिँ सुलह मनज़ूर हज़ूर उसनूँ, उसदे दिल दे विच हंकार है जी ॥१४७॥
मन्नी गल्ल मैरी नहिँ उस कोई, दित्ता साफ उस कर इनकार है जी ।
मुआफी मंगदा नहिँ *दिलशाद* ओ ताँ, बैठा लड़न नूँ हो तैय्यार है जी ॥१४८॥

सुग्रीव का वचन—

कीती अरज़ सुग्रीव हत्थ जोड़ के ते, करनी नहिँ माह्राज हुण देर चाहिए ।
इसी वकत दइए धावा कर अस्सी, लैणी लंका चौफेरेॲोँ घेर चाहिए ॥१४९॥
नहिँ गल्ल मन्नी रावण जद कोई, करना पकड़ के उसनूँ ज़ेर चाहिए ।
मिन्नताँ नाल *दिलशाद* नहिँ कम्म होंदे, लैणी सीता ब[1]ज़ोर शमशेर चाहिए ॥१५०॥

रावण का दरबार—

सकेॲा अंगद नूँ पकड़ नहिँ जद कोई, ग़[2]ज़बनाक होके रावण बोलेॲा वे ।
रक्खो हौसला डरो न ज़रा यारो, मैं ताँ हत्थ भी अजे नहिँ खोलेॲा वे ॥१५१॥
देसाँ पल विच मार मुका सारे, किऊँ दिल तुसाडड़ा डोलेॲा वे ।
हो जाओ तैय्यार *दिलशाद* तुस्सी, तन मन मैं तुस्साँ तोँ घोलेॲा वे ॥१५२॥

दित्ता हुकम सुणा जरनैल नूँ एह, तुस्सी फौज नूँ रखो लै आ इत्थे ।
र[3]खेॲा शैह्र दी करनी ज़रूर चाहिए, सके नाँ दुश्मन पैर पा इत्थे ॥१५३॥
विच दरवाज़ेॲाँ रखो मज़बूत फेरे, बैठो आपणा कंप लगा इत्थे ।
ऐर-ग़ैर[4] *दिलशाद* जे कोई आवे, देॲो उस दा सिर उडा इत्थे ॥१५४॥

दित्ती कर जरनैल तामील फौरन, ज़रा देर न कोई लगाई उसने ।
इक फौज भारी भारे दिल वाली, विच लंका दे आन पौंह्चाई उसने ॥१५५॥

१. शक्ति से । २. क्रुद्ध । ३. रक्षा । ४. अपरिचित ।

कुझ बाहर ते कुझ फिर शैह्‌र अन्दर, कुझ दरवाझेआँ विच बिठलाई उसने ।
इन्तझाम सारा दिलशाद करके, खबर रावण नूं जा सुणाई उसने ॥१५६॥

सुण रपोट लगा कैह्‌न शाह रावण, खबरदार हो जाओ होशेआर तुस्सी ।
दुश्मन सिर साडे उत्ते आन खला, बैठो लड़न नूँ हो तैय्यार तुस्सी ॥१५७॥
नहिँ वक्‍त रेहा कोई सोचने दा, निकलो विच मैदान ललकार तुस्सी ।
केआ चीझ दिलशाद एह हीन वानर, पकड़ मूझिआँ नूँ देओ मार तुस्सी ॥१५८॥

लंका पर चढ़ाई—

अरझ सुण सुग्रीव दी कैह्‌ण लगे, असां फरझ अपना कर अदा दित्ता ।
कोल रावण दे अंगद नूँ भेज के ते, अच्छी तरह उसनूं समझा दित्ता ॥१५९॥
आई समझ जद उसनूँ नहिँ कोई, देओ कर चढ़ाई फरमा दित्ता ।
होया खुश सुग्रीव एह हुकम सुण के, बिगुल हल्ले दा तुरत करवा दित्ता ॥१६०॥
पई फौज लंका उत्ते धा सारी, घेरा चार चौफेरेओं पा दित्ता ।
वाँग शेर दे लगे नी गज्जन सारे, झंडा विच मैदान दे ला दित्ता ॥१६१॥
कीता जिस मुकाबला आन अग्गोँ, उसनूं पकड़ के मार मुका दित्ता ।
जाके रावण दे कोल फिर राखशां[1] ने, सारा हाल दिलशाद सुणा दित्ता ॥१६२॥

दित्ती रावण नूँ खबर जा राखशां ने, हाझर होके विच दरबार साईँ ।
चढ़ रामचन्दर आया फौज लैके, वानर फिरदे शैह्‌र विचकार साईँ ॥१६३॥
पैह्‌रेदार जो आहे दरवाझेआँ ते, दित्ता सारेआँ नूँ उन्हाँ मार साईँ ।
होंदा डरदा सामने नहिँ कोई, गए नस्स के हो फरार साईँ ॥१६४॥
गल सुण के सबर नहिँ कर सकेआ, उठेआ शाह रावण ललकार साईँ ।
करो देर बहादुरो न तुस्सी, निकलो लैके हुण हथ्यार साईँ ॥१६५॥
हुकम सुण एह फौज पई धा उत्थोँ, गए नाल सिपाहसालार साईँ ।
गेआ हो मुकाबला पलटनाँ दा, करन हमले बाहाँ उलार साईँ ॥१६६॥

१. अत्याचारियों ।

कई तीर कमान थीँ खिच्च मारन, कई पए चलान तलवार साईँ।
कई पकड़ गुरंझां लगे करन हमले, कई बरछिआँ दे करन वार साईँ ॥१६७॥
कई रुख उखाड़ के पए मारन, पत्थर मारदे कई लगातार साईँ।
फिरन कटदे, फटदे हटदे नहिँ, खड़े विच मैदान सरदार साईँ ॥१६८॥
रामचन्दर लछमन भी वेख के ते, पकड़ धनश हो गए तैय्यार साईँ।
तीर दुहाँ दे आन के चलन लग, वाँग मीहँ दे मूसलाधार साईँ ॥१६९॥
तीर चीर सरीर नूँ जान सारे, राखश आन के होए लाचार साईँ।
गिनती रही हिसाब दी नहिँ कोई, गए मर राखश बे-शुमार साईँ ॥१७०॥
नदी खून दी समझ तूँ चलन लगी, पैइआँ तरन लाशाँ मंझदार साईँ।
फौज वानराँ विच भी मोए बौह्ते, गए नस्स राखश आखरकार साईँ ॥१७१॥
खबरदार मैदान थीँ नस्सना नहिँ, रहे जरनैल करनैल पुकार साईँ।
दे के हौसला फौज नूँ *दिलशादा*, दित्ता सामने फिर खलार साईँ ॥१७२॥

गेआ गुझर लड़ाई विच दिन सारा, पई रात काली उत्तोँ आन प्यारे।
हत्थ मारेआँ हत्थ ते नहिँ दिसदा, सके हो नाँ कोई पछान प्यारे ॥१७३॥
हल्ला कर राखश पए धा सारे, लगे आन तलवार चलान प्यारे।
अन्हेरे[२] विच घेरे वानर राखशां ने, पकड़ पकड़ के पए गिरानै[३] प्यारे ॥१७४॥
मारो मार चौफेरेओं करन लगे, वेदीन राखश वेईमान सारे।
रामचन्दर माह्राज दे कोल जाके, लगा एह बिभीछन सुणान प्यारे ॥१७५॥
अन्धेरे विच नहिँ दिसदा वानराँ नूँ, रही फौज साडी हो हैरान प्यारे।
करो कोई तझवीझ माह्राज इसदी, राखश फौज नूँ लगे मुकान प्यारे ॥१७६॥
सुण के गल्ल बिभीछण दी रामचन्दर, लगे हस के अगोँ फरमान प्यारे।
कीतोंई[४] बोह्त चंगा दस्याई[५] आन मैनूँ, होया मैं ममनून एहसान प्यारे ॥१७७॥
इस गल्ल दा फिकर न कर कोई, करसी मदद मैरी भगवान् प्यारे।
कीती देर न पल दी फेर उत्थे, चुक तुरत लेआ धनुषबाण प्यारे ॥१७८॥

१. गदाएँ। २. अन्धेरे। ३. गिराने। ४. किया है। ५. बताया है।

अगन बाण नूँ पकड़ चला दित्ता, उसे वकत उत्ते आसमान प्यारे।
होया चांदना दिन दे वाँग उत्थे, फैली रोशनी विच मैदान प्यारे ॥१७९॥
खबरदार होशेआर हो गए वानर, लगे दिल दा कड्ढण अरमाण प्यारे।
जिसनूँ पकड़दे छोड़दे नहिँ उसनूं, राखश लगे *दिलशाद* घबरान प्यारे ॥१८०॥

वाह वाह चांदनी चन्न दे नूर जेही[1] ए, हनेरी[2] रात वी[3] हो फिर दूर गई ए,
हर इक चीझ हुण ताँ नझर आ रही ए, होके खुश वानर ललकारदे नीँ।
जिसनूँ फड़ लैंदे उसनूँ छोड़दे नहिँ, मदद साथिआं दी कोई लोड़दे[4] नहिँ,
पिछे आपने पैर नूँ मोड़दे नहिँ, पकड़ राखशां नूँ पए मारदे नीँ ॥१८१॥
कोई पकड़ सूली उत्ते चाहड़दा ए, कोई मार के पेॲा लताड़दा ए,
सिट के विच अग्ग दे कोई साड़दा ए, कई चुक समुंदर विच डारदे[5] नीँ।
तस्मे[6] राखशाँ दे खूब कॅस्सन लगे, राखश जान बचा के नस्सन लगे,
वानर वेख *दिलशाद* फिर हसन लगे, खड़े विच मैदान वंगारदे नीँ ॥१८२॥

सारी रात लड़ाई एह रही होंदी, कित्थोँ ताईँ म कराँ बेॲान प्यारे।
आखरकार राखश गए हार सारे, लगे नस्स के जान बचान प्यारे ॥१८३॥
सेनापति बृहस्त जरनैल सुबह, लगा आण के शोर मचान प्यारे।
पकड़ वानराँ नूँ लगा मारने ओ, है सी बौहत भारा बलवान् प्यारे ॥१८४॥
सामने उसदे गज्ज के शेर वाँगोँ, गेॲा हो खड़ा हनुमान् प्यारे।
कैंह्दा[7] नाल भैरे कर हत्थ आके, लगोँ फौज नूँ किऊँ डरान प्यारे ॥१८५॥
लगा मारने तीर महाबीर ताईँ, पकड़ हत्थ दे विच कमान प्यारे।
महाबीर बचा के वार उस दा, लगा बृहस्त ताईँ हत्थ पान प्यारे ॥१८६॥
गरदन पकड़ गिराया झमीन उत्ते, झरा सुण अगोँ कर धेॲान प्यारे।
सीने विच मारी ऐसी लत कारी[8], दित्ती कड्ढ बृहस्त दी जान प्यारे ॥१८७॥

१. जैसी। २. अन्धेरी। ३. भी। ४. चाहते। ५. फैंकते। ६. तनियाँ।
७. कहने। ८. घातक।

रूह[1] जिस्म थीँ हो अलग गेॲा, होया वासल[2] जहन्नम शैतान प्यारे ।
रामचन्द्र माहराज दे जयकारे, लर्गा फौज *दिलशाद* बुलान प्यारे ॥१८८॥

रावण का मेघनाद से वचन—

मेघनाथ नूँ सद के कोल आपने, शाह रावण फिर एह फरमान लगा ।
प्यारा अहा जरनैल एह बौहत मैनूँ, इसदे मरन दा सखत अरमान लगा ॥१८९॥

बदला दस्त बदस्त लै लओ इसदा, गज्ज के विच दरबार सुणान लगा ।
सुण के हुकम *दिलशाद* एह बाप कोलों, मेघनाथ लड़ाई नूँ जाण लगा ॥१९०॥

मेघनाद का युद्ध—

मेघनाथ हुण विच मैदान जंग दे, उत्ते रथ दे होके स्वार आया ।
लए नाल हथ्यार संभाल सारे, पकड़ हत्थ दे विच तलवार आया ॥१९१॥

मेघनाथ नूँ आउँदा वेख दूरों, विच मैदान दे अंगद ललकार आया ।
तेरे नाल *दिलशाद* जी लड़न कारण, अंगद आखदा हो मैं तैय्यार आया ॥१९२॥

लेॲा सुण इतना मेघनाथ जदोँ, तुरत रथ नूँ चा खलारेॲा सू ।
कीती देर न पल दी फिर जालम, तीर खिच कमान थीँ मारेॲा सू ॥१९३॥

फुरती नाल बचा के वार अंगद, बदला लैण कारण फिर विचारेॲा सू ।
लई चुक *दिलशाद* इक सिल भारी, होके सामने जा वंगारेॲा सू ॥१९४॥

अंगद सिल भारी ऐसी चुक मारी, जिसदे लगदेॲांई रथ चूर होया ।
दित्ते मार घोड़े नाल रथवाई[3], मेघनाथ दा दूर ग़रूर होया ॥१९५॥

प्यादा पा होके फिर लड़न लगा, वले दिल विच खौफ झरूर होया ।
जांदी पेश *दिलशाद* नहिँ कोई उसदी, ताकत अंगद दी वेख मजबूर होया ॥१९६॥

पेॲा फुरतिआँ करे हझार भावेँ, जांदी पेश नहिँ कोई तदबीर उसदी ।
अंगद सुटेॲा चुक झमीन उत्ते, रही चल अक्खिओँ धारा नीर उसदी ॥१९७॥

१. आत्मा । २. प्राप्त (प्रविष्ट) । ३. सारथि ।

कीती लत घुसन्ने दी मार उत्तों, दित्ती होश भुला सरीर उस दी।
गेआ नस्स *दिलशाद* शिकस्त खाके, ताकत झायल हो गई अखीर उस दी ॥१९८॥

मेघनाद की माया—

खा हार नस्सेआ जद मैदान विचों, ग़मगीन मलूल परेशान होया।
विच दिल दे करन अफसोस लगा, ताकत अंगद दी वेख हैरान होया ॥१९९॥
मैरे वासते नस्सना ऐब कैंह्दा, हुण ताँ नस्स के ते पशेमान होया।
गेआ ग़ायब *दिलशाद* हो नज़र विचों, चढ़के उत्ते असमान पिनहान[1] होया ॥२००॥

लगा मारने तीर असमान उत्तों, वानर वेख के होए हैरान सारे।
विच मैदान नहिँ आउँदा नज़र कोई, लगे वेखने तरफ असमान सारे ॥२०१॥
सर्प बाण चला शैतान देंदा, हो बेहोश डिग्गे विच मैदान सारे।
दिसदे सर्प ही सर्प *दिलशाद* उत्थे, लगे वेख वानर डर खान सारे ॥२०२॥

रामचन्दर ते लछमन नूँ वेख दूरों, दूजा बाण इक होर चला देंदा।
नाग फांस दे विच फिर जकड़ के ते, उत्ते धरती दे दोहेँ लिटा देंदा ॥२०३॥
औंदा नज़र नहिँ किसे नूँ कोई उत्थे, केआमत विच मैदान मचा देंदा।
लैंदा कड्ढ अरमान *दिलशाद* दिलदा, जोहर[2] आपना खूब दिखला देंदा ॥२०४॥

नाग फांस दे विच लए जकड़ सारे, सर्प बाण शैतान ने चुक मारे,
विच इक पल दे कर बेहोश डारे, रही सुध ते बुध न होश कोई।
होके खुश लंका विच आया वे, आके बाप नूँ हाल सुणाया वे,
मार सारेआँ नूँ मैं मुकाया वे, कहवाँ केआ जो उन्हाँ दे नाल होई ॥२०५॥
कीता पिता जी जा के जंग ऐसा, जमाया विच मैदान दे रंग ऐसा,
दित्ता काफिआ कर मैं तंग ऐसा, नहिँ कोई बचेआ सारेआँ जान खोई।

१. छिप। २. निपुणता।

फिकर आप दे सभ हटा आया, सारी फौज *दिलशाद* मुका आया,
हुकम आपदा मैं बजा लाया, सने रामचन्दर सारी फौज मोई ॥२०६॥

रावण की प्रसन्नता

होके खुश लगा कैह्‌ण शाह रावण, जिऊँदा रहो हमेश फरज़न्द मैरे।
मैरे हुकम दी तूँ तामील कीती, कीते कम सारे दिल पसंद मैरे ॥२०७॥
पल विच दुशमनाँ नूँ जाके मारेऑ तूं, जिगर ठंड पाई जिगरबंद मैरे।
बैठा समझ *दिलशाद* एह हाँ मैं ताँ, अजे होन इकबाल बेलंद मैरे ॥२०८॥

पहरेदार जो सीता दे कोल आहिआँ, उन्हाँ सारेआँ नूँ चा बुलाया सू।
रामचन्दर लछमन गए मर दोवेँ, जा के सीता नूँ कहो सुणाया सू ॥२०९॥
रणभूमकाँ[3] विच लै जाओ उसनूँ, लै आओ जा दिखला समझाया सू।
रक्खे आसरा हुण *दिलशाद* किसदा, पुच्छो उस थोँ एह फरमाया सू ॥२१०॥

सीता रणभूमि में—

विच पुष्पबवान ते चाहड़[4] सीता, रणभूमका दे विच लै गइआँ।
ओह वेख मोए पए राम-लछमन, दूरोँ उंगली दे नाल दस्स रैह्‌आँ ॥२११॥
लैसी खबर तेरी हुण कौण आके, कित्थोँ मिलनगिआँ तैनूँ आन सैइआँ।
सीता वेख के रोवन *दिलशाद* लगी, कैंह्‌दी गल मुसीबताँ आन पैइआँ ॥२१२॥

लेऑ वेख सीता उत्थे कोल जाक, रामचन्दर लछमन दोवेँ पए होए नीँ।
सुत्ते पए ज़मीन दे फर्श उत्ते, न कोई होश बेहोश हो रहे होए नीँ ॥२१३॥
रही बुला सीता अग्गोँ बोलदे नहिँ, गोया इस जहान थीँ गए होए नीँ।
बैठी समझ *दिलशाद* यकीन करके, एह ताँ मौत चंदरी दोवेँ लए होए नीँ ॥२१४॥

सीता का विलाप—

लगी रोवन सीता वह के झारझारी, सुधबुध ते होश गई सभ मारी,
विपता सिर उत्ते पई आन भारी, कैंहदी के रबा मैं एह वेख रैहिआँ।

१. (हे) दिल के टुकड़े। २. ऊँचे। ३. युद्धभूमि। ४. चढ़ा कर।

कोलों आपने लछमन नूँ टोर बैठी, हुण ताँ भूरदी हाँ वाँग मोर बैठी,
किसमत कर तंत्ती[1] कुभ्फ[2] होर बैठी, मैं ताँ चोर तुसाडड़ी हो गैइआँ ॥२१५॥

हुण जिउना है किस कम्म मैरा, सड़ेआँ खून ते सुक्केआँ चम मैरा,
खला[3] आन लबाँ उत्ते दम मैरा, लखाँ आन मुसीबताँ गल पैइआँ।

मैरे नाल के रब ने जोतड़ी ए, आके सिर ते मौत खैलोतड़ी ए,
किसमत मैं नमानी दी खोटड़ी ए, भुल्लिआँ ताइआँ चाचिआँ ते सैइआँ ॥२१६॥

त्रिजटा का आश्वासन—

रोवे पई सीता ढाईं मार उत्थे, रो रो के हाल गँवान लगी।
आया रैह्म त्रिजटा नूँ वेख के ते, बैह के सीता नूँ कोल समझान लगी ॥२१७॥

न तूँ कर झारी मैरी भैन प्यारी, रख हौसला किऊँ घबरान लगी।
मोए नहिं एह ताँ ज़िंदा हीन दोवें, रब नूँ याद कर किस धेआन लगी ॥२१८॥

मोए होए दा रंग हो जाए पीला, नीले निहूँ[4] हो जान सुणान लगी।
चेहरे इन्हाँ दे चमकदे चन्न वाँगों, चलदी नबज़ पई वेख दिखलान लगी ॥२१९॥

डिगे हो बेहोश ज़मीन उत्ते, कोई ज़ैहर इन्हाँ ताईं आन लगी।
फिकर कर *दिलशाद* न कोई हुण तूँ, दे के हौसला दिल जमान लगी ॥२२०॥

थोड़ी होई तसल्लड़ी[5] दिल ताईं, जदों राखशी ने समझाया वे।
होर आह्न जो नाल बदज़ात रैन्नाँ[6], गुस्सा उन्हाँ नूँ सुण के आया वे ॥२२१॥

उसे वकत बवान ते चाह्ड़ के ते, वापस बाग़ दे विच पौंह्चाया वे।
करन रब नूँ याद *दिलशाद* लगी, चित्त शरण भगवान् विच लाया वे ॥२२२॥

सुग्रीव का वचन—

सुणो नाना सुखेन जी अरज़ मैरी, मैरी गल्ल ताईं मन जाओ तुस्सी।
रामचन्दर माह्राज ते नाल लछमन, सिकन्दाँपुरी[7] दे विच पौंहचाओ तुस्सी ॥२२३॥

रैहणा इत्थे इन्हाँदड़ा नहिं चंगा, मैरा फिकर एह चा हटाओ तुस्सी।
लैसाँ समझ *दिलशाद* मैं नाल रावण, इस कम्म विच देर न लाओ तुस्सी ॥२२४॥

---

१. संतापकारी। २. युक्त की (जोड़ी)। ३. खड़ी। ४. नाखून। ५. धैर्य।
६. स्त्रियां। ७. किष्किन्धा नगरी।

सुषेण का वचन—

फिकर करो न कोई सुखेन कैंह्दा, एह ताँ नीदँ बेहोशी दी आई होई ए ।
वेख भाल लेॲा अच्छी तरह मैं ताँ, ज़ेहूर अन्दर इन्झाँदड़े धाई होई ए ॥२२५॥
समुंदरोँ पार बूटी है पहाड़ उत्ते, कई बार मैं ओ अझमाई होई ए ।
जलदी देॲो मंगा *दिलशाद* ओही, एवेँ किऊँ चिन्ता इतनी लाई होई ए ॥२२६॥

गल सुणदेॲाँ ईँ पंज-सत्त वानर, बूटी लैण नूँ उठ रवान होए ।
लंघ पुल पहाड़ ते जा पौंह्ते, विच तलाश बूटी गलतान होए ॥२२७॥
ढूण्ढ ढाण्ड बूटी लई पॅट्ट उत्थोँ, हाझर कोल सुखेन दे आन होए ।
बूटी सुँघदिआँ ईँ उठ बैठे सारे, वानर वेख *दिलशाद* शादान होए ॥२२८॥
लई सुरत संभाल जद वानराँ ने, बाजे खुशी दे पए बजान लगे ।
रामचन्दर माह्राज दे जयकारे, गज्ज वज्ज के सभ बुलान लगे ॥२२९॥
पकड़ राखशाँ नूँ चलो मारिए जी, इक दूसरे नूँ एह सुणान लगे ।
सुण अवाझ *दिलशाद* एह वानराँ दी, राखश विच दिल दे डर खाण लगे ॥२३०॥

रावण को सूचना—

विच मैदान ललकारदे पए वानर, सुण सुण राखश रहे डर साईँ ।
हाझर कोल शाह रावण दे हो के ते, दित्ती राखशाँ जा खबर साईँ ॥२३१॥
रामचन्दर दी फौज दे विच वानर, हर इक रेहा खुशी कर साईँ ।
सारे हीन जिऊँदे मोया इक भी नहिँ, समझे जो तुस्साँ गए मर साईँ ॥२३२॥
वेखो लड़न कारन विच मैदान ओ ताँ, खड़े हीन सारे वन्ह कमर साईँ ।
घड़ी पल अंदर लंका विच औसन, समझो सच्च एह साडा झिकर साईँ ॥२३३॥
गल्ल राखशाँ दी सुण के शाह रावण, चढ़ के मैहल ते करे नझर साईँ ।
डिट्ठी फौज तमाम तैय्यार खड़ी, रेहा सोच हत्थ मत्थे ते धर साईँ ॥२३४॥
मोए कौण कैंह्दा एह ताँ हीन जिऊँदे, लगा दिल विच करन फिकर साईँ ।
मोए होए *दिलशाद* नहिँ कदी जिऊँदे, जाणाँ के एह है शैरर साईँ ॥२३५॥

१. रची (भरी) । २ उखाड़ कर । ३. चमत्कार ।

हो हैरान लगा कैह्ण शाह रावण, डिट्ठी मैं अजीब एह बात है जी ।
गए मर के झिंदा एह हो किवें, विच इन्हाँ दे कोई करामात[1] है जी ।।२३६।।

खड़े हो तैय्यार फिर लड़न कारण, नहिँ एह समझदे दिन या रात है जी ।
तूहीँ दस्स *दिलशाद* हुण केऑ करिए, एह इनसान नहिँ कोई अफात है जी ।।२३७।।

धूम्राक्ष का युद्ध—

धुमराक्ष राखश अहा मौजूद उत्थे, एह भी इक सिपाहसालार ह सी ।
शाह रावण दे कोल मुसाहब[2] बनके, बैठा होया ओ विच दरबार है सी ।।२३८।।

जग विच सारे एह मशहूर आहा, इस विच झोर हाथी दस हझार है सी ।
रही जीत हर तरफ *दिलशाद* इस दी, आया कदी न किधरे हार है सी ।।२३९।।

उठ के विच दरबार दे कैह्ण लगा, होए किऊँ माह्राज हैरान तुस्सी ।
आवाँ मार मुका मैं सारेआँ नूँ, इक बार जे करो फरमान तुस्सी ।।२४०।।

मैरे सामने हीन ओ चीझ केह्ड़ी, लओ अरझ मैरी सच्च जान तुस्सी ।
झरा फिकर उन्हाँदड़ा नहिँ सानूँ, करो बैठ के याद भगवान् तुस्सी ।।२४१।।

कराँ नमक हलाल अज आपदा मैं, देंओ भेज मैनूँ विच मैदान तुस्सी ।
मैरे झोर दी खबर *दिलशाद* होके, दस्सो लगे फिर किऊँ घबरान तुस्सी ।।२४२।।

रावण का वचन—

तेरा हाल सारा है खबर मैनूँ, कदी तूँ मैदान थीँ हारेऑ नहिँ ।
रेहा [3]लिस्सेऑँ नूँ अज तक मारदा तूँ, कदी [4]डाढेआँ नूँ जा वंगारेऑ नहिँ ।।२४३।।

तद तक बहादरी नहिँ तेरी, जद तक तूँ इन्हाँ नूँ मारेऑ नहिँ ।
जा के झोर दिखला *दिलशाद* आपना, वकत सोचने दा हुण प्यारेऑ नहिँ ।।२४४।।

हुकम सुण राखश उठ खड़ा होया, गुस्सा विच दिल दे डाढा आया सू ।
नाल आपने फौज नूँ लै के ते, झंडा जा मैदान विच लाया सू ।।२४५।।

१. सिद्धि । २. दरबारी । ३. दुर्बलों । ४. बलवानों ।

देऑ इन्हाँ नूँ पकड़ के मार यारो, गज्ज वज्ज के हुकम सुणाया सू।
कीती देर *दिलशाद* न फिर कोई, बिगुल हल्ले दा चा करवाया सू ॥२४६॥

हल्ला कर सारी फौज राखशाँ दी, पई वानराँ दे उत्ते धा यारा।
कोई तीर नेज़ा मारे गुरज़ कोई, कोई रेहा तलवार चला यारा ॥२४७॥
गए वानर भी हो खबरदार अग्गोँ, खड़े विच मैदान दे आ यारा।
कोई द्रखत उखाड़ के पेआ मारे, कोई मारदा पत्थर उठा यारा ॥२४८॥
कोई चीरदा पकड़ के वाँग बकरे, कोई नाल दंदां करे घा यारा।
जिउँदा छोड़ दे पकड़ के नहिँ कोई, उत्ते धरती दे देन लिटा यारा ॥२४९॥
कोई पेश नहिँ जाउँदी राखशाँ दी, दित्ती वानराँ होश भुला यारा।
राखश मोए लड़ाई दे विच बौहते, गिणती रही हिसाब नहिँ का यारा ॥२५०॥
लगे नस्सन मैदान नूँ छोड़ के ते, गेआ लैहँ लड़ाई दा चा यारा।
नस्सदा वेख *दिलशाद* फिर राखशाँ नूँ, वानर खुशिआँ रहे मना यारा ॥२५१॥

डिट्ठी फौज नस्सदी धूम्राक्ष जदोँ, निकल विच मैदान ललकारदा ई।
खबरदार बहादुरो, नस्सना नहिँ, गज्ज के बोलदा बाहाँ उलारदा ई ॥२५२॥
पकड़ हत्थ दे विच इक गुर्ज़ भारी, पेआ वानराँ नूँ आके मारदा ई।
दे के हौसला फौज नूँ *दिलशादा*, मुड़ के विच मैदान खलारदा[1] ई ॥२५३॥

धूम्राक्ष दी भाल नहिँ झल सकदे, काफियाँ[2] वानराँ दा होया तंग आके।
रही खबर न इक नूँ दूसरे दी, मचेआ आन भारा ऐसा जंग आके ॥२५४॥
जाके कोल महावीर फरयाद करदे, गेआ बदल इत्थे सारा रंग आके।
आओ जान बचाओ *दिलशाद* साडी, लड़ो नाल इसदे साडे संग आके ॥२५५॥

दर्दनाक आवाज़ जद्द वानराँ दी, पई जा महाँवीर दे कान दे विच।
ज़रा देर नहिँ फिर दलेर कीती, खड़ा सामने निकल मैदान दे विच ॥२५६॥

१. खड़ा करता। २. साधन-योग।

गज्जेआ राखश महाँबीर नूँ वेख के ते, लगा जोड़ने तीर कमान दे विच ।
टंगो ँ पकड़ महाँबीर धरीकं लैंदा, राखश रेहा *दिलशाद* अरमान दे विच ॥२५७॥

पकड़ टंगो ँ उलारेआ वाँग कपड़े, फिर चुक्क ज़मीन ते सुट्टेआ सू ।
भारी सिल इक पत्थर दी लै के ते, वाँग मुञ्ज दे बैह के कुट्टेआ सू ॥२५८॥
अञ्ज अञ्ज दित्ता कर चूर उसदा, खून सारे सरीर थीं ँ फुट्टेआ सू ।
निकल जान *दिलशाद* हवा होई, गला पकड़ के जद्द चा घुट्टेआ सू ॥२५९॥

धूम्राक्ष राखश गेआ मर जदों ँ, रामचन्दर दी फिरी दुहाई उत्थे ।
पए नचदे टपदे कुददे नीं ँ, वाह वाह वानराँ धूम मचाई उत्थे ॥२६०॥
राखश विच मैदान नहिँ कोई दिसदा, नस्स के सारेआँ जान बचाई उत्थे ।
हाज़र रावण दे कोल *दिलशाद* होके, खबर राखशाँ जा सुणाई उत्थे ॥२६१॥

कैंह्दे फौज सारी लड़के मर गई ए, गेआ मर साडा सरदार शाहा ।
गई वानराँ नाल नहिँ पेश कोई, रहे ज़ोर लगा हज़ार शाहा ॥२६२॥
गाजर वाँग कप्पे राखश वानराँ ने, ऐसी उन्हाँ चा कीतीए मार शाहा ।
छप लुक के असीं *दिलशाद* उत्थों ँ, होए आण हाज़र दरबार शाहा ॥२६३॥

रावण का युद्ध—

रावण हो हैरान फिर कैह्ण लगा, नहिँ इनसान एह कोई बला है जी ।
जेह्ड़ा गेआ नहिँ आया ओ फिर मुड़के, सक्केआ नहिँ कोई जान बचा है जी ॥२६४॥
चलेआ ज़ोर नहिँ किसे दा उस उत्ते, दित्ता उसने मार मुका है जी ।
तूहीँ दस्स *दिलशाद* हुण केआ करिए, दुशमन सख़्त सिर ते गेआ आ है जी ॥२६५॥

शाह रावण ने सोचेआ विच दिलदे, अज आप मैदान विच जाविए जी ।
सिट्टे मार जो शेर दलेर मेरे, बदला उन्हाँ दा चल मुकाविए जी ॥२६६॥

१. घसीट ।

हत्थ होर नहिँ कोई पा सकदा, ऐवेँ फौज नूँ किऊँ मरवाइए जी।
ताकत वेखिए चल *दिलशाद* उसदी, नाले अपना झोर दिखलाविए जी ॥२६७॥

रामचन्दर दे नाल हुण लड़न कारन, वेखो आप शाह रावण तैय्यार होया।
लैके फौज भारी इक नाल आपने, जाके रथ दे उत्ते स्वार होया ॥२६८॥
लगा गज्जन मैदान दे विच आके, पकड़ तीर कमान होशेआर होया।
लगे वानर भी लड़न *दिलशाद* अगोँ, गरम जंग दा आन बाझार होया ॥२६९॥

वानर द्रखत उखाड़ के पए मारन, कोई उखाड़ पहाड़ लै आउँदा ई।
कोई पकड़ गिरावे झमीन उत्ते, कोई लत्त घुसन्ना चलाउँदा ई ॥२७०॥
मुक्का मार के कड्ढदा जान कोई, चक्काँ[1] नाल कोई मार मुकाउँदा ई।
कीते तंग *दिलशाद* विच जंग राखश, झोर उन्हाँ दा पेश नहिँ जाउँदा ई ॥२७१॥

हालत फौज दी वेख के शाह रावण, तीर विच कमान दे जोड़दा ई।
निशाना वानराँ दे उत्ते रक्ख के ते, कैह्रवान होके तीर छोड़दा ई ॥२७२॥
कई हझार वानर उस मार सुट्टे, जिसनूँ पकड़दा गरदन मरोड़दा ई।
वानर डर के नस्सन *दिलशाद* लगे, झोर सभनाँ दे ओ तरोड़दा ई ॥२७३॥

चुक सिल भारी इक सुग्रीव राजा, रथ रावण दे विच्च जा मारदा ए।
कैंह्दा कर मुकाबला नाल मेरे, हो जा सामने पेॲा वंगारदा ए ॥२७४॥
गुस्से नाल रावण सुण के लाल होया, कीता फिर उस वार तलवार दा ए।
झख्मी हो *दिलशाद* सुग्रीव ढट्ठा[2], वलोँ हौसला दिलों न हारदा ए ॥२७५॥

होके झख्मी ढट्ठा सुग्रीव जदोँ, अंगद दौड़ के तुरत आया वे।
लेॲा चुक सुग्रीव नूँ मोढेआँ ते, जाके कम्प दे विच पौंह्चाया वे ॥२७६॥

१. दंत-घात। २. गिर पड़ा।

मरहम पट्टी करवा के ज़ख्म उत्ते, घत बिस्तरा चा संवाया वे।
रामचन्दर माह्‌राज नूँ फिर जा के, सारा हाल *दिलशाद* सुणाया वे ॥२७७॥

साडे नाल माह्‌राज जी लड़न कारण, अज्ज आप रावण विच मैदान आया।
नाल आपने आपनी मदद कारण, लै के कई हज़ार जवान आया ॥२७८॥
झाल उसदी नहिँ कोई झल सकदा, साडी फौज नूँ मार मुकान आया।
दित्ता कर *दिलशाद* सुग्रीव ज़ख्मी, खबर आपनूँ मैं सुणान आया ॥२७९॥

कीती अरज़ लछमन देओ हुकम मैनूँ, गाजर वाँग राखश सारे वड्ढ[1] आवाँ।
कराँ जा मुकाबला नाल रावण, वरम आपने दिल दा कड्ढ आवाँ ॥२८०॥
दित्ता दु:ख सानूँ उस है जेह्ड़ा, उसनूँ डोब जा के विच ढंड्ढ[2] आवाँ।
बैठी फौज *दिलशाद* दिल हार जेह्ड़ी, तरुटा[3] दिल उन्हाँदड़ा गंड्ढ[4] आवाँ ॥२८१॥

है मजा तुसाडड़ी जे एहो, बेशक जाओ फिर विच मैदान भाई।
रावण है बली भारे बलवाला, रखो नाल आपने हनुमान् भाई ॥२८२॥
होणा तंग विच जंग दे नहिँ जाके, हर इक गल्ल दा रखना धेआन भाई।
धीरज नाल लड़ाई *दिलशाद* करनी, जलदी कीतिआँ है नुकसान भाई ॥२८३॥

लक्ष्मण और हनुमान् युद्ध-भूमि में—

कीती देर न पल दी हुकम सुण के, पए उठ लछमन हनुमान् दोवेँ।
आहे शेर दे वाँग दलेर यारा, लगे गज्जन जा के विच मैदान दोवेँ ॥२८४॥
हत्थ किसे सिपाही नूँ नहिँ पांदे, चुन-चुन अफसराँ नूँ लगे ढाह्‌न[5] दोवेँ।
पए कड्ढन अरमान *दिलशाद* दिल दा, ज़बरदस्त भारे बलवान दोवेँ ॥२८५॥

इक-इक अफसर चुन के मार सुटेआ, रक्खेआ नहिँ कोई हत्थ पान जोगा।
चीरन पए वानर पकड़ राखशाँ नूँ, नहिँ सामने रेहा कोई आन जोगा ॥२८६॥

---

१. काट। २. झील। ३. टूटा हुआ। ४. जोड़। ५. गिराने।

डर खा के लगे ने नस्सन सारे, कैह्‌ण नहिँ कोई सानूँ बचान जोगा।
लाशाँ विच पैराँ पईआँ रुलदिआँ ने, रेहा नहिँ *दिलशाद* कोई चान जोगा ॥२८७॥

रावण का वचन—

नसदा फौज नू वेख के शाह रावण, कैंह्‌दा मुआमला होया कुझ्झ होर है जी।
लगा कैह्‌ण महावीर नूँ गज्ज के ते, पाया किऊँ तुस्साँ इत्थे शोर है जी ॥२८८॥
जासें बच के कदी न तूँ इत्थोँ, लै आया काल तैनूँ इत्थे लोड़ है जी।
कराँ अज अझमाइश *दिलशाद* तेरी, वेखसाँ विच तेरे कितना झोर है जी ॥२८९॥

हनुमान् का वचन—

उस वकत अझमावना आहा मैनूँ, वन्ह के कोल तेरे जद खिलारेऑ मैं।
लंका साड़ के खाक स्याह कीती, तेरे पुतर नूँ पकड़ के मारेऑ मैं ॥२९०॥
करसेँ हुण अझमाइश तूँ केऑ मैरी, हो जा सामने तैनूँ वङ्गारेऑ मैं।
तैनूँ मार के अज *दिलशाद* जासाँ, विच दिल दे एह विचारेऑ मैं ॥२९१॥

रावण का युद्ध—

सुण के सुखन महाँवीर दे तैश[1] आया, गुस्से नाल दिल विच वट्ट खान लगा।
कीती गल न कोई फिर बार दूजी, हत्थ फिर मैऑन ते पान लगा ॥२९२॥
खड़ा रथ दे विच फिर हो के ते, झट-पट हत्थ्यार चलान लगा।
खाली बार *दिलशाद* जद गए सारे, मीँह तीराँ दा फिर बरसान लगा ॥२९३॥

लक्ष्मण का घायल होना—

सुट्टे कट्ट लछमन औंदे तीर अगोँ, इक तीर सरीर नूँ फट गेऑ।
ताकत रही न धनश दे चुक्कने दी, झख्मी हो के ते पिछे हट गेऑ ॥२९४॥
लेऑ चुक महाँवीर ने आन जलदी, लै के विच डेरे झट पट गेऑ।
गई हो गफलत *दिलशाद* मैथोँ, दुशमन कर इस ते ताईँ सट[3] गेऑ ॥२९५॥

रामचन्द्र युद्ध-भूमि में—

झख्मी भाई आपने नूँ वेख के ते, गुस्से नाल माह्‌राज जी लाल हो गए।
डोर सबर दी गई ने छुट हत्थोँ, दिल विच होर दे होर खेआल हो गए ॥२९६॥

---

१. ढूँढ़ कर। २. क्रोध। ३. प्रहार।

गज्ज के विच मैदान दे शेर वाँगों, हमकलाम[1] जाके रावण नाल हो गए।
खबरदार *दिलशाद* होशेआर हो जा, अज प्राण तेरे बस काल हो गए ॥२९७॥

रावण का वचन—

रामचन्दर माह्राज जद नज़र आए, रावण आपने रथ नूँ मोड़ेआ वे।
होके सामने फिर एह कैह्ण लगा, जा हट पिच्छे तैनूँ होड़ेआ वे ॥२९८॥
देसें जान आपनी मैरे नाल लड़के, जिउँदा मैं कोई कदी न छोड़ेआ वे।
आहें छप के कित्थे *दिलशाद* बैठा, मैं ताँ बौह्त तैनूँ इत्थे लोड़ेआँ[2] वे ॥२९९॥

रामचन्द्र का वचन—

मुँह संभाल के अहमका बोल अगों, मैनूँ समझ न तूँ किसे होर वाँगों।
देसाँ सिर एह दस उडा र, रुलसन[3] टुटे पतंग दी डोर वाँगों ॥३००॥
शरण लग मैरी मुआफी मंग लै तू, नहिं ताँ झूरसें बैह के मोर वाँगों।
लड़ना सामने कम *दिलशाद* मैरा, करनी नहिं चोरी तुध चोर वाँगों ॥३०१॥

रावण का वार—

तीर खिच के मारेआ शाह रावण, गुस्ले नाल कमान उठा के ते।
औंदे तीर नूँ तीर दे नाल अगों, सिटदे कट माह्राज वगा के ते ॥३०२॥
रावण वेख के हो हैरान गेआ, लगा कैह्ण फिर एह सुणा के ते।
होया केआ *दिलशाद* जे तीर कटेआ, जासें जान न कदी बचा के ते ॥३०३॥

रामचन्द्र का वार—

रामचन्दर माह्राज भी नाल गुस्से, धनश पकड़ के चिल्ला चढ़ा देंदे।
तीर मारेआ खिच के विच रथ दे, घोड़े रथ दे मार मुका देंदे ॥३०४॥
दूजा तीर चला के होर उत्तों, सिरों रावण दे ताज उड़ा देंदे।
तीर तीसरे नाल *दिलशाद* फिर ताँ, रावण रथ थीं हेठ गिरा देंदे ॥३०५॥

लगे कैह्ण माह्राज फिर कोल जाके, रेहा हुण तेरे विच दम नाहीं।
थके होए ते वार हथ्यार करना, मैरा रावणा समझ एह कम नाहीं ॥३०६॥

१. वार्तालाप-युक्त। २. ढूँढ़ा है। ३. लुढ़कते रहेंगे।

देवाँ छोड तैनूँ चला जा अज तूँ, रखना दिल दे विच भरम नाहीँ ।
दम संभाल *दिलशाद* कल आ जावीँ, होई कोई लड़ाई खतम नाहीँ ॥३०७॥

रावण का दरबार—

चला गेॲा रावण वापस विच लंका, जद के झोर उसदा नहिँ कोई चलेॲा ।
नाल शर्म दे अन्दरोँ गल रेहा, तन गुस्से दी अग दे विच जलेॲा ॥३०८॥
करद दरद पई जिगर नूँ चीरदी सू, तीराँ नाल है सी सारा जिसम सलेॲा ।
गेॲा बैठ *दिलशाद* दरबार ला के, बाकी रहे वझीराँ नूँ सद्द घलेॲा ॥३०९॥

हाझर आन के होए वझीर जदोँ, शाह रावण फिर एह सुणान लगा ।
मुशकल पेश भारी गई आ यारो, मत्था नाल दुशमन डाढे आन लगा ॥३१०॥
एह इन्सान नहिँ है बला कोई, आ के हत्थ जेहड़ा मैनूँ पाण लगा ।
देओ जगा *दिलशाद* कुंभकरण ताईँ, करो देर न एह फरमान लगा ॥३११॥

कई हझार राखश लैके नाल आपने, कुंभकरण जगाण वझीर चले ।
लेॲा नाल शराब ते मास बोह्ता, नाले लै हलवा खण्ड खीर चले ॥३१२॥
जित्थे अहा सुत्ता कुंभकरण पेॲा, उसे जा ते घत वहीर चले ।
पवे जाग *दिलशाद* पए कैह्‌ण सारे, विच दिल मनाँउदे पीर चले ॥३१३॥

कुंभकर्ण का जागना—

कुंभकरण दे कोल फिर जाके ते, सुत्ते होए नूँ हुण जगान लगे ।
गए चढ़ राखश उत्ते कई उसदे, कुद कुद के झोर लगान लगे ॥३१४॥
वज्जन ढोल सुरनाइआँ ते पए बाजे, तोपाँ बीड़ के कोल चलान लगे ।
बोलन गज्ज के पए *दिलशाद* सारे, विच मैह्‌ल दे शोर मचान लगे ॥३१५॥

गए हेठ दवी के मर कितने, कुंभकरण पाँसा[3] जदोँ पैरतेॲा[4] ए ।
होइआँ हड्डिआँ पीस के वाँग सुरमे, कह्‌वाँ केॲा जो कुछ उत्थे वरतेॲा ए ॥३१६॥

१. फटा हुआ । २. भेजा । ३ करवट । ४. बदला ।

वझीर हो हैरान दिलगीर कैंह्दे, एह ताँ नाल नींदर डाढा शेरतेआ[1] ए।
जागे किवें *दिलशाद* एह दस्स सानूँ, पेआ खूह साडा कीता करतेआ[2] ए॥३१७॥

मल के अक्खिआँ नूँ फिर उठ बैठा, कैंह्दा किऊँ आए मैरे कोल तुस्सी।
दित्ता आन के किऊँ जगा मैनूँ, सच्चो सच्च दस्सो मुँहों बोल तुस्सी॥३१८॥
मुशकल पेश आई एडी के भारी, दस्सो हाल मैनूँ सारा खोल तुस्सी।
होए किऊँ हैरान *दिलशाद* सारे, रहे विच दिल दे काह्नूँ डोल तुस्सी॥३१९॥

हैसी मास शराब जो नाल आँदा, दित्ता सभ उसदे अगे धर मित्तरा।
लगा खान कुंभकरण फिर खुश हो के, गेआ विच पल दे चैटम[3] कर मित्तरा॥३२०॥
कुझ होर भी है ताँ देओ कैंह्दा, मैं ताँ नाल भुक्ख दे रेहा मर मित्तरा।
मुँहों बोल *दिलशाद* नहिँ कोई सकदा, पए कंबन सारे थर-थर मित्तरा॥३२१॥

किऊँ डर दे नाल पए कंबदे ओ, जो कुझ वरतेआ देओ सुणा तुस्सी।
दुशमन चढ़ या तुस्साँ ते कोई आया, जिसदे वासते रहे घबरा तुस्सी॥३२२॥
देओ दस्स मैनूँ है गल्ल जेह्ड़ी, रहे किऊं इतना डर खा तुस्सी।
झरा फिकर *दिलशाद* न करो कोई, देओ हाल तमाम बतला तुस्सी॥३२३॥

हत्थ जोड़ वझीराँ ने अरझ कीती, माह्राज मुशकल पेश आई भारी।
रामचन्दर आया चढ़ फौज लैके, मची होई है सख़त लड़ाई भारी॥३२४॥
पुल बन्ह समुदरों पार आया, हिम्मत आपनी एह विखाई भारी।
सकदा सामने नहिँ कोई हो उसदे, विच लंका दे धुम मचाई भारी॥३२५॥
दित्ते मार हझारां हझार उसने, डाढी अत्ते[4] एह उस आ चाई भारी।
साडा झोर *दिलशाद* नहिँ कोई चलदा, सानूँ सख़त शिकस्त खवाई भारी॥३२६॥

---

१. शर्त लगाई है। २. किया हुआ। ३. समाप्त। ४. अतिक्रम, अत्याचार!
५, की (है)।

सीता इसतरी उसदी शाह रावण, जाके आप चुरा लै आया ए।
आया लड़न कारण इसे वासते ओ, घेरा लंका नूँ आन के पाया ए ॥३२७॥
बन्ह पुल समुंदर तोँ लँघ आया, डेरा विच मैदान दे लाया ए।
गई पेश *दिलशाद* जद नहिँ साडी, ताहीँ आपनूँ आन जगाया ए ॥३२८॥

कुंभकरण लगा हस के कैह्ण अगोँ, लाया किऊ तुस्साँ दिल ते ग़म इतना।
ऐवेँ आण के दित्ता जगा मैनूँ, हैसी एह भारा केह्ड़ा कम इतना ॥३२९॥
लड़सी नाल असाडड़े केऑ आके, होसी कित्थोँ ग़रीब विच दम इतना।
झले झाल *दिलशाद* जो आन मैरी, है ज़ोर किसदे विच जिसम इतना ॥३३०॥

पेऑ टुर वज़ीराँ दे नाल उठके, मुड़के नहिँ कीती कोई गल मित्तरा।
गेऑ हो सवार हथ्यार लै के, लाई देर न फिर इक पल मित्तरा ॥३३१॥
हाज़र कोल शाह रावण दे होके ते, रेहा तक उसदे मुँह वल मित्तरा।
अदब नाल *दिलशाद* हत्थ जोड़ दोवेँ, अगे तख़त दे रेहा ई खल[1] मित्तरा ॥३३२॥

कुंभकर्ण का वचन—

मैनूँ दस्सो माह्राज है कम्म केह्ड़ा, कारण जिस मैनूँ बुलवाया ए।
देवाँ पकड़ के चीर सरीर उसदा, जेह्ड़ा आप उत्ते चढ़ आया ए ॥३३३॥
सकदा झल नहिँ कदी कोई झाल मैरी, एडा फिकर तुसाँ काहनूँ लाया ए।
देऑ दस्स *दिलशाद* जी हाल सारा, कुंभकरण एह आख सुणाया ए ॥३३४॥

हाज़र विच दरबार दे होके ते, कीती अरज़ फिर एह खलो के ते,
मैं ताँ विच मज़े हैसाँ सो के ते, कच्ची नींदरे किऊँ जगाया वे।
मैरे गोचेरी[2] हैसी कम केह्ड़ा, लाया दिल उत्ते तुस्साँ ग़म केह्ड़ा,
अगे आपदे मारसी दम केह्ड़ा, कुंभकरण ने आख सुणाया वे ॥३३५॥
शायद है मरज़ी किधरे जाउने दी, गरदन किसे दी पकड़ नवाउने दी,
पई लोड़ किऊँ मैनूँ जगाउने दी, दस्सो के विच दिल दे आया वे।

१. खड़ा। २. आश्रित।

देऑ हुकम *दिलशाद* सुणा मैनूँ, जिस दे वासते दित्ता जगा मैनूँ,
कौन हत्थ सकसी आके पा मैनूँ, दस्सो माँ ऐसा केहड़ा जाया वे ॥३३६॥

रावण का वचन—

साडी भैन दा नक उस कट्टेऑ वे, खर दूखन नूँ मार के सुट्टेऑ वे,
उस दे नाल लड़ के न खट्टेऑ वे, चढ़ के उत्ते मेरे ओही आ बैठा।
फौज वानराँ दी उस दे नाल भारी, होश राखशाँ दी जिन्हाँ आन मारी,
चीरन राखशाँ नूँ पकड़ वाँग आरी, झंडा विच मैदान दे ला बैठा ॥३३७॥
मैं ताँ लक्खाँ जवानाँ दे भेज रेहा, किसे नहिँ जाके उत्थे दम लेआ,
सुट्टेऑ मार ओही इत्थों जो गेआ, समझो सच्च मैं सख़त घबरा बैठा।
वापस कोई नहिँ परत के आ सकेऑ, उस थीं जान नहिँ कोई बचा सकेऑ,
हत्थ नहिँ उसनूँ कोई पा सकेऑ, मैं ताँ झोर *दिलशाद* बहूँ[1] ला बैठा ॥३३८॥

रावण आखेऑ सुण तूँ वीर मेरे, मैं ताँ तुध तों घोल-घुमाया[2] जी।
झबरदस्त दुशमन गज्ज के शेर वाँगों, मेरे सिर उत्ते चढ़ के आया जी ॥३३९॥
दित्ते मार जवान बलवान् सारे, नाले फौज नूँ मार मुकाया जी।
मेरे पुत्तराँ नूँ भी मार के ते, मैनूँ दाग़ कलेजड़े लाया जी ॥३४०॥
होंदा उसदे सामने नहिँ कोई, ऐसा सारेआँ नूँ उस डराया जी।
पेऑ वख़त *दिलशाद* जद सख़त आके, ताईं तुस्साँ नूँ मैं जगवाया जी ॥३४१॥

कुंभकर्ण का वचन—

उस वकत भी पुछना अहा मैनूँ, गए सीता नूँ जद चुरान तुस्सी।
कीता काम, अंजाम[3] नूँ सोचेऑ नहिँ, रखदे झोर दा आहो अभमान तुस्सी ॥३४२॥
बिभीछण मत्त दित्ती उसनूँ लत्त मारी, गए बन उसदे दुशमन जान तुस्सी।
हत्थीं आपनी वणज *दिलशाद* करके, दस्सो होए फिर किऊँ हैरान तुस्सी ॥३४३॥

कित्थे झोर ओ अज माहराज गेऑ, रैंह्दे जिसदे विच मगरूर आहो।
कीते शेर दिलेर कई कैद तुस्साँ, पकड़ हाथिआँ नूँ करदे चूर आहो ॥३४४॥

---

१. बहुत। २. बलिहारी। ३. परिणाम।

गए डर अज किऊँ इन्सान कोलोँ, ढांदे[1] जद पहाड़ कोहतूर[2] आहो।
कीती सोच *दिलशाद* न कोई कदी, रैंहदे नशे दे विच मखमूर आहो ॥३४५॥

रावण का वचन—

करनी मदद मैरी जे तू नहिँ चाँहदा, ताँ फिर तॉनेआँ दे नाल साड़ ताँ न।
पाटे होए नूँ जद नहिँ सी सकदा, उलटा होर उत्तोँ बैह के पाड़ ताँ न ॥३४६॥
हिम्मत नहिँ जे टुट्टे दे गड्ढने दी, रहे सहे बाकी कम विगाड़ ताँ न।
जे कर बाग़ *दिलशाद* नहिँ लान जोगा, बूटे पुट गुलझार उजाड़ ताँ न ॥३४७॥

कुंभकर्ण का वचन—

देॲो रब दे वासते बखश मैनूँ, ऐवेँ गल्ल मेरे मुँहोँ निकल गई ए।
करो होर खेॲाल न कोई तुस्सी, किऊँ गल्ल मैरी पल्ले बँन्ह लई ए ॥३४८॥
ताकत आही जे आप नूँ मारने दी, जगाया किऊँ मैनूँ माह्राज कही ए।
देसाँ मार *दिलशाद* मैं सारेॲाँ नूँ, वेखो बाँह मैरी सॅज्जी फड़क रही ए ॥३४९॥

कुंभकरण फिर सोचेॲा विच दिल दे, चाहिए इसनूँ नहिँ मजबूर करना।
बड़ा भाई बराबरी बाप हुँदाँ, है लिहाझ एह मैं झरूर करना ॥३५०॥
आवाँ मार दुशमन विच मैदान जाके, है फर्झ, इसदा फिकर दूर करना।
ऐसे बोलने बोल *दिलशाद* मैरे, मेरे वासते है कसूर करना ॥३५१॥

कैंह्दा गल्ल मुँहोँ मेरे निकल गई ए, तुस्सी खफा माह्राज हो गए ऐवेँ।
आवाँ मार मुका मैं सारेॲाँ नूँ, किऊँ फिकर इतना ला रहे ऐवेँ ॥३५२॥
मेरे सामने हीन ओ चीझ केह्ड़ी, कई मार सुट्टे[3] उस जेहे ऐवेँ।
झिम्मावार *दिलशाद* मैं गल इसदा, खाओ किऊँ इतना डर पए ऐवेँ ॥३५३॥

रावण का वचन—

तैरी गल्ल नूँ सुण के वीर मैरे, होया झरा भी नहिँ खफा मैं ताँ।
अपुट्ठी गल्ल बिभीछण ने जद कीती, लत्त मार के दित्ता हटा मै ताँ ॥३५४॥

---

१. गिराते। २. तूर (नामक) पर्वत (जैसे)। ३. पक्की पकड़। ४. दाहिनी। ५. होता है।

न कोई ग़म ते न कोई फिकर मैनूं, देवाँ सच्च एह तैनूँ सुणा मैं ताँ।
आया वकत अज़माइश दा हत्थ मेरे, हर इक नूँ रेहा अज़मा मैं ताँ ॥३५५॥
जाके आप अकलड़ा सारेआँ नूँ, औसाँ पल विच मार मुका मैं ताँ।
है चीज़ *दिलशाद* इन्सान केहड़ी, ब्रह्मण्ड नूँ देवाँ हिला मैं ताँ ॥३५६॥

कुंभकरण का वचन—

करसो किऊँ माह्राज तकलीफ तुस्सी, हाज़र आप दा जद एह गुलाम है वे।
सिर आपना आप तों वार सुट्टाँ, मुखतसिर एह मेरा कलाम है वे ॥३५७॥
कीती खिदमत जिस भाई ने भाई संदी, ओही विच दुनिआ नेकनाम है वे।
जद तक *दिलशाद* न मार आवाँ, तद तक आराम हराम है वे ॥३५८॥

रावण का वचन—

जिऊँदा रहो हमेश तूँ वीर मेरे, तुध उत्ते उमीद कमाल है जी।
देसें मार बेशक तूँ सारेआँ नूँ, विच दिल मेरे एह ख़ेआल हे जी ॥३५९॥
शाहज़ोर भावें कितना कोई होवे, नहिं ओ लड़ सकदा तेरे नाल है जी।
देवें पर्वत उखाड़ *दिलशाद* तूहीं, सकदा झल तैरी कौण झाल है जी ॥३६०॥

बिगड़े कम्म तूँ दित्ते सँवार मेरे, लेआ वेख तैनूँ मैं ताँ कई फेरे,
नहिं हौसला किसे दा वाँग तेरे, तेरे सामने नहिं कोई हो सकदा।
भावें कितना कोई दलेर होवे, आया लक्खाँ[1] नूँ करके ज़ेर होवे,
फौज नाल उसदे पावें ढेर[2] होवे, ताँ भी वाल तेरा नहिं ओ खो सकदा ॥३६१॥
कीता जिस मुकाबला आन तेरा, गोया मौत पाया उसनूँ आन घेरा,
होया दुनिआ तो उसदा कूच डेरा, कदी बच तैथों नहिं ओ सकदा।
तूहीं पर्वताँ नूँ जा के हथ पावें, खौफ किसे थीं न *दिलशाद* खावें,
विच जिस मैदान दे तू जावें, उत्थे होर नहिं कोई खलो सकदा। ३६२॥

आ मार पैहले जा के सारेआँ नूँ, मेरे नाल फिर [3]बैहीं तू मिल भैय्या।
विच मैदान ललकारदा पेआई दुशमन, जा उठ न कर हुण ढिल भैय्या ॥३६३॥

१. यशस्वी। २. असंख्य। ३. बैठें।

मैरे पुत्तराँ दा बदला लै जा के, जावे निकल कलेजॅओं किलं भैय्या।
आयों मार *दिलशाद* जद सारेॲाँ नूँ, होसी खुश मैरा तद दिल भैय्या ॥३६४॥

कुंभकरण का वचन—

सुण के हुकम अगों फिर आखदा ए, लओ माह्राज मैं ताँ हुण चलन लगा।
तुस्साँ वेखना चढ़ के मैह्ल उत्ते, दुशमन आपदे पैराँ विच मिलन लगा ॥३६५॥
देसाँ नस्सन न कोई मैदान विचों, वाँग अंआजड़ी अंजड़ नूं वलन लगा।
जिऊँदा इक *दिलशाद* न रैह्ण देसाँ, सारे मुलके अदम विच घलन लगा ॥३६६॥

युद्धभूमि में प्रवेश—

पंज सत घड़े शराब दे पी के ते, कुंभकरण हुण विच मैदान आया।
कद वाँग पहाड़ दे अहा उस दा, हत्थ लाउँदा नाल असमान आया ॥३६७॥
वानर वेख के गए नीं डर सारे, लगे कैह्ण एह केॲा तूफान आया।
जावे पेश *दिलशाद* न नाल उसदे, एह ताँ सारेॲाँ नूँ समझो खान आया। ३६८॥

लगा गज्जन मैदान दे विच जाके, लगे नस्सन वानर सारे डर खाके,
होंदा सामने कोई भी नहिँ आके, दिलों हौसला समझ सब हार दे नीं।
पैदा कित्थों एह आन बला होई, सकदा हत्थ नहिँ इस नूँ पा कोई,
सारी फौज साडी कैहँदी अज्ज मोई, विच दिलदे पए विचारदे नीं ॥३६९॥
पकड़ हत्थ दे विच तलवार उत्थे, लगा करन राखश मारो-मार उत्थे,
वानर आन के होए लाचार उत्थे, मुँहों राम ही राम पुकारदे नीं।
नेड़े कोई *दिलशाद* फिर आउँदा नहिँ, कोई हत्थ कुंभकरण नूँ पाउँदा नहिँ,
झोर पेश कोई किसे दा जाउँदा नहिँ, चुक चुक पत्थर दूरों पए मारदे नीं ॥३७०॥

कुंभकरण मैदान दे विच जाके, तख़ता वानराँ दा वेखो पुट्टन लगा।
इक इक वार दे नाल हझार वानर, विच समुंदर दे मार के सुट्टन लगा ॥३७१॥
कई सैंकड़े हत्थ दे विच लै के, गला पकड़ उन्हाँदड़ा घुट्टन लगा।
दिलशाद उत्ते फौज वानराँ दे, वाँग विजली दे कड़क के टुट्टन लगा ॥३७२॥

१. कील (कांटा)। २. चरवाहा। ३. रेवड़। ४. इक्ट्ठा करने। ५. उलटाने।
६. घोंटने (दबाने)।

रामचन्द्र का विभीषण से प्रश्न—

है एह कौण बिभीछणा दस्स मैनूँ, जिसनूँ वेख वानर डर खाण लगे।
डील-डौल डरावनी है इसदी, इसे वासते सभ घबरान लगे॥३७३॥

सकदा लड़ नहिँ इसदे नाल कोई, सभे नस्स के जान बचान लगे।
आया कित्थोँ, *दिलशाद* के नाम इसदा, रामचन्दर माहराज फरमान लगे॥३७४॥

विभीषण का उत्तर—

हत्थ जोड़ बिभीछण ने अरज़ कीती, माहराज साडा एह भिरा है वे।
कुंभकरण समझो है नाम इसदा, इसदे ज़ोर दा अंत न का है वे॥३७५॥

कोई हत्थ इसनूँ नहिँ पा सकदा, ज़बरदस्त एह भारी बला है वे।
है सी सुत्ता *दिलशाद* एह मुद्दताँ दा, रावण भेजेआ अज्ज जगा है वे॥३७६॥

**सुग्रीव और लक्ष्मण का समाचार—*

ज़ख्मी हो के जदोँ सुग्रीव राजा, विच कंपदे गेआ सी आ मित्तरा।
डिग्गा लछमन भी आन के अहा पिच्छोँ, हत्थों रावण दे ज़ख्म नूँ खा मित्तरा॥३७७॥

जामावन्त बूटी इक पुट्ट के ते, उत्ते ज़ख्माँ दे दित्ती सी ला मित्तरा।
तंदुरस्त *दिलशाद* हो गए दोवेँ, रेहा दुख ते दरद न का मित्तरा॥३७८॥

कुंभकर्ण का सुग्रीव को दबोचना—

कुंभकरण विच दिल विचार कीता, लवाँ सुग्रीव नूँ कर गिरफ्तार इत्थे।
हर इक कार विच है मुखतार एहो, ऐहो फौजदा है सरदार इत्थे॥३७९॥

जासन नस्स सारे आपे डर खा के, देसाँ जद सुग्रीव नूँ मार इत्थे।
रामचन्दर *दिलशाद* फिर केआ करसी, जासी नस्स ओ भी बाज़ी हार इत्थे॥३८०॥

झट पट सुग्रीव नूँ पकड़ के ते, उस नूँ बग़ल दे विच दबा रखदा।
कैँहदा विच लंका जा के मारसां मैं, समझ सच्च मैं तैनूँ सुणा रखदा।३८१॥

बस वस तूँ मौत दे हो रेहॉ, देवाँ दस्स मैं नहिँ छुपा रखदा।
सके मार *दिलशाद* दस्स कौण उस नूँ, रब जिस नूँ आप बचा रखदा॥३८२॥

१. आकृति। * पृष्ठ—२५०, २७४–२७७ और पृष्ठ—२५२, २६४, २६५।

सुग्रीव का बच निकलना—

गेॲा दाओ सुग्रीव दा लग किधरे, चक[1] मार उस दा नक कट देंदा ।
सारा जिसम उत्तों कुंभकरण संदा[2], मार-मार दंदिआँ[3] ओह फट[4] देंदा ॥३८३॥
बुरी गत कुंभकरण दी उस कीती, दोवें कन्न भी कॅप के सट देंदा ।
गेॲा छुट्ट *दिलशाद* सुग्रीव जदों, धक्का फिर उस नूँ पिच्छों हट देंदा ॥३८४॥

कुंभकर्ण का क्रोध—

आया नस्स सुग्रीव जद नक कट के, कुंभकरण दिल विच पिछों तान लगा ।
कैंह्दा होई ग़लती इस नूँ मारेॲा नहिं, गुझरे वकत दा करन अरमानें[5] लगा ॥३८५॥
गुस्से नाल अक्खीं हो लाल गैइआँ, परत फिर मैदान विच जाण लगा ।
दुहाँ हत्थाँ दे नाल *दिलशाद* फिर ताँ, पकड़ पकड़ वानर मुँह विच्च पान लगा ॥३८६॥

रामचन्द्र और कुंभकरण का युद्ध—

रामचन्दर माह्राज भी पए वेखण, कुंभकरण दी झाल कोई झलदा नहिँ ।
राखश है भारा भारे बल वाला, झोर किसे दा इस ते चलदा नहिँ ॥३८७॥
हो के तंग विच जंग दे नस्सन लगे, इक दूसरे नाल कोई रलदा नहिँ ।
थके झोर लगा *दिलशाद* सारे, कुंभकरण मैदान थीं हलदा नहिँ ॥३८८॥

लैके धनश नूँ पए फिर उठ आपूँ[6], जा के सामने चिल्ला चढ़ायो ने ।
गज्ज के विच मैदान दे शेर वाँगों, कुंभकरण नूँ आख सुणायो ने ॥३८९॥
भला चाहें ताँ परत के जा लंका, देसें जान नहिँ ताँ, समझायो ने ।
आई समझ *दिलशाद* जद नहिँ कोई, ताँ फिर तीर विच धनश दे पायो ने ॥३९०॥

लगा वेख के हसन कुंभकरण अगों, कैंह्दा सुण पह्ले लै तूँ गल मैरी
नहिँ मैं खर, दूखन न हाँ बाली, पेॲा दौड़ के आ न वल मैरी ॥३९१॥
कुंभकरण सुण तूँ है नाम मैरा, कदी झाल न सकेंगा झल मैरी ।
गरदन तनं थीँ हो जुँदा[7] जासी, पई तलवार *दिलशाद* जद चल मैरी ॥३९२॥

१. दान्त । २. दांत । ३. फाड़ । ४. काट । ५. अनुताप । ६. अपने आप । ७. पृथक् ।

पिछे रंन दे जान गँवा नाहीँ, जिऊँदा रेहोँ ताँ रनाँ हझार मिलसन।
चला परत के जा तू घर आपने, कदी इत्थे न बिछड़े यार मिलसन ॥३९३॥

दिन सुख दे नाल गुझार जाके, रेहोँ इत्थे ताँ दुःख बसेंआरे[2] मिलसन।
जग जिऊँदिआँ दा *दिलशाद* मेला, मर के कदी न गुल गुलझार मिलसन ॥३९४॥

रामचन्द्र का वचन—

मैनूँ एह तूँ के सुणा रेहोँ, लै मूरखा खैर मना अपनी।
चुप-चुप करके जा नस्स इत्थोँ, जासेँ नहिँ ताँ जान गँवा अपनी ॥३९५॥

देसी तीर सरीर एह चीर तेरा, शेखी रेहोँ तू केंआ दिखला अपनी।
नहिँ झूठ *दिलशाद* इस विच कोई, सुत्ती मौत नूँ रेहोँ जगा अपनी ॥३९६॥

कुंभकरण लै के इक गदा भारी, रामचन्दर नूँ फिर दिखलान लगा।
इस नाल करसाँ चकना-चूर तेनूँ, पकड़ हत्थ दे विच घुमान लगा ॥३९७॥

हट जा पिछे अजे हैईं[3] वेला, किऊँ तूँ आपनी जान गँवान लगा।
मरदों तू *दिलशाद* जा होर किधरे, मैरे सिर किऊँ पाप चढ़ान लगा ॥३९८॥

रामचन्द्र का वचन—

कर लै आपना वार बेशक पैहले, पिछोँ सर मैं तैरा उड़ा देसाँ।
सकेसँ तीर न इक सहार मैरा, अञ अञ तेरा कर जुदा देसाँ ॥३९९॥

कोई दम दा दम मैहमान तेरा, हुणे खाक दे विच मिला देसाँ।
लै कढ्ढ अरमान *दिलशाद* दिल दा, नहिँ ताँ मार के मैं मुका देसाँ ॥४००॥

गदा चुक के झोर दे नाल मारी, कुंभकरण झालम गुस्सा खा के जी।
मांर छाल गए फुर्ती नाल उत्थोँ, लैंदे वार माह्राज बचा के जी ॥४०१॥

है हुण वार मैरी खबरदार हो जा, कुंभकरण नूँ कैह्ण सुणा के जी।
लैंगा ई चलन *दिलशाद* हुण तीर मैरा, जासी सिर एह तेरा उडा के जी ॥४०२॥

---

१. स्त्री। २. बहुत। ३. है, अयि (=अरे)। ४. लगा है, अयि (=अरे)।

कीती देर माह्राज न फिर कोई, तीर खिच के तुरत चला देंदे ।
लगा तीर निशाने दे विच जाके, बाहाँ कट के परे वगा देंदे ॥४०३॥

दूजा तीर उत्तों होर मार के ते, सिर तन थीं कर जुदा देंदे ।
गेआ मर *दिलशाद* कुंभकरण जदों, वानर सब मुबारकाँ आ देंदे ॥४०४॥

लंका में हाहाकार—

सिर नूँ कट के सुट्टेआ विच लंका, अज दस विच किस दे झोर ऐसा ।
राखश हेठ दबी के कई मर गए, रावण पुछदा होया किऊँ शोर ऐसा ॥४०५॥

पए नस्सदे भज्जदे किऊँ सारे, आया चढ़ दुशमन या कोई होर ऐसा ।
आओ वेख *दिलशाद* एह केआ होया, लेआ पकड़ किसे या कोई चोर ऐसा ॥४०६॥

आखन लगे वज़ीर नहिँ चोर कोई, न कोई होर दुशमन चढ़ के आया वे ।
ढट्टा[1] सिर कुंभकरण दा बिच लंका, दुशमन आपना झोर दिखलाया वे ॥४०७॥

गंए मर दबी के हेठ जेहड़े, शोर उन्हाँ दे वारसाँ पाया वे ।
सुट्टेआ मार *दिलशाद* कुंभकरण ताईँ, असाँ सच्च माह्राज सुणाया वे ॥४०८॥

रावण का शोक—

रावण बोलेआ एह के आख रेहओं, मैनूँ सुण के होश न कोई रेही ए ।
लगी तड़फन जान विच जिसम मैरे, करद दरद दी जिगर विच लग गई ए ॥४०९॥

गेआ मर भाई कुंभकरण मैरा, समझो अज्ज मैरी बाँह तेरुट[2] पई ए ।
दिलशाद जिउना मैरा कम्म केह्ड़े, जित्थों तीक न बदला लै लई ए ॥४१०॥

अज्ज ओ झोर तरा गेआ कित्थे वीरा, जिसदे नाल तिरलोकी निवाउँदा[3] सैँ[4] ।
सुण के नाम तैरा नस्सदे आहे सारे, डर किसे थीँ तूँ न खाउँदा सैँ ॥४११॥

अगे तेरे इन्सान सी चीझ केह्ड़ी, तूँ ताँ पर्वताँ नूँ हिलाउँदा सैँ ।
पेओँ[5] डिग *दिलशाद* अज्ज किऊँ आपूँ, जदके सारेआँ नूँ जाके ढाउँदा[6] सैँ ॥४१२॥

---

१. गिरा । २. टूट गई है । ३. झुकाता । ४. था (तू) । ५. पड़ा (तू) । ६. गिराता ।

मैनूँ दस्स खाँ आ के वीर मेरे, मेरे नाल के कर करार गेओं।
न मैं पार ते न उरार होया, किऊँ नस्स तूँ सुट्ट विचकार गेओं ॥४१३॥
तिन लोक तैथों डर खाउँदे सन, अज्ज किऊँ इन्सान थीं हार गेओं।
गए हौसले टुट *दिलशाद* मेरे, मैंनूं जिउँदाँ ईं हुण तूँ मार गेओं ॥४१४॥

कुंभकरण दे मरण दी खबर सुण के, रावण रोवँदा सी झारो झार उत्थे।
रही होश सरीर दी न कोई, पेआ डिग तखतों मुँह दे भार उत्थे ॥४१५॥
पुत्र चार उस दे चारे उस वेले, बैठे आहे ओ विच दरबार उत्थे।
रोंदे बाप नूँ वेख के *दिलशादा*, लगे कैह्ण चारे बाहाँ उलार उत्थे ॥४१६॥

राजपुत्रों का वचन—

धीरज देओ माह्राज जी दिल ताईं, बेशक मौत डाढी एह ताँ होई है जी।
लिख्या लेख जो धुर[1] दरगाह[2] विचों, नहिं ओ टलदा होवँदा सोई है जी ॥४१७॥
जित्थों तीक जिऊँदे असी हाँ बैठे, उत्थों तीक परवाह न कोई है जी।
बदला लवाँगे असी *दिलशाद* जाके, सानूँ आप दी लख धरवई[3] है जी ॥४१८॥

रावण का वचन—

गल्ल पुत्तराँ दी सुण के कैह्ण लगा, उठा विच मैदान दे जाओ तुस्सी।
मैनूँ भाई दे मरण दा दुःख बौह्ता, करो जलदी देर न लाओ तुस्सी ॥४१९॥
रामचंदर लछमन दोवें मार के ते, बदला चाचे दा जाओ मुकाओ तुस्सी।
मार दुशमनाँ सारेआँ मेरेआँ नूँ, मेरे कोल *दिलशाद* फिर आओ तुस्सी ॥४२०॥

राजपुत्र युद्धभूमि में—

थोड़ी फौज भी आपने नाल लै के, गए विच मैदान दे शेर चारे।
नौजवान सोह्णे बलवान भारे, वड्डे दिल दे आहे दिलेर चारे ॥४२१॥
वाँग बिजली कड़क के पैगँए[4] नीं, लैंदे वानराँ नूँ जाके घेर चारे।
बरछी तीर तलवार *दिलशाद* मारन, लगे दुशमनाँ नूँ करन ढेर चारे ॥४२२॥

१. परम। २. दरबार। ३. पुष्टि। ४. जा धमके।

हनुमान् ते अंगद भी वेख दूरोँ, खड़े दौड़ के सामने आ दोवें।
मारी बरछी शाहझादेआँ औंदेआँ नूँ, वाह वाह गए नी वार बचा दोवें ।४२३॥

लए रुक्ख उखाड़ के चुक दोहाँ, देंदे झोर दे नाल वगा[1] दोवें।
मारो-मार *दिलशाद* फिर करन लगे, पकड़ राखशाँ नूँ रहे गिड़ा दोवें ॥४२४॥

शाहझादे तिन्[2] आहे खड़े तिन पासे, लगे करन मुकाबला आन तिन्ने[3]।
निशाना रक्ख महाँबीर ते अंगद उत्ते, लग पए नीं तीर चलान तिन्ने ॥४२५॥

निशाने विच लगदा नहिँ तीर कोई, पए झोर आपना सारा लान तिन्ने।
जाँदा वार *दिलशाद* हर इक खाली, लगे वेख के होण हैरान तिन्ने ॥४२६॥

हनुमान् फिर गुस्से दे विच आ के, इक रुक्ख उखाड़ लै आया वे।
चुक के मारेआ झोर दे नाल ऐसा, उत्तों रथ दे हेठ गिड़ाया वे ॥४२७॥
लेआ दूँ[4] ने तिन्नाँ[5] नूँ कर काबू, नाल मुक्केआँ मार मुकाया वे।
सिर कट *दिलशाद* जुदा कीते, मझा एह लड़ाई दा पाया वे ॥४२८॥

चौथा तरफ चौथे हैसी खड़ा जाके, रेहा वेख नझीर लगा के ओह।
तिन्नाँ भाइआँ दी मौत नूँ वेख के ते, पेआ दौड़ उत्थों घबरा के ओह ॥४२९॥
गज्जदा भज्जदा वज्जदा आन पौंहता, खड़ा विच मैदान दे आ के ओह।
मारे भाई जिस तिन *दिलशाद* मेरे, छुप्पेआ दस्स कित्थे है जा के ओह ॥४३०॥

तिन-सिरा सी नाम तिन सिर उसदे, झबरदस्त भारा बलवान् है सी।
हैसन ढंग लड़ाई दे याद उसनूँ, सारे जानदा दाँओ[6] शैतान है सी ॥४३१॥
पकड़ हत्थ दे विच तलवार झालम, खड़ा आन के विच मैदान है सी।
गुस्से नाल *दिलशाद* हो लाल रेहाँ, लगा सिर ते चुक्कन असमान है सी ॥४३२॥

---

१. फैंक । २. तीन । ३. तीनों । ४. दो । ५. तीन । ६. दाँव ।

गई उठ सलोचना आप वेखन, कैह्‌दी दस्स कित्थे बाँह पई ए नीँ।
लगी वेख के कैह्‌ण सुण गोलिए नीँ, अकल होश मैरी उड गई ए नीँ ॥५८७॥
एह ताँ पति मैंरे दी है भुजा, निशानी वेख मैं आपनी लई ए नीँ।
दिलशाद नहिँ सुभ्दा कुभ्फ मैनूं, मैरे नाल एह के वरत रही ए नीँ ॥५८८॥

लगी रोवन सलोचना मार ढाईँ, खोवे[1] वाल सिर दे पई पट्टदी ए।
डिग्गी खा पछाड़ झमीन उत्ते, लग्गी चोट कलेजड़े इंट[2] दी ए ॥५८९॥
दित्ता हाए बिभीछण ने भेत सारा, विना तुरशी[3] खीरँ[4] न फटदी ए।
रावण लगा समभ्फान *दिलशाद* आके, बेटी लिखी तकदीर न मिटदी ए ॥५९०॥

मरना रण विच कम है सूरमे दा, होंदी विच जगत् वाह वाह बेटी।
दस्सेॲा भेत बिभीछण ते केॲा होया, मैनूं उस दी नहिँ परवाह बेटी ॥५९१॥
पैह्‌ले उसे नूँ जाके मारसाँ मैं, दित्ता कर जिस घर फनाह बेटी।
रामचन्दर ते लछमन दे फिर पिच्छोँ, सिर दोहाँ दे देवसाँ लाह बेटी ॥५९२॥
औंदी सप्प दी मौत है जिस वेले, जाके बैठदा ओह विच राह बेटी।
इक इक दा बदला जा लैसाँ, औसाँ सारेआँ नूँ कर फनाह बेटी ॥५९३॥
मैरे झोर दा नहिँ कोई विच दुनिआ, रक्ख हौसला दिल न ढाह बेटी।
विच मैदान *दिलशाद* अज्ज आप जाके, सुटसाँ कप सारे वाँग घा बेटी ॥५९४॥

सुलोचना का वचन—

केह्‌ड़ा झोर माह्‌राज है विच तुस्साँ, वेखो मुँह शीशे विच जाके जी।
धनश तोड़ परनाई[5] न किऊँ सीता, वाँग चोर ले आए चुराके जी ॥५९५॥
बिभीछण आखेॲा सच्च ताँ होए खफा, दित्ता कड्ढ उसनूं गुस्सा खाके जी।
महारानी दमोदरी सस्स[6] मैरी, गई थक ओ भी समभ्फा के जी ॥५९६॥
मन्नी गल्ल नहिँ किसे दी कोई तुस्साँ, बैठे कुल दा नास करवा के जी।
होवाँ सती मैं पति दा सिर लैके, है हिम्मत ताँ देॲो मंगवा के जी ॥५९७॥

१. उखाड़े। २. ईंट। ३. खटाई। ४. दूध। ५. विवाह किया। ६. सास।

पति बाज नहिँ जिउना धर्म मैरा, देवाँ आप नूँ सच्च सुणा के जी।
रामचन्दर दे नाल *दिलशाद* दस्सो, पाया फल के वैर वधा के जी ॥५९८॥

शरमिन्दा हो रावण आया उठ उत्थोँ, मिलेआ जदोँ जुआब मुँहतोड़ यारा।
हत्थ मत्थे ते धर के बेठ रेहा, जिऊँ मलाह बैहँदा बेड़ी बोड़ यारा ॥५९९॥
किस किस नूँ करके याद रोवाँ, गए मर कैहँदा कई करोड़ यारा।
दिलशाद नहिँ [१]फबदी गल्ल कोई, रेहा विच दिल दे जोड़-जोड़ यारा ।६००॥

सुलोचना का युद्धभूमि में विलाप—

गई सलोचना विच मैदान जंग दे, ढाईँ मार के पई कुरलाउँदी ए।
रामचन्दर माह्राज दे कोल जा के, उत्ते कदमाँ दे सीस नवाउँदी ए ॥६०१॥
देओ सिर मैनूँ मैरे पति संदा, हत्थ जोड़ के वासते पाउँदी ए।
होवाँ सती *दिलशाद* मैं नाल उसदे, रो रो के पई सुणाउँदी ए ॥६०२॥

लै के सिर नूँ जोड़दी नाल धड़ दे, झार झार बैह के कोल रोण लगी।
खलिआँ कर बाहीँ मारे पई ढाईँ, पट पट वाल सिर दे सारे खोण लगी ॥६०३॥
साबन मल के दुःख ते दरद वाला, टुकड़ा दिल ते जिगर दा धोण लगी।
दिलशाद कारण सती होवने दे, चिखा जोड़ तैय्यार हुण होण लगी ॥६०४॥

कैहँदी उठो पिया, करो गल्ल कोई, खफा किओँ [२]नेमानी ते हो गए ओ।
झरी-बाफते बिस्तरे छोड़ के ते, अज्ज किऊँ झमीन ते लेट रहे ओ ॥६०५॥
दस्सो कीतिआँ कित्थे तैय्यारिआँ ने, किऊँ उठ अकलड़े राह पए ओ।
इन्दर जेहाँ नूँ जद *दिलशाद* जित्तेआ, किवेँ अज्ज इनसान ने मार लए ओ ॥६०६॥

किऊँ विच मैदान दे लेट रहे ओ, छोड़ रंग महल ते माड़िआँ नूँ।
पए टुर अकल्याँ किऊँ छड के, दस्सो [३]मुंढ-[३]कदीम दे [४]आहड़िआँ नूँ ॥६०७॥

१. सूझती। २. दीन। ३. बहुत पूर्व। ४. साथियां।

रोवाँ मैं ते दुशमन हस्सन मैरे, सीवाँ किवेँ अपुट्ठिआँ पाड़िआँ नूँ।
साड़ाँ हार-सिंगार *दिलशाद* सारा, देवाँ फूक मैं सुचिआँ[1] साढ़िआँ नूँ ॥६०८॥

कीते आहे इकरार जो नाल मैरे, किऊँ अज्ज ओ तुस्सी वसार चले।
मैनूँ छोड़ अकल्याँ रोंदड़ी नूँ, दस्सो किस पासे हो तैय्यार चले ॥६०९॥
डोब दुखाँ दे वैह्न दे विच मैनूँ, लंघ किऊँ अकलड़े पार चले।
झरा बोल के दस्सो *दिलशाद* मुहोँ, कित्थे बन्ह के एह अज्ज बहार चले ॥६१०॥

शूरवीर जेहड़े वड्डे बलवाले, मत्थे दर तेरे उत्ते घिसदे सन।
सुण के नाम तेरा डरन लोक तिन्ने, घर छोड़ के देवते नस्सदे सन ॥६११॥
दित्ते खाक दे विच मिला सारे, कमराँ लड़न कारन जेहड़े कस्सदे[2] सन।
गए घर *दिलशाद* न परत के ओह, विच पंजे जो आन के फैंस्सदे[3] सन ॥६१२॥

गेआ हस्सना खेडना भुल मैनूँ, भुल गैइआँ सहेलिआँ सारिआँ जी।
फोलाँ[4] किस दे अगे मैं दुःख जाके, पैइआँ सिर मुसीबताँ भारिआँ जी ॥६१३॥
मैं भी नाल तुसाडड़े चलन कारन, आंई करके हाँ तैय्यारिआँ जी।
पति बाझ *दिलशाद* जो जिउँदिआँ नीँ, ओही रब दीआँ होंदीआँ मारिआँ जी ॥६१४॥

इस गल्ल ताईँ जेकर जाणदी मैं, मदद बाप कोलोँ मंग के आणदी मैं,
मिट्टी बैठ के इत्थे न छाणदी मैं, होंदा अज्ज मैरा न एह हाल पिआ।
कराँ केआ हुण वकत विहाँ[5] गेआ, हनेराँ[6] अक्खिआँ दे अगे छा गेआ,
समाँ अन्त मैरा समझो आ गेआ, खड़ा सामने आन के काल पिआ ॥६१५॥
तुस्साँ छोड़ेआ संग मैं छोड़ना नहिँ, रिशता नाल तुसाडड़े तरोड़ना नहिँ,
डर के मौत कोलोँ मुँह मोड़ना नहिँ, लगी चलन मैं आप दे नाल पिआ।

१. रेशमी। २. दृढता से बांधना। ३. फंसते। ४. खोलूँ। ५. व्यतीत।
६. अन्धेरा।

दिलशाद मैं छोड़न जहान लगी, मौत देन विखालिआँ आन लगी,
विच अरमान मैरी निकलन जान लगी, चली धर्म मैं आपना पाल पिआ ॥६१६॥

जाना केॲा मैं के एह वेख रहिआँ, दस्स बोल के मुँहों प्यारेॲा तूं।
कंत्रे धरती अकाश पताल तैंथों[1], किवें अज्ज इनसान थीं हारेॲा तूं ॥६१७॥
मैंनू छोड़ अकल्याँ रोंदड़ी नूँ, पेॲों टुर दस्स किधर वञारेॲा[2] तूँ।
रेहों लेट *दिलशाद* किऊँ खाक उत्ते, मैरी अक्खिआँ दे सोहणे तारेॲा तूँ॥६१८॥

सुलोचना को रामचन्द्र का उपदेश—

रामचन्दर माह्राज सुण वैण उसदे, कोल बैठ के करन गेॲान लगे।
दुनिआ है फानी सरपर[3] छोड़ जानी, समझ सच्च रानी एह समझान लगे ॥६१९॥
मिटदी नहिँ तकदीर, दे धीर दिल नूँ, एह नहिँ रैह्णा सरीर फरमान लगे।
दिलशाद मेला एह ताँ कोई दिन दा, सारे हीन मैह्मान सुणान लगे ॥६२०॥

होवन पए भावें कितने झोरवाले, झोर किसे दे मौत ते चलदे नहिँ।
लिखे लेख नसीब दे गए जेह्ड़े, कदी टालेआँ ओ फिर टलदे नहिँ ॥६२१॥
चार दिन दी चाँदनी है एह ताँ, सदा घर किसे दीवे[4] वलदे नहीँ।
पत्तर रुखाँ दे भी बिना हुकम रब दे, कदी समझ *दिलशाद* तूँ हिलदे नहीँ ॥६२२॥

झोर मौत दे नाल नहिँ चल सकदा, मौत मारदी राजेआँ रानिआँ नूँ।
अक्खीं वेख के डिगदे विच खूह दे, देवे मौत भुला स्यानेआँ नूँ ॥६२३॥
सबर शुकर करके बैठ घर जा के, लै जालें[5] सिर ते रब दे बहानेआँ नूँ।
पैह्ले सोच *दिलशाद* जद नहिँ कीती, हुण किऊँ रोनीएँ वकत विहानआँ[6] नूँ ॥६२४॥

झूठे दँावे जहान दे हीन सारे, सदा चमकदे रैह्ण न एह तारे,
मौत सारेआँ नूँ वारोवार मारे, कुदरत रब दी है अजब रानी।

१. तुझ से। २. (हे) व्यापारी। ३. अवश्य। ४. दीपक। ५. सहन कर। ६. व्यतीत हुए। ७. अधिकार।

कोई भेत नहिँ उसदा पा सकेॲा, घटी उमर नहिँ कोई वधा सकेॲा,
समझ सच्च नहिँ कोई मिटा सकेॲा, लिखे लेख जो गए नसीब रानी ॥६२५॥
मरज़ मौत दी लाइलाज[1] है वे, होंदी दूर न मरण दे बाझ है वे,
हर कोई इस दे अगे मोहताज है वे, गए थक दारू कर तबीब रानी।
सदा किसे *दिलशाद* न जिउना ऐँ, प्याला मौत दा सभ ने पिउना ऐँ,
अगे मौत हर इक ने निउना ऐँ, केॲा पादशाह ते केॲा ग़रीब रानी ॥६२६॥

पतिव्रत तेरा धर्म है पूरा, रख हौसला दिलोँ घबरा नाहीँ।
मिलसी इस दा फल ज़रूर तैनूँ, जासी गल्ल एह मैंरी खता नाहीँ ॥६२७॥
कर याद भगवान् घर बैठ जाके, सती होके जान गँवा नाहीँ।
मिलदे मोए *दिलशाद* न हीन कदी, ऐवेँ चित्त नूँ पई डोला नाहीँ ॥६२८॥

सुणी ज़द माह्राज दी गल्ल यारा, गेॲा दिल दा निकल सो वल[2] यारा,
उत्ते अग्नि दे पेॲा है जल यारा, दूजी वार फिर कोई न गल्ल कही ए।
रामचन्दर माह्राज दे शरण लगी, उत्ते कदमाँ दे सिर फिर धरन लगी,
हत्थ जोड़ के बिनती करण लगी, हरिहर हुण ताँ मुँहोँ बोल रही ए ॥६२९॥
लेॲा समझ फनाह जहान है जी, कोई दिन दी इत्थे गुज़रान है जी,
हर कोई इसदे विच मेहमान है जी, करनी रब दी सिर ते झल रही ए।
कैसा फ़ज़ल *दिलशाद* भगवान् कीता, विच दिल प्रवेश गेॲान कीता,
इधर-उधर न कोई धेॲान कीता, उत्थोँ परत सलोचना घर गई ए ॥६३०॥

रामचन्दर माहराज दी गल सुण के, होया दिल ते पूरा असर यारा।
कर सँस्कार[3] उत्थे पति अपने दा, गई परत सलोचना घर यारा ॥६३१॥
आशा-तृष्णा मन दी मार के ते, रही नाम भगवान् सिमर यारा।
विच दिल परवेश उपदेश कीता, गए मिट कलेश ते डर यारा ॥६३२॥

१. असाध्य। २. टेढापन (शोक)। ३. अन्त्येष्टि संस्कार।

होए ग़म-अलम[1] खतम सारे, रही बोल मुँहो हरिहर यारा।
वाह-वाह वेख नसीब *दिलशाद* उसदे, दर्शन करके गई है तर यारा ॥६३३॥

रावण का अन्तिम युद्ध—

रावण सोचेआ मोया परिवार सारा, लगी मगर मैरे डाढी ढंडिए[2] जी।
अज्ज आप मैदान दे विच जाके, चल अरमान सारा दिल दा कढिए जी ॥६३४॥
बैठी फौज जो दिल नूँ तोड़ सारी, त्रुटा दिल उन्हाँदड़ा गँढिए[3] जी।
दिलशाद विभीछण नूँ मार पैहले, पिच्छो राम-लच्छमन वी वँढिए[4] जी ॥६३५॥

रामचन्दर दे नाल हुण लड़न कारन, रावण आप परिवार नूँ गाल चलेआ।
रही-सैही[5] आही जेहड़ी फौज बाकी, सारी लै ओहो आपने नाल चलेआ ॥६३६॥
लए नाल हथ्यार संभाल सारे, सुत्ता पेआ जगान ओह काल चलेआ।
तपेआ तन तंदूर दे वाँग उसदा, गुस्से नाल *दिलशाद* हो लाल चलेआ ॥६३७॥

रावण विच मैदान दे जाके ते, वाँग शेर दे खड़ा हो गज्जन लगा।
नहिँ ठैह्रदा सामने कोई उसदे, डर नाल नस्स के हर इक भज्जन[6] लगा ॥६३८॥
कैंह्दा निकल विभीछिणा हैं कित्थे, छप्प के किऊँ हुण तूँ मुँह कज्जन[7] लगा।
नहिँ खबर *दिलशाद* बेखबर ताई, मारू मौत सिर आपने वज्जन लगा ॥६३९॥

कई हज़ार बानर रावण मार सुट्टे, नदी खून दी समझ तूँ वग पई ए।
नल, नील, अंगद ते सुग्रीव नूँ भी, उत्ते चोट दे चोट फिर लग रही ए ॥६४०॥
दूरों लछमन नूँ आँउदा वेख के ते, लग सारे सरीर नूँ अग गई ए।
इसे मारेआ पुत्तर *दिलशाद* मैरा, गोया लाहँ[8] मैरे सिरों पग लई ए ॥६४१॥

रावण कैंहा, है शुकर तूँ आ गेआ, कित्थे छप के आहें तूँ बैठ रेहा,
मैं ताँ ढूँडदा तैनूँ आह्स पेआ, लेआ लभ तैनूँ तू ही हैं चोर मैरा।

---

१. शोक। २. ढाह। ३. जोड़ दें। ४. काट दें। ५. बची-खुची! ६. भागने। ७. ढांपने। ८. उतार।

मेरे पुत्तर ताईं है मारेआ तूँ, पैह्ले अगे जिसदे हैसी हारेआ तूँ,
दस्स काँ एहमका केआ विचारेआ तूँ, अज्ज वेख तूँ लवेगाँ झोर मेरा ॥६४२॥
रामचन्दर सनें तैनूँ मार देसाँ, सिर तुसाडड़े इत्थे उतार देसाँ,
मेघनाथ उत्तों दोवें वार देसाँ, नहिं कोई मतलब है इत्थे होर मेरा।
मेरे वस[1] *दिलशाद* अज आन पेओं, परत कोल भिरा दे न गेओं,
अज तक छपा के जान रेहों, ल्याआ वखत तैनूँ इत्थे टोर मेरा ॥६४३॥

लक्ष्मण का वचन—

मैनूँ रावणा तेरा कोई डर नाहीं, पेआ झूठिआँ शेखिआँ कर नाहीं,
राह अपुट्ठड़े पैर तूं धर नाहीं, मैनूँ एह के तूँ सुणा रेहों।
देसाँ सिर मैं इत्थे उडा तैरा, बंद बंद कर सुटसाँ जुदा तेरा,
गेआ मौत दा वकत हुण आ तैरा, इत्थे किस नूँ तूँ डरा रेहों ॥६४४॥
तैरे झोर नूँ अज्ज तरोड़साँ मैं, गरदन पकड़ एह तेरी मरोड़साँ मैं,
कोल पुत्तर तैरे तैनूँ टोरसाँ मैं, समझ मौत दे मुँह विच आ रेहों।
होके सामने झोर दिखला लै तूँ, वरम दिल दा सारा हटा लै तूँ,
शस्त्र आपने पैह्ले चला लै तूँ, ऐवें शोर *दिलशाद* किऊँ पा रेहों ॥६४५॥

सुखन लछमण दे सुणके शाह रावण, ग़जबनाक हो तीर चलान लगा।
नहिं फटदा जाके तीर कोई, लछमन कटके सारे वगान लगा ॥६४६॥
गेआ वार खाली हर इक जदों, रावण वेख के दिलों शरमान लगा।
अग्ग गुस्से दी भड़क *दिलशाद* उठी, शक्तिबाण विच धनश दे पान लगा ॥६४७॥

बरछी इक आही डाढी हत्थ रावण, न सी झाल उसदी कोई झल सकदा।
जद ओ चलदी, बलदी अग्ग वाँगों, शस्त्र नाल उसदे न कोई रल सकदा ॥६४८॥
जावे वार न उसदा कोई खाली, नस्स भज्ज के भी न कोई मिल सकदा।
ताकत आही *दिलशाद* उस विच भारी, न सी झोर उसते कोई चल सकदा ॥६४९॥

---

१. वश (अधीन)।

लक्ष्मण की मूर्छा—

दित्ती शक्ति ओही चला रावण, निशाना लछमन दे उत्ते जमा के जी ।
छनक छनक करेंदड़ी[1] गई बरछी, लगी विच कलेजड़े जा के जी ॥६५०॥
रही होश शरीर दी न कोई, पेआ डिग लछमन गश खा के जी ।
रामचन्दर माह्‌राज एह वेख के ते, गए पौंह्‌च *दिलशाद* घबरा के जी ॥६५१॥

रामचन्दर माह्‌राज जी कोल बैह के, रहे बोला अगों लछमन बोलदा नहिँ ।
मुरदे वाँग झमीन ते है पेआ, मुँह बंद होया अक्खीँ खोलदा नहिँ ॥६५२॥
छोड़ आस उदास हो गए सारे, लछमन बोल के दुःख नूँ फोलदा नहिँ ।
विच फौज *दिलशाद* नहिँ कोई ऐसा, जिंद जान जो लछमन तों घोलदा नहिँ ॥६५३॥

रामचन्द्र का विलाप—

मुँहों बोल झरा उठ के वीर मैरे, ऐसी नींद कित्थों तैनूँ आ गई ए ।
दित्ताई सुत्तिआँ दिन गुझार सारा, हुण ताँ रात काली उत्तों आन पई ए ॥६५४॥
तैनूँ सुत्तड़ा वेख झमीन उत्ते, मैरी फौज तमाम घबरा रही ए ।
दिलशाद अकलड़ा छोड़ मैनूँ, कूच तूं वीरा, कित्थे कर लई ए ॥६५५॥

मैरे नाल की आहे इकरार तैरे, दित्ते किऊँ ओ अज्ज विसार वीरा ।
न मैं पार ते न उरार होया, गेंओं सुट मैनूँ विचकार वीरा ॥६५६॥
तुध बाज नहिँ आउँदा चैण दिल नूँ, सुटाँ जान आपनी तैथों वार वीरा ।
दिलशाद सदके जावाँ मैं तैथों, झरा बोल मुँहों इक वार वीरा ॥६५७॥

खुशी ऐश आराम नूँ छोड़ के ते, मैरे नाल दुक्खाँ विच पिस्सिओं[2] तूँ ।
गेओं हो नाराझ किऊँ अज्ज मैंते, मैनूँ छोड़ वीरा किऊँ नस्सेआ तूँ ॥६५८॥
रेहा पुच्छ मैं ताँ बैह्‌ के कोल तैरे, भेत दिल दा झरा न दस्सेआ तूँ ।
तेराँ[3] साल *दिलशाद* जी नाल मैरे, कीती बनां दे विच तपस्सेआ तूँ ॥६५९॥

---

१. करती हुई । २. पीसा गया । ३. तेरह (१३) ।

होके सामने केहा महाँबीर उसनूं, इत्थे किसनूँ तूँ डरा रेहों ।
तेरे जेहे असाँ कई मार सुट्टे, किऊँ तूँ मूरखा शोर मचा रेहों ॥४३३॥
देसाँ कोल भ्रावाँ[1] दे भेज तैनूं, ऐवें पकड़ तलवार लशका[2] रेहों ।
जासें बच के न *दिलशाद* इत्थों, मुँह मौत दे विच तूं आ रेहों ॥४३४॥

आया जोश तिनसिरे नूँ सुण के ते, झटपट तलवार चला दित्ती ।
महाँबीर ने वार बचा उस दा, चुक के सिल इक उत्ते वगा दित्ती ॥४३५॥
लई खस[3] तलवार फिर हत्थ विचों, मुक्का मार के होश भुला दित्ती ।
तिने सिर दित्ते चट[4] कट उस दे, जान उसदी कर हवा दित्ती ॥४३६॥
कतल राखशाँ नूँ फिर करन लगा, नदी खून दी उत्थे वहा दित्ती ।
राखश छोड़ मैदान *दिलशाद* नस्से, जा के रावण नूँ खबर पहुँचा दित्ती ॥४३७॥

रावण के हाँ—

मौत पुत्तराँ दी सुण के शाह रावण, हेठ तख़त उत्तों मुँह दे भार डिग्गा[5] ।
रही होश सरीर दी न कोई, हो के मार दा करदा पुकार डिग्गा ॥४३८॥
हत्थ मार मत्थे उत्ते रोवन लगा, हो के दुखिआ हौसला हार डिग्गा ।
गई टुट उमीद *दिलशाद* दिल दी, हो के झिन्दगी थीं अवाझार[6] डिग्गा ॥४३९॥

कुंभ निकुंभ कुंभकरण दे पुत्तर दोवें, कैंह्दा उन्हाँ नूँ के इत्थे कर रहे ओ ।
लैंदे बदला किऊँ नहिं बाप संदा, जिऊँदे हो तुस्सी या के मर रहे ओ ॥४४०॥
ऐसे शेर दिलेर दे पुत्तर हो के, केहड़ी गल्ल कोलों दस्सो डर रहे ओ ।
हिम्मत जाओ दिखलाओ *दिलशाद* आपनी, ठंडे साँह बैह के काहनूँ भर रहे ओ ॥४४१॥

कीती अरझ निकुंभ ते कुंभ अगों, असी हुकम संदे इन्तझार हाँ जी ।
इसे वासते आपदे कोल आए, वेखो बन्ह के सब हथ्यार हाँ जी ॥४४२॥

---

१. भाइयों के। २. चमका। ३. छीन। ४. शीघ्र। ५. गिर पड़ा। ६. निराश।
७. श्वास। ८. ले।

नहिँ डर माह्राज जी कोई सानूँ, लड़न मरन नूँ असी तैय्यार हाँ जी ।
देना मार *दिलशाद* अज दुशमनाँ नूँ, एहो दिल अंदर आए धार हाँ जी ॥४४३॥

रावण का वचन—

रैंह्दी उसनूँ नहिँ परवाह कोई, तुस्साँ जेही जिस घर औलाद होवे ।
देवे ओह औलाद न रब कदी, होयाँ जिसदे [1]खाना बरबाद होवे ॥४४४॥

उठो जाओ ते देर न लाओ इत्थे, करे रब ताँ पूरी [2]मुराद होवे ।
आउसो दुशमनाँ नूँ जदोँ मार के ते, समझो फिर मैरा *दिल शाद*[3] होवे ॥४४५॥

कुम्भ और निकुम्भ युद्धभूमि में—

गए कुंभ निकुंभ हुण लड़न कारण, नाल आपने फौज नूँ लै यारा ।
झटपट झपट के वानराँ ते, वाँग शेर दे गए नीँ पै यारा ॥४४६॥

मारन बरछिआँ तीर तलवार खिच के, लगे वानराँ दा करन खै[4] यारा ।
करन वार *दिलशाद* होशेआर होके, सुट्टे मार वानर कई सैँ[5] यारा ॥४४७॥

हार फौज दी वेख सुग्रीव राजे, आ के विच मैदान ललकारेआ वे ।
टुकड़ा इक पहाड़ दा चुक के ते, उत्ते चा निकुंभ दे मारेआ वे ॥४४८॥

पत्थर लगदेआँ ई पिस सिर गेआ, दे के दम नूँ सुरग सुधारेआ वे ।
दिलशाद माह्राज दा जैकारा, हो के वानराँ खुश पुकारेआ वे ।॥४४९॥

आया दौड़ फिर कुंभ तलवार लै के, हत्थ उत्ते सुग्रीव उलारेआ सू ।
लेआ पकड़ महाँबीर ने तुरत टंगोँ, उत्ते धरती दे चुक के मारेआ सू ॥४५०॥

दे के जान एह भी [6]रलया नाल भाई, अङ्ग अङ्ग जुदा कर डारेआ सू ।
राखश डर के नस्से *दिलशाद* सारे, झरा गज्ज के जदोँ ललकारेआ सू ॥४५१॥

रावण के हाँ—

हाझर कोल शाह रावण दे हो के ते, जाके राखशाँ खबर सुणाई है जी ।
मर गए निकुंभ ते कुंभ दोवेँ, नाल फौज भी जान गँवाई है जी ॥४५२॥

---

१. घर । २. आशा । ३. प्रसन्न । ४. क्षय । ५. सैंकड़े । ६. मिल गया ।

झबरदस्त भारे ओ ताँ हीन साथो[1], असाँ नस्स के जान बचाई है जी।
जाँदी पेश *दिलशाद* नहिँ कोई साडी, हुण ताँ मौत असाडड़ी आई है जी ॥४५३॥

खबर सुण ग़मगीन हो गेॲा रावण, कैंह्दा केॲा जानाँ एह के हो रेहा।
गेॲा लड़न उन्हाँदड़े नाल जेह्ड़ा, ओही मौत दी नींदरे सो रेहा ॥४५४॥
चल्या झोर न कोई कुंभकरण दा भी, गल्लाँ विच दिल दे बैह के ढो रेहा।
मल मल दाग *दिलशाद* कलेजड़े दे, पानी हन्जुआँ दे नाल धो रेहा ॥४५५॥

है सी खर दा पुत्तर मकड़ाछ उत्थे, लगा कैह्न ग़मगीन किऊँ हो रहे ओ।
शाहझोर इतने बलवान् हो के, वाँग औरताँ दे किऊँ रो रहे ओ ॥४५६॥
केॲा चीझ तपसी एह हीन दोवेँ, डर क जिन्हाँ कोलोँ जान खो रहे ओ।
दिलशाद जो सज्जदा[2] नहिँ तुस्साँ, कर कम्म तुस्सी अज ओ रहे ओ ॥४५७॥

करसाँ फ़िकर तुसाडड़े दूर सारे, सिर आपना आप तोँ वारसाँ मैं।
चढ़ेॲा भार जेह्ड़ा मैरे सिर उत्ते, अज्ज उसनूँ सिरोँ उतारसाँ मैं ॥४५८॥
लैसाँ बदले जा के सारेॲाँ दे, कदी विच लड़ाई न हारसाँ मैं।
ल्याउसाँ पकड़ तपसी *दिलशाद* दोवेँ, इत्थे आन के दोहाँ नूँ मारसाँ मैं ॥४५९॥

रावण की आशा—

गल्ल सुण मकड़ाच्छ दी कैह्ण लगा, शायद करके कुछ दिखलाएगा एह।
मैनूँ दिसदाँ[3] है दिलेर लड़का, हत्थ दुशमनाँ नूँ जा के पाएगा एह ॥४६०॥
इसदे जोश थीँ हो मलूम रेहा, बदले सभनाँ दे जा मुकाएगा एह।
तैंअज्जुब[4] नहिँ *दिलशाद* कोई विच इसदे, पकड़ दोहाँ नूँ जे लै आएगा एह ॥४६१॥

अद्धा[5] दुःख कैंह्दा होया दूर मैरा, दित्ता हौसला दिल नूँ आ के तूँ।
बदले भाइआँ चाचेॲाँ तॉयाँ दे, जलदी लै मैदान विच जा के तूँ ॥४६२॥

१. हम से। २. शोभता। ३. दीखता। ४. आश्चर्य। ५. आधा।

होसी रब तेरा मदगार बच्चा, औसें दुशमनाँ ते फतें पा के तूँ ।
पूरी है उमीद *दिलशाद* मैनूं, देसें प्यारेआ मार मुका के तूँ ॥४६३॥

मकराक्ष युद्धभूमि में—

ला के हत्थ पैरीं पेआ दुर उत्थों, जाके विच मैदान दे लड़न लगा ।
कमंद[1] ज़ोर दे नाल उलार पहले, हुण ताँ वानराँ नूँ आन फड़न लगा ॥४६४॥

कड्ढी फिर तलवार मेआन विचों, विच फौज दे दौड़ के वड़न लगा ।
रामचन्दर नूँ पेआ *दिलशाद* ढूँडे, बेड़ी[2] मौत दी ते वेखो चढ़न लगा ॥४६५॥

मकराक्ष का वचन—

कैंह्दा है कित्थे दस्सो रामचन्दर, किऊँ विच मैदान नहिं आउँदा ओह[3] ।
करदा किऊँ मुकाबला नहिं मैरा, ऐवें फौज नूँ पेआ मरवाउँदा ओह ॥४६६॥

आउँदा शरम किऊँ ज़रा नहिं उस ताईं, आके तुस्साँ नूँ नहिं छुड़ाउँदा ओह ।
जाओ सँद लै आओ *दिलशाद* उस नूँ, मैथों बच के अज नहिं जाउँदा ओह ॥४६७॥

धनश पकड़ माह्राज फिर विच हत्थ दे, खड़े सामने विच मैदान लैके ।
गेआ सामने राखश भी हो अगों, विच हत्थ दे तीर कमान लैके ॥४६८॥

मैरे बाप नूँ मारेआ तू ही कैंह्दा, तू भी जाएँगा घर न जान लैके ।
मैं ताँ ढूँडदा आह्स *दिलशाद* फिरदा, छडसाँ अज्ज तेनूँ तैरे प्राण लैके ॥४६९॥

रामचन्द्र का वचन—

कर अहमका चुप न बक ऐवें, नहिं मुंह तेरा एह गल्ल कैह्ण जोगा ।
सिफत सूरमे आपनी नहिं करदे, विच बहादुराँ नहिं तूँ बैह्ण जोगा ॥४७०॥

जा नस्स बचा के जान इत्थों, नहिं तूँ तीर मेरा इक सैह्ण जोगा ।
जावे हो अभमान *दिलशाद* जिसनूँ, जिउँदा ओह इनसान नहि रैह्ण जोगा ॥४७१॥

गज्ज कै बोलेआ फिर मकड़ाच्छ अग्गों, कैंह्दा दस्स एह के सुणाया तूँ ।
समझ वाँग उन्हाँदड़े न मैनूँ, अगे जिन्हाँ नूँ मार मुकाया तूँ ॥४७२॥

लैसाँ मैं बदले उन्हाँ सारेआँ दे, अज तक अपना आप छुपाया तूँ ।
जासें बच के न *दिलशाद* इत्थों, मैसाँ अज्ज मैनूँ हत्थ आया तूँ ॥४७३॥

१. फाँसने की रस्सी । २. नाव । ३. वह । ४. बुला । ५. बड़ी कठनाई ।

पकड़ हत्थ दे विच तलवार फिर ताँ, निकल विच मैदान दे आया वे।
लगा करन मैं वार होशेआर हो जा, एह माह्राज नूँ आख सुणाया वे ॥४७४॥
रेहा जा खाली हर इक हत्थं जदों, अग्ग गुस्से विच तन तपाया वे।
जावे पेश *दिलशाद* न कोई उसदी, राखश झोर आपना सारा लाया वे ॥४७५

जंग वेख मकड़ाछ दा रामचंदर, कैंह्दे झोर इसदा झरा घटदा नहिँ
वध वध के आउँदा पेॲा अग्गे, पिच्छे पैर इसदा झरा हटदा नहिँ ॥४७६॥
कीती फौज मैरी इस झेर आके, सेविँ नाल इसदे कोई वँटदा नहिँ।
वाँग शेर दे पेॲा *दिलशाद* गज्जदा, हत्थों अजे तलवार नूँ सुट्टदा नहिँ ॥४७७॥

दइए मार मुका हुण इस ताईँ, रामचन्दर माह्राज विचारदे नीँ।
इष्टदेव भगवान् नूँ याद करके, अगन बान विच धनश सँवारदे नीँ॥४७८॥
खबरदार होशेआर हो जा मूँझी, होके सामने आ ललकारदे नीँ।
तीर आतशी मार के *दिलशादा*, विच पल दे भस्म कर डारदे नीँ ॥४७९॥

रावण की आज्ञा—

सुणी मौत मकड़ाछ दी जद रावण, गुस्सा विच दिल दे डाढा आया सू।
पुत्तर पोतरे रहे जो आहे बाकी, उन्हाँ सारेआँ नूँ चा बुलाया सू ॥४८०॥
कैंह्दा लड़ो मैदान दे विच जाके, कैह्रवान् हो हुकम सुणाया सू।
ल्याओ पकड़ तपसी *दिलशाद* दोवेँ, गज्ज के विच दरबार फरमाया सू ॥४८१॥

चले गए मैदान दे विच सारे, रामचन्दर दे नाल आ लड़न लगे।
निकलन तीर सरीर नूँ चीर के ते, डिग डिग झमीन ते पड़न लगे ॥४८२॥
नहिँ झाल माह्राज दी झल सकदे, सुक्के पत्तराँ दे वाँग झड़न लगे।
डुँबदे आदमी वाँग *दिलशाद* सारे, तिनके घास दा आसरा फड़न लगे ॥४८३॥

---

१. प्रहार। २. बराबरी। ३. कर सकता। ४. अच्छे प्रकार जोड़ते हैं।
५. हे अत्याचारी। ६. अग्निमय।

मुँह मौत दे विच जो आ जावे, ओ बचायाँ कदी नहिँ बच सकदा ।
सौं[1] डाढेआँ दा है सत्तं[2] वीहाँ[3], नहिँ आख कोई उन्हाँ नूँ सच सकदा ॥४८४॥
मिलना करनी दा फल ज़रूर है जी, कदी पाप नहिँ किसे नूँ पच सकदा ।
आकलँ[4] वेख *दिलशाद* हैराण होवन, कुदरत जेहा कोई खेल नहिँ रच सकदा ॥४८५॥

जिउँदा बच नहिँ सकेआ इक उत्थों, चले गए नीँ मौत दे राह सारे ।
सनेँ फौज जरनैल करनैल मोए, होए दीवान वज़ीर फनाह सारे ॥४८६॥
किसे रावण नूँ जाके खबर दित्ती, गए मर के हो तबाह सारे ।
दिलशाद पल दे विच रामचन्दर, कँप[5] के सुट दित्ते वांग घाह सारे ॥४८७॥

लंका में मातम—

गेआ हो मातम विच शैहर लंका, विच घराँ दे हर कोई रो रेहा ।
कोई हाए वीरा कोई हाए पुत्तरा, कैंह्दे अज्ज कित्थे जाके सो रेहा ॥४८८॥
कोई रोवँदा चाचेआँ तॉयाँ नूँ, हर इक जिन्द आपनी नूँ खो रेहा ।
दिलशाद आवाज़ सुण रोवने दी, लगा कैह्ण रावण एह के हो रेहा ॥४८९॥

बैठी रानी दमोदरी कोल आके, गल्ल सुण कैंह्दी कन्न धर पिआ ।
दिसदा विच लंका नहिँ कोई हसदा, रेहा हो मातम हर घर पिआ ॥४९०॥
मोई फौज वज़ीर दीवान मोए, तरफ आपनी कर नज़र पिआ ।
मेघनाथ जिउँदा इको है बाकी, गए होर प्यारे तेरे मर पिआ ॥४९१॥
मर गेआ भाई कुंभकरण तेरा, जिसदा अहा हर इक नूँ डर पिआ ।
रैह्ण दे कोई ताँ पानी देन जोगा, ज़रा सोच विच दिल दे कर पिआ ॥४९२॥
चलसी ज़ोर न उसदे नाल कोई, जिस मार दित्ते दूखन-खर पिआ ।
सीता कर हवालड़े राम दे तूँ, पेआ दम खुदाई न भर पिआ ॥४९३॥
रामचन्दर माह्राज अवतार है जी, बैठों जिसनूँ समझ बँशर[6] पिआ ।
अच्छी तरह लेआ देख-भाल उसनूँ, हुई फिर भी नहिँ खबर पिआ ॥४९४॥

---

१. सैंकड़ा । २. सात । ३. वीसी । ४. बुद्धिमान् । ५. काट । ६. सपुर्द । ७. मनुष्य ।

बूटा अपना आप न पट्ट आपूँ, रैहूण दे एह इक शजर पिया।
करले अरज़ मनज़ूर *दिलशाद* मैरी, होया किउँ इतना ख़ुदसर[1] पिआ।४९५॥

सीता लैआ विटलाई जो विच लंका, देख फल उस दा कैसा पाया जी।
पाके भंडिआँ[2] रंडिआँ[3] कीतिआँ ने, सारी कुल दा नास करवाया जी॥४९६॥
मन्नी नहिँ मैरी कोई गल्ल तुस्साँ, मैं ताँ आप नू बहूँ समझाया जी।
सोचो ज़रा *दिलशाद* हुण विच दिल दे, सीता-हरण थीँ हत्थ के आया जी॥४९७॥

रावण का वचन—

देसाँ जिउँदिआँ कदी भी न सीता, मैनूँ के रानी तूँ कह रही एँ।
मैनूँ हत्थ नहिँ सकदा पा कोई, केहड़े वैहन खेआल विच बह रही एँ॥४९८॥
फिकर दिल दे दिल थीँ दूर कर दे, ढैह्णी[4] कँध[5] दे वाँग किऊँ ढैह्[6] रही एँ।
मैह्लाँ विच *दिलशाद* तूँ बैठ जाके, किऊँ कोल मेरे आ के बैह रही एँ॥४९९॥
नहिँ हौसला हारदा मरद कदी, होंदी मरद दे विच मरदानगी[7] ए।
होंदी औरत नूँ जद तकलीफ ज़रा, औंदी उस नूँ तुरत दीवानगी[8] ए॥५००॥
मरज़ वैह्म दी जिस नूँ लग जावे, होंदी दूर न उस दी माँदगी[9] ए।
मेरे जिऊँदिआँ है तैनूँ डर किस दा, मैनूँ एही *दिलशाद* हैरानगी ए॥५०१॥

मन्दोदरी का वचन—

खर-दूखन नूँ उन्हाँ ने मारेआ वे, कुंभकरण दा सिर उतारेआ वे,
तैरी कुल दा नास कर डारेआ वे, होई तैनूँ नहिँ अजे खबर कोई।
हनुमान् पैह्ले वेख आया सी, आ के लंका नूँ जिस जलाया सी,
तैनूँ आपना ज़ोर दिखलाया सी, रक्खो उस न बाकी कसर कोई॥५०२॥
हुण ताँ कई हज़ार जवान होसन, इक्को जेहे सारे बलवान् होसन,
पए गज्जदे विच मैदान होसन, होदा किऊँ नहिँ तैनूँ असर कोई।
किऊँ *दिलशाद* एह नहिँ खेआल कीता, वेख ताड़का दा के हाल कीता,
बाली तीर दे नाल हलाल कीता, हैगा[10] नहिँ ए आम बशर कोई॥५०३॥

१. अभिमानी। २. लड़ाइआँ। ३. विधवाएँ। ४. गिर रही। ५. दीवार। ६. गिर। ७. वीरता। ८. पागलपन। ९. रुग्णता। १०. है।

रावण का वचन—

होया के जे बाली नूँ मार आया, अते लंघ समुँदरोँ पार आया,
लैके नाल लशकर बेशुमार आया, मैनूँ झरा भी उसदा डर नाहीँ ।
उसदे सिर ते आन के मौत झूली, देसाँ पकड़ के उसनूँ चाढ़ सूली,
किस बाग़ दी है ओ दस्स मूली, इत्थों परत के जायगा घर नाहीँ ॥५०४॥

मेरे जेहा है होर बलवान् केहड़ा, सानी दस्स मैरा विच जहान केहड़ा,
लड़सी नाल मैरे विच मैदान केहड़ा, कोई हौसला सकदा कर नाहीँ ।
फिकर कर एह दूर तमाम दिलोँ, दे हटा ख़ेआल तू खाम दिलोँ,
मोया समझ *दिलशाद* एह राम दिलोँ, ऐवेँ डर डर के पई मर नाहीँ ॥५०५॥

चली गई दमोदरी जद उत्थोँ, रावण फिर दरबार विच आ बैठा ।
करे याद बैह के पेॲा मोयाँ नूँ, डाढा ता[1] कलेजड़े खा बैठा ॥५०६॥

कैंह्दा गई नहिँ किसे दी पेश कोई, हुण ताँ दिल दे विच घबरा बैठा ।
आया परत *दिलशाल* नहिँ कोई मुड़ के, जेह्ड़ा गेआ ओ जान गँवा बैठा ॥५०७॥

मेघनाथ ताईँ फिर शाह रावण, सद के आपने कोल बिठलाया वे ।
रामचन्दर दित्ता मार सारेॲाँ नूँ, उत्थोँ परत कोई न आया वे ॥५०८॥

कीते राही अदम उस भाई तैरे, ते कुंभकरण नूँ मार मुकाया वे ।
रेहॅा पिछे *दिलशाद* जद नहिँ कोई, ताँ फिर आप नूँ मैं बुलवाया वे ॥५०९॥

हर इक घर दे विच हो रेहॅा मातम[2], एह उसे दा समझ तूँ शोर बेटा ।
जिउँदा इक नहिँ छोड़ेॲा उस कोई, कोल मौत दे सारे टोर बैठा ॥५१०॥

लड़ाई नाल उन्हाँदड़े बाझ तेरे, नहिँ कर सकदा कोई होर बेटा ।
देसेँ मार मुका *दिलशाद* तूहीँ, है मालूम मैनूँ तेरा झोर बेटा ॥५११॥

---

१. ताप । २. शोक ।

जलदी विच मैदान दे जा के ते, पकड़ दुश्मनाँ नूँ करो झेर बेटा ।
होया सड़ के जिगर कंबाब[1] मैरा, जा उठ न कर तूँ देर बेटा ॥५१२॥
तुध बाज नहिँ आउँदा नज़र कोई, तू ही ँ शेर मैरा है दिलेर बेटा ।
जाके मार *दिलशाद* आ सारेआँ नूँ, बेही[2] ँ कोल मैरे आके फेर बेटा ॥५१३॥

सुणेआँ हाल सारा मेघनाथ जदोँ, विच दिल दे होण हैरान लगा ।
कुंभकरण ताईं जिन्हाँ मार सुट्टेआँ, सकसाँ मार मैं किवें घबरान लगा ।।५१४॥
एह ताँ सखत मुशकल है कम्म भारा, तरह तरह दे फिकर दौड़ान लगा ।
दिलशाद मंदिर देवी अंबका दे, हवन करन दे वासते जान लगा ॥५१५॥

विभीषण व रामचन्द्र का संवाद—

लगा करन मंदिर अंदर हवन एह ताँ, चित्त देवी दे शरण विच लाके जी ।
रामचन्दर माह्‌राज दे कोल सुण झपँ[3], कीती अरझ विभीछण ने आके जी ।।५१६॥
मेघनाथ ने यग आरम्भ दित्ता, बैठा देवी दे मंदिर विच जाके जी ।
पूरण यग जद जाएगा हो इसदा, बाहर निकलसी वर नूँ पा के जी ॥५१७॥
होसी मारना इसदा फेर मुश्कल, देवाँ सच्च मैं एह सुणा के जी ।
दइए खण्डन *दिलशाद* कर तप इसदा, नस्स जाएगा फिर घबरा के जी ॥५१८॥

रामचन्द्र जी का कथन—

कर फिकर प्यारेआँ न कोई, लै समझ एह भी इत्थे मर जासी ।
देसी जान मैदान दे विच आके, कदी परत के इत्थो ँ न घर जासी ।.५१९॥
झाल लछमन दी झल न सकेगा एह, सूरत वेख महाँबीर दी डर जासी ।
मुड़सी जिउँदा न *दिलशाद* इत्थोँ, दे प्राण एह इत्थे सँरपर[4] जासी ॥ ५२० ॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण को निर्देश—

जाओ लछमन जी मार के आओ इसनूँ, करनी देर न हुण मैरे वीर चाहिए।
चले जाओ बिभीछण दे नाल तुस्सी, रखना नाल आपने महाँबीर चाहिए ॥५२१॥
जिस जा ते कर ओह तप रेहा, देनी घत उस जा वहीर चाहिए ।
वारी अज्ज *दिलशाद* गई आ इसदी, कटना सिर इसदा मार तीर चाहिए ॥५२२॥

---

१. भुना हुआ मांस। २. बैठना। ३. जल्दी। ४. अवश्य।

मेघनाद को ललकारना—

हनुमान् ते लछमन नूँ नाल लैके, बिभीछण आप हुण उठ के चलेॲा ने।
बानर होर भी चल पए नाल बौहते, बूहा[१] मंदर दा जाके मलेॲा[२] ने ॥५२३॥

होके सामने कर लड़ाई आके, मेघनाथ नूँ आख एह घलेॲा[३] ने।
इत्थे छप *दिलशाद* किऊँ आन बैठों, घेरा पा चौफेरेॲों वलेॲा[४] ने ॥५२४॥

मेघनाद का सामने आना—

वानर कर धावा पै गए राखशाँ ते, सिर तरोड़ मुकाबला आन होया।
पकड़ पकड़ के चीरदे राखशाँ नूँ, नाल लहू दे लाल मैदान होया ॥५२५॥

भज्जदे नस्सदे छप्पदे पए सारे, मेघनाथ एह वेख हैरान होया।
निकल मंदिर थीं बाहर *दिलशाद* आया, गज़बनाक होके कैहरवान होया ॥५२६॥

मेघनाद-विभीषण-संवाद—

खड़ा कोल बिभीछण नूँ वेख के ते, कैंहदा चाचा साहब एह की कर रहे ओ।
शाह रावण दे तुस्सी भिरा हो के, सिर दुशमन दे पैराँ ते धर रहे ओ ॥५२७॥

औंदा किऊँ नहिँ शरम हया तुस्साँ, कर वीरान किऊँ आपना घर रहे ओ।
मैं पुत्तर ते बाप *दिलशाद* तुस्सी, कर फिर कैहर दी किऊँ नज़र रहे ओ ॥५२८॥

विभीषण का वचन—

तैनूँ है मलूम तमाम बेटा, जो कुछ बाप तेरे मैरे नाल कीता।
मैं ताँ दित्ती सी नेक सलाह आके, ज़रा उस न कोई खेॲाल कीता ॥५२९॥

आहें तूँ दरबार दे विच बैठा, लेआई[५] वेख मेरा जेहड़ा हाल कीता।
लत्त मार के कड्ढेॲा बाहर मैनूँ, कैसा दिल उस पत्थरमसाल[६] कीता ॥५३०॥

कड्ढिआँ गालिआँ तुध भी आहन उत्थे, गुस्से नाल तूँ भी चेहरा लाल कीता।
कट्टेॲा सिर मैरा उत्थे नहिँ तुस्साँ, एह एहसान बेशक कमाल कीता ॥५३१॥

मैरे भाई नूँ समझ न आई काई[७], दुःखी अज्ज आपना वाल वाल कीता।
हैसी ओही वेला उसदे समझने दा, जोड़ हत्थ मैं लख सवाल कीता ॥५३२॥

आवे गुज़रेॲा वकत न हत्थ मुड़के, हिम्मत हार किऊँ दिल निढाल कीता।
रामचन्दर नूँ वेख *दिलशाद* लै तूँ, जेहड़ा गेॲा उस पकड़ हलाल[८] कीता ॥५३३॥

१. द्वार। २. रोक लिया। ३. भेजा। ४. घेर लिया। ५. लिआ है (तू ने)। ६. पत्थर की भांति (कठोर)। ७. ज़रा भी। ८. नष्ट कर।

मेघनाद का वचन—

गल्लाँ गुझरिआँ नूँ करो याद नाहीँ, रखो भाई दे नाल फसाद नाहिँ,
घर आपना करो बरबाद नाहीँ, रहे किऊँ बुनियाद नूँ गाल[1] तुस्सी।
सुणो चाचा जी सच्च सुणा देवाँ, रुठड़े[2] भाई दे नाल मना देवाँ,
चलो मैं कसूर बखशा देवाँ, करो होर न कोई खेआल तुस्सी ॥५३४॥

विच घराँ दे झगड़ा होवँदा ने, जेह्ड़ा हसदा ओही फिर रोवँदा ने,
अंब[3] इक नालोँ न कोई खोवँदा[4] ने, बैठे किऊँ मिल के दुश्मन नाल तुस्सी।
तुस्सी नफा नुकसान नूँ जानदे ओ, नेक-बद भी खूब पैह्चानदे ओ,
वाकफकार दिलशाद जहान दे ओ, नहिँ कोई जातक[5] खुरदसाल[6] तुस्सी ॥५३५॥

विभीषण का वचन—

बोल मरद नूँ मोड़ना है औखा, त्रुटे शीशे दा जोड़ना है औखा,
लाके दिल फिर तोड़ना है औखा, रामचन्दर तों जान निसार बेटा।
पैह्ले बाप नूँ तूँ समझा जाके, सिद्धे रसते उस नूँ पा जाके,
बैह के कोल गेआन सुणा जाके, देवे दूर ओ कर हंकार बेटा ॥५३६॥

होया की जे वड्डा बलवान् है ओ, ते शहिनशाह भारा सुलतान है ओ,
कोई दिन दा समझ मैहमान है ओ, रामचन्दर देसन उस नूँ मार बेटा।
देवेँ कर जे दूर गरूर उसदा, जावे हट दमागी फतूर उसदा,
देवाँ मुआफ करवा कसूर उसदा, कहे दिलशाद एह कराँ इकरार बेटा ॥५३७॥

मेघनाद का वचन—

कैह्दा किस नूँ मारसी रामचन्दर, इतना झोर उस विच कित्थोँ आया वे,
कीता दोहाँ नूँ मूरछा मैं पैह्ले, इक तीर दे नाल गिड़ाया वे ॥५३८॥
नाल उन्हाँ दे मारसाँ अज्ज तैनूँ, एह आख के धनश उठाया वे।
गुस्से नाल दिलशाद फिर लाल होके, गझबनाक हो तीर चलाया वे ॥५३९॥

महावीर द्वारा सहायता—

लगा पकड़ने तीर महाँबीर आके, मेघनाथ दा नहिँ कोई झोर चलदा।
आउँदे तीर नूँ पकड़ तरोड़ सुट्टदा, खड़ा विच मैदान दे नहिँ हिलदा ॥५४०॥

---

१. नष्ट कर। २. रूठे हुए। ३. आम। ४. उतारता। ५. बालक। ६. छोटी आयु के।

तीर इक नहिँ देवँदा जान अग्गे, भन्न[1] तरोड़ सारे पैराँ विच मलदा ।
मेघनाथ हैरान *दिलशाद* होया, विच गुस्से दी अग्ग दे पेऑ जलदा ॥५४१॥

लछमण-मेघनाद युद्ध—

लछमन विच मैदान दे धनश लैके, मेघनाथ नूँ आन ललकार कैहँदा ।
बिभीछण नाल बदज़ात किऊँ लड़ रेहोँ, कर नाल मैरे हत्थ दो चार कैहँदा ॥५४२॥

लड़ना सामने कम है सूरमे दा, गीदी छप के करदे वार कैहँदा ।
जासेँ घर न परत *दिलशाद* इत्थोँ, देसाँ अज्ज तैनूँ इत्थे मार कैहँदा ॥५४३॥

मेघनाद का वचन—

वेला मूरछा दा किऊँ नहिँ याद तैनूँ, करके जद मैं विच मैदान आया ।
ओही हैं लछमन या कि होर कोई, इत्थे किस नूँ तूँ डरान आया ॥५४४॥

सनेँ भाई तैरे तैनूँ मारसाँ मैं, अज्ज विच दिल दे एह मैं ठान[2] आया ।
चाहेँ भला *दिलशाद* जा परत पिच्छे, ऐवेँ किऊँ गँवान तूँ जान आया ॥५४५॥

लछमण का वचन--

खा के अंगद थीँ मार फिर नस्सेओँ किऊँ, कीती ज़रा नहिँ तूँ शरम कोई ।
लड़ना सामने कम्म बहादराँ दा, विच दिल रैंह्दा नाहीँ वरम कोई ॥५४६॥

वाँग चोर दे छप के वार करना, नहिँ सूरमे दा एह करम कोई ।
आ के लड़ *दिलशाद* सन्मुख हो के, बैह्ना छप के नहिँ एह धरम कोई ॥५४७॥

मेघनाद का वचन—

अंगद है किस बाग दी दस्स मूली, मैं मार नहिँ किसे थीँ खा सकदा ।
नस्सदे लोक तिन्ने मैरा नाम सुण के, मैरे सामने कोई नहिँ आ सकदा ॥५४८॥

इन्दर जेहे जद गए नी हार मैथोँ, दस्स फिर कौण मैनूँ हत्थ पा सकदा ।
लड़सी आन *दिलशाद* जो नाल मैरे, नहिँ जान ओ कदी बचा सकदा ॥५४९॥

खबरदार होशेआर हो जा लछमन, ऐवेँ शोर इत्थे काहनूँ पाया ई ।
तैनूँ मार पैह्ले पिच्छोँ मारसाँ ओ, लै के नाल जेहड़ा तैनूँ आया ई ॥५५०॥

---

१. तोड़ कर । २. निश्चय कर ।

सकसी बच के जा न इक इत्थों, समझ सच्च एह मैं सुणाया ई।
झरा देर *दिलशाद* नहिँ फेर कीती, खिच के तीर बेपीर चलाया ई ॥५५१॥

मेघनाथ खलो के विच रथ दे, लगातार हुण तीर चला रेहा।
औंदे तीर नूँ तीर दे नाल अग्गों, लछमन कट के परे वगा रेहा ॥५५२॥
लछमन तक नहिँ पौंह्‌चदा तीर कोई, सारा झोर आपना राखश ला रेहा।
कतरब लछमन दे वेख *दिलशाद* सोह्‌णे, गुस्सा विच दिल दे डाढा आ रेहा ॥५५३॥

इकट्ठे तीर विच धनश दे जोड़ के ते, बदकार कुफार[1] चला दित्ते।
कई लगे सरीर दे विच जाके, भावेँ कट के कई वगा दित्ते ॥५५४॥
सारे जिसम विचोँ निकलन लहू लगा, राखश आपने जौहर दिखला दित्ते।
दित्ता लछमन नूँ कर *दिलशाद* झख्मी, कई वानर भी मार मुका दित्ते ॥५५५॥

झख्मी लछमन नूँ करके खुश होया, केॲआमत विच मैदान मचान लगा।
कीता नल ते नील झ़लील[2] यारा, जा के हत्थ बिभीछण नूँ पान लगा ॥५५६॥
निकल बाहर किऊँ छप के बैठ रेहोँ, समाँ अन्त तेरा कैहँदा आन लगा।
गेओँ मिल *दिलशाद* जो नाल दुशमन, मझा[3] उस दा मैं चखान[3] लगा ॥५५७॥

लई खिच तलवार मेॲआन विचोँ, लगा करन बिभीछण ते वार आ के।
दूरोँ वेख महाँबीर भी आन पौहँता, खड़ा सामने शेर दिलदार आ के ॥५५८॥
झट पट कर सट न हट पिच्छे, मेघनाथ नूँ रेहा वंगारैं[4] आ के।
रेहोँ सोच *दिलशाद* की विच दिल दे, होई मौत सिर तेरे स्वार आ के ॥५५९॥

मेघनाथ महाँबीर नूँ कैह्‌ण लगा, मैनूँ एह तूँ की सुणान लगोँ।
कदी झल न सकेंगा झाल मेरी, ऐवेँ किऊँ गँवान तूँ जान लगोँ ॥५६०॥

१, नास्तिक ने। २. लज्जित। ३. (मझा…चखान) बदला लेने। ४. ललकार।

लगदा केॲा बिभीछण है साक तेरा, जिसदे वास्ते मरन नादान लगों ।
जा नस्स *दिलशाद* न ठैह्‌र इत्थे, किऊँ मौत दे मुँह विच आन लगों ॥५६१॥

महावीर का वचन—

है वरम[1] चरोकना विच दिल दे, अज्ज ओही कड्ढन[2] इत्थे आया मैं ।
सुत्ता आहें उस वकत तूं जा कित्थे, आके लंका नूँ जदों जलाया मैं ॥५६२॥
कर मुकाबला किऊँ न पकड़यो ई, ब्रह्मफाँस दिखला फँसाया मैं ।
लैसाँ वेख *दिलशाद* अज्ज झोर तेरा, तैनूँ राखशा सच्च सुणाया मैं ॥५६३॥

इतना सुण के लगा फिर कैह्‌ण राखश, लवाँ लै मैं तेरी खबर पैह्‌ले ।
तैनूँ आपना झोर दिखला के ते, देवाँ तोड़ एह तेरा तकबर[3] पैह्‌ले ॥५६४॥
पिच्छों होरनाँ नूँ पेॲा मारसाँ मैं, देवाँ पा विच तैनूँ कबर पैह्‌ले ।
जिस सरीर दा मान *दिलशाद* करें, सुट्टां चीर ओ नाल तबर[4] पैह्‌ले ॥५६५॥

कुहाड़ा हत्थ दे विच पकड़ के ते, गुस्से नाल उलार के मारेॲा सू ।
लेॲा वार बचा महाँबीर उसदा, होके सामने फिर ललकारेॲा सू ॥५६६॥
इसे झोर ते आहें मग़रूर फिरदा, मेघनाथ दा मुँह फटकारेॲा सू ।
होके सामने लड़ *दिलशाद* हुण तूँ, निकल विच मैदान वंगारेॲा सू ॥५६७॥

गल्ल महाँबीर दी तीर दे वाँग हैसी, लगी विच कलेजे दे साँग हैसी,
चढ़ी राखश ते ग़माँ दी काँग हैसी, आके तीर कमान उठान लगा ।
मारो मार चौफेरेॲों पेॲा करे, नाल तीर दे तीर नूँ जोड़ धरे,
वानर नस्स के जाँवदे हो परे, विच मैदान केॲामतं मचान लगा ॥५६८॥
कदी पकड़ कमंद उलारदा वे, कदी करदा वार तलवार दा वे,
पकड़ पकड़ वानर पेॲा मारदा वे, कई किसम हथ्यारं चलान लगा ।
लछमन सामने आन *दिलशाद* खलों[5], शेर वाँग झपट के करे हलाँ[6],
इस दे विच न समझ तूँ कोई रैला[7], डाढा सख़्त मुकाबला आन लगा ॥५६९॥

---

१. उत्ताप। २. निकालने। ३. अभिमान। ४. कुल्हाड़ा। ५. खड़ा। ६. आक्रमण। ७. खोट।

खिच के तीर इक झोर दा मारेआ सू, चकनाचूर कर रथ नूँ डारेआ सू,
मेघनाथ नूँ आन वंगारेआ सू, लछमन आखदा सुण गुफ्तार मैरी।
इत्थे किस नूँ दस्स बुलाएँगा तूँ, करनी आपनी दा फल पाएँगा तूँ,
अज्ज परत के घर न जायँगा तूँ, लगी चलन है वेख तलवार मैरी ॥५७०॥

ऐवें झूठियाँ शेखियाँ कर नाहीं, पेआ चुक एह तेगोतबर[1] नाहीं;
तैनूँ मूरखा कोई खबर नाहीं, सकसें वार न इक सहार मैरी।
तेरा झोर मैं अज्ज तरोड़ देसाँ, गरदन पकड़ के तेरी मरोड़ देसाँ,
नाल मोयाँ दे तैनूँ भी जोड़ देसाँ, एहो है *दिलशाद* विचार मैरी ॥५७१॥

तीर झहर भरे गुस्से नाल चुक के, मेघनाथ खिच के पेआ मारदा वे।
लगदा विच निशाने नहिं इक जाके, लछमन कट अगों सारे डारदा वे ॥५७२॥

ओ भी लछमन दे तीरं नूँ पेआ कटदा, ते उस्ताद पूरा इस कार दा वे।
इक्को जेहे *दिलशाद* बलवान् दोवें, इक दूसरे थीं न कोई हारदा वे ।।५७३॥

तीर आतशी मार के साड़ रेहा, वानर पैराँ दे हेठ लेताड़ रेहा,
भेडाँ वाँग बघयाड़ँ[3] दे पाड़ रेहा, नहिँ झाल उसदी कोई झल सकदा।
झबरदस्त बलवान् एह कैह्रदाँ[4] वे, अगे इसदे कोई न ठैह्रदा वे,
खड़ा विच मैदान दोपहर दा वे, इस ते झोर नहिँ किसे दा चल सकदा॥५७४॥

गुस्से नाल हो लाल जिसम गेआ, चला तीर झालम छमाछम रेहा,
मारे विच मैदान दे खम पेआ, झरा पैर पिच्छे नहिँ हल सकदा।
जानीं[5] फन्[6] लड़ाई उस्ताद है सी, विद्या शँस्तराँ[7] दी सारी याद है सी,
जित्तेआ इन्दर नूँ इसे *दिलशाद* है सी, कोई नाल इसदे नहिँ रल सकदा ॥५७५॥

लछमन जोश दे विच मदहोश होके, लगा गरजने धनश उठा के जी।
मेघनाथ नूँ मारदा तीर खिच के, कैह्रवान हो शिस्त लगा के जी ॥५७६॥

---

१. शस्त्र (तलवार और कुल्हाड़ा)। २. मसल। ३. भेड़िए। ४. बहुत अधिक (प्रलय सरीखा)। ५. ज्ञाता। ६. कला। ७. शस्त्र।

सज्जी बाँह नूँ कट उडा दित्ता, डिग्गी विच महल्लाँ दे जाके जी ।
सिर तन थीँ कर जुदा सुट्टेआ, दूजा तीर *दिलशाद* चला के जी ॥५७७॥

लंका में शोक—

मेघनाथ जद लड़ के मर गेआ, गई वेख के फौज घबरा सारी ।
लंका विच शाह रावण दे कोल जाके, हकीकत[1] खोल के दित्ती सुणा सारी ॥५७८॥

लछमन नाल नहिँ चल्लेआ झोर कोई, दित्ती होश उस साडी भुला सारी ।
मेघनाथ नूँ मार *दिलशाद* सुट्टेआ, गई फौज इत्थे नस्स के आ सारी ॥५७९॥

मेघनाथ दे मरण दी खबर सुण के, रावण आखदा आया हुण काल मैरा ।
आम समझ इन्सान मैं आह्स जिसनूँ, सुट्टेआ उस कलेजड़ा जाल मैरा ॥५८०॥

चल्लेआ झोर नहिँ किसे दा उस उत्ते, दित्ता उस कबीलड़ाँ[3] गाल मैरा ।
खुशी ऐश आराम तमाम भुल गए, रेहा हो दुःखी वाल वाल मैरा ॥५८१॥

जिऊँदा रैह्‌ण दित्ता नहिँ उस कोई, सुणे कौण आ के दस्सो हाल मैरा ।
सुट्टे मार *दिलशाद* भिरा मैरे, कर जुदा दित्ता मैथोँ लाल मैरा ॥५८२॥

ढाईँ मार के रोवँदा पेआ रावण, मेघनाथ दी मौत नूँ सुण यारा ।
गेआ गम कलेजड़ा खा उस दा, खावे लकड़ी नूँ जिवेँ घुण यारा ॥५८३॥

टॅब्बर आपना सभ मरवा के ते, रेहा तूत हुण ताँ बैह के चुण यारा ।
थोड़ा हाल *दिलशाद* सुलोचना दा, दे सुणा सानूँ इत्थे हुण यारा ॥५८४॥

सुलोचना का शोक—

पई सुलोचना दे कन्न आवाझ जदोँ, विच दिल दे सख्त हैरान होई ।
कैहँदी गोलिए वेख एह केआ डिग्गा, गोली उठ के तुरत रवान होई ॥५८५॥

भुजा वेख महल दी छत्त उत्ते, आ के रानी दे कोल गोयान होई ।
सुट्टी कट के बाँह *दिलशाद* किसे, छत्त महल दी लहूलुहान होई ॥५८६॥

---

१. वास्तविकता । २. साधारण । ३. परिवार । ४. परिवार ।

तेरे बाझ अजुध्या विच जाके, मुँह किसे नूँ केॲा दिखलाउसाँ मैं।
पुछसी माँ तैरी जद हाल तैरा, दस्स उस नूँ केॲा सुणाउसाँ मैं ॥६६०॥
तैनूँ छोड़ अकलड़ा वीर मैरे, कदी परत के घर न जाउसाँ मैं।
ऐसे जाहं ते नाल *दिलशाद* तैरे, हुण आपनी जान गँवाउसाँ मैं ॥६६१॥

लओ सुण सुग्रीव जी गल्ल मैरी, गेॲा जद लछमन मैरा मर भाई।
मैं भी मराँगा इसे दे नाल इत्थे, जासाँ परत के कदी न घर भाई ॥६६२॥
रावण मारने दी नहिँ हुण लोड़ कोई, करसाँ केॲा लंका फतह कर भाई।
मैरे वासते घर नूँ छोड़ के तूँ, आयोँ नाल मैरे बन्ह कमर भाई ॥६६३॥
है एहसान तैरा मैरे सिर उत्ते, सकेॲा नहिँ ओ मैथोँ उतर भाई।
करके मेहरबानी देवीँ बखश मैनूँ, मिलसी रब थीँ तैनूँ अजर भाई ॥६६४॥
लछमन जिऊँदिआँ गेॲा है मार मैनूँ, गए तरुट मैरे अज्ज पर भाई।
उड्डे होश हवास *दिलशाद* मैरे, सुध-बुध भी गई विसर भाई ॥६६५॥

होंदा भरथ भाई जेकर नाल मैरे, लंका विच समुंदर डुबा देंदा।
होंदी कोई तकलीफ न झरा मैनूँ, कट के रावण दे सिर उड़ा देंदा ॥६६६॥
उस दे झोर दा होर नहिँ कोई उत्थे, सुरत राखशाँ दी ओ भुला देंदा।
सकदा सामने कोई न हो उस दे, लंका फतह *दिलशाद* करवा देंदा ॥६६७॥

मरसाँ मैं सुग्रीव जी इसे जा ते, गेॲा मर जद जान निसार भाई।
हो सके ताँ करो इलाज जल्दी, लगा मरण मैरा वफादार भाई ॥६६८॥
सुणो नल-नीला करो कोई हीलाँ³, जावे बच मैरा दिलदार भाई।
दिलशाद ढूण्डाँ जे मैं जग सारा, लछमन जेहा न मिले ग़मख्वार भाई ॥६६९॥

सुषेण वैद्य का वचन—

लगा कैहण फिर वैद सुखैन आ के, माहराज तुस्सी एह के कर रहे ओ।
लछमन है जिऊँदा, नहिँ डर कोई, कर कैंसनूँ⁴ इतना फिकर रहे ओ ॥६७०॥

---

१. स्थान। २. फल। ३. उपाय। ४. किसलिए।

रक्खो हौसला न घबराओ ज़रा, किऊँ गोडेआँ ते सिर धर रहे ओ ।
करसाँ मैं इलाज *दिलशाद* इसदा, ठंडे सांस बैह के काह्नूं भर रहे ओ ॥६७१॥

है एह कस्म महाँबीर जी आप संदा, बीड़ा होर इसदा नहिँ कोई चा सकदा ।
बूटी है हिमाले पहाड़ उत्ते, दूजा नहिँ उत्थे कोई जा सकदा ॥६७२॥
संजीवन नाम ते बलदी अग्ग वाँगों, तुस्साँ बाझ नहिँ कोई लैआ सकदा ।
रातों रात *दिलशाद* जे आ जावे, लछमन फिर शफ़ा है पा सकदा ॥६७३॥

महावीर का गमन—

कीती देर न पलदी हुकम सुण के, लैइआँ कर महाबीर तैय्यारिआँ नीँ ।
जा के वेखदा पौंह्च पहाड़ उत्ते, पैइआँ बलदिआँ बूटिआँ सारिआँ नीँ ॥६७४॥
बूटी विच पछान दे आउँदी नहिँ, गैइआँ पै सोचाँ हुण भारिआँ नीँ ।
विच समझ *दिलशाद* नहिँ कुझ आउँदा, गल्लाँ कई विच दिल विचारिआँ नीँ ॥६७५॥

कराँ केॲा रबा हुण मैं इत्थे, बूटी विच पछाण नहिँ आउँदी ए ।
पुच्छाँ किस कोलों इत्थे कोई भी नहिँ, उत्तों रात भी बीतंदी[1] जाउँदी ए ॥६७६॥
जावाँ परत के जेकर पुच्छणे नूँ, एह भी गल्ल न दिल नूँ भाउँदी ए ।
जांदी पेश तदबीर नहिँ कोई मैरी, ग़ोते जान *दिलशाद* पई खाउँदी ए ॥६७७॥

लै के नाम रब दा उठ खड़ा होया, जा के हत्थ पहाड़ नूँ पाया सू ।
गेॲा हल पहाड़ ज़मीन उत्तोँ, ज़रा आपणा ज़ोर जद लाया सू ॥६७८॥
टुकड़ा इक पहाड़ दा तोड़ के ते, उत्ते हत्थ दे चा उठाया सू ।
लेॲा चुक *दिलशाद* पहाड़ जदोँ, खेॲाल विच दिल दे फिर आया सू ॥६७९॥

होया खेॲाल महाँबीर नूँ विच दिल दे, पैह्ले विच अजुध्या जाविए जी ।
उस राह भी नहिँ कोई दूर लंका, दरशन भरथ दा चल के पाविए जी ॥६८०॥
ताकत उसदी तकिए है कितनी, ज़रा उसनूँ चल अज़मावि‌ए जी ।
वेख हाल एहवाल *दिलशाद* सारा, लंका वल फिर उठ के धाविए जी ॥६८१॥

---

१. व्यतीत होती ।

महावीर का अयोध्या पहुँचना—

कीती देर न पल दी फिर उत्थे, चुक पहाड़ हो पेआ रवान यारा ।
करदा तप है सी बैह के भरथ रातीं, हो के मगन विच भजन भगवान् यारा ॥६८२॥

डिट्ठा भरथ ने चलदा है कोई, चुक पहाड़ सिर ते बलवान यारा ।
गेआ समझ एह ताँ कोई है राखश, करसी जा किधरे नुकसान यारा ॥६८३॥

लै के धनश खिच मारेआ तीर ऐसा, ढट्ठा हो झख्मी हनुमान् यारा ।
उत्ते धरती दे लेट *दिलशाद* पेआ, लगा राम दा नाम धेआन यारा ॥६८४॥

पुच्छे भरथ महांबीर दे कोल जा के, है तूँ कोण भाई कित्थों आया तूँ ।
समें रात दे राह किऊँ चलण लगों, कारण किस पहाड़ उठाया तूँ ॥६८५॥

मैं ताँ जानेआ है अफात कोई, ताईं मार के तीर गिड़ाया तूँ ।
आया उठ *दिलशाद* मैं कोल तेरे, जदों राम दा नाम ध्याया तूँ ॥६८६॥

महावीर का वचन—

दस्साँ केआ माह्राज मैं हाल तुस्साँ, कीता आपने बहुत नुकसान मेरा ।
मार तीर गिड़ाया झमीन उत्ते, दम लवाँ उत्ते खड़ा आन मेरा ॥६८७॥

रातों-रात मैं लंका जाउना सी, होया हुण औखा उत्थे जान मेरा ।
रही हिम्मत *दिलशाद* नहिँ चलने दी, नहिँ एह झूठ है सच्च बेआन मेरा ॥६८८॥

भरत का वचन—

है कम्म केहड़ा तेरा विच लंका, सच्चो सच्च तूँ दे सुणा मैनूँ ।
आंदा चुक पहाड़ किस वासते तूँ, सारा खोल के हाल समझा मैनूँ ॥६८९॥

करें किऊँ जलदी इतनी जाउने दी, मतलब दिल दा दे बतला मैनूँ ।
रामचन्दर दी खबर *दिलशाद* कोई, है मालूम ताँ दस्स ओ चा मैनूँ ॥६९०॥

महावीर का वचन—

दस्साँ केआ मैं खोल के हाल इत्थे, लड़ाई नाल शाह रावण दे हो रही ए ।
लगी बरछी बेहोश हो गेआ लछमन, बैह के फौज साडी सारी रो रही ए ॥६९१॥

नहिँ ख़बर माह्राज जी कोई तुस्साँ, साड़े नाल उत्थे वरत जो रही ए।
बैठे रोंवदे कोल *दिलशाद* सारे, रो रो अक्खिआँ थीँ रत[1] चो[2] रही ए॥६९२॥

केहा वैद[3] सुखैन ने एह उत्थे, रातों-रात बूटी जे कोई लै आवे।
है ओ चोटी हिमाले पहाड़ उत्ते, इस्से वक़त कोई सूरमा उठ धावे॥६९३॥
बलदी अग्ग दे वांग ओ रहे रातीँ, डरे न उस थीँ जा के हत्थ पावे।
नहिँ फिकर *दिलशाद* फिर किसे गल्ल दा, विच रात बूटी जे ओ आजावे॥६९४॥

रामचन्दर माह्राज दा हुकम लै के, बूटी लैण माह्राज ओ आया मैं।
पैइआँ बलदिआँ सारिआँ नज़र जदोँ, ताहीँ चुक पहाड़ उठाया मैं॥६९५॥
सिद्धा लंका नूँ जाँवदा आह्स पेआ, तुस्साँ मार के तीर गिड़ाया मैं।
हुण ताँ नहिँ ताकत अगे जावने दी, समझो सच्च *दिलशाद* सुणाया मैं॥६९६॥

भरत का वचन—

रक्ख हौसला न घबरा ज़रा, देसाँ तुध नूँ मैं पौंह्चा भाई।
रातों-रात जा पौंह्चसें विच लंका, रैत्ती[4] खौफ न दिल ते ला भाई॥६९७॥
करां केआ तदबीर नहिँ कोई सुझदी, दित्ता हाल तूँ जो सुणा भाई।
पौंदा दुर *दिलशाद* मैं नाल तेरे, बिनाँ हुकम नहिँ सकदा जा भाई॥६९८॥

कीती देर न भरथ ने फेर कोई, लेआ धनश नूँ तुरत उठा सज्जनाँ।
उत्ते तीर दे चढ़ के बैठ जा तूँ, पैर आपने लै जमा सज्जनाँ॥६९९॥
झट पट तैनूँ एह तीर मेरा, देसी लंका दे विच पौंह्चा सज्जनाँ।
रक्खीं ख़ेआल *दिलशाद* तूँ इस गल्ल दा, परे लंका थीँ पवें[5] न जा सज्जनाँ॥७००॥

चुक पहाड़ चढ़ बैठा फिर तीर उत्ते, लगा करन अज़माइश महावीर मित्तरा।
भरथ खिच के छोड़ने तीर लगा, तरफ लकां दे लाई नज़ीर[6] मित्तरा॥७०१॥

---

१. लहू। २. बह। ३. वैद्य। ४. किंचिन्मात्र। ५. पड़ें। ६. दृष्टि।

होया वेख हैरान महांबीर फिर ताँ, लगा कैह्‌ण वेशक एह तीर मित्तरा।
सुटसी लंका दे विच *दिलशाद* मैनूँ, भूठी भरथ दी नहिँ तकरीर मित्तरा ॥७०२॥

हनुमान् का भरत से वचन—

लैह के हेठ फिर तीर तोँ कैह्‌ण लगा, लंका विच आपे हुण जाउसाँ मैं।
करो फिकर माह्‌राज न कोई तुस्सी, बूटी रात दे विच पौंह्‌चाउसाँ मैं ॥७०३॥
होसन मैनूँ उडीकदे पए सारे, करसन शुकर जद शकल दिखलाउसाँ मैं।
नहिँ लछमन नूँ फिकर *दिलशाद* कोई, केहा वैद एह सच्च सुणाउसा मैं ॥७०४॥

आहिआँ कोल कौशल्या सुमित्राँ भी, चुक पहाड़ महावीर जद आया सी।
लेऑ उन्हाँ भी सुण फिर हाल सारा, हनुमान् जो आण सुणाया सी ॥७०५॥
लगिआँ कैह्‌ण महावीर नूँ कोल जा के, उत्ते तीर जद भरथ चढ़ाया सी।
दिलशाद पैग़ाम असाडड़ा तूँ, देना दे एह वासता पाया सी ॥७०६॥

सुमित्राँ आखदी सुणो महावीर मैथोँ, रामचन्दर नूँ एह सुणाउना जी।
विच लड़ाई गँवाई जे जान लछमन, तुस्साँ दिल ते ग़म नहिँ लाउना जी ॥७०७॥
इस दुनिया दी है चाल एहो, जेह्‌ड़ा जम्मेआ उस मर जाउना जी।
मोया लछमन *दिलशाद* ताँ केआ होया, सीता लै अजुध्या आउना जी ॥७०८॥

कौशल्या रो के कहे महाबीर ताईँ, मेरे लाल नूँ एह सुणाउना तूँ।
लै के नाल लछमन जे कर न आए, मैनूँ मुँह न फिर दिखलाउना तूँ ॥७०९॥
बस होर मेरी नहिँ गल्ल कोई, मेरा एहो पैग़ाम पौंह्‌चाउना तूँ।
जिवेँ रल के गए *दिलशाद* इत्थोँ, [1]तिवेँ रल के ते इत्थे आउना तूँ ॥७१०॥

हनुमान् का लंका में लौट आना—

पेआ उठ रुखसत लैके भरथ कोलोँ, सिद्धा लंका दे वल रवान होया।
रेहा कोई अभमान न विच दिल दे, ताकत भरथ दी वेख हैरान होया ॥७११॥
गेआ विच लंका दे पौंह्‌च जदोँ, हाज़र कोल सुखेन दे आन होया।
अगे वैद दे रख पहाड़ ताईँ, हनुमान् *दिलशाद* गोयान होया ॥७१२॥

---

१. वैसे ही।

सुणो वैद सुखैन जी गल्ल मैरी, जदों पैर पहाड़ ते पाया मैं ।
डिट्ठा बलदिआँ बूटिआँ सारिआँ नूँ, एह वेख के सख़त घबराया मैं ॥७१३॥
सकेआ कर पछान न जद बूटी, ताहीँ चुक पहाड़ लै आया मैं ।
लवो पुट *दिलशाद* हुण आप तुस्सी, है लोड़ जेहड़ी सच्च सुणाया मैं ॥७१४॥

लक्ष्मण की चिकित्सा—

हनुमान् जद इतनी गल्ल कहीए, बूटी वैद पछान के पुट लई ए,
बैठी फौज सारी कोल वेख रही ए, जा के लछमन नूँ तुरत सुंघा देंदा ।
लगा कैह्ण मैरी वल धेआन रखो। इस बूटी नूँ तुस्सी पछान रखो,
याद इसदे सारे निशान रखो, फड़ के हत्थ दे विच दिखला देंदा ॥७१५॥
इस दी सिफत दी हद न का है जी, हर इक मरज़ दी एह दवा है जी,
देंदी मोए नूँ एह जिवा है जी, उच्चा बोल के एह सुणा देंदा ।
इस बूटी दी तुस्सी तासीर देखो, ला के इस दे वल नज़ीर देखो,
उठ के बैठ दा लछमण वीर देखो, नाल ज़ख्म *दिलशाद* छुहा देंदा ॥७१६॥

कीती ढिल न वैद सुखैन कोई, बूटी लछमन नूँ तुरत सुंघा दित्ती ।
लगा अहा ज़खम जिस जा उत्ते, ओही घोट के उत्थे लगा दित्ती ॥७१७॥
गेआ बैठ लछमन फिर उठ के ते, सारी पीड़ सरीर गँवा दित्ती ।
रेहा दुःख न दरद *दिलशाद* कोई, बूटी जान नवें सिरों पा दित्ती ॥७१८॥

लक्ष्मण का वचन—

बैठे किऊँ उदास माह्राज तुस्सी, अज्ज दिल ते कैसा मलाल है जी ।
इकट्ठी फौज सारी होई किऊँ इत्थे, दस्सो केआ लड़ाई दा हाल है जी ॥७१९॥
सिर्फ रावण ही रावण रैह गेआ बाकी, दित्ता कोड़मा उस दा गाल है जी ।
रावण मारिए उठो *दिलशाद* चल के, उस नूँ पेआ उडीकदा काल है जी ॥७२०॥

रामचन्द्र का वचन—

लगे कैह्ण अग्गोँ हँस के रामचन्दर, वाह-वाह रंग अजीब दिखलाए भाई ।
रो रो के अक्खिआँ सुज गैइआँ, दम लबाँ उत्ते मैरे आए भाई ॥७२१॥

बैठे कोल मेरे जेहड़े वेख रहे ओ, सारे एह भी तुस्साँ रुवाए भाई।
रही उमीद *दिलशाद* न कोई है सी, हालत वेख के तैरी घबराए भाई ॥७२२॥

लक्ष्मण का वचन—

बरछी लगने दी है खबर मैनूँ, फिर नहिँ खबर पिछों के होई ए जी।
लगा झखम कारी मैनूँ अहा ऐसा, सुध बुध मेरी जिस खोई ए जी ॥७२३॥
जिस बरछी दा करदे झिकर आहो, लगी एह बरछी मैनूँ ओही ए जी।
जिस ने आसरा रब दा पकड़ेआ वे, उस नूँ फिकर *दिलशाद* न कोई ए जी ॥७२४॥

नहिँ कोई हुण दरद ते दुःख मैनूँ, हर तरह दे नाल है सुख मैनूँ,
एहो विच दिल दे है भुक्ख मैनूँ, उठो रावण नूँ चल वंगारिए जी।
वेखो खड़ा मदान विच गज्जदा वे, नहिँ बेशर्म नूँ शर्म, न लज्जदा वे,
ढोल मौत उस दे सिर वज्जदा वे, चलो उसनूँ चल के मारिए जी ॥७२५॥
गेआ मर सारा परिवार उस दा, होया दूर नहिँ अजे हंकार उसदा,
दैइए चल के सिर उतार उस दा, गई आ उस दी हुण वारिए जी।
करनी झरा *दिलशाद* न ढिल चाहिए, देना कड्ढ कलेजें ओँ किल चाहिए,
करना खुश तुस्साँ मैरा दिल चाहिए, जुदा धड़ थीँ सिर कर डारिए[1] जी ॥७२६॥

युद्ध—

खड़े विच मैदान दे जा के ते, वाँग शेर दे दोवेँ दिलेर यारा।
मार तीर लगे मारण राखशाँ नूँ, लैंदे फौज नूँ जा के घेर यारा ॥७२७॥
कई हझार राखश दोहाँ मार सुट्टे, गए लग लाशाँ संदे ढेर यारा।
हाल फौज दा वेख *दिलशाद* रावण, लगा करन मुकाबला फेर यारा ॥७२८॥

रावण आन के एह फिर कोल कैंह्दा, वाँग शेर दे गज्ज के बोल कैंह्दा,
पाया केआ एह इत्थे मखौल कैंह्दा, समझो तुस्साँ थीँ कदी न हारसाँ मैं।
ऐवेँ तीर कमान नूँ चुक लेआ, कल लछमन नूँ मार के आहस गेआ,
होया के जे ओ फिर जी पेआ, अज्ज दोहाँ नूँ रल के मारसाँ मैं ॥७२९॥

१. डालें।

केॅहा रामचन्दर सुण बेपीर तैरे, बंद बंद सुटसाँ एह अज्ज चीर तेरे,
खून कड्ढ के विचों सरीर तैरे, तैनूँ खाक इत्थे कर डारसाँ मैं।
मैनूँ समझ *दिलशाद* कोई होर नाहीँ, तेरे वाँग मैं एहमका चोर नाहीँ,
पेॲा कर ऐवेँ झूठा शोर नाहीँ, अज्ज सिर एह तेरा उतारसाँ मैं ॥७३०॥

रावण विच दिल दे वटखान[1] लगा, अग्ग गुस्से विच जान जलान लगा,
धनश पकड़ के तीर चलान लगा, खड़ा विच मैदान ललकारदा वे।
तीर कोई भी जाके नहिँ फटदा, रामचन्दर अगोँ सारे कट सिटदा,
रावण वेख कचीचिआँ पेॲा वटदा, दिलों हौसला झरा न हारदा वे ॥७३१॥
करतब आपने सभ दिखला रेहा, शर्म विच दिल दे डाढा आ रेहा,
रंगा रंग दे तीर चला रेहा, खड़ा रथ दे विच विचारदा वे।
आ के सामने फिर वंगारेॲा सू, शिस्त लाके तीर इक मारेॲा सू,
झखमी कर माह्राज नूँ डारेॲा सू, हो के खुश फिर बाहाँ उलारदा वे ॥७३२॥
गुस्से नाल माह्राज भी लाल होके, खिच के तीर शाह रावण नूँ मारदे नीँ।
दित्ते कर घोड़े झख्मी रथ संदे, सिरों रावण दे ताज उडारदे नीँ ॥७३३॥
उत्तों तीर विच मत्थे दे मार के ते, झख्मी कर शाह रावण नूँ डारदे नीँ।
खबरदार *दिलशाद* होशिआर हो जा, हो के सामने फिर वंगारदे नीँ ॥७३४॥

झख्मी हो रावण डिग्गा विच रथ दे, हाए हाए झबान थीँ कर यारा।
रही होश न कोई सरीर संदी, गई सुध ते बुध विसर[2] यारा ॥७३५॥
ग़श खा के हो बेहोश गेॲा, रेहा सास कैाह्ले[3] काह्ले भर यारा।
हालत एह शाह रावण दी वेख के ते, रथवान नूँ पेॲा फिकर यारा ॥७३६॥
कैंह्दा झख्म इस नूँ लग गेॲा भारा, शायद जाए न इत्थे एह मर यारा।
लेॲा रथ नूँ मोड़ मैदान विचोँ, वापिस चल्या लैके घर यारा ॥७३७॥
गेॲा पौंह्च फिर लंका दे विच जदोँ, होया दूर फिर दिल दा डर यारा।
आई रावण नूँ होश *दिलशाद* उत्थे, लगा वेखने कर नझर यारा ॥७३८॥

१. क्रोध करने। २. भूल। ३. शीघ्र (गति)।

रावण कहे रथवाई नूँ गुस्से होके, एह वड्डा अंधेर चा पाया तूँ।
रक्खेआ नहिँ मैनूँ किधरे बैह्‌ण जोगा, मेरी इज़त नूँ खाक मिलाया तूँ ॥७३९॥
मरना मारना कम है सूरमे दा, नस्स किऊँ मैदान थीँ आया तूँ।
नस्सेआ मैं *दिलशाद* न आहस कदी, मेरे नाम नूँ वट्टा[1] एह लाया तूँ ॥७४०॥

एह ताँ सखत भारा बुरा कम्म कीता, मैंनूँ जग्ग दे विच बदनाम कीता,
डाढा ज़ुलम तूँ नमकहराम कीता, हाए, मेरा कलेजड़ा जाल्या तूँ।
नस्सेंआँ किऊँ मैदान नूं छोड़ उत्थोँ, आँदा किऊँ मैनूं वापिस मोड़ उत्थोँ,
तैनूँ आउने दी की सी लोड़ उत्थोँ, मैरी इज़त नूँ खाक कर डालेआ तूँ ॥७४१॥
नहिँ हटदे मरद मैदान विचोँ, मुड़दा तीर नहिँ निकल कमान विचोँ,
सरपर चलना[2] इस जहान विचोँ, न कुछ सोचेआ ते न कुछ भालेआ तूँ।
जा के रथ नूँ जोड़ लै आ जलदी, मैंनूँ विच मैदान पौंह्‌चा जलदी,
कर हुण देर न उठ के जा जलदी, वाह वाह अकल *दिलशाद* दिखालेआ तूँ ॥७४२॥

गुस्से नाल भरया चढया विच रथ दे, जा के विच मैदान खलोवँदा ई।
अक्खीँ वाँग अंगारेआँ लाल होइआँ, पेआ लहू गोया अक्खिआँ चोवँदा[3] ई ॥७४३॥
लगा मार तलवार दी करन जा के, अगे उसदे कोई न होवँदा ई।
रेहा सोच *दिलशाद* विच दिल रावण, कदी हसदा ते कदी रोवँदा ई ॥७४४॥

लगा विच मैदान दे कैह्‌ण रावण, लक्खाँ माइआँ दे मोए लाल इत्थे।
वडे वडे बली सूरबीर मैरे, सके सुरत न ओ भी संभाल इत्थे ॥७४५॥
कुंभकरण अते मेघनाथ जैसे, सके झल न इन्हाँ दी झाल इत्थे।
ज़ोर किसे दा चलेआ नहिँ कोई, दित्ते दुश्मनाँ ने सारे गाल इत्थे ॥७४६॥
जावे कोई तदबीर न पेश मैरी, वचना जान दा होया महाल इत्थे।
मरसी रामचन्दर या के मैं मरसाँ, नहिँ खबर किस दा आया काल इत्थे ॥७४७॥

---

१. कलंक। २. जाना। ३. बहता।

खबर ग़ैब दी जाणदा नहिँ कोई, न नॅजूमिआँ[1] दे पौंदे[2] फ़ाल इत्थे ।
आवे समझ दे विच न कुछ मैनूँ, रही खेड किसमत खड़ी चाल इत्थे ॥७४८॥
मरना मारना है विच हत्थ रब दे, वरम दिल दा लवाँ निकाल इत्थे ।
लवाँ कड्ढ अरमान *दिलशाद* अज्ज ताँ, खबरे केॲा होसी कल हाल इत्थे ॥७४९॥

कई हझार वानर रावण मार सुट्टे, चढ़ेॲा आन गुस्सा डाढे कैह्र दा वे ।
फिरे कटदा फटदा हटदा नहिँ, अगे उसदे कोई न ठेह्र दा वे ॥७५०॥
मारो मार सबेर थीँ करन लगा, गेॲा आ हुण वकत दोपहरदा वे ।
लंका वल धेॲान *दिलशाद* करके, जॅलवा[3] आखरी वेखदा शेह्र दा वे ॥७५१॥

रामचन्दर माह्राज भी धनश लै के, होके सामने रहे नी गर्ज यारा ।
कट्टन अंग जेह्ड़े होवन फिर पैदा, होवे वेख के एह अचरज यारा ॥७५२॥
कई वार सुट्टे अंग कट्ट उन्हाँ, कित्थोँ ताईँ मैं करांगा दॅरज[4] यारा ।
मरसी किवें *दिलशाद* तूँ दस्स रावण, लगा होण एह ताँ कैंह्दे हॅरज[5] यारा ॥७५३॥

बिभीछण दौड़ के आन फिर अरझ कीती, माह्राज नहिँ मरण थीँ डरेगा एह ।
इस दे नाल मुकाबला है औखा, केॲामत सख़त बरपा हुण करेगा एह ॥७५४॥
इस तरह नहिँ मरना इस कदी, लखाँ तीर सरीर विच जरेगा एह ।
अमृत है *दिलशाद* विच पेट इस दे, सॅड़सी[6] ओह ताँ समझो मरेगा एह ॥७५५॥

सुण के गल्ल बिभीछण दी रामचन्दर, अगन बाण चुक तुरत चला देंदे ।
ब्रह्मशस्त्र मार के होर उत्तोँ, उत्ते धरती दे रावण गिरा देंदे ॥७५६॥
पेॲा डिग्ग झमीन ते ग़श खा के, सारी जुरॅत ते फुरॅत भुला देंदे ।
गेॲा कित्थें *दिलशाद* अज्ज झोर तेरा, जा के रावण नूँ कोल सुना देंदे ॥७५७॥

---

१ ज्योतिषियों । २. ज्योतिषियों के वे साधन, जिन को वे फैंककर लोगों के भाग्य देखते हैं । ३. सौन्दर्य । ४. अंकित (लिखना) । ५. विघ्न । ६. सूख जाएगा ।

डिग्गा पेऑ मैदान दे विच रावण, एह ताँ घड़ी आखीर दी आन लगी ।
झख्माँ नाल घायल हो के तड़फ रेहा, आया अन्त समाँ निकलन जान लगी ॥७५८॥
जिस मौत नूँ रक्खेऑ कैद करके, कड्ढन मौत अज्ज ओही प्राण लगी ।
चाल नाड़[1] दी मद्धम *दिलशाद* होई, नाले बंद भी होण झबान लगी ॥७५९॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण को निर्देश—

रामचन्दर माह्‌राज फिर कोल सद के, कैंह्‌दे लछमना सुण मैरी गल्ल भाई ।
रावण डिग्गा झमीन ते वेख पेऑ, अज्ज छोड़ के रंग महल भाई ॥७६०॥
सानी इस दा अहा न होर कोई, ते बेअन्त है सी इस विच बल भाई ।
डरदे लोक तिन्ने इसदा नाम सुण के, है सी इसने पाया तरथल[2] भाई ॥७६१॥
चारे वेद ते शास्त्र एह जाने, सकदा नाल इसदे नहिँ कोई रल भाई ।
पादशाह भारा आलीजाह है सी, अज्ज रेहा जहान थीँ चल भाई ॥७६२॥
लइए लै नसीअत कोई इस कोलों, जा उठ जलदी उसदे वल भाई ।
इस वक्त *दिलशाद* जो कहेगा एह, करना उस ते चाहिए अमल भाई ॥७६३॥

लछमन पुच्छदा रावण थीँ कोल जाके, दस्सो केऑ माह्‌राज जी हाल है वे ।
इत्थों चलना इक्क दिन सारेऑँ ने, इस जगत संदी एहो चाल है वे ॥७६४॥
मरदी बार नसीअत कोई कर जाओ, करो दूर जो दिल ते मलाल है वे ।
रेहा आख *दिलशाद* हझार लछमन, कीता रावण न कोई खेऑल है वे ॥७६५॥

रामचन्दर माह्‌राज दे कोल आके, कीती अरझ लछमन शरमा के जी ।
मुँहों बोल नहिँ रावण ने गल्ल कीती, रेहा पुच्छ मैं ताँ कोल जाके जी ॥७६६॥
दित्ता कोई जवाब नहिँ उस अग्गोँ, नाहीँ तक्केआ अक्ख उठा के जी ।
सिरहाने बैठ के मैं *दिलशाद* पुच्छेऑ, आया उठ हुण मग़झ खपा के जी ॥७६७॥

लगे कैह्‌ण माह्‌राज सुण वीर मैरे, रावण जेहा नहिँ कोई नामदार होया ।
पादशाह भारा झबरदस्त ऐसा, नहिँ होर कोई विच संसार होया ॥७६८॥

---

१ नाड़ी । २. हलचल ।

दित्ती जान, अभमान नूँ छोड़ेआ नहिँ, न ओ आन मैरा मिन्नतवार होया।
सिरहाने बैठ जेह्ड़ा जा के पुच्छिआ तूँ, ओही उसनूँ नागवार[1] होया ॥७६९॥

रल के विच मिट्टी मिट्टी हो रेहा, ताँ भी दूर नहिँ अजे हंकार होया।
पैराँ विच खलो के पुच्छ उस नूँ, तैथोँ मैं *दिलशाद* निसार होया ॥७७०॥

पैराँ विच खलो के कैह्‌ण लगा, देॲओ गल्ल माह्‌राज सुणा कोई।
होना नहिँ नाराझ नादान उत्ते, देनी बख़्श जे होई खता कोई।७७१॥

करो मेह्‌रबानी मरदीवार तुस्सी, मैनूँ जाओ नसीअत फरमा कोई।
दिलशाद रखसाँ याद उमर सारी, जासो मैत[2] जे मैनूँ लिखा कोई ॥७७२॥

रावण का वचन—

अक्खीँ खोल फिर बोल के केहा रावण, कराँ केॲआ तैनूँ उपदेश लछमन।
निकल जान सरीर थीँ रही मैरी, रेहा हो है सख़्त कलेश लछमन ॥७७३॥

कम्म अज्ज दा रखीँ न कल उत्ते, रखीँ याद एह गल्ल हमेश लछमन।
कल नाम है काल दा सुण मैथोँ, जिसदा है हर जाह प्रवेश लछमन ॥७७४॥

खबर कल दी जाणदा नहिँ कोई, खबरे केॲआ औसी कल पेश लछमन।
दिलशाद मरना इक दिन सारेॲाँ ने, केॲआ पादशाह केॲआ दुरवेश[3] लछमन ॥७७५॥

देवाँ मार मुका इस मौत ताईं, खेआल विच दिल दे है सी धारेॲआ मैं।
अज्ज नहिँ कल मार झरूर देसाँ, एहो पेॲआ अजतक विचारेआ मैं ॥७७६॥

मैं ताँ मारदा मारदा रेहा उस नूँ, उलटा मौत उसे चा मारेॲआ मैं।
फल ढिल वेख दा *दिलशाद* लै तूँ, चलेॲआ छोड़ जहान प्यारेॲआ मैं ॥७७७॥

ब्रह्मचरज रखना विच उमर पैह्‌ली, पिछे उसदे होणा गृहस्थ चाहिए।
धर्म कर्म नूँ छोड़ना नहिँ कदी, विच धन होणा सखीदस्त[4] चाहिए ॥७७८॥

करिए नाल न किसे दे झबरदस्ती, अपने आप नूँ समझना पस्त चाहिए।
हर इक नूँ समझिए भाई वाँगोँ, रखना नाल न किसे दे कँस्त[5] चाहिए ॥७७९॥

---

१. अनुचित। २. मति (बुद्धि)। ३. फक़ीर। ४. हाथ का उदार। ५. शत्रुता।

हिस्से तीसरे उमर दे विच आ के, हो जाउना वानप्रस्त चाहिए।
लोभ काम करोध ते मोह छड के, विच भजन रैहूणा हर दम मस्त चाहिए ॥७८०॥

हिस्सा आखरी उमर दा है चौथा, लैणी उसदे विच संन्यंस्त[1] चाहिए।
होवे नास *दिलशाद* न कदी जिसदा, उस वकत ओह ढूँढनी वंस्त[2] चाहिए ॥७८१॥

रावण का देहान्त—

कर चुप गेआ इतना आख के ते, बंद गई सो हो झबान यारा।
रंग झरद ते जिसम हो सरद गेआ, गई निकल शाह रावण दी जान यारा ॥७८२॥

विदा इस जहान थीँ हो के ते, गेआ सुरग नूँ हो रवान यारा।
दिलशाद मेले कोई दिन जिउँदिआँ दे, मोयाँ मिटदे नाम-निशान यारा ॥७८३॥

शोक—

विच महलाँ दे पै कुरलाट गेआ, पैइआँ रोंवदिआँ रानिआँ सारिआँ नीँ।
चीकाँ मार कुरलांदिआँ कूँज वाँगोँ, विच सिराँ दे मिट्टिआँ डारिआँ नीँ ॥७८४॥

कारण करन दर्शन विच मैदान जंग दे, लैइआँ सभनाँ कर तैय्यारिआँ नीँ।
बैह के कोल *दिलशाद* फिर रोवन लगिआँ, पैइआँ सिर मुसीबताँ भारिआँ नीँ ॥७८५॥

सिरहाने बैठ के रोवँदी पई कोई, कोई डिग के उत्ते पई लेटदी ए।
कोई बाँह शाह रावण दी पकड़ के ते, विच गल दे पई लपेटदी ए ॥७८६॥

कोई आखदी मराँगी नाल मैं भी, लगी साँग विच जिगर दे चेटदी ए।
बैठी कोल *दिलशाद* खामोश हो के, दुःख-दरद विच दिल सँमेटदी[3] ए ॥७८७॥

ढाईँ मार दमोदरी पई आखे, मैनूँ किस दे आसरे छड्डेआ ने।
गए छोड़ अकल्याँ रोंदड़ी नूँ, तंबू आपना कित्थे चा गड्डेआ ने ॥७८८॥

अज तक परवाह न आही कोई, अगे किसे मैं हत्थ न अड्डेआ ने।
जिस नूँ समझदे कुछ *दिलशाद* नाहो[4], अज्ज वाँग बूटे उसे ढडेआ[5] ने ॥७८९॥

अज्ज किऊँ झमीन ते लेट रहे ओ, झरी बाफते बिस्तरे छोड़ के जी।
करो उठ के गल्ल माहराज कोई, होए चुप्प किउँ रिश्ता तरोड़ के जी ॥७९०॥

---

१. संन्यास। २. वस्तु। ३. इकट्ठा करती। ४. नहीं। ५. गिराया।

चले लंघ अकेलड़े पार आपों, मैनूँ दुखाँ दे वैह्न विच बोड़ के जी।
कित्थों उस नूँ मैं *दिलशाद* ढूँडाँ, ल्यावे घर जो तुस्साँ नूँ मोड़ के जी ॥७९१॥

मैं ताँ बौह्त माह्राज समझा रही साँ, रो रो के भी कुरला रही साँ,
हत्थ जोड़ के वासते पा रही साँ, तुस्साँ ज़रा नहिँ कोई खेॲाल कीता।
मनदे गल्ल न किसे दी कोई साओ, ज़ोर आपने विच मग़रूर आहो,
जिस नूँ समझदे कुछ चीज़ नाहो, उसे बक्करे वाँग हलाल कीता ॥७९२॥
अरज़ाँ कीतिआँ मैं बतेरिआँ जी, दस्सो कित्थे ओ गैइआँ दलेरिआँ जी,
रहे सैं[2] किऊँ ढा के ढेरिआँ जी, सीता-हरण वेखो के अज्ज हाल कीता।
मैं हुण रोंदड़ी नूँ किऊँ छोड़ चले, डूँघे दुखाँ दे वैह्ण विच बोड़ चले,
मैथों किऊँ *दिलशाद* मुँह मोड़ चले, केह्ड़ी गल्ल तों दिल मलाल कीता ॥७९३॥

रामचन्द्र का मन्दोदरी को उपदेश—

बैह के कोल माह्राज समझान लगे, रो रो के हो बेहाल नाहीँ।
जाना चल रानी इत्थों सारेआँ ने, छडना किसे नूँ भी इत्थे काल नाहीँ ॥७९४॥
बिना सबर दे कुछ न हत्थ आवे, ऐवेँ जान आपनी पई गाल नाहीँ।
[3]साकसैन *दिलशाद* सब जिउँदेआँ दे, गेआ मोयाँ दे कदी कोई नाल नाहीँ ॥७९५॥

गए गुज़र अजतक लक्खाँ होके ते, इस दुनिया उत्ते पातशाह रानी।
रेहा नाम-निशान नहिँ किसे दा भी, सारे मर के होए फनाह रानी ॥७९६॥
रल के विच मिट्टी मिट्टी हो गए नीँ, जम्मे उत्ते उन्हाँदड़े घा रानी।
रैह्णा किसे *दिलशाद* नहिँ बैठ इत्थे, चलना सारेआँ ने इसे राह रानी ॥७९७॥

सुण गल्ल मेरी दे धीर दिल नूँ, रो रो के जान न मार रानी।
लक्खाँ वरस भावेँ, कोई रहे जिउँदा, फिर भी है मरना आखरकार रानी ॥७९८॥
जेह्ड़ा घड़ेआ उस ज़रूर भज्जना, ऐही समझ मिसाल संसार रानी।
बच मौत थीँ सकदा नहिँ कोई, भावेँ करे [5]उपाह हज़ार रानी ॥७९९॥

१. थे। २. सो। ३. सम्बन्धी। ४. बनाया गया। ५. उपाय।

वडे वडे बली भारे बल वाले, गए मौत अगे ओ भी हार रानी।
लखाँ पीर फकीर ते ओलिएं भी, होए उस दे अगे लाचार रानी ॥८००॥
गेआ बाप-दादा तेरा है कित्थे, झरा कर काँ कुछ विचार रानी।
दिलशाद चलना इत्थों सारेआँ ने, रैहणा किसे नहिँ पैर पसार रानी ॥८०१॥

सुण गल्ल इतनी आया सबर दिल नूँ, रेंझा[2] रब दी सिर ते मन लई ए।
कीती बोल के गल्ल न कोई मुँहों, चुप-चाप होके रानी बैठ गई ए ॥८०२॥
लेआ समझ है होनी बलवान् भारी, इस दे नाल न किसे दी पेश गई ए।
नहिँ झूठ है सच्च *दिलशाद* एह ताँ, रामचन्दर माहराज ने जो कही ए ॥८०३॥

विभीषण का शोक—

बिभीछण मौत शाह रावण दी वेख के ते, ढाईँ मार के पेआ कुरलावँदा सी।
रही सुध ते बुध न होश कोई, लेट लेट भुँवालियाँ[3] खावँदा सी ॥८०४॥
सुट्टी लाह दँस्तार[4] झमीन उत्ते, मिट्टी विच सिर दे पेआ पावँदा सी।
रेहा आहस समझा *दिलशाद* मैं ताँ, एह वक्त मैनूँ नझर आवँदा सी ॥८०५॥

रामचन्द्र का विभीषण को निर्देश—

उठ विभीछणा कर ससकार भाई दा, रक्ख विच दिल दे न खेआल कोई।
झगड़े हीन दुनिया उत्ते जिऊँदिआँ दे, रैंहदी दुशमनी नहिँ मोयाँ नाल कोई ॥८०६॥
दे धीर भरजाई मंदोदरी नूँ, रेहा नहिँ उसदा रो रो हाल कोई।
दिलशाद मरना इक दिन सारेआँ ने, भावेँ रहे जिउँदा लक्खाँ साल कोई ॥८०७॥

अन्त्येष्टि—

रामचन्दर माहराज थीँ हुकम लै के, बिभीछण विच लंका चला जाऊँदा ने।
लकड़ी चनन दयार दी भेज के ते, समग्री कर इकट्ठी लै आँउदा ने ॥८०८॥
करके शाही सामान तैय्यार सारा, चिखा जोड़ के लाश जलाउँदा ने।
किरया-कर्म *दिलशाद* फिर आप करके, राम नाम नूँ पेआ ध्याउँदा ने ॥८०९॥

रामचन्द्र का लक्ष्मण को निर्देश—

करो कम्म पैहले एह वीर मेरे, उत्ते तखत बिभीछण बहाओ भाई।
असाँ राज लंका दित्ता दे उस नूँ, करो जलदी देर न लाओ भाई ॥८१०॥

---

१. भविष्यद्वक्ता। २. करनी। ३. चक्र। ४. पगड़ी।

देॲो राजतिलक हत्थीँ आप जा के, बोल आपना तोड़ चढ़ाओ भाई ।
इसथीँ पिछों *दिलशाद* फिर कोल सीता, लै के हुकम बिभीछण थीँ जाओ भाई ॥८११॥

विभीषण का राजतिलक—

होया खुश लछमन एह हुकम सुण के, उत्ते कदमाँ दे सीस नवाउँदा ई ।
पानी चौं[1] समुंदराँ दा फिर उत्थे, वानर भेजं के तुरत मंगाउँदा ई ॥८१२॥
लै के नाल बिभीछण नूँ गेॲा लंका, होका[2] शैहर दे विच फिरवाउँदा ई ।
धूम-धाम दे नाल *दिलशाद* जा के, उत्ते तखत बिभीछण बहाउँदा ई ॥८१३॥

सीता को लाने का निर्देश—

बिभीछणे राज लंका दा लै के ते, लछमन नाल वापस फेर आया वे ।
रामचन्दर माह्राज दे कोल आके, नाल अदब दे सिर झुकाया वे ॥८१४॥
देॲो हुकम मैं माता नूँ लै आवाँ, हत्थ जोड़ के आख सुणाया वे ।
जा के आप *दिलशाद* लै आओ तुस्सी, अगों एह माह्राज फरमाया वे ॥८१५॥

लै के आग्या देर नहिँ झरा कीती, कदम लंका दी तरफ उठाया जी ।
झरी-बाफते कपड़े नाल लै के, सीता कोल विच बाग़ दे आया जी ॥८१६॥
रावण सनेँ परिवार दे मार सुट्टेॲां, बैह के हाल तमाम सुणाया जी ।
आया तुस्साँ नूँ लैण *दिलशाद* मैं ताँ, मैनूँ हुक्म माह्राज फरमाया जी ॥८१७॥

सीता का आगमन—

रामचन्दर माह्राज दे कोल आ के, हत्थ जोड़ सीता निमस्कार करदी ।
दरशन करादिआँ ईँ दुःख दूर होए, पई शुकर हझार करतार करदी ॥८१८॥
कैंह्दी केॲा रब्बा सुफना वेख रही आँ, विच दिल दे पई विचार करदी ।
हो हैरान *दिलशाद* खामोश बैठी, नहिँ कुछ बोल के कोई गुफतार करदी ॥८१९॥

रामचन्द्र का वचन—

रामचन्दर माह्राज फिर कैह्ण लगे, देवाँ सच्च मैं तैनूँ सुना सीता ।
रावण मारना मैं झरूर है सी, दित्ता उस नूँ मार मुका सीता ॥८२०॥

१. चारों । २. मुनादी (ढंढोरा) ।

पिछों मैरेंओं बन दे विच तैनूं, लै आया जा के जो चुरा सीता।
दित्ता मार परवार समेत उस नूँ, लई उसने पा सझा सीता ॥८२१॥
नहिँ लोड़ कोई तेरी हुण मैनूं, जित्थे चाहें उत्थे चली जा सीता।
कोल रावण दे रही तूं साल पूरा, दित्ता दाग सानूं तूं एह ला सीता।८२२॥
तेरा मुंह मैं वेखना नहिँ चाँह्दा, बैठी कोल मेरे काहनूं आ सीता।
उठ जा *दिलशाद* न बैठ इत्थे, डिट्ठा मुंह ते कंड विखा[1] सीता ॥८२३॥

इतनी गल्ल माह्राज दी सुणी जदों, सीता विच दिल दे पशेमान होई।
रही बुध ते सुध न होश कोई, ग़मगीन मलूल हैरान होई ॥८२४॥
कैंह्दी हाय रबा एह के करन लगों, के तकसीर मैथों दस्स आन होई।
सकी कर *दिलशाद* न सबर फिर ताँ, खोल बंदशें[2] झवान गोयान होई ॥८२५॥

सीता का वचन—

है सी एह ख़ेंआल जे विच दिल दे, इत्थे किऊँ माह्राज फिर आउना सी।
रावण मारने दी आही लोड़ केह्ड़ी, किस दे वासते कष्ट उठाउना सी ॥८२६॥
हनुमान् नूँ भेज के कोल मैरे, मैरा हौंसला किऊँ वँधाउना[3] सी।
होंदी खबर *दिलशाद* जे एह मैनूं, खा के झहर मैं ताँ मर जाउना सी ॥८२७॥

देवाँ केंआ माह्राज सबूत इत्थे, रब दे बाझ है सी कौन कोल मैरे।
हनुमान् ने दस्सेंआ नहिँ तुस्साँ, होए नाल रावण जेह्ड़े बोल मैरे ॥८२८॥
मैरे विच माह्राज नहिँ पाप कोई, समझो सुँखन[4] न एह मखौल मैरे।
लगी देन प्राण *दिलशाद* मैं ताँ, वज्जे मौत दे आन सिर ढोल मैरे ॥८२९॥

उठ लछमना तैथों मैं हां सदके[5], चुण के लकड़िआँ इत्थे लै आ जलदी।
देवाँ त्याग प्राण हुण आपने मैं, चिखा जोड़ के दे बना जलदी ॥८३०॥
इशारे अक्खिआँ दे नाल रामचन्दर, कैंह्दे उठ बेशक तूं जा जलदी।
हो हैरान *दिलशाद* उठ गेआ लछमन, ढेर लकड़िआँ दा दित्ता ला जलदी ॥८३१॥

१. दिखा। २. बन्धन। ३. बढ़ाना। ४. वचन। ५. बलिहारी।

अग्ग बाल के दित्ती फिर ला सीता, हो के तेज़ जदों अग्ग बलन लगी ।
हत्थ जोड़ के फिर एह अरज़ कीती, देंओ हुकम माह्राज मैं चलन लगी ॥८३२॥
झूठी तोहमत[2] एह तुस्साँ लगाई जेह्ड़ी, उसे वासते अग्ग विच जलन लगी ।
सके रोक *दिलशाद* दस्स कौन उस नूँ, सीता धर्म थीं कदी नहिं टलन लगी ॥८३३॥

बलदी चिखा नूँ वेख के कैह्ण सारे, होण नाल साडे वाह वाह लगी ।
झलिआँ सखतिआँ इतनिआँ जिस कारण, ओही सड़ के होण फनाह लगी ॥८३४॥
जाँदी पेश नहिं किसे दी कोई इत्थे, मेहनत असाँ दी होण तबाह लगी ।
सानूँ दस्स *दिलशाद* तूँ केंआ करिए सीता सड़ के होण स्वाह लगी ॥८३५॥

कीती ज़रा भी देर न फेर सीता, अग्ग बाल, कर चिखा तैय्यार दित्ती ।
प्रदक्खना[3] लै महाराज दी तिन वारी, हत्थ जोड़ के कर निमस्कार दित्ती ॥८३६॥
कैंह्दी, मैं बेदोस नहिं दोस कोई, इतना आख के बाहाँ उलार दित्ती ।
लगी मारने छाल *दिलशाद* जदों, शिवजी पकड़ के बाहों खिलार दित्ती ॥८३७॥

शिव का वरदान—

तैरी कथा जो पढ़ेगी, कहे शिवजी, पतिव्रत दे फल नूँ पायगी ओ ।
बारांमास सुणसी नितनेम जेह्ड़ी, कदी जनम दे विच न आयगी ओ ॥८३८॥
कदी कदी जो करेगी याद तैनूँ, उमर सुख दे नाल बताएगी ओ ।
करसी निंदेंआ जो *दिलशाद* तैरी, कुम्भी नरक दे विच फिर जाएगी ओ ॥८३९॥

देवता लोगों का वचन—

लगे देवते फिर एह कैह्ण सारे, सीता विच माह्राज नहिं पाप कोई ।
पतिव्रत धर्म इस दा है पूरा, लगदा इस नूँ नहिं सराप कोई ॥८४०॥
कदी मुश्क[4] छपायाँ नहिं छपदी, रखे विच पड़दे भावें ढाँप कोई ।
सानूँ हाल मालूम *दिलशाद* सारा, करो होर ख़ेआल न आप कोई ॥८४१॥

---

१. जलने । २. कलंक । ३. प्रदक्षिणा । ४. सुगन्ध ।

मंदोदरी का वचन—

हत्थ जोड़ मंदोदरी अरज़ कीती, है मालूम मैनूँ सारा हाल इस दा।
रही विच सत्त[1] दे एह सतवंती, करो होर न कोई खेआल इस दा ॥८४२॥

ला ज़ोर थकेआ बहुँ पति मेरा, रेहा झगड़ा उसदे नाल इसदा।
गई पेश *दिलशाद* नहिँ कोई उसदी, सकेआं कर डिङ्गां[2] नहिँ वाल इसदा ॥८४३॥

अन्य साक्षी—

दित्तिआँ होर शहादताँ बोहत लोकाँ, कसमाँ खावँदे कई हज़ार भाई।
सीता विच माहराज नहिँ पाप कोई, सारे आखदे एहो पुकार भाई ॥८४४॥

धर्म आपने थीँ इस हारेआ नहिँ, रेहा शाह रावण झख मार भाई।
ऐसी इस्त्री होर *दिलशाद* कोई, नहिँ वेखनी विच संसार भाई ॥८४५॥

कवि वचन—

लई सुण चौफेरेओँ गल्ल जदोँ, सीता आपने कोल बिठाई उत्थे।
जानी[3]-जान हर बात दे रामचन्दर, माया आपनी एह दिखलाई उत्थे। ८४६॥

करे कोई बदनाम न विच जगदे, चिखा अग्ग दी ताईं जलवाई उत्थे।
शक सारेआँ दे दूर करन कारण, लीला एह *दिलशाद* रचाई उत्थे ॥८४७॥

लंका की सैर—

गई आ दलील फिर विच दिल दे, लंका वेखने नूँ सिरी राम गए।
फौज वानराँ दी पई टुर पिच्छे, अफसर जँगी भी नाल तमाम गए ॥८४८॥

रेहा फिकर अंदेशड़ा[4] न कोई, सरअंजाम सारे हो काम गए।
आए देवते ओह *दिलशाद* जेहड़े, विदा हो ओ आपने धाम गए ॥८४९॥

विभीषण का निवेदन—

कीती अरज़ बिभीछण ने एह उत्थे, कीती मैंते तुस्साँ भलयाई है जी।
ज़बरदस्त रावण नूँ मार के ते, दित्ती बखश मैनूँ पादशाही है जी ॥८५०॥

दित्ता पृथ्वी दा भार उतार तुस्साँ, सखती देवतेआँ दी चा हटाई है जी।
होए रास तुसाडड़े कम्म सारे, रेहा हुण ताँ फिकर न काई[5] है जी ॥८५१॥

१. धर्म (सतीत्व)। २. टेढ़ा। ३. ज्ञाता। ४. भय। ५. कुछ।

फिरदे रहे विच बनाँ दे मुद्दत बोह्ती, विच सफर तकलीफ उठाई है जी ।
रहो इत्थे *दिलशाद* कोई दिन तुस्सी, मैरे दिल माह्राज एह आई है जी ॥८५२॥

रामचन्द्र का उत्तर—

केहा सच्च बिभीछण जी है तुस्साँ, कराँ केऑ इत्थे नहिँ मैं रह सकदा ।
ताँग भरथ दे मिलन दी है मैनूँ, विच राह दे नाहिँ किधरे बैह सकदा ॥८५३॥
मैरे वासते राज उस छोड़ दित्ता, कदी दुःख उसदा नहिँ मैं सह सकदा ।
लगा चित्त *दिलशाद* उस तरफ मैरा, नहिँ ख़ेऑल उसदा दिलों लैहें सकदा ॥८५४॥

बैठा बन फकीर ओ विच घर दे, मैरा पेऑ ओ तकदा राह होसी ।
अक्खीँ तकदिआँ थकदिआँ न होसन, मैरे मिलन दी उसनूँ चाह होसी ॥८५५॥
गिन-गिन दिन मैरे कटदा दिन हौसी, आया लबाँ उत्ते उसदा साह होसी ।
वादे उत्ते *दिलशाद* जे न जावाँ, मौत भरथ दी खाह-मुखाह हौसी ॥८५६॥

विभीषण का वचन—

करो फिकर माह्राज न कोई तुस्सी, इक दिन दे विच पौंह्चा देसाँ ।
लेऑ बवान कुबेर थीँ इक रावण, ओही आप नूँ मैं लैआ देसाँ ॥८५७॥
हझाराँ कोह दिहाड़े दे विच जावे, इत्थे आन के हुणे दिखला देसाँ ।
दिलशाद खबर इत्थे ठहरने दी, जा के भरथ नूँ मैं सुणा देसाँ ॥८५८॥

रामचन्द्र का उत्तर—

नहिँ अराम मैनूँ औंदा तद तोड़ी, कीता भरथ दा जद तक दीदं[५] नाहीँ ।
गुझर जान रोझे[६] बेशक भावेँ, विना चन्न वेखे होंदी ईदं नाहीँ ॥८५९॥
चौदाँ साल मैरे पूरे होण लगे, लाना दिन मैं इक मझीद नाहीँ ।
दिलशाद लिख्या मैं एह दिल उत्ते, होनी उसदी कदी तरदीद नाहीँ ॥८६०॥

विभीषण का निवेदन—

इतना सुण के फिर एह अरझ कीती, है एह सच्च जो आप फरमा रहे ओ ।
कित्थे हीन भिरा अज कल ऐसे, अक्खीँ वेख के आप अझमा रहे ओ ॥८६१॥

---

१. उतर । २. वचन (निश्चित समय) । ३. व्यर्थ । ४. एक दिन । ५. दर्शन । ६. उपवास (मुसल्मानों का) । ७. मुसल्मानों का त्योहार (प्रसन्नता) । ८. खण्डन ।

मैं भी करांगा दर्शन नाल चल के, लेंआ सुण जो हाल सुणा रहे ओ ।
चलो उठो *दिलशाद* अब देर कैसी, ढिल किऊँ माह्राज फिर ला रहे ओ ॥८६२॥

पुरस्कार-प्रदान—

खज़ाने खोल शाह रावण दे रामचन्दर, गए बैठ दरबार लगा मित्तरा ।
लगे देन इनाम फिर फौज ताईँ, हीरे लाल मोती बेबहा मित्तरा ॥८६३॥

कर चुके इनाम तकसीम[1] जदोँ, ताँ फिर देंवदे एह फरमा मित्तरा ।
जाओ हसदे खेडदे घर सारे, दित्ता हुकम *दिलशाद* सुणा मित्तरा ॥८६४॥

सेना का निवेदन—

लगे कैह्‌ण सारे हत्थ जोड़ अग्गोँ, इत्थोँ जाना है आप दे नाल असाँ ।
रही लोड़ दी थोड़ न कोई सानूँ, लए लै हीरे मोती लाल असाँ ॥८६५॥

जन्मभूमका आप दी देखने दा, रक्खेआ दिल दे विच ख़ेआल असाँ ।
साडे हाल दे उत्ते दयाल हो के, देना कर *दिलशाद* निहाल असाँ ॥८६६॥

रामचन्द्र का आदेश—

एहो अरज़ कीती जद सारेआँ ने, अगोँ हस के एह फरमाया वे ।
चलो नाल तुस्सी बेशक मेरे, जेकर दिल तुसाडड़ा चाहेआ वे ॥८६७॥

देओ कर जलदी इन्तज़ाम सारा, एह बिभीछण नूँ हुकम सुणाया वे ।
बिभीछण देर *दिलशाद* न ज़रा कीती, कर तैय्यार सामान लै आया वे ॥८६८॥

विभीषण का निवेदन—

सोह्‌णे कई बवान सजा के ते, बिभीछण आन हाज़र दरबार होया ।
नाले रथ आँदे होर नाल कितने, हाथी घोड़ेआँ दा नहिँ शुमार होया ॥८६९॥

दित्ता कर मौजूद सामान सारा, नाल चलन नूँ आप तैय्यार होया ।
दस्सो होर *दिलशाद* है लोड़ केह्‌ड़ी, हत्थ जोड़ के अरज़गुज़ार[2] होया ॥८७०॥

हर इक चीज़ नूँ वेख के रामचन्दर, दिलोँ बौह्‌त आनन्द खुरसंद होए ।
किसे गल्ल दी कमी नहिँ रही कोई, सारे कम्म एह ताँ दिलपसंद[3] होए ॥८७१॥

---

१. बाँट । २. प्रार्थी । ३. रुचि के अनुकूल ।

नाल जाउने दा सुणेॲा हुकम जदों, दिल सारेआँ दे दोचंद होए ।
बाजा कूच दा बज्जन *दिलशाद* लगा, नारे जै जै कार बुलंद होए ॥८७२॥

लंका से प्रस्थान—

पए टुर सुण के हुकम कूच[1] संदा, सने फौज सारे सरदार यारा ।
खुशी नाल नहिँ मेवँदे[2] विच जामे[3], रहे बोल मुँहों जै जै कार यारा ॥८७३॥
कई रथाँ विच चढ़ के बैठ गए नीँ, होए हाथिआँ ते कई स्वार यारा ।
पैदल रेहा *दिलशाद* न इक उत्थे, कित्थों ताईँ मैं कराँ शुमार यारा ॥८७४॥

पए टुर उत्थों लैके सारेआँ नूँ, मुँह थीँ नाम ओंकार उचारेॲा वे ।
लछमन आपने नाल बिठला के ते, हनुमान् नूँ कोल खलारेॲा वे ॥८७५॥
विच मैदान जंग दे गए पौहँच जदों, पुष्पबवान चा हेठ उतारेॲा वे ।
बाहों पकड़ के सीता नूँ कैह्ण लगे, इत्थे मैं कोई दिन गुझारेॲा वे ॥८७६॥
मेघनाथ नूँ प्यारिए इस जा ते, मैरे भाई लछमन ने मारेॲा वे ।
कुंभकरण लड़ेॲा इत्थे नाल मैरे, उसदा सिर मैं कट उडारेॲा वे ॥८७७॥
मारे बौह्त बली हनुमान् इत्थे, इसे जा ते राखशाँ हारेॲा वे ।
एह जा *दिलशाद* है वेख ओही, जित्थे रावण नूँ खाक कर डारेॲा वे ॥८७८॥

अगे फिर समुंदर ते जा के ते, कैंह्दे वेख एह पुल बनाया मैं ।
हरदम याद तेरी है सी विच दिल दे, तेरे वासते कष्ट उठाया मैं ॥८७९॥
लगे कैह्ण इस्कन्दाँ[4] दे विच जाके, इत्थे बाली नूँ खाक मिलाया मैं ।
ओह पहाड़ *दिलशाद* जो वेख रही एँ, उत्थे बैठ चौमासा लंघाया मैं ॥८८०॥

दृश्यमाला—

सोह्णा अजब नझारा पहाड़ दा जी, प्यारी सीता नूँ आप दिखला रहे ने ।
किधरे चीलां दे आहे द्रखत सोह्णे, किधरे द्रखत दयार लहरा रहे ने ॥८८१॥
किधरे सरू आझाद शमशादँ[5] किधरे, कद महबूबँ[6] दा याद करवा रहे ने ।
खड़े केसरी खेत अझीब किधरे, नीले फुल सोह्णे दिल नूँ भा रहे ने ॥८८२॥

१. यात्रा २. समाते । ३. वस्त्र । ४. किष्किन्धा पुरी । ५. वृक्ष का नाम । ६. प्रिय ।

किधरे मोतिआ चम्बा रवेल किधरे, मुशक विच दिमाग़ पौंह्चा रहे ने ।
नेह्राँ मार लैह्राँ रैहिआँ चल किधरे, किधरे साफ चश्मे रंग ला रहे ने ॥८८३॥

सवज्ञ घास दा फर्श हर तरफ बिछ्या, पंछी खुश आवाज़ सुणा रहे ने ।
किधरे बुलबुलां कोयलां बोल रैहिआँ, किधरे मोर सोहूणे पायलां पा रहे ने ॥८८४॥

किधरे घुगिआँ तित्तर चकोर बोलन, किधरे बोल के हंस हँसा रहे ने ।
हर इक ज़ात दा पंछी अहा उत्थे, नाम रब दा सब ध्या रहे ने ॥८८५॥

किधरे शेर बघ्याड़ ते फिरन चित्तरे, किधरे हरण सोहूणे घा खा रहे ने ।
किधरे पए बांदर ते लंगूर फिरदे, किधरे रिछ काले गड़गड़ा रहे ने ॥८८६॥

रिषी मुनि तपसी भी बैठ किधरे, हरि-गुण प्यारेआं[1] गा रहे ने ।
भारद्वाज दे कोल *दिलशाद* फिर ताँ, करके सैर पहाड़ दी आ रहे ने ॥८८७॥

ऋषि भारद्वाज से भेंट—

रिषी भारद्वाज दे कोल आके, हत्थ जोड़ के सीस नवाया ने ।
कृपा आप दी नाल माह्राज मैरे, होए रास सभ कम्म सुणाया ने ॥८८८॥

चौदाँ साल भी अज्ज हो गए पूरे, दिन घट न इक लगाया ने ।
मतलब होर *दिलशाद* न अहा कोई, दरशन करन मैं आप दा आया ने ॥८८९॥

दे आसीस रिषी अगों कैहूण लगा, दुनिया विच तैरी यादगार रैहूसी ।
पढ़सी हाल तैरा, जेहूड़ा दिल लाके, सागर दुःखां थीं हो ओ पार रैहूसी ॥८९०॥

होसी दुःख ते दरद न कदी उस नूँ, सुखी सद ओ विच संसार रैहूसी ।
करसी न यकीन *दिलशाद* जेहूड़ा, जन्माजन्म ओ होंदा ख्वार रैहूसी ॥८९१॥

इस वक्त अगे नहिँ मैं जान देंदा, रैहूणा तुस्साँ अज्ज इत्थे ज़रूर है जी ।
रैह के कोल मैरे करो खुश मैंनूँ, करनी गल्ल एह मैरी मनज़ूर है जी ॥८९२॥

दिने[2] उठ के बेशक चले जाना, अजुध्या नहिँ इत्थों कोई दूर है जी ।
इक रात फकीर दे कोल रैह के, दस्सो केआ *दिलशाद* कसूर है जी ॥८९३॥

१. नाच रहे । २. दूसरे दिन ।

लई रिशि दी सुण एह गल्ल जदों, रामचन्दर माह्राज हैरान होए।
मैं ताँ अज्ज अजुध्या पौंह्चना सी, नाल भरथ दे ऐह्द-पैमान होए ॥८९४॥
केहा रिशी दा भी नहिं मोड़ना मैं, भावें बरस चौदाँ पूरे आन होए।
सद के आपने कोल *दिलशाद* इत्थे, हनुमान् नूँ फिर गोयान होए ॥८९५॥

रैह्णा पेआ अज्ज इत्थे झरूर मैनूँ, तुस्सी विच अजुध्या जाओ जलदी।
होसी भरथ उडीकदा राह मैरा, मैरी उस नूँ खबर पौंह्चाओ जलदी ॥८९६॥
गए साल चौदाँ पूरे हो मैरे, उठो प्यारेओ कदम उठाओ जलदी।
सुबह पौंह्चसाँ मैं *दिलशाद* आके, जाके भरथ नूँ एह सुणाओ जलदी ॥८९७॥

महावीर की अयोध्या में पहुँच—

कीती देर महांबीर न हुकम सुण के, लैके आगेआ होया रवान भाई।
नंदी गाम दे विच फिर पौंह्च के ते, हाझर कोल भरथ होया आन भाई ॥८९८॥
बैठा भरथ हैसी आसन घास उत्ते, चुप-चाप हो अन्तर-धेआन भाई।
अक्खीं मीटिआँ बोलदा नहिं मुँहों, अहा मगन विच भजन भगवान् भाई ॥८९९॥
पौएं[१] रक्खे ने सामने उपर चौकी, बैठे कोल वझीर दीवान भाई।
इक इक नाड़ सरीर दी पई दिस्से, सुकें[२] वाँग तीले होई जान भाई ॥९००॥
कौशल्या माई सुमित्तराँ कैकयी, पैइआँ बैठ के कोल समझान भाई।
रक्खो हौसला फिकर न करो कोई, करसी मुशकलाँ रब आसान भाई ॥९०१॥
चौदाँ बरस भी अज हो गए पूरे, लगे इतने किऊँ घबरान भाई।
दिन इक वधीक न लान कदी, गए कर ओ एह्दो पैमान भाई ॥९०२॥
देंदा कोई जुआब नहिं भरथ अगों, बैठा बंद ओ कर झबान भाई।
लेआ वेख एह भरथ दा हाल जदों, हनुमान् हो गेआ हैरान भाई ॥९०३॥
जे मैं पौंह्चदा अज्ज न आन इत्थे, देंदा भरथ बेशक प्राण भाई।
ऐसे भाई *दिलशाद* अज्ज हीन कित्थे, जेह्ड़े भाई तों होण कुरबान भाई ॥९०४॥

१. पादुका (खड़ाओं)। २ सूख।

हत्थ जोड़ के कैह्‌ण महाँबीर लगा, नाल अदब दे सीस निवाया जी ।
रामचन्दर माह्‌राज ने भेजेॲा मैं, खबर आप दे कोल लै आया जी ॥९०५॥
अज्ज भरद्वाज दे कोल बैठे, भलके[1] पौंह्‌चसन इत्थे सुणाया जी ।
फतह लंका नूँ कर *दिलशाद* आए, रावण मार के खाक मिलाया जी ॥९०६॥

खबर सुणदेॲाँ सार उठ खड़ा होया, छाती नाल महाँबीर नूँ लाया सू ।
होए ग़म ते फिकर सब दूर यारा, कासद जद पैग़ाम लै आया सू ॥९०७॥
खुशी नाल चेह्‌रा हो लाल गेॲा, गोया धन गँवाया पाया सू ।
रहे किऊँ *दिलशाद* अज्ज बैठ उत्थे, कहो साफ एह आख सुणाया सू ॥९०८॥

हर दम आपनूँ याद ओ हीन करदे, खेॲाल आपदे वल माह्‌राज है जी ।
बाली तीर दे नाल हलाल करके, रक्खेॲा सिर सुग्रिव दे ताज है जी ॥९०९॥
रावण मारेॲा जाके विच लंका, दित्ता बख़्श बिभीछण नूँ राज है जी ।
सुबह पौंह्‌चसन आन *दिलशाद* इत्थे, लेॲा रक्ख अज्ज भरद्वाज है जी ॥९१०॥

भरत का वचन—

झबरदस्त भारा एडा शाह रावण, वड्डे झोरवाला बलवान सी ओ ।
उसदी फौज दा कैह्‌ण नहिँ अन्त कोई, रखदा कई करोड़ जवान सी ओ ।.९११॥
किवें उस नूँ मारेॲा दस्स भैनूँ, भारी सख़्त बला तूफान सी ओ ।
इन्दर जेहे *दिलशाद* गए हार उस थीँ, आली जाह भारा सुलतान सी ओ ॥९१२॥

महावीर का वचन—

नहिँ भूठ माह्‌राज इस विच कोई, रावण बली बेशक झरूर है सी ।
फौज हद हसाब थीँ बाहर उसदी, विच झोर दे ओ मग़रूर है सी ॥९१३॥
सकदा हत्थ न उस नूँ पा कोई, रैंह्‌दा हर[2] डर के उसतोँ दूर है सी ।
छपदे देवते आहे *दिलशाद* उसथीँ, कद वाँग पहाड़ कोह तूर है सी ।.९१४॥

१. दूसरे दिन । २. प्रत्येक ।

कदी हद थीं बाहर नहिँ जान चंगा, करदा चूर झरूर गरूर है जी।
कीता जिस तकब्बर, विच कबर पेआ. एह मिसल विच जगत मशहूर है जी ॥९१५॥
ओ ही खुश खुरसंद हमेश रैह्दा, कीता जिस हंकार नूँ दूर है जी।
खुदी नहिँ पसंद *दिलशाद* किसे, नाहिँ रब नूँ खुदी मनझूर है जी ॥९१६॥

औंदी सप्प दी मौत है जिस वेले, जा के बैठदा राह विचकार है जी।
करदा विच मसीत[2] पेशाब कुत्ता, हौंदी मौत जद सिर सवार है जी ॥९१७॥
जिस वकत इनसान दी मौत औंदी, जांदा विध करोध हंकार है जी।
एही रावण दा हाल *दिलशाद* समझो, होया मरण नूँ आप तैय्यार है जी ॥९१८॥

चित्रकूट ताईँ माह्राज तुस्साँ, है मलूम सारा जेह्ड़ा हाल होया।
एह भी है मलूम जहान सारे, ते बनबास जिस थीँ चौदाँ साल होया ॥९१९॥
मिल गए वापस तुस्सी आ जदोँ, विच दिल दे फिर खॅआल होया।
झरा गौर दे नाल *दिलशाद* सुनना, कराँ अरझ जो उन्हाँ दे नाल होया ॥९२०॥

चित्रकूट थीँ फिर उदास हो के, पौंह्ते विच पंजवटी दे आ साईँ।
लगे बैठ के करन गुझरान उत्थे, लई कुटिआ इक बना साईँ ॥९२१॥
शाह रावण दी भैन सरूपनखाँ, गई पौंह्च ओ भी उसे जा साईँ।
रामचन्दर माह्राज नूँ वेख के ते होई गखशी दिलों फिदा साईँ ॥९२२॥
गई फस ओ काम दे दाम अन्दर, होया दिल उसदा मुबतला[3] साईँ।
लगी कैह्ण माह्राज दे कोल आ के, करके नाझ नखरे ते अदा[4] साईँ ॥९२३॥
लओ कर शादी मेरे नाल तुस्सी, करो झरा भी न अटका साईँ।
मेरा हुसन जमाल[5] कमाल सोह्णा, परिआँ वेख के रैह्ण शरमा साईँ ॥९२४॥
शाह रावण दी समझ लओ भैन हाँ मैं, जिसदे झोर दी हद नहिँ का साईँ।
करो ऐश इशरत रैह के कोल मेरे, देओ खौफ तमाम हटा साईँ ॥९२५॥

१, नष्ट। २. मुसल्मानों का पूजा स्थान। ३. फंसा हुआ। ४. हाव-भाव। ५. शोभा।

मंगसो जो मुँहों देसाँ कर हाझर, पादशाह मैरा है भिरा साईं ।
लई सुण माह्‌राज एह गल्ल जदों, हस के देन मखौल उड़ा साईं ॥९२६॥

गई समझ्‌ नहिँ मन्नदे गल्ल मैरी, गई राखशी हो खफा साईं ।
पै गई खखा के जानकी ते, लगी कैहूण इस नूँ लवाँ खा साईं ॥९२७॥

लछमन नक ते कन उस राखशी दे, सुट्टे कट के परे वगा साईं ।
सुट्टेआ चुक झमीन ते पकड़ गुत्तों[1], दित्ती उस दी होश भुला साईं ॥९२८॥

रोंदी, पिट्टदी, चीकदी उठ नस्सी, दोवें कन्न ते नक कटवा साईं ।
दूखन खर भिरा दो आहे उसदे, गई कोल उन्हाँदड़े धा साईं ॥९२९॥

कीता एह तपसिआँ हाल मैरा, आई नस्स मैं जान बचा साईं ।
मैं भैन ते तुस्सी भिरा मेरे, औंदा किऊँ नहिँ तुस्साँ हया[2] साईं ॥९३०॥

लाके लूँतिआँ[3] झूठिआँ कर गल्लाँ, दित्ता राखशाँ नूँ भड़का साईं ।
पए चल दोवें फिर फौज लैके, कीती देर न उन्हाँ झरा साईं ॥९३१॥

चौदाँ हझार शुमार सी फौज संदा, घट इक न गल्ल सफा साईं ।
डिट्ठी जद माह्‌राज ने फौज दूरों, लेआ धनश फिर तुरत उठा साईं ॥९३२॥

तीर मारदे झोर दे नाल ऐसे, लगे कंबन राखश थरथरा साईं ।
पल विच मार मुकावँदे सारेआँ नूँ, हैसन रहे जो पिंज पका साईं ॥९३३॥

गेआ परत के घर न इक उत्थों, दित्ती सारेआँ जान गँवा साईं ।
डिट्ठा हाल जद एह सरूपनखाँ, रुँन्नी[4] कोल शाह रावण दे जा साईं ॥९३४॥

कैंहदी केआ मैं आपना हाल दस्साँ, भाई दोहें मैं आई मरवा साईं ।
कट्टेआ नक ते कन्न दिखला के ते, लगी रोण पिट्टन घत खा साईं ॥९३५॥

आके रहे तपसी दो विच बन दे, सुणो गल्ल मैरी दिल लगा साईं ।
उसे बन दे विच सुण भाई मैरे, चली गई साँ खान हवा साईं ॥९३६॥

लओ वेख मैरा जेहड़ा हाल होया, रोवे विच सिर दे मिट्टी पा साईं ।
जां के बदला लओ शताब मैरा, मैनूँ मारेआ बेखताँ[5] साईं ॥९३७॥

---

१. चोटी से । २. लज्जा । ३. तोहमताँ । ४ रो पड़ी । ५. निरपराध ।

सुणके हाल शाह रावण नूँ जोश आया, लेॲा रथ नूँ तुरत मंगवा साईँ ।
झट पट विच बन दे पौंह्च के ते, वेस आपना लए बदला साईँ ॥९३८॥

भगवे कपड़े पा फकीर बनेॲा, आँदा सीता नूँ उत्थोँ चुरा साईँ ।
उस वकत अकलड़ी आही सीता, गेॲा लग रावण संदा दाँ साईँ ॥९३९॥

रामचन्दर माह्राज जद आए मुड़के, लछमन आपने नाल रला साईँ ।
आई नज़र न कुटिया विच सीता, हो हैरान फिर गए घबरा साईँ ॥९४०॥

गई किधर सीता नहिँ खबर कोई, रहे खेआल हज़ार दौड़ा साईँ ।
लग पए फिर ढूंडने विच बन दे, लई रब दी मन्न रज़ा साईँ ॥९४१॥

है सुग्रीव साडा पादशाह जेह्ड़ा, बैठा साथ सी ओ भी लुटा साईँ ।
राज उसदा खस के शाह बाली, कड्ढ बाहर दित्ता घरोँ चा साईँ ॥९४२॥

रेहा ओ भी सी बन दे विच जाके, डरदा बाली थीँ जान छपा साईँ ।
रामचन्दर माह्राज दे नाल मिलके, दित्ता हाल सुग्रीव सुणा साईँ ॥९४३॥

पता सीता दा भी उसे ला दिता, ज़ेवर कड्ढ के दित्ते विखा साईँ ।
इक तीर दे नाल फिर रामचन्दर, दित्ता बाली नूँ खाक मिला साईँ ॥९४४॥

देके राज सुग्रीव नूँ आप हत्थीँ, उत्ते तख़त दे दित्ता बहा साईँ ।
हत्थ जोड़ फिर अरज़ सुग्रीव कीती, उत्ते कदमाँ दे सिर झुका साईँ ॥९४५॥

लैके फौज मैं आपदे नाल चलाँ, फर्ज आपना कराँ अदा साईँ ।
रावण गेॲा माह्राज है लै सीता, नहिँ इस विच कोई लुकाँ साईँ ॥९४६॥

कीती उस भैड़ी है एह गल्ल जेह्ड़ी, दैइए उस नूँ चल सज़ा साईँ ।
पए टुर माह्राज फिर फौज लैके, बाजा कूच दा दित्ता बजवा साईँ ॥९४७॥

बन्ह पुल समुंदरोँ पार होए, लई फौज भी पार लंघा साईँ ।
राजनीति असूल नूँ छोड़ेॲा नहिँ, पूरे धर्म विच नरम सुभा साईँ ॥९४८॥

दित्ता भेज कासद पैह्ले कोल रावण, देवे जा के जो समझा साईँ ।
मन्नी नहिँ रावण जद गल्ल कोई, देंदे फौज नूँ फिर चढा साईँ ॥९४९॥

---

१. अवसर। २. सहचरी (पत्नी)। ३. छिपाव। ४. स्वभाव।

दस्साँ केॲआ जो होई लड़ाई उत्थे, दित्ता तबक¹ ज़मीन हिला साईं ।
रावण अहा बली बेशक भारा, दित्ती उस केॲआमत मचा साईं ॥९५०॥
दम हार अखीर बेदम होया, लेॲआ काल विच जाल² फहाँ साईं ।
मुखतसिर एह हाल *दिलशाद* सारा, दित्ता आप नूँ मैं बता साईं ॥९५१॥

सुण के हाल महाँवीर नूँ भरथ कैंहदा, सुट्टाँ जान आपनी तैथों वार भाई ।
विच उडीक प्यारेॲआँ सज्जनाँ दे, दित्ते साल मैं चौदाँ गुज़ार भाई ।९५२॥
ऐसी खबर सुणाई तूँ आन मैंनू, होए दुःख ते दरद फरार भाई ।
आई जान मुड़ के गोया विच तन दे, कराँ शुकर हज़ार करतार भाई ॥९५३॥
बदले इस दे देवाँ मैं केआ तैनूँ, रेहा एही मैं हाँ विचार भाई ।
नहिं चीज़ ऐसी कोई कोल मेरे, देवाँ नज़र जो तेरी गुज़ार भाई ॥९५४॥
देंदा राज अजुध्या चा तैनूँ, होंदा जे मेरे इखतेॲआर भाई ।
मालक राज दे ताँ समझ हीन ओही, मैं ताँ हाँ बैठा खिदमतगार भाई ॥९५५॥
तेरा हक उतार नहिं सक्केॲआ मैं, रेहा सिर मेरे उत्ते भार भाई ।
हीरे लाल मोती *दिलशाद* लै लै, जितने हीन तैनूँ दरकार भाई ॥९५६॥

महावीर का वचन—

करो सोच माहराज न कोई तुस्सीं, कारण लैण इनाम नहिं आया मैं ।
नौकर इक उन्हाँदड़ा हाँ मैं भी, चित्त शरण उन्हाँदड़ी लाया मैं ॥९५७॥
लेॲआ रिशी अटका अज्ज विच राह दे, नहिं झूठ एह सच्च सुणाया मैं ।
किसे जन्म दे भाग *दिलशाद* जागे, दरशन आन जद आपदा पाया मैं ॥९५८॥

छत्रघन नूँ भरथ फिर कोल सदके, कर पेॲआर छाती नाल लाया वे ।
जासन पौहँच सुबह इत्थे रामचन्दर, हनुमान् पैग़ाम लै आया वे ॥९५९॥
मैं ताँ विच गम दे पेॲआ आहस मरदा, मैनूँ आन के इस जिवाया ने ।
इन्तज़ाम *दिलशाद* जा करो तुस्सी, होवे देर न आख सुणाया वे ॥९६०॥

१. आकाश । २. फंसा ।

इतर केवड़े गुलाब ते मोतिए दा, सारे शैहर दे विच छनकार[1] होवे ।
रक्खन लोक सजा मकान सोह्णे, नाले सज्जेआं कुल बाझार होवे ॥९६१॥
पगबन्हे[2] विच घर न रहे कोई, बन तन हर इक तैय्यार होवे ।
शुतर, फील, घोड़ा होवे कोल जिसदे, उसते ओ बेशक स्वार होवे ॥९६२॥
होवे लोड़ जे किसे नूं चीझ कोई, देओ दे उसनूं जो दरकार होवे ।
बाजे खुशी दे वज्जन *दिलशाद* सोह्णे, हर कोई बोलदा मुंहों जैकार होवे ॥९६३॥

स्वागत की तैय्यारी—

हुकम सुणदेआँ सार उठ खड़ा होया, जा के शैहर तमाम सजवा देंदा ।
दर्शन करन कारन सुबह चलन सारे, डोंडी शैहर दे विच फिरवा देंदा ॥९६४॥
जिस चीझ दी जिस नूं लोड़ होवे, लवे लै आ के एह सुणा देंदा ।
तंगी रही *दिलशाद* न कोई किसे, मंगेआ जो जिसने उसनूं चा देंदा ॥९६५॥

खुशी होई अजुध्या-बाशिआँ[3] नूँ, घर विच शादिआँ लगे मनान सारे ।
रात बैठेआँ दित्ती गुझार सारी, सुबह उठ के करन अशनान सारे ॥९६६॥
रेहा विच घर दे नहिँ इक पिच्छे, दरशन चले माह्राज दा पान सारे ।
नन्दीगाम दे विच *दिलशाद* जा के, कोल भरथ होए हाझर आन सारे ॥९६७॥

हाझर होए वझीर दीवान आ के, नाले फौज दे सब सरदार मित्तरा ।
दरशन करन कारन आए लोक सारे, दित्ता छोड़ सब कम्म-कार मित्तरा ॥९६८॥
उठेआ भरथ भी लै के नाम रब दा, करे शुकर हझार करतार मित्तरा ।
बाजे खुशी दे वज्जन *दिलशाद* लगे, इकट्ठी होई खलकत बेशुमार मित्तरा ॥९६९॥

भरथ तकदा राह नूँ नहिँ थकदा, कैंह्दा किऊँ लाई इतनी ढिल भाई ।
चौदाँ वरस भी अज्ज बितीत होए, जल्दी आ हुण ताँ मैनूं मिल भाई ॥९७०॥
रेहा ग़म सता हर दम मैनूँ, खाधा[4] चम मेरा उस छिल भाई ।
सुध-बुध *दिलशाद* नहिँ रही कोई, नाहीँ सत्त[5] रेहा इक तिल भाई ॥९७१॥

१. छिड़काव । २. युवक । ३. अयोध्या-वासियों । ४. खा लिया । ५. शक्ति ।

महावीर का वचन—

औंदे पुष्पबवान नूँ वेख दूरों, कैह्ण भरथ नूँ फिर हनुमान् लगा।
करो तरफ असमान धेॲान झरा, आवे ओह बवान दिखलान लगा ॥९७२॥

विच इसे दे हीन माह्राज बैठे, लै के नाल सीता एह सुणान लगा।
फिकर दूर *दिलशाद* कर देॲो सारे, समाँ खुशिआँ दा हुण ताँ आन लगा ॥९७३॥

लग पेॲा खलो के भरथ तक्कन, लाई तरफ असमान नज़ीर मित्तरा।
रब सिकदिआँ[1] दी कीती आस पूरी, पेॲा सिमरदा पीर फकीर मित्तरा ॥९७४॥

लगा चित्त माह्राज दे विच कदमाँ, रही चल अक्खिओँ धारा नीर मित्तरा।
छोड़ राज *दिलशाद* फकीर होया, कित्थे हीन ऐसे अज्ज वीर मित्तरा ॥९७५॥

भरथ पेॲा उडीकदा राह है जी, खड़ा ला के खूब निगाह है जी,
रामचन्दर दे मिलन दी चाह है जी, विच दिल नहिँ होर खे़ॲाल कोई।
कैंह्दा इतनी ढिल न लाओ तुस्सी, मैरे दुःख ते दरद हटाओ तुस्सी,
मैनूँ आन के मुँह दिखलाओ तुस्सी, रेहा नहिँ वेखो मैरा हाल कोई ॥९७६॥
चौदाँ साल भी तुस्सी गुज़ार आए, बिगड़े कम्म भी सारे सँवार आए,
जा के विच लंका रावण मार आए, हुण ताँ घर दी करो संभाल कोई।
माँ-बाप दे हुकम नूँ मोड़ेॲा नहिँ, सुख आपने नूँ तुस्साँ लोड़ेॲा नहिँ,
झल्लिआँ सख्तिआँ धर्म नूँ छोड़ेॲा नहिँ, नहिँ *दिलशाद* ऐसा धर्मपाल कोई ॥९७७॥

भरत-मिलाप—

पौंह्ता पुष्पबवान भी आन नेड़े, सूरत साफ हुण ताँ नज़र आ रही ए।
गए पौंह्च माह्राज फिर तुरत आ के, खलकत चार चौफेरेॲों धा पई ए ॥९७८॥

भरथ दौड़ के कदमाँ दे विच डिग्गा, कैंह्दा आस मैरी[2] पूरी हो गई ए।
पेॲा ढूँडदा आह्स *दिलशाद* जिसनूँ, सूरत उसे मेंहबूब दी लँभ[3] लई ए ॥९७९॥

छत्रघन छत्तर लै कै विच हत्थ दे, उत्ते सिर माह्राज झुलान लगा।
मिले आन वज़ीर दीवान सारे, हर इक कदमाँ ते सिर झुकान लगा ॥९८०॥

१. आशावालों। २. प्रिय। ३. खोज (पा)।

रेहा कोई बशर न विच घर दे, निकल बाहर हर कोई दरशन पान लगा ।
करन खुशिआँ पर *दिलशाद* सारे, हर कोई जै जैकार बोलान लगा ॥९८१॥

रामचन्द्र का वचन—

छत्रघन ते भरथ नूँ पेॲार सेहती, छाती नाल माह्‌राज ने लाया जी ।
करो फिकर न तुस्सी कोई वीर मेरे, मैं ताँ कोल तुसाडड़े आया जी ॥९८२॥
हर दम याद तुसाडड़ी आही मैनूँ, अज रब ने चा मिलाया जी ।
मैनूँ होई तकलीफ नहिँ कोई भाई, खुशी नाल बनवास लंघाया जी ॥९८३॥
हर दम रेहा आनन्द खुरसन्द मैं ताँ, है सौगन्द नहिँ कदी घबराया जी ।
चौदाँ साल तपस्या मैं कीती, बोल बाप दा तोड़ चढ़ाया जी ॥९८४॥
लगा दिन वधीक एह अज्ज वाला, कल भारद्वाज अटकाया जी ।
कराँ शुकर हझार *दिलशाद* रब दा, मुँह तुसाडड़ा जिस दिखलाया जी ॥९८५॥

भरत का वचन—

होया जो माह्‌राज सो हो गेॲा, है एहसान एह ताँ बेशुमार रब दा ।
कीता रैह्‌म जिसने मेरे हाल उत्ते, नहिँ मैं सकदा हक[1] उतार रब दा ॥९८६॥
चौदाँ साल पूरे इत्थे बैठ के ते, हैसाँ रेहा मैं नाम उच्चार रब दा ।
दरशन आपदा अज्ज नसीब होया, कराँ शुकर *दिलशाद* हझार रब दा ॥९८७॥

मन्नेॲा हुकुम तुस्साँ माँ बाप संदा, पूरी कुल रघुबंस दी रीत होई ।
कीता नाम रोशन विच जहान सारे, धर्म विच तुसाडड़ी जीत होई ॥९८८॥
जो कुछ दिल चाहेॲा लेॲा कर ओही, पूरी शुकर है आपदी नीत होई ।
लओ राज संभाल *दिलशाद* आपना, मेरी नौकरी अज बितीत होई ॥९८९॥

इतनी गल्ल भरथ फिर आख के ते, मिल्या गल लछमन दे लग भाई ।
हन्जू वाँग बरसात दे चल रैहिआँ, पई सुलग मुहब्बत दी अग भाई ॥९९०॥
कैह्‌दा रेहा नहिँ मैं किसे गल्ल जोगा, गई लैह मेरे सिरों पग भाई ।
तेरे जेहे नसीब दस्स होर किसदे, पेॲोँ[2] नाल इन्हाँदड़े वर्ग[3] भाई ॥९९१॥

१. उपकार । २. पेओं ‥वग इनका साथ किया ।

कीती टैहल खिदमत नाल रैह के तूँ, भरेआ प्रेम तैरी रग रग भाई ।
कर सुफल दित्ता जन्म आपना तूँ, दुनिआ समझ मिसाल है झग[1] भाई ॥९९२॥

गेआ आह्स मैं ताँ विच वन जदोँ, लेआ नाल गल्लाँ मैनूँ ठग भाई ।
गई पेश *दिलशाद* न कोई मैरी, होया मैं बदनाम विच जग भाई ॥९९३॥

रामचन्द्र का वचन—

करो भरथ जी फिकर न किसे गल्ल दा, इसे तरह मैरी तकदीर है सी ।
लछमन रेहा है नाल बेशक मैरे, विच दिल तैरी तसवीर है सी ॥९९४॥

होणी टलदी टालेआँ नहिँ कदी, पौणी भोगनी ओह अखीर है सी ।
नहिँ किसे नूँ दोस *दिलशाद* कोई, लिख्या लेख मैरा एहो वीर है सी ॥९९५॥

दिन दुःखाँ दे जावँदे गुझर भाई, होणा हौसले वाला मनुख चाहिए ।
तंगी विच न होविए तंग दिलों, मंगणा रब कोलोँ सदा सुख चाहिए ॥९९६॥

हुकम माँ पिओ दा मन्नना हर वेले, होना कदी भी नहिँ बेमुख चाहिए ।
दिलशाद बुनियादें[2] नहिँ किसे दी भी, डरना वेख के कदी न दुःख चाहिए ॥९९७॥

अयोध्या में प्रवेश—

बद्दल गज्जदे पए अकाश उत्ते, सोह्णी सर्द हवा भी आ रही ए ।
नाल भरथ दे पए फिर टुर उत्थोँ, खलकत खुंशिआँ सब मना रही ए ॥९९८॥

लगे ढोल सुरनाइआँ ते वज्जन बाजे, वाह-वाह सुर सोह्णी दिल नूँ भा रही ए ।
कित्थोँ ताईँ बेआन *दिलशाद* करसेँ, कुदरत रंग अजीब दिखला रही ए ॥९९९॥

गए किसे दे वल न होर किधरे, सब थीँ पैह्ले कैकेयी दे घर आए ।
लगे कैह्ण हत्थ पैराँ नूँ ला के ते, तेरा हुकम माता पूरा कर आए ॥१०००॥

दे असीस हुण ताँ दिलोँ खुश हो के, कारण इसे असी तैरे दर आए ।
दिलशाद बनबास दे विच रैह के, पूरे साल चौदाँ कर बसर आए ॥१००१॥

कैकेयी का वचन—

मैरे नाल वचा गई वरत होणी, मैं ताँ विच शर्मिंदगी गल रही आँ ।
आही होश उस वकत न कोई मैनूँ, न सी खबर मुँहोँ के निकल रही आँ ॥१००२॥

---

१. झाग (फेन)। २. नींव।

समझो जिऊँदिआँ दे विच ना मैनूँ, मैं ताँ नाल मोयाँ हुण रल रही आँ ।
मौत मंगेआँ किसे नूँ नहिँ मिलदी, ताने सारे जहान दे झल रही आँ ॥१००३॥

मैरे मुँह ते पेआ हर कोई थुकदा करनी आपनी दा पा फल रही आँ ।
गेइआँ हो *दिलशाद* जो तत्तड़ी थीँ, कर ओही कलेजड़े सल रही आँ ॥१००४॥

होणा तुस्साँ नाराझ माह्‌राज नाहीँ, मैं ताँ आप तोँ घोल घुमाई बच्चा ।
कीता जान के मैं नहिँ कम्म कोई, मैथोँ होणी ने एह करवाई बच्चा ॥१००५॥

गल्लाँ गुझरिआँ नूँ रक्खना याद नाहीँ, मैं भी हाँ तुसाडड़ी माई बच्चा ।
करना मुआफ *दिलशाद* कसूर मैरा, देवाँ रब दी मैं दुहाई बच्चा ॥१००६॥

रामचन्द्र का वचन--

केह्‌ड़े वैह्‌न ख़ेॲाल दे विच पई एँ, कर दे फिकर दिलोँ एह दूर माताँ ।
लिखे लेख मैरे कौण मेट सकदा, मैं ओह भोगने आहे झरूर माताँ ॥१००७॥

होणी नाल नहिँ किसे दी पेश जाँदी, तैरा झरा भी नहिँ कसूर माताँ ।
हुण भी राज *दिलशाद* मैं दे देवाँ, लवे कर जे भरथ मनझूर माताँ ॥१००८॥

कैकेयी की आशीष—

रैहसेँ खुश-खुरसंद हमेश बच्चा, निगहबान तैरा भगवान् रैह्‌सी ।
सकसी कर मुकाबला न कोई, दिल विच दुशमनाँ दे अरमान रैह्‌सी ॥१००९॥

करसी रब बुलंद इकबाल तैरा, तैरा नाम रौशन विच जहान रैह्‌सी ।
हर मैदान विच फतह नसीब होसी, हर इक जगह *दिलशाद* भी मान रैह्‌सी ॥१०१०॥

सुमित्रा व कौशल्या से भेंट—

आए उठ कैकेयी नूँ मिल के ते, लगे कैह्‌ण सुमित्रा नूँ मिल लईए ।
गए मैह्‌ल सुमित्राँ दे कोल जदोँ, औंदी अगोँ गोली उत्थे नझर पईए ॥१०११॥

हत्थ जोड़ गोली एह अरझ कीती, मैरी रानी महरानी दे कोल गई ए ।
दरशन देॲो *दिलशाद* जी तरसदी नूँ, ओहताँ बैठ के तुस्साँ उडीक रही ए ॥१०१२॥

१. मरे हुओं को । २. घाव ।

मैहल आपने दे विच जा के ते, माई सुमित्राँ नूँ निमस्कार कर दे।
लैंदे पकड़ फिर पैर कौशल्या दे, हॅस हॅस के पए गुफ़तार कर दे ॥१०१३॥

मैं ताँ कोल तैरे गेआ पौंह्च माताँ, फ़िक्र दिल दे दिलों उंडार कर दे।
होंदे पुत्तर सुपुत्तर *दिलशाद* जेह्ड़े, मन्नदे हुकम ओ, नहिँ इनकार कर दे ॥१०१४॥

वेख पुत्तराँ नूँ होइआँ खुश मावाँ, दिलजान थीं होण कुरबान लगिआँ।
भर के थाल हीरे लाल मोतिआँ दे, उत्तों सिराँ दे दोहें उडान लगिआँ ॥१०१५॥

खुशी नाल नहिँ मेउँदिआँ विच जामे, कर प्यार छाती नाल लान लगिआँ।
जागे अज्ज नसीब *दिलशाद* साडे, मुँहों नाम भगवान् ध्यान लगिआँ ॥१०१६॥

लगी पुच्छन सुमित्राँ, दस्सो मैनूँ, कीता कदी लछमन कोई कसूर तो नहिँ।
कीती टैह्ल तुसाडड़ी दिल ला के, दस्सो कदी इस कीता ग़रूर तो नहिँ ॥१०१७॥

कीता हुकुम थीं इस इनकार कदी, या के होर कोई कीता फतूर तो नहिँ।
हाज़र तुस्साँ दे कोल *दिलशाद* रेहा, हो नाराज़ होया कदी दूर तो नहिँ ॥१०१८॥

रामचन्दर माह्राज एह कैह्ण लग्गे, मैं ताँ लछमन तो हाँ कुरबान माताँ।
खुशी ऐश आराम नूँ छोड़ के ते, होया नाल मैरे एह रवान माताँ ॥१०१९॥

कीती टैह्ल खिदमत जो इस मैरी, सकदी हो नहिँ ओ बेआन माताँ।
ऐसे भाई *दिलशाद* न मिलन किधरे, भावें ढूँडिए कुल जहान माताँ ॥१०२०॥

वसिष्ठ का वचन—

गुरु बासिष्ठ माह्राज जी कैह्ण लगे, होया सिकादिआँ दिन नसीब अज्ज दा।
कर दी खुशिआँ खलकत पई सारी, दरशन कर कर के नहिँ कोई रज्जदा ॥१०२१॥

मच धूम रही विच जहान सारे, वाजा खुशिआँ दा हर तरफ वज्जदा।
चलो उठो *दिलशाद* दरबार चलिए, लवाँ वेख सिर आप दे ताज सज्जदा ॥१०२२॥

१. दूर। २. माताएँ।

राजतिलक—

गुरु बसिष्ठ माहराज दे नाल उत्थों, गए विच दरबार दे आ मित्तरा।
बैठे अगे दीवान वज़ीर आहे, रक्खेआ तखत नूँ अहा सजा मित्तरा॥१०२३॥

रामचन्दर माहराज दी बाँहाँ फड़के, दित्ता भरथ ने तखत बहा मित्तरा।
अगे खड़ा होके वाँग नौकराँ दे, छत्र पकड़ के रेहा झुला मित्तरा॥१०२४॥

कीती देर बसिष्ठ ने फिर ज़रा, दित्ता राज दा तिलक लगा मित्तरा।
हाज़र होए जरनैल करनैल आके, दित्ता सारेआँ सिर झुका मित्तरा॥१०२५॥

खुशी होई अजुध्याबाशिआँ नूँ, रहे जै जैकार बुला मित्तरा।
मुहब्बत भरथ दी वेख *दिलशाद* लै तूँ, कित्थे हीन अज्ज ऐसे भिरा मित्तरा॥१०२६॥

शांति-युक्त शासन—

उत्ते तखत दे बैठ के रामचन्दर, लग पए नीँ राज करन सज्जनाँ।
रोगरदार्न[1] गए आहे हो जेहड़े, लगे वेख इकबाल ओ डरन सज्जनाँ॥१०२७॥

लै के नज़राँ मुआफिआँ मंगन लगे, डिग्गे आन के विच शरण सज्जनाँ।
दुशमन रेहा *दिलशाद* न कोई किधरे, सारे दोस्ती दा दम भरण सज्जनाँ॥१०२८॥

होया अमन अमान विच मुलक सारे, किधरे ज़ुलम दा नहिँ निशान है जी।
धर्म-कर्म विच मस्त है हर कोई, चर्चा घर घर वेद-गेआन है जी॥१०२९॥

कायम रहे ऐह राज हमेश रबा, पेआ आखदा सारा जहान है जी।
रामचन्दर माहराज दे नाम उत्तोँ, हर इक *दिलशाद* कुरबान है जी॥१०३०॥

पुरस्कार वितरण—

लगे करन इनाम तकसीम बेह के, सारी फौज ताईँ वारोवार साईँ।
हीरे लाल मोती पुखराज नीलम, नाले होर कपड़े रंगदार साईँ॥१०३१॥

रेहा कोई नाराज़ नहिँ किसे गल थीँ, छालाँ विच खुशी रहे मार साईँ।
जवाहरात बिभीछण सुग्रीव नूँ भी, दित्ते खुश होके बेशुमार साईँ॥१०३२॥

---

१. ईर्ष्यालु।

गहने जड़त सुनहरी अजीब सोह्णे, ते पोशाक सोह्णी झरीदार साईँ।
दे के एह महाबीर नूँ कैह्ण लगे, रेहा सिर साडे तेरा भार साईँ ॥१०३३॥
तैरे लायक नहिँ दिसदी चीझ कोई, दइए नझर जो तेरी गुझार साईँ।
कीती मदद मेरी तूहीं है बोहती, तैरा हक नहिँ सके उतार साईँ ॥१०३४॥
तेरे दम दे नाल है दम साडा, लै इस ते कर इतबार साईँ।
दिलशाद जो करेगा याद तैनूँ, सुख पायगा विच संसार साईँ ॥१०३५॥

विदाई—

आए आही मेहमान जो नाल इत्थे, दित्ता सारेआँ नूँ रुखसत कर भाई।
महीना इक अजुध्या विच रैह के, चले गए ओ आपने घर भाई ॥१०३६॥
लगे करन फिर राज माह्राज बैहके, गए दूर हो सब फिकर भाई।
दिलशाद ओ धर्म दा दौर[१] सोह्णा, नहिँ सी करदा कोई फिकर भाई ॥१०३७॥

युद्धकाण्ड समाप्त

१. युग।

उत्तर काण्ड

झरा ग़ौर ख़ेॲाल दे नाल सुनना, लगा मैं हां हुण सुणान बेली ।
कीता राज माह्राज ने है कैसा, ओही तुस्साँ नूँ लगा बतान बेली ॥ १ ॥

रामचन्दर माह्राज जी तख़त उत्ते, लगे बैठ के राजकमान[1] बेली ।
मुलक अमन अमान दे नाल वसदा, न सी झुलम दा कोई निशान बेली ॥ २ ॥

रैॲत खुशी दे नाल गुझरान करदी, दुखी आहा न कोई इनसान बेली ।
धरम करम अन्दर नितनेम रैंह्दे, घर घर चर्चा वेद-गेॲान बेली ॥ ३ ॥

न सी बेसवा कोई विच मुलक सारे, न शराब दी कोई दुकान बेली ।
न जुआरिआ चोर बदमाश कोई, बोलन झूठ न, सच्ची झबान बेली ॥ ४ ॥

औंदी मौत बुढेपे दे विच हैसी, मरदा आहा न कोई जवान बेली ।
बाप जिऊँदिआँ कदी न मरे बेटा, न सी रोग ते सोग कोई जान बेली ॥ ५ ॥

बारश मौसमी होवँदी वकत उत्ते, ग़ल्ला[2] अहा हर किसम अरझान[3] बेली ।
रैंह्दे खुश खुरसंद *दिलशाद* सारे, हर इक सिमरदा नाम भगवान् बेली ॥ ६ ॥

रामचन्द्र का प्रश्न—

इक रोझ दरबार दे विच बैह के, रामचन्दर माह्राज फरमान लगे ।
दो चार गल्लाँ पैह्ले होर कर के, पिच्छों बोल के एह सुणान लगे ॥ ७ ॥

सच्चो सच्च मैनूँ देना दस्स तुस्साँ, नहिँ बोलना झूठ, समझान लगे ।
बाहर आई *दिलशाद* नहिँ गल्ल छपदी, इतना आख के खोलन झबान लगे ॥ ८ ॥

खबरदार नहिँ बोलना झूठ तुस्साँ, दस्सो मुलक संदा कैसा हाल है जी ।
कोई झुलम ताँ किस ते नहिँ करदा, दित्ता झालमां नूँ मैं ताँ गाल[4] है जी ॥ ९ ॥

रैंह्दे खुश खुरसंद आनन्द सारे, या कोई रोवँदा दुःख दे नाल है जी ।
मैरे वासते दस्सो *दिलशाद* कैसा, विच दिल मखलूक[5] खेॲाल है जी ॥ १० ॥

---

१. राज्य करने । २. धान्य । ३. सस्ता । ४. नाश (कर) । ५. प्रजा ।

मंत्रियों का उत्तर—

हत्थ जोड़ वज़ीरां ने अरज़ कीती, विच इस न झूठ ज़रा है जी।
होके खुश गुज़रान हर इक करदा, केॲा शाह ते केॲा गदा है जी ॥११॥
नहिँ ज़ुलम करदा कोई किसे उत्ते, उत्ते आप हर इक फिदा है जी।
ब्राह्मण वैश छत्तरी अते होर शूदर, हर कोई देउँदा पेॲा दुआ है जी ॥१२॥
न कोई झगड़ा न फसाद किधरे, सिद्धी साफ एह गल्ल सफा है जी।
राह आप दा तकदे रैह्न सारे, हर इक नूँ दरस दी चाह है जी ॥१३॥
नहिँ लोड़ वी थोड़ भी कोई किसे, न कोई किसे नूँ फिकर फिकरा है जी।
हर कोई मस्त *दिलशाद* विच हाल रैंह्दा, दित्ता सच्च एह असां सुणा है जी ॥१४॥

एक मंत्री का वचन—

इक वज़ीर ने उठ फिर अरज़ कीती, लओ सुण माह्राज जो हाल है जी।
मुँह जगत दा बंद नहिँ हो सकदा, चली मुढ थीँ आई एह चाल है जी ॥१५॥
माताँ सीतां दे वासते कैह्ण सारे, रही कोल रावण पूरा साल है जी।
इसे वासते रावण नूँ मार के ते, आँदी ओही सीता फिर नाल है जी ॥१६॥
आई सोच माह्राज नूँ न कोई, कीती कोई न ढूण्ड ते भाल है जी।
ऐवें गैरताँ दे विच फस्स असाँ, दित्ता अपने आप नूँ गाल है जी ॥१७॥
साडी रन्न भी नस्सेगी जे किधरे, देना उसनूँ नहिँ निकाल है जी।
खुशी नाल रख लवाँगे कोल उसनूँ, साडे वासते खूब मसाल है जी ॥१८॥
दित्ता मैं सुणा सफा इत्थे, विच दिल लोकां जो खेॲाल है जी।
चर्चा मुल्क दे विच *दिलशाद* एहो, कह्वाँ झूठ मैं केॲा मजाल है जी ॥१९॥

रामचन्द्र का चिन्तन—

लई सुण माह्राज एह गल जदों, निम्मोझूण[2] हो होण हैरान लगे।
नीवाँ सिर करके डावाँडोल होए, तरह तरह दे फिकर दौड़ान लगे ॥२०॥
नहिँ झूठ जो आखदे लोक मैनूँ, है एह सच्च विच दिल शरमान लगे।
लग गेॲा कलङ्क एह कैह्न भारा, हो बेताब *दिलशाद* घबरान लगे ॥२१॥

---

१. झूठी शान। २. उदास।

भाइयों से वार्तालाप—

छत्रघन लछमन अते भरथ ताईं, विच दरबार दे चा बुलायो ने।
हाज़र होए जद आन के भाई तिन्ने, मुहों बोल के फेर फरमायो ने ॥२२॥
मन्नना हुकम मैरा है ज़रूर तुस्साँ, करना नहिँ इनकार समझायो ने।
है सी सुणया हाल *दिलशाद* जेहड़ा, सारा बैठ के कोल सुणायो ने ॥२३॥

मैरे भाई लछमन सुण गल्ल मैरी, खबरदार विचकार फिर बोलना नहिँ।
तरक्कड़[1] अकल ते रख के सुख़न मैरा, तुस्साँ भाई मैरे उस नूँ तोलना नहिँ ॥२४॥
मैरे हुकम थीं नहिँ अदूल करना, रखना हौसला ते दिलों डोलना नहिँ।
करना ओही *दिलशाद* जो आखसां मैं, मैरी बात नूँ कदी पर तोलना नहिँ ॥२५॥

है एह ख़ेआल विच दिल लोकाँ, सीता कोल रावण पूरा साल रही ए।
रामचन्दर ने रावण नूँ मार के ते, विच घर सीता ओही रख लई ए ॥२६॥
पादशाह जद करनगे कम्म ऐसे, रैअॅत करेगी किऊँ न एह कही ए।
मेह्णा[2] देण *दिलशाद* एह लोक मैनूँ, भैड़ी गल्ल कोई होर न इस जेही ए ॥२७॥

नहिँ झूठ है, सच्च बेशक एह ताँ, सुण के मैं एह गल्ल नहिँ सह सकदा।
जद तक कराँ नाँ उपाह[3] इस दा, तद तक नहिँ तख़त ते बह सकदा ॥२८॥
देवाँ कड्ढ सीता न मैं जद तोड़ी, कदी एह कलङ्क नहिँ लह सकदा।
दित्ता दस्स *दिलशाद* मैं हाल सारा, बस होर अगे नहिँ कुझ कह सकदा ॥२९॥

जा सुमन्त थीं रथ जुड़वा जल्दी, सीता रथ दे विच बिठला जल्दी,
छड के विच बन दे उस नूँ आ जल्दी, लै तूँ मन्न मैरी एह गल्ल भाई।
मैरे हुक्म नूँ जे हुण मोड़सें तूँ, रिश्ता नाल मैरे समझ तरोड़सें तूँ,
तरुटा दिल फिर कदी न जोड़सें तूँ, उठ देर न कर इक पल भाई ॥३०॥

१. बड़ा तराज़ू। २. उपालम्भ। ३. उपाय।

नहिँ गल्ल एह ताँ गोया तीर है जी, दित्ता चीर इस मैरा सरीर है जी,
नहिँ झूठ एह सच्च तक़रीर है जी, मैरा रेहा कलेजड़ा जल भाई।
कदी हौसला दिलों ओ हारदे नहिँ, मेहणा किसे दा कदी सहारदे नहिँ,
झूठी लाफ[1] *दिलशाद* ओ मारदे नहिँ, जेह्ड़े हीन रघुवंस दी अल[2] भाई ॥३१॥

लक्ष्मण का चिन्तन—

सुण के गल्ल इतनी लछमण रोण लगा, पट पट वाल सिर दे बैह के खोण लगा,
कैंह्दा केॲा जानाँ एह के होण लगा, जांदी पेश नहिँ कोई तदबीर मैरी।
मन्नां हुक्म माह्राज नाँ जे हुण मैं सकदा नंहिँ जुआब भी दे हुण मैं,
तुहीं दस्स रवा करां की हुण मैं, लिखी एह तूं के तकदीर मैरी ॥३२॥

डाढी सख़्त माह्राज ने कसम पाई, नहिँ सकदा बोल कोई होर भाई,
पई एह ओखी मैरे गल फाई, मट्टी होई खराब अखीर मैरी।
रामचन्दर माह्राज थीँ मैं डराँ, नहिँ ताँ विच नदी जा के डुब मराँ,
मैनूँ दस्स *दिलशाद* मैं केॲा कराँ, होई आन के जान असीर मैरी ॥३३॥

रामचन्द्र का वचन—

लगे कैह्ण माह्राज सुण भाई लछमन, इत्थे बैठ के किऊँ दस्स रोण लगोँ।
सोह्णे साफ सुथरे टुकड़े दिल दे नूँ, पानी हञ्जूँ दे नाल किऊँ धोण लगोँ ।।३४॥

उठ कर जल्दी जो आखेॲा मैं, विच फिकर किऊँ ज़ान डुबोन लगोँ।
मन्नसें हुक्म *दिलशाद* जे न मैरा, जुदा समझ मैथोँ फिर तूं होण लगोँ ॥३५॥

एडे फिकर किऊँ लछमना करन लगोँ, है एह गल्ल केह्ड़ी जिस थीँ डरन लगोँ,
रो रो के कास नूँ मरन लगोँ, ज़रा दिल नूँ रख संभाल प्यारे॥
सैर जंगल दी तैनूँ कराउसाँ मैं, लै के नाल तैनूँ आप जाउसाँ मैं,
रिशी मुनि तपसी दिखलाउसाँ मैं, मैरा है वॉदा सीता नाल प्यारे ॥३६॥

होर गल्ल कोई न सुणा उस नूँ, एह भी आख के नाल लै जा उसनूँ,
विच जंगल दे छोड़ के आ उसनूँ, दित्ता दस्स तैनूँ सारा हाल प्यारे।

---

१. शेखी। २. वंशज।

जा उठ तूँ सीता दे वल भाई, उस नूँ छड के आ जंगल भाई,
लै मन्न मैरी तूँ गल्ल भाई, दिलों दूर कर होर खॅआल प्यारे ॥३७॥

लक्ष्मण का सीता से वचन—

गई लछमन दी पेश न जद कोई, होके चुप उत्थों उठ आउँदा ए।
रथ जोड़ के चल तूँ नाल मैरे, एह सुमन्त नूँ आन सुणाउँदा ए ॥३८॥
कैंह्दा किवें होसी एह कम्म मैथों, दिल विच दलीलाँ दौड़ाउँदा ए।
सीता कोल *दिलशाद* फिर जाके ते, हत्थ जोड़ के सीस नवाउँदा ए ॥३९॥

नाल अदब कीती नमस्कार जाके, उत्ते कदमाँ दे सिर झुकाया ए।
उठो करो दर्शन चल रिशिआँ दे, रथ जोड़ सुमन्त लै आया ए ॥४०॥
मैं भी चलांगा आप दे नाल माताँ, मैनूँ हुक्म माह्राज फरमाया ए।
बाहर खड़ा सुमन्त उडीक रेहा, हत्थ जोड़ *दिलशाद* सुणाया ए ॥४१॥

कीती देर न पल दी फेर सीता, लई कपड़ेआँ दी बन्ह पंड भाई।
लगी कैह्ण एह औरताँ रिशिआँ नूँ, देसाँ मैं सारे जाके वंड भाई ॥४२॥
ल्याउसाँ परत के इक न घर उत्थों, औसाँ मैं उत्थे पल्लाछंड[1] भाई।
दिलशाद नहिं जाणदी एह सीता, होणी मारसी मुँह ते चंड[2] भाई ॥४३॥

सीता का वनवास—

कीती ढिल फिर झरा भी नहिं सीता, उठ के लछमन दे नाल तैय्यार होई।
लैके नाम रब दा निकली मैह्ल विचों, दिल विच होर न कोई विचार होई ॥४४॥
लगी फड़कने सज्जी फिर अक्ख उसदी, उत्ते रथ दे जदों स्वार होई।
गई डर विच दिल *दिलशाद* भावें, घरों निकल रवाँ आखरकार होई ॥४५॥

लैके नाल सीता पेॲा टुर लछमन, गंगा जी ते पोंह्चदा आन भाई।
ग़मगीन उदास मलूल है सी, रही सुध ते बुध न जान भाई ॥४६॥

---

१. खाली हाथ (कपड़ा झाड़ कर)। २. चपेट।

कह्वाँ केॲा हुण सीता नूँ मैं इत्थे, होया दिल दे विच हैरान भाई।
औंदी समझ *दिलशाद* नहिँ कुझ मैनूं, लगा करन एह के भगवान् भाई ॥४७॥

रेहा हो हैरान खलो लछमन, इत्थे हौसला समझ तूँ हारेॲा सू।
सद्द मल्लाह बेड़ी ते स्वार होया, रथ नूँ चा उराह[1] खलारेॲा सू ॥४८॥
षेष-पंज[2] दे विच पै गेॲा फिर ताँ, पार सीता नूँ जद उतारेॲा सू।
ढाईं मार के रोवण *दिलशाद* लगा, हत्थ उलार मत्थे उत्ते मारेॲा सू ॥४९॥

कर चाक पोशाक सिर खाक पाई, उच्चिआँ मार चीकाँ कुरलान लगा।
रही सुध ते बुध न होश कोई, रो रो के हाल गँवान लगा ॥५०॥
कैंह्दा सख्त मुशकल आई पेश एह ताँ, विच दिल दे होण हैरान लगा।
जावाँ छोड़ इकल्याँ किवें सीता, एहो फिकर *दिलशाद* हुण आन लगा ॥५१॥

सीता का लक्ष्मण से वचन—

सीता आखदी लछमना दस्स मैनूं, किस वासते इतना रो रेहोँ।
नहिँ खबर मैनूं होया के तैनूं, किऊँ अपनी जान नूँ खो रेहोँ ॥५२॥
पौंह्ता दुःख तैनूं ऐसा दस्स केह्ड़ा, हार हञ्जू दे किऊँ परो रेहोँ।
दे दस्स *दिलशाद* नूँ हाल सारा, कारण किस बेहाल तूँ हो रेहोँ ॥५३॥

लक्ष्मण का वचन—

कैंह्दा केॲा मैं अपना हाल दस्साँ, रही नहिँ ताकत मुँहो बोलने दी।
मैरे नाल जो रही ए वर्त माताँ, नहिँ हिम्मत ओ बोल के खोलने दी ॥५४॥
भुल्ली होश ते सुरत न रही कोई, सुणी गल्ल जदों प्यारे[3] ढोलँने दी।
कीती बंद झबान *दिलशाद* मैरी, गई टुट तरकड़ी तोलने दी ॥५५॥

सीता का वचन

दे लछमना दस्स तूँ हाल सारा, विच दिल न रख फिकर कोई।
करसाँ मदद तेरी दिल-जान थीँ मैं, रक्ख हौसला न कर डर कोई ॥५६॥

---

१. रास्ते से परे। २. उलझन (छः या पांच)। ३. बहुत प्रिय।

किस वासते रेहों तू रो इतना, मैनूँ प्यारेआ नहिँ खबर कोई।
तैनूँ दुःख *दिलशाद* दस्स है केह्ड़ा, हो फसाद गेआ विच घर कोई ॥५७॥

लछमण का वचन—

रामचन्दर माह्राज ने कोल सद के, लै हुण सुण मैनूँ जेह्ड़ी गल्ल कही ए।
लगे कैह्ण खलकत सारी आखदी ए, सीता कोल रावण पूरा साल रही ए ॥५८॥

इसे वासते रावण नूँ मार के ते, फिर ओही सीता घर रख लई ए।
दित्ता दे बनबास *दिलशाद* तैनूँ, होणी नाल मातां तेरे वरत गई ए ॥५९॥

सीता का वचन—

गल्ल लछमन थीँ लई जद सुण सीता, लगी रोवण सीता झार झार बैह के।
नहिँ जाह कोई, जावाँ किस पासे, लगी दिल विच करन विचार बैह के ॥६०॥

नहिँ भैन भिरा कोई कोल मैरे, अगे किस दुख करां इझहार बैह के।
तुझ बाज *दिलशाद* नहिँ होर कोई, अगे रब दे करे पुकार बैह के ॥६१॥

लछमण का वचन—

लछमन रो के एह फिर कैह्ण लगा, जांदी पेश नहिँ नाल तकदीर माताँ।
लिखे लेख नहिँ सकदा मेट कोई, पौंदे भोगने ओ अखीर माताँ ॥६२॥

भाना[1] रब दा मन्न के सिर उत्ते, कर सबर दिल नूँ दे धीर माताँ।
हुक्म मोड़ *दिलशाद* नहिँ सकेआ मैं, मैरी नहिँ है कोई तकसीर माताँ ॥६३॥

सीता का वचन—

तेरे सामने लछमना मैं इत्थे, जाके विच नदी दे डुब मरदी।
इस जीउने थीँ हैसी मरण चंगा, कदी दुख जुदाई दे न जरदी[2] ॥६४॥

महीने अठाँ दा बच्चा विच गर्भ मैरे, इसे वासते पई हाँ मैं डरदी।
पई भोगसाँ दुख *दिलशाद* बैह के, नहिँ खबर होणी अगोँ केआ करदी ॥६५॥

जा लछमना परत के घर हुण तूँ, मैरा एह पैग़ाम पौंह्चा देना।
केह्ड़े शास्त्र दे विच है एह लिख्या, बेगुनाह नूँ दस्सो सझा देना ॥६६॥

१. होनी। २. सहन करती।

औरत हामला[1] नूँ देना कड्ढ घरों, भारा पाप है एह सुणा देना।
आखे लग के लोकाँ मूरखाँ दे, मुँह धरम थीं नहिं भँनवा[2] देना ॥६७॥

समझ सोच के कम्म माहराज करिए, तोशा[3] नाल किसे नहिं पा देना।
इस थीं पिच्छे सस्स मेरी दे कोल जा के, उत्ते कदमां दे सिर झुका देना ॥६८॥

कैह्णा बखशीं भुल जे होई कोई, रखना याद, न दिलों भुला देना।
दित्ता कड्ढ माहराज ने घर विचों, एह ही लछमना आख सफा देना ॥६९॥

मैं बेदोस विच दोस न अहा कोई, सारा हाल एहवाल बतला देना।
फिरदी रुलदी जंगलां विच सीता, बैह के कोल *दिलशाद* समझा देना ॥७०॥

लक्ष्मण का लौट जाना—

दित्ता छोड़ लछमन सीता रोंदड़ी नूँ, नाले आप रोंदा झारोझार है सी।
गेआ पौंह्च फिर आ के उस जाई[4], आया रथ नूँ जित्थे खिलार है सी ॥७१॥

आंसू वाँग बरसात दे चल रहिआँ, होया दिल दे विच बेझार है सी।
इधर उधर *दिलशाद* न गेआ किधरे, सिद्धा पौंह्चेआ विच दरबार है सी ॥७२॥

कीती अरज़ लछमन हत्थ जोड़ के ते, सीता विच बन दे जा के छोड़ आया।
हाय रोंदड़ी ते कुरलाँदड़ी नूँ, शौह[5] दुःखां दे विच मैं बोड़ आया ॥७३॥

डरदा तुस्साँ थीं कुझ न बोल सकेआ, दुखी वेख के मुँह नूँ मोड़ आया।
रो रो के आख *दिलशाद* रेहा, हुक्म आपदा चाहड़ मैं तोड़ आया ॥७४॥

रामचन्दर माहराज ने चुप हो के, लेआ सुण जो लछमन बेआन कीता।
लग दिल ते चोट गई सख़त भारी, ग़म सीता दे आन हैरान कीता ॥७५॥

सुणदे रहे खामोश हो हाल सारा, मुँहों बोल न कुझ पुरसान कीता।
कैंह्दे कुझ *दिलशाद* ताँ केआ कैंह्दे, पैह्ले आप जद एहो फरमान कीता ॥७६॥

सीता का वृत्तान्त—

गेआ टुर जदों लछमन छोड़ के ते, हो हैरान सीता ओथे रो रही ए।
नहिं कोल कोई कह्वे बोल जिसनूँ, बैह के हञ्जू दे हार परो रही ए ॥७७॥

---

१. गर्भवती। २. विमुख। ३. पाथेय (मार्ग के लिए भोजन)। ४. स्थान। ५. सागर।

रैह्साँ किवें इकल्लड़ी विच वन दे, विच दिल दलीलाँ कई ढो रही ए।
वाह वाह लेख अजीब नसीब मैरे, मैरे नाल *दिलशाद* के हो रही ए ॥७८॥

ढाईं मार के बन दे विच सीता, पई रोवँदी बैठ इकल्लड़ी ए।
कैंह्दी कोल नहिँ भैन भिरा कोई, न कोई संग साथी न सहेलड़ी ए॥७९॥
नहिँ जाह कोई रैह्ण बैह्ण कारण, न कोई मैह्ल माड़ी न हवेलड़ी ए।
नहिँ खबर किस जनम दा पाप लगा, किसमत खेल अपुठड़ी खेलड़ी ए ॥८०॥
इस जीउने थीँ मर जान चंगा, गई छप किऊँ मौत मेरेलड़ी[1] ए।
अगे रब फरयाद *दिलशाद* मैरी, उसदे बाझ न होर कोई बेलड़ी[2] ए ॥८१॥

कवि-वचन —

बालक रिशिआँ दे पए खेडदे सन, सीता रही जित्थे कुरला मित्तरा।
होए हैरान आवाझ सुन रोवने दी, लगे वेखने कोल फिर आ मित्तरा ॥८२॥
औरत रोवँदी वेख के बिच बन दे, पए उठ के घराँ नूँ धा मित्तरा।
वालमीक दे कोल *दिलशाद* जाके, दित्ता बालकां हाल सुणा मित्तरा ॥८३॥

वालमीक नूँ बालकां जा केहा, लओ सुण माह्राज जी गल साडी।
रोंदी इस्तरी पई इक विच बन दे, करो धेॲान झरा तुस्सी वल साडी ॥८४॥
रोना उसदा सुण्या जद असाँ, होश अकल सारी गई ढल साडी।
आए दौड़ के आप दे कोल असी, सकी पेश *दिलशाद* नहिँ चल साडी ॥८५॥

वाल्मीकि का वचन—

गल्ल बालकां दी वालमीक सुण के, उठ के तुरत सीता कोल आया ए।
हैं तूँ कौन बेटी, आई हैं कित्थोँ, रो रो किऊँ हाल गँवाया ए ॥८६॥
बैठी किऊँ इकल्लड़ी विच बन दे, दस अपना हाल सुणाया ए।
फिकर छोड़ *दिलशाद* दे धीर दिल नूँ, रिशि बैठ के कोल समझाया ए ॥८७॥

१. निर्बल। २. साथी।

सीता का वचन—

सीता रो के आखदी सुणो मैथों, मेरे नाल जो होई माहराज है जी।
सीता नाम ते जनक दी हाँ बेटी, रामचन्दर सिर मेरे दा ताज है जी ॥८८॥

दित्ता कड्ढ मैनूँ उन्हाँ घर विचों, मेरी हत्थ भगवान् दे लाज है जी।
देवे धीर *दिलशाद* जो आन मैनूँ, इत्थे कौन मेरा रब दे बाज है जी ॥८९॥

वाल्मीकि का वचन—

रिशी आख्या लै तूँ सुण बेटी, होणी टालेआँ कदी न टलदी ए।
झबरदस्त भारी है ओ सारेआँ थीँ, पेश उस दे नाल न चलदी ए ॥९०॥

जदों आन ओ वरतदी सिर उत्ते, फिर एह ठिलेआँ[1] कदी न ठिलदी[2] ए।
हुक्म रब दे बाझ *दिलशाद* कदी, पत्ती रुक्ख दी इक न हिलदी ए ॥९१॥

भाना रब दा मन्न के सिर उत्ते, रक्ख हौसला दिलों न डोल बेटी।
देसां होण तकलीफ न कोई तैनूँ, उठ रहो चल के मेरे कोल बेटी ॥९२॥

कर भजन भगवान् अकन्त रह के, हरि हर मुँहों पई बोल बेटी।
लै बाप बराबरी समझ मैनूँ, चल उठ न दुक्खड़े फोल बेटी ॥९३॥

रही सही न उमर गँवा ऐवें, मानस जनम है समझ अनमोल बेटी।
दिलशाद हर इक दे सिर उत्ते, है वज्जदा मौत दा ढोल बेटी ॥९४॥

आश्रम में प्रवेश—

वालमीक दी गल्ल एह सुण के ते, आ सीता दे दिल नूँ धीर गई ए।
कीती गल्ल न परत के फेर कोई, उठ के नाल रिशी उत्थों टुर पई ए ॥९५॥

मैहल माड़िआँ गैइआँ सू भुल दिलों, कुटिया विच गुझरान हुण कर रही ए।
लगी रैहण *दिलशाद* विच बन सीता, करनी रब दी सिर ते झल लई ए ॥९६॥

वालमीक दी कुटिया दे विच रैह के, सीता प्यारेआँ करन गुझरान लगी।
कदी हस्सदी ते कदी रोवँदी ए, दिन मौत दे बैठ बितान लगी ॥९७॥

---

१. रोकने। २. रुकती।

करे याद कदी पेके[1] सौहरेआँ[2] नूँ, कदी सैयाँ[3] वल करन धेआन लगी।
है बेअन्त *दिलशाद* भगवन्त माया, इस दी किसे नूँ नहिँ पैह्चान लगी ॥९८॥

भाना रब दा मन्न के सिर उत्ते, सीता रही ए दिन गुज़ार प्यारे।
विच जंगल दे करन गुज़रान लगी, दिलों रंग महल वसार प्यारे ॥९९॥

कोई अंगँ[4] ते साकँ नहिँ कोल उसदे, जान अकलड़ी दुःख हज़ार प्यारे।
घर महाराजेआँ दे पैदा हो के ते, फिरदी जंगलां दे विचकार प्यारे ॥१००॥

करदी हुक्म जो आही विच घर बैह के, अज आप होई खिदमतगार प्यारे।
हीरे रैंह्दे ख़ज़ाने विच कोल जिसदे, ओही कौडिओं अज लाचार प्यारे ॥१०१॥

मालक आही जो प्यारेआ मुल्क संदी, लैंदा नहिँ उसदी कोई सार प्यारे।
खण्ड खीर नेआमतां[5] खाए जेहड़ी, न सी जिसनूँ कोई अपार[6] प्यारे ॥१०२॥

कंदमूल ओही अज खावँदी ए, हत्थीँ अपनी कर तैय्यार प्यारे।
नहिँ अंत बेअंत भगवंत लीला, नहिँ आउँदी विच शुमार प्यारे ॥१०३॥

केआ मजाल है किसे दी दस्स मैनूँ, सके उस अगे दम मार प्यारे।
डरदा रहो *दिलशाद* तूँ रब कोलों, खबरदार मत करें हंकार प्यारे ॥१०४॥

लव और कुश का जन्म—

होई हँमल[7] दी आन मैय्याद पूरी, हुण ताँ वकत पैदायशँ[8] दा आया ए।
दो-तिन औरतां नूँ वालमीक सद के, कोल सीता दे चा बहाया ए ॥१०५॥

इत्थे बैठ के करो तुस्सी टैह्ल इसदी, गाफल होवना नहिँ समझाया ए।
लड़के दो *दिलशाद* हो गए पैदा, आ के औरताँ एह सुणाया ए ॥१०६॥

सुण के खबर होया रिशी खुश दिलों, कर सामान तमाम तैय्यार रखदा।
जो कुझ लोड़ है सी दित्ता आन ओही, किसे चीज़ दी नहिँ अपार रखदा ॥१०७॥

'लव' नाम इक दा 'कुश' दूसरे दा, पंत्तरी[9] वेख नछत्र नँतार[10] रखदा।
होंदा गाफल *दिलशाद* नहिँ ओ कदी, हर वकत उन्हाँदड़ी सार रखदा ॥१०८॥

१. पीहर। २. ससुराल। ३. सखियों। ४. सम्बन्धी। ५. सुन्दर भोजन। ६. कमी। ७. गर्भ। ८. उत्पत्ति। ९. पञ्चाङ्ग। १०. शुभ (नक्षत्र) निकाल।

बालकों का पालन—

दोहाँ बालकां नूँ दिलों खुश होके, सीता विच बन दे पई पालदी ए।
रैंह्‌दे हस्सदे खेड़दे हर वेले, उमर आन होई पंज साल दी ए ॥१०९॥
विद्या पढ़न दे वासते फिर दोवें, वाल्मीक दे कोल बहालदी ए।
एह नहिँ जाणदी होवसी केआ अग्गों, बेखबर *दिलशाद* उस हाल दी ए ॥११०॥

पुत्तरां जेही कोई चीझ नहिँ विच दुनिया, मिलदे नहिँ एह किसे नूँ नाल[१] मुल दे।
घर महाराजेआँ दे पैदा हो के ते, विच जंगलां दे पए वेख रुलदे ॥१११॥
बिना बिस्तरे धरती ते लेटदे नीँ, उत्ते सिर जिन्हांदड़े छतर झुलदे।
होंदे डाढे नसीब *दिलशाद* जे नाँ, काह्‌नूँ नाल पुत्तरां फिर मोती तुलदे ॥११२॥

बालकों का विद्याध्ययन—

रिशी बालकां ताईं पढ़ान लगा, कोल अपने दोहीँ बिठलान लगा,
हुनर-फन[२] भी नाल सिखलान लगा, होंदा वेख के पेआ कुरबान मित्तरा।
सुबह उठ के नित भिरा दोवें, कोल रिशी दे बैठदे जा दोवें,
पढ़दे विद्या दिल नूँ ला दोवें, होर तरफ नहिँ किसे धेआन मित्तरा ॥११३॥
पढ़ के शास्तर वेद तैय्यार होए, हर इक फन दे विच होशेआर होए,
नितनेम अन्दर खबरदार होए, सोह्‌णी अजब रसीली झबान मित्तरा।
प्यारी शकल सोह्‌णी दिल नूँ भावँदी ए, खलकत वेख के मोहित हो जावँदी ए,
विद्या गायन *दिलशाद* भी आवँदी ए, हुण ताँ लगे नी होण जवान मित्तरा ॥११४॥

लई पढ़ विद्या जो ठीक है सी, पढ़ाई दोहाँ नूँ जो वाल्मीक है सी,
इक इक थीँ समझ वधीक है सी, सोह्‌णी चन्न दे वाँग शकल मित्तरा।
वाल्मीक रामायण बना सारी, लव-कुश नूँ दित्ती सिखला सारी,
दित्ती याद झबानी करवा सारी, कर धेआन सुनी मैरे वल मित्तरा ॥११५॥
जदों सुर दे नाल ओ गावँदे नीँ, मोहत सुण के लोक हो जावँदे नीँ,
हर इक नूँ दिलों पए भावँदे नीँ, विच जंगल दे अहा मंगल मित्तरा।

---

१. कीमत। २. कला-कौशल।

एह ताँ समझ *दिलशाद* तूँ हाल सारा, जेहड़ा वरतेआ सीता दे नाल सारा,
लेआ सुण असाँ कर ख़ेआल सारा, तूँ हुण फिर अजुध्या चल मित्तरा ॥११६॥

रामचन्द्र का दरबार—

रामचन्दर माह्राज ने, सुण मैथों, लाया आम[1] इक रोज़ दरबार प्यारे।
आहे कोल वज़ीर दीवान सारे, अते होर बौह्ते एहलकार प्यारे ॥११७॥

सद के कोल एह लछमन नूँ कैह्ण लगे, सुण भाई मेरे वफ़ादार प्यारे।
फ़र्ज़ राजेआँ दा है अदल करना, होना ज़ुलम दा नहिँ रवादार प्यारे ॥११८॥

हक किसे दा लवे न खोह कोई, सच झूठ दी करनी नितार प्यारे।
नेक-बद दी खबर ज़रूर रखनी, रैंह्दा राज ताईँ बेरकरार[2] प्यारे ॥११९॥

होंदा नष्ट ओ राज है बौह्त जल्दी, जिस राज अंदर अंधकार प्यारे।
जा के वेख तूँ शैह्र दे विच फिर के, गली कूचिआँ विच बाज़ार प्यारे ॥१२०॥

दुखी कोई इनसान ताँ नहिँ किधरे, करदा कोई ताँ नहिँ पुकार प्यारे।
या के होर तकलीफ कोई है किसे, दित्ते दुष्ट पापी मैं ताँ मार प्यारे ॥१२१॥

देख-भाल के आ तूँ शैह्र विचोँ, ओही दिल एह मेरे विचार प्यारे।
लछमन सुण के हुक्म नहिँ देर कीती, होया उठ के तुरत तैय्यार प्यारे ॥१२२॥

आया निकल दरबार थीँ बाहर जल्दी, लगा फिरन फिर शैह्र विचकार प्यारे।
हर कोई हसदा खेडदा नज़र आया, नहिँ वेख्या कोई दुख्यार प्यारे ॥१२३॥

सुणी सिफत माह्राज दी हर पासे, हर इक घर विच वेद-प्रचार प्यारे।
डिट्ठा ज़ुलम दा नहिँ निशान किधरे, न कोई चोर बदमुआश बदकार प्यारे ॥१२४॥

तंदरुस्त इनसान शादान सारे, न कोई दुःख ते न आज़ार[3] प्यारे।
हो के खुश वापस *दिलशाद* आया, होया आन के अरज़गुज़ार[4] प्यारे ॥१२५॥

लक्ष्मण का वचन—

कीती गश्त माह्राज विच शैहर सारे, खाली छोड़ेआ नहिँ मैं घर कोई।
डिट्ठे खुश खुरसंद आनंद सारे, दुखी देख्या नहिँ बशर कोई ॥१२६॥

१. सर्वसाधारण के लिए। २. स्थिर। ३. कष्टयुक्त। ४. प्रार्थी।

बैठा बाहर दरवाज़े ते इक कुत्ता, मैनूँ उस दी नहिँ खबर कोई।
पुच्छो सद्द के कोल *दिलशाद* उसनूँ, होया उस ते शायद जबर कोई ॥१२७॥

रामचन्द्र का वचन—

लगे कैह्‌ण माह्‌राज सुण भाई लछमन, कोल कुत्ते दे उठ के जा जल्दी।
रोक-टोक दरबार विच नहिँ कोई, मेरे सामने दे पौंह्‌चा जल्दी ॥१२८॥

पुच्छाँ दुख उसनूँ पौंह्‌ता है केह्‌ड़ा, देवे आन के हाल सुणा जल्दी।
देसाँ दाद *दिलशाद* फ़रयाद दी मैं, जाके कुत्ते नूँ इत्थे लैआ जल्दी ॥१२९॥

कुत्ते का आवेदन—

कीती ढिल लछमन नहिँ हुक्म सुण के, जाके कुत्ते नूँ नाल लै आया ए।
खड़ा सामने तख़त दे हो के ते, कुत्ते सिर नूँ चा झुकाया ए ॥१३०॥

आया किस कारण दस्स तूँ इत्थे, रामचन्दर माह्‌राज फ़रमाया ए।
पौंह्‌ता दुख तैनूँ दस्स है केह्‌ड़ा, तेरे दिल नूँ किस दुखाया ए ॥१३१॥

कुत्ते आखेआ केआ माह्‌राज दस्साँ, हर इक ते आपदा साया[1] ए।
कीता जिस पैदा है सारेआँ नूँ, उसे रब ने मैनूँ बनाया ए ॥१३२॥

समझन लोक पलीत[2] ते नीच मैनूँ, किसमत विच मैं एह लिखवाया ए।
हर जा ते मैं दुरकार खावाँ, हर दर ते मुँह फटकाया ए ॥१३३॥

कराँ किसे दा न नुकसान कदी, न मैं किसे दा कुछ चुराया ए।
सबर शुकर कर के रह्‌वाँ हर वेले, विच फाकेआँ वकत लंघाया ए ॥१३४॥

कर्म-भोग मैं अपने भोगदा हाँ, कदी सोग[3] न दिल ते लाया ए।
चुप-चाप करके रह्‌वाँ मैं बैठा, न मैं किसे नूँ कदी सताया ए ॥१३५॥

खा के नमक हराम न कराँ कदी, मैनूँ एह उस्ताद पढ़ाया ए।
बेगुनाह इक बाह्मण ने मार के ते, मेरी होश ते अकल भुलाया ए ॥१३६॥

इसे वासते आया हाँ मैं इत्थे, सच्चो सच मैं आख सुणाया ए।
देओ कर इन्साफ *दिलशाद* मेरा, कुत्ते वासता रब दा पाया ए ॥१३७॥

---

१. आश्रय। २. अपवित्र। ३. शोक।

रामचन्द्र की कुत्ते से बात—

है ओ कौन ब्राह्मण कित्थे है रैंह्‌दा, जल्दी दस्स तूँ नाम-निशान उसदा।
पुच्छाँ उसनूँ मारेॲा किऊँ है तूँ, तूँ भी लवेंगा सुण बेॲान उसदा ॥१३८॥
कुत्ते आखेॲा नाम मैं जाणदा नहिँ, लैसाँ घर बेशक पछान उसदा।
देओ टोर *दिलशाद* कोई नाल मेरे, देसाँ दस्स माह्‌राज मकान उसदा ॥१३९॥

लेॲा सुण माह्‌राज एह हाल जदों, कुत्ते नाल फिर अरदली[1] लायो ने।
देसी दस्स कुत्ता तैनूँ घर जिसदा, उस नूँ नाल लै आ फरमायो ने ।१४०॥
कैह्‌णा कुझ नहिँ उसनूँ तूँ उत्थे, लैके आउना नाल समझायो ने।
खबरदार *दिलशाद* न देर होवे, आउना परतं[2] के जल्द सुणायो ने ॥१४१॥

लैके अपने नाल फिर अरदली नूँ, कुत्ता पेॲा दरबार थीँ चल मित्तरा।
ब्राह्मण इक दे घर दे कोल जाके, गेॲा बैठ कुत्ता बुहा[3] मल मित्तरा ॥१४२॥
अंदर घर दे जा नहिँ सकदा ओ, लगा तकने अरदली वल मित्तरा।
दित्ता दस्स *दिलशाद* इस घर मैनूँ, प्यारे समझेॲा नाल अक्ल मित्तरा ॥१४३॥

सद्द के ब्राह्मण नूँ अरदली कैह्‌ण लगा, इस कुत्ते ने कीती पुकारँ[4] है जी।
चलो नाल मेरे आया लैण मैं ताँ, कीता आप नूँ याद सरकारँ[5] है जी ॥१४४॥
करो देर माह्‌राज न हुण तुस्सी, होवँदी आप दी पई इन्तज़ार है जी।
ब्राह्मण अपने नाल *दिलशाद* लै के, होया हाज़र विच दरबार है जी ॥१४५॥

ब्राह्मण अहा तपसी एह वड्डा भारा, हरदम सिमरदा नाम भगवान् है सी।
रैंह्‌दा मगन विच भजन दे हर वेले, बोले झूठ न, सच्ची ज़बान है सी ॥१४६॥
रत्ता लाल चेह्‌रा चमके चन्न वाँगोँ, एही तपदा समझ निशान है सी।
आँदा अरदली नाल *दिलशाद* उसनूँ, खड़ा विच दरबार दे आन है सी ॥१४७॥

---

१. सेवक (चपरासी)। २. वापस। ३. द्वार। ४. प्रार्थना। ५. स्वामी।

रामचन्द्र का ब्राह्मण से वचन—

निमस्कार कर बाह्मन नूँ रामचन्दर, लगे विच दरबार फरमान प्यारे।
है चण्डाल करोध बेशक भारा, कर करोध कई जान गँवान प्यारे ॥१४८॥

रैंह्दी सोच विच गुस्से दे नहिँ कोई, न कोई होवँदी होर पछान भाई।
तप-जप जेह्ड़े उमर विच कीते, गुस्सा कीतिआँ नष्ट हो जान प्यारे ॥१४९॥

जावे खल घोड़ा जे कर ज़ोरवाला, लैंदा उस नूँ पकड़ इन्सान प्यारे।
गुस्से नाल नहिँ जावँदी पेश कोई, मुशकल गुस्से दा है हटान प्यारे ॥१५०॥

गुस्सा है भारा दुश्मन आदमी दा, वले समझदे नहिँ नादान प्यारे।
गुस्से विच जावे हो कम्म जेह्ड़ा, लगदा उस दा पिच्छों अरमान प्यारे ॥१५१॥

इस कुत्ते नूँ मारेआ किऊँ तुस्साँ, कीता इस सी केआ नुकसान प्यारे।
कीती इस फरयाद *दिलशाद* आ के, है हुण आपदा केआ बेआन प्यारे ॥१५२॥

ब्राह्मण का निवेदन—

ब्राह्मण आखदा सुणो माह्राज मैथों, कराँ सच्च बेआन मैं हाल साईं।
भुक्खा आह्स मैं ताँ दिन तीसरे दा, सकेआ भुख दी झल न झाल साईं ॥१५३॥

भिच्छेआ करन नूँ निकलेआ घर विचों, कीता पूरा न किसे स्वाल साईं।
हो निरास वापस पेआ आउँदा साँ, है साँ भुख दे नाल नढाल साईं ॥१५४॥

बैठा आह विच राह दे एक कुत्ता, दोवें अक्खिआँ कर के लाल साईं।
सोटा मारेआ मैं ज़रूर इसनूँ, होई ज़्यादती इस दे नाल साईं ॥१५५॥

देओ दे सज़ा जो दिल चाहे, कराँ उज़र मैं केआ मजाल साईं।
गुस्से विच *दिलशाद* मैं मार बैठा, गुस्सा है बेशक चण्डाल साईं ॥१५६॥

रामचन्द्र की कुत्ते से बात—

लेआ सुण माह्राज एह हाल जदों, तरफ़ कुत्ते दे फिर धेआन कीता।
ब्राह्मण बोल्या झूठ नहिँ ज़रा इत्थे, सच्चों सच्च सब हाल बेआन कीता १५७॥

बेगुनाह इस मारेआ है तैनूँ, नहिँ तूँ इसदा कोई नुकसान कीता।
देवाँ केआ सज़ा *दिलशाद* इस नूँ, एह माह्राज ने फिर फरमान कीता ॥१५८॥

---

१. दुःख।

हत्थ जोड़ के लगा एह कैह्‌ण कुत्ता, मेरी अरज़ मनज़ूर सरकार होवे ।
देॲो चौधरी तुस्सी बना इसनूँ, एह भी ब्राह्मणां दा नम्बरदार होवे ॥१५९॥
पुन-दान जो किसे थीं लैन ब्राह्मण, उसदे विच एह भी हिस्सेदार होवे ।
ब्राह्मण ताबेॲा रैह्‌ण *दिलशाद* इसदे, एह ही सारेॲाँ दा सरदार होवे ।१६०॥

गल्ल कुत्ते दी सुण के कैह्‌ण लगे, वाह वाह कुत्तेॲा एह सुणाई ए तूँ ।
कीती आन के जद फरियाद पैह्‌ले, फिर किऊँ सज़ा बखश्याई ए तूँ ॥१६१॥
दित्ता चौधरी[1] मैं बना इस नूँ, कीती इसदे नाल भलयाई ए तूँ ।
है भेत *दिलशाद* कोई विच इसदे, दे दस्स किऊँ गल्ल छपाई ए तूँ ॥१६२॥

कुत्ते आखेॲा सुणो माह्‌राज मैथों, इस जूँन[2] अन्दर किवें आया मैं ।
मैं भी ब्राह्मणां दा नम्बरदार है साँ। पिछले जन्म विच सच्च सुणाया मैं ॥१६३॥
कीता कोई न दान मैं दान लै के, इसे वास्ते जनम एह पाया मैं ।
चाहिए एहो सज़ा *दिलशाद* इसनूँ, ताईं चौधरी एह बनवाया मैं ॥१६४॥

कुत्ते केॲा माह्‌राज एह गल्ल मेरी, रखनी याद, न देनी वसार चाहिए ।
उत्ते तख़त ते बैठ के अदल करिए, रखनी दिल विच खौफ करतार चाहिए ॥१६५॥
दइए भेत न रन नूँ कदी दिल दा, नाल सप्प न करना प्यार चाहिए ।
चिट्टे[3] चूह्‌ड़े ते बाह्मण कॅालड़े[4] दा, करना कदी भी नहिं एतबार चाहिए ॥१६६॥
चाहो जिस नूँ भेजना नरक अन्दर, करनी फिर माह्‌राज एह कार चाहिए ।
ब्राह्मण, विधवा, बालक दे धन संदा, देना कर उस नूँ मुखतार चाहिए ॥१६७॥
जिस कम्म नूँ करन माह्‌राज लगिए, पैहले उस विच करनी विचार चाहिए ।
डाकू, चोर, बदमुआश नूँ सज़ा देनी, भलेमानसाँ दा होना यार चाहिए ॥१६८॥
कथा वेद दी होवँदी रहे हर जाह, विच मुल्क दे धर्म-परचार चाहिए ।
दिल विच दया *दिलशाद* हमेश रखिए, देना करोध हंकार नूँ मार चाहिए ॥१६९॥

---

१. मुखिया । २. योनि । ३. गोरे (सफैद) । ४. काला ।

आया निकल दरबार थीं बाहर कुत्ता, गल्लाँ नाल महराज दे कर मित्तरा ।
बन के चौधरी ब्राह्मण देवता भी, गेॲा परत के आपने घर मित्तरा ॥१७०॥

मुल्क अमन अमान दे नाल वसदा, न सी किसे नूँ किसे दा डर मित्तरा ।
वाह वाह समाँ *दिलशाद* अजीब है सी, हर कोई सिमरदा सी हरि-हर मित्तरा ॥१७१॥

गीध और उल्लू की कथा—

इक गिद्ध ते दूसरा उल्लू सुण तूँ, करदे जंगल दे विच गुझरान आहे ।
आपस विच इखलास[1] प्यार है सी, भावें दोहां दे वक्ख मकान आहे ॥१७२॥

बैठे आह्लणे[2] दे विच रैह्ण दोवें, करदे किसे दा न नुकसान आहे ।
न सी गम ते फिक्र *दिलशाद* कोई, रैंह्दे दोहीं हमेश शादान आहे ॥१७३॥

है सी आह्लणा उल्लू दा बौह्त सोह्णा, गिद्ध वेख के दिल थीं डोलेॲा ए ।
जा निकल तूँ इस मकान विचों, जाके उल्लू दे कोल गिद्ध बोल्या ए ॥१७४॥

उल्लू आख्या कर तूँ सोच झरा, मैरे मित्तरा प्यारेॲा ढोलेॲा ए ।
देवाँ छोड़ *दिलशाद* मैं घर किवें, लगों कैह्ण आके के तूँ भोलेॲा ए ॥१७५॥

इसे गल्ल उत्तों गेॲा हो झगड़ा, आपस विच हो पेॲा तकरार साईं ।
रामचन्दर माह्राज दे कोल दोवें, हाझर होए जा विच दरबार साईं ॥१७६॥

देॲो कर माह्राज इन्साफ साडा, असी आप दे आए द्वार साईं ।
हाल अपना झाहर *दिलशाद* कर के, गए बैठ दरबार विचकार साईं ॥१७७॥

लगे कैह्ण वझीरां नूँ रामचन्दर, देॲो फैसला तुस्सी एह कर भाई ।
इस गल्ल दी करो तैखशीस[3] पैह्ले, है किस बनाया ओ घर भाई ॥१७८॥

सझा झूठे नूँ देवनी ओ चाहिए, रक्खे याद जेह्ड़ी उमर भर भाई ।
करना अदल इन्साफ *दिलशाद* पूरा, होवे किसे ते न जबर भाई ॥१७९॥

---

१. पवित्रता । २. घोंसले । ३. खोज ।

लगे पुच्छन वज़ीर फिर गिद्ध कोलों, दस्स कद एह घर बनाया ए ।
कीते रब ने पैदा मनुख जदों, एह गिद्ध ने आख सुणाया ए ॥१८०॥
उल्लू आख्या जद द्रख्त लगे, इस नूँ मैं बना सजाया ए ।
एह ताँ घर *दिलशाद* जी है मेरा, झूठा झगड़ा गिद्ध ने पाया ए ॥१८१॥

करन अरज़ वज़ीर माह्राज अगे, लओ सुण ज़रा कर धेॲान साईँ ।
परम ब्रह्म परमात्मा जिस वेले, दित्ता एह बना जहान साईँ ॥१८२॥
पैह्ले जल ते फिर बनाई धरती, लाए रुक्ख पिच्छों फिर आन साईँ ।
जियां[1]-जन्त कीते फिर उस पैदा, पिच्छे सब थीँ होए इन्सान साईँ ॥१८३॥
कैह्णा उल्लू दा सच्च बेशक है जी, झूठा गिद्ध दा है बेॲान साईँ ।
आया एहो *दिलशाद* विच अकल साडे, अगोँ आप तुसीँ जानी-जान साईँ ॥१८४॥

पए सोचदे आहे माह्राज जदोँ, गई आवाज़ आकाश थीँ आ प्यारे ।
नहिँ गिद्ध एह है मनुख भाई, इस नूँ देवनी नहिँ सज़ा प्यारे ॥१८५॥
एह भी है धर्मात्मा इक राजा, नहिँ इस दी कोई खता प्यारे ।
जो कुछ वरतेॲा इसदे नाल है जी, लओ सुण ओ दिल लगा प्यारे ॥१८६॥
इक दिन गौतम रिशी भी नाल इसदे, बैठा विच रसोई दे जा प्यारे ।
थाल इस दा भुल के लाँगरी[2] ने, अगे गौतम दे रख्या चा प्यारे ॥१८७॥
मास[3] उस दे विच परोसिआ सी, होर्नां नौकर नूँ दित्ता भुला प्यारे ।
गौतम पाई गॅराहीँ[4] जद विच मुँह दे, सुट्टे थुक के परे वगा प्यारे ॥१८८॥
गुस्से नाल चेह्रा लालो लाल होया, राजा वेख के गेआ घबरा प्यारे ।
दित्ता इस नूँ दे सराप रिशी, उसे वकत उत्थे गुस्सा खा प्यारे ॥१८९॥
मास खान दा है तैनूँ शौक राजा, जा तूँ गिद्ध दी जून नूँ पा प्यारे ।
रामचन्दर दा करेंगा जद दरशन, खड़ा कोल उसदे होंसे जा प्यारे ॥१९०॥

१. प्राणिमात्र । २. पाचक । ३. मांस । ४. ग्रास ।

होसी दूर सराप एह उस वेले, दित्ता इस नूँ रिशी सुणा प्यारे।
आया आप दे कोल *दिलशाद* ताईँ, झगड़ा उल्लू दे नाल बना प्यारे ॥१९१॥

सुणी आवाज़ जद ग़ैब दी रामचन्दर, तरफ गिद्ध दी करके धेआन डिट्ठा।
विच दरबार जित्थे खड़ा गिद्ध है सी, उस जा ते खड़ा इन्सान डिट्ठा ॥१९२॥
सुथरा साफ चेहरा चमके चन्न वाँगोँ, मुँहोँ सिमरदा नाम भगवान् डिट्ठा।
खुशशकल जवान *दिलशाद* सोह्णा, उत्ते मत्थे दे राज-निशान डिट्ठा ॥१९३॥

गेआ छुट सराप थीँ जद राजा, माह्राज दी आन के शरण लगा।
कैंह्दा होए कलेश सब दूर मैरे, हत्थ जोड़ के उस्तुति[1] करन लगा ॥१९४॥
जागे भाग तुसाडड़े होए दरशन, उत्ते कदमाँ दे सिर फिर धरन लगा।
नौकर हाँ *दिलशाद* तुसाडड़ा मैं, राजा दम गुलामी दा भरन लगा ॥१९५॥

पेआ मुद्दत दा मैं उडीकदा साँ, है सी दुखाँ ने बहूँ सताया जी।
पौंह्चां कोल मैं आपदे किवें जाके, कोई ढंग न नज़रीं आया जी ॥१९६॥
अज्ज आ गई दलील विच दिल मैरे, चा रब सबब बनाया जी।
झगड़ा उल्लू दे नाल *दिलशाद* करके, दरशन आन तुसाडड़ा पाया जी ॥१९७॥

सारा हाल सराप दा फिर राजे, विच दरबार दे खोल सुणाया वे।
होए अचरज अचंभे दी गल सुण के, होके खुश फिर एह फरमाया वे ॥१९८॥
रहो खुश खुरसंद विच घर जाके, दुख तुसाडड़ा रब हटाया वे।
रुखसत लै *दिलशाद* माह्राज कोलों, राजा अपने राज विच आया वे ॥१९९॥

लवण राचस की कथा—

इक वाकेआ[2] होर भी सुण लै तूँ, दस्साँ हाल मैं उसदा खोल सज्जनाँ।
लैके नाल रिशी च्यवन रिशियाँ नूँ, गेआ आ माह्राज दे कोल सज्जनाँ ॥२००॥

---

१. स्तुति। २. घटना।

जप-तप गए सारे भुल सानूँ, लगा कैहूण रिशी मुँहों बोल सज्जनाँ ।
सुणदा नहिँ फरयाद *दिलशाद* कोई, रहे हो ऐसे डावाँडोल सज्जनाँ ॥२०१॥

रामचन्द्र का वचन—

होए तंग तुस्सी दस्सो किऊँ इतना, है हुक्म जेहड़ा फरमाओ मैनूँ ।
किस गल्ल दी है तकलीफ तुस्साँ, सारा खोल के हाल बतलाओ मैनूँ ॥२०२॥
करसाँ दुख मैं आपदे दूर सारे, करो देर न झब[1] सुणाओ मैनूँ ।
जिस दे वासते आए *दिलशाद* इत्थे, बैह के कोल मेरे समझाओ मैनूँ ॥२०३॥

ऋषि का वचन—

लओ सुण माह्राज जी हाल साडा, जो कुछ वरतेआ है साडे नाल साईं ।
राखश लवण मधपुरी दा है राजा, नहिँ कोई झल सकदा उसदी झाल साईं ॥२०४॥
कित्थों तीक दस्सिए असी झुलम उस दे, दित्ता रिशिआँ नूँ उस गाल साईं ।
तप करदिआँ लवे ओ वेख जिस नूँ, उस नूँ पकड़ के करे हलाल साईं ॥२०५॥
रिशी मार के उस मुका दित्ते, समझो रिशिआँ दा है ओ काल साईं ।
कद उसदा है पहाड़ वाँगोँ, अक्खीं वाँग अंगारेआँ लाल साईं ॥२०६॥
गए बहुतेआँ राजेआँ कोल असी, कीता किसे नहिँ कोई खेआल साईं ।
आए कोल तुसाडड़े हुण इत्थे, है उमीद एह सानूँ कमाल साईं ॥२०७॥
करसो दुख असाडड़े दूर तुस्सी, होर किस दे नहिँ मजाल साईं ।
इसे वासते आए *दिलशाद* असी, दित्ता दस्स असाँ अपना हाल साईं ॥२०८॥

मधुदेओ दा पुत्तर है लवण राखश, सुणो मधु दा तुस्सी बेआन प्यारे ।
कीता तप मधु है सी शिवा जी दा, शिव जी होए उस ते मैहरबान प्यारे ॥२०९॥
तिरह-सूल[2] इक मधु नूँ दे के ते, लगे उस नूँ एह सुणान प्यारे ।
तिरह-सूल हो सी एह विच हत्थ जिसदे, मरसी कदी न ओ सच्च जान प्यारे ॥२१०॥
नाहें हारसे कदी ओ किसे कोलोँ, रैहसी जीत उस दी विच मैदान प्यारे ।
मधु हसदा खेडदा घर आया, लै के शिवाँ कोलोँ वरदान प्यारे ॥२११॥

१. शीघ्र । २. त्रिशूल ।

दित्ता मधु ने दुःख नहिँ कोई सानूँ, न कोई होर कीता नुक्सान प्यारे।
राखश अहा ओ भी बेशक भावेँ, रैह्मदिल है सी दयावान् प्यारे ॥२१२॥

मोया मधु ते लवण नूँ राज मिल्या, लग पेॲा ओ झुलम कमान प्यारे।
देवे तप न करन तपसिआँ नूँ, ओ ताँ है साडा दुश्मन-जान प्यारे ॥२१३॥

नहिँ जाह औंदी सानूँ नझर कोई, करिए बैठ के जित्थे गुझरान प्यारे।
रैंह्दा उसे दा खौफ है हर वेले, सानूँ भुल्या भजन भगवान् प्यारे ॥२१४॥

करो कोई उपाह माह्राज इस दा, आए मंगन एह असी हाँ दान प्यारे।
देॲो राखश नूँ मार *दिलशाद* तुस्सी, करो असाँ ते एह एहसान प्यारे ॥२१५॥

लेॲा रिशिआँ दा सुण हाल जदोँ, छत्रघन नूँ फेर बुलायो ने।
लै के फौज नूँ आपने नाल भाई, मारो राखश नूँ जा फरमायो ने ॥२१६॥

कीता कम तुसाडड़े एह झुम्मा[1], करो देर न आख सुणायो ने।
लओ राज संभाल *दिलशाद* उस दा, टोरो[2] अपना सिक्का समझायो ने ॥२१७॥

सुणी जद माह्राज दी गल्ल भाई, कीती देर न फिर इक पल भाई,
पेॲा मधुपुरी नूँ चल भाई, लै के फौज नूँ आपने नाल मित्तरा।
बाहर शैह्र दे डेरा जमाया सू, झंडा विच मैदान दे लाया सू,
रब चा सबब बनाया सू, छत्रघन दा वेख इकबाल मित्तरा ॥२१८॥

राखश मस्त है सी अपने हाल दे विच, गेॲा आ इकबाल झवाल दे विच,
न सी उसदे एह खेॲाल दे विच, रही खेड होनी केह्ड़ी चाल मित्तरा।
घरोँ निकल्या खेडन शिकार है सी, तिरह सूल नूँ आया वसार है सी,
इस दी कोई *दिलशाद* न सार है सी, खड़ा काल अगे लै के जाल मित्तरा ॥२१९॥

राखश आ के ढूण्डन शिकार लगा, फिरन जंगल दे ओ विचकार लगा,
छत्रघन नूँ मौकेॲा यार लगा, खिच के तीर इक झोर दा मारेॲा सू।

---

१. अधीन (सपुर्द)। २. प्रचारित करो।

निकल तीर सरीर थीँ पार गेऑ, झखम खाके हो लाचार गेऑ,
राखश हौसला दिल थीँ हार गेऑ, उठ के शेर दे वाँग ललकारेऑ सू ॥२२०॥

दूजा तीर उत्तों इक होर यारा, दित्ता छोड़ खिच्च के नाल झोर यारा,
पेऑ डिग्ग राखश फिलफूर यारा, कट के सिर अलग कर डारेऑ सू ।
जदों वासल जहन्नुम शैतान होया, छत्रघन *दिलशाद* शादान होया,
उठ के शैह्र विच फिर रवान होया, मुँहों नाम ओंकार उच्चारेऑ सू ॥२२१॥

लवण राखश दे मरण दी खबर सुण के, होए हाझर वझीर दीवान सारे ।
छत्रघन दे अगे खलो के ते, नाल अदब दे सिर झुकान सारे ॥२२२॥

साडा नहिँ कसूर माह्राज कोई, हत्थ जोड़ के लगे सुणान सारे ।
नौकर असी *दिलशाद* जी आप दे हाँ, जान अपनी लगे बखशान सारे ॥२२३॥

सुण के अरझ वझीराँ दी खुश होया, छत्रघन फिर एह फरमाया ए ।
करो अपना कम्म बेशक तुस्सी, होवे झुलम न कोई सुणाया ए ॥२२४॥

उत्ते तख़त दे आप फिर बैठ जांदा, सिक्का अपना चा चलाया ए ।
गेऑ बैठ तसल्लुत[1] *दिलशाद* जदोँ, ताँ फिर परत अजुध्या आया ए ॥२२५॥

कीती अरझ माह्राज दे कोल आके, लवण राखश नूँ जाके मारेऑ मैं ।
आया खेडन शिकार सीं विच बनदे, सिर उसदा उत्थे उतारेऑ मैं ॥२२६॥

होया मुल्क मतीह[2] माह्राज सारा, महीना रैह के इक गुझारेऑ मैं ।
दर्शन आपदा कराँ *दिलशाद* जाके, विच दिल फिर एह विचारेऑ मैं ॥२२७॥

लगे हस्सन माह्राज एह हाल सुणके, कर प्यार छाती नाल लायो ने ।
उस मुल्क दा करो हुण राज तुस्सी, बैठो तख़त ते जा फरमायो ने ॥२२८॥

---

१. शासन । २. अधीन ।

मैनूँ याद तुसाडड़ी हर वेले, रैहसी दिल दे विच सुणायो ने।
राजनीति असूल *दिलशाद* सारे, बहा के अपने कोल समझायो ने ॥२२९॥

रैह के दिन थोड़े छत्रवन उत्थे, मधुपुरी दे विच फिर आया जी।
मधुपुरी दा रक्खेआ नाम मित्तरा, विच मुल्क ऐलान करवाया जी ॥२३०॥

होया अमन-अमान विच राज सारे, वाह-वाह खूब तसल्लत जमाया जी।
बाग़ी नज़र *दिलशाद* न कोई आवे, सभनां आन के सिर झुकाया जी ॥२३१॥

ब्राह्मण शूद्र तापस की कथा—

इक रोज़ ब्राह्मण इक चुक मुरदा, खड़ा आन के राज-द्वार साईं।
रामचन्दर माह्राज दे कोल अन्दर, कीती अरज़ जा के चोबदार साईं ॥२३२॥

ब्राह्मण इक मुरदा चुक बाहर खला, आउना चाहुँदा विच दरबार साईं।
नहिँ खबर आया इत्थे किस कारण, पेआ रोवँदा है ज़ारोज़ार साईं ॥२३३॥

लगे कैह्ण माह्राज जा सद्द उसनूँ, वेखाँ कौन ओ है दुख्यार[1] साईं।
सुण के हुक्म ब्राह्मण गेआ हो हाज़र, खड़ा आन दरबार विचकार साईं ॥२३४॥

आए किस कारण दस्सो कोल मैरे, केहड़ी गल्ल थीं होए लाचार साईं।
आंदा चुक मुरदा किस वासते एह, करो हाल तमाम इज़हार साईं ॥२३५॥

दस्साँ केआ माह्राज मैं हाल इत्थे, सुणदा कौन है मैरी पुकार साईं।
मैरे जीउँदिआँ मोया एह पुत्तर मैरा, दस्सो किऊँ होई ऐसी कार साईं ॥२३६॥

कीता पाप नहिँ उमर विच मैं कोई, समझो सच्च एह मैरी गुफ्तार साईं।
बाप जीउँदिआँ गेआ किऊँ मर बेटा, विच राज तैरे अन्धकार साईं ॥२३७॥

हो के मस्त न बैठिए तख़त उत्ते, रखनी रैयत दी भी चाहिए सार साईं।
पाया फल मैं पाप तुसाडड़े दा, चढ़्या सिर तुसाडड़े भार साईं ॥२३८॥

इको पुत्र सी मैं ग़रीब संदा, गेआ उजड़ मैरा घर-बार साईं।
जिस बाप दा मरे जवान बेटा, जिउना उस दा किस दरकार साईं ॥२३९॥

१. दुःखी।

रोंदी मार ढाईं पई मा इस दी, विच सिर दे मिट्टिआँ डार साईं ।
रोवे हार-संगार उतार के ते, बैठी घर मैरे इस दी नार साईं ॥२४०॥
देॲो कर झिंदा तुस्सी पुत्तर मैरा, हाँ मैं इस दा दावेदार साईं ।
दिलशाद नहिँ ताँ इसे जाह उत्ते, देसाँ अपने आप नूँ मार साईं ॥२४१॥

ब्राह्मण विच दरबार दे जा रोया, मैरे नाल दस्सो एह के होया,
बाप जिउँदिआ पुत्तर है किऊँ मोया, मैनूँ दे तूँ एह बतला राजा ।
किऊँ उलटी गल्ल माह्राज होई, कीता पाप नहिँ उमर विच मैं कोई,
मैरी अक्खिआँ थीँ रो रो रत्त चोई, मैरे पुत्तर नूँ दे जिवा राजा ॥२४२॥
लेॲा चुक्क ऐथोँ है धर्म डेरा, राज-भाग हो जायगा नष्ट तेरा,
जे कर दूर न करेंगा कष्ट मैरा, देवाँ सच्च मैं तैनूँ सुणा राजा ।
लए ग़माँ ने आन के पा फेरे, दुख दूर कर दे तूँ एह मैरे,
आया मैं *दिलशाद* द्वार तैरे, ख़ैर[1] विच झोली मैरी पा राजा ॥२४३॥

सुणी ब्राह्मण दी गल्ल माह्राज जदोँ, विच दिल दे होण हैरान लगे ।
बाप जीउँदिआँ मोया है किऊँ बेटा, रंगा-रंग दे फिकर दौडान लगे ॥२४४॥
दस्सो सोच के तुस्सी शताब मैनूँ, एह वझीरां नूँ फिर फरमान लगे ।
नहिँ झूठ *दिलशाद* इस विच कोई, ब्राह्मण आखॅआ सच्च सुणान लगे ॥२४५॥

बैठे रिशी भी आहे उस वकत उत्थे, ब्राह्मण जद दरबार विच आया वे ।
चुपचाप हो गए वझीर सारे, उत्ते गोडेॲाँ सिर झुकाया वे ॥२४६॥
सकदा दे जवाब नहिँ कोई उसदा, दिलदे विच हर इक्क घबराया वे ।
नारद उठ के फिर *दिलशाद* उत्थे, एह माह्राज नूँ आख सुणाया वे ॥२४७॥

ब्राह्मण करदे तप विच सतयुग दे, मुल्क खुशी दे नाल आबाद है सी।
होंदी वकतासिर मौत सी हर इकदी, अकालमृत[2] न किसे नूँ याद है सी ॥२४८॥

१. भिक्षा । २. अकाल मृत्यु ।

हक दूसरे दा न सी कोई लैंदा, न कोई झगड़ा न फसाद है सी ।
न सी झूठ दा नाम निशान किधरे, हर कोई बोलदा सच्च *दिलशाद* है सी ॥२४९॥

लगे तप तरतैये[1] विच करन छत्री, कदर ब्राह्मणां दी समझो घट गई ए ।
चौथी धर्म दी टंग तरुट पई ए, चाल समे दी जद उलट गई ए ॥२५०॥

लगी बुद्धि भी होण मलीन आ के, कई कोह विद्या पिच्छे हट गई ए ।
करदा तप कोई नीच *दिलशाद* किधरे, हो एह मौत ताईं झटपट गई ए ॥२५१॥

द्वापर विच फिर वैश भी तप करसन, अते झूठ दा फिर परचार होसी ।
रैहसन धर्म दे पैर दो उस वेले, उस थीं पिच्छे कलजुग दी वार होसी ॥२५२॥

रैहसी पैर इक धर्म दा विच कलजुग, मिट्टी ब्राह्मणां दी फिर ख्वार होसी ।
खासन मास ते पीसन शराब ब्राह्मण, नाहीं धर्म दी कोई विचार होसी ॥२५३॥

सच्च त्याग के बोलसन झूठ मुँहों, कोई उन्हाँ ते न एतबार होसी ।
शूद्र वर्ण भी तप फिर करन लगसी, कौम हर इक शुतर बेमुहार होसी ॥२५४॥

छोटे वड्डे दा अदब न कोई रैहसी, पैदा सारेआँ नूँ हंकार होसी ।
केहा खसम दा मन्नेगी रन्न नाहीं, पिओ पुत्तर कोलों अवाझार होसी ॥२५५॥

होसन झगड़े फसाद विच हर घर दे, भाई भाई संदा खूँख्वार होसी ।
दुश्मन समझ लैसन भाईआँ सकेआँ नूँ, नाल ग़ैरां दे गूढा प्यार होसी ॥२५६॥

बाप जिऊँदिआँ मरणगे पुत्तर बोहते, अकाल मौत भी बेशुमार होसी ।
होसन कई बीमारिआँ विच कलजुग, दुखी समझ लौ सब संसार होसी ॥२५७॥

जुआ, चोरी, झिनाह[2] हर वकत होसी, अंधकार विच राजद्वार होसी ।
लै के वैढिआँ[3] करनगे कम हाकम, सच्च झूठ दा न नितार होसी ॥२५८॥

सुणसी कोई फरयाद गरीब दी न, अते झुलम दा गर्म बाझार होसी ।
रैहसी दया ते धर्म न शर्म कोई, न कोई खौफ *दिलशाद* सरकार होसी ॥२५९॥

---

१. त्रेता युग । २. व्यभिचार । ३. रिश्वत ।

वेखो मुल्क दे विच माहूराज फिर के, होया कोई ताँ नहिँ अपराध किधरे।
नीच कौम दा या मनुख कोई, बैठा लाके है समाध किधरे ॥२६०॥
ब्रह्महत्या होई ताँ नहिँ कोई, या कोई मारेआ किसे ने साध किधरे।
होया पाप या होर *दिलशाद* कोई, या कोई मर गेआ है बिना खाधे किधरे ॥२६१॥

गई सोच विच दिल दे पै भारी, सुणके नारद दा एह झिकर मित्तरा।
गए पुष्प बवान ते फिर चढ़ के, पूरब, पच्छम ते तरफ उत्तर मित्तरा ॥२६२॥
लगे वेखने मुल्क दे विच जाके, पापी आया न कोई नझर मित्तरा।
दक्खन तरफ फिर इक पहाड़ उत्ते, होया आण के जद गुझर मित्तरा ॥२६३॥
फिरदे आहे जद पए पहाड़ उत्ते, उत्ते वेखेआ इक बशर मित्तरा।
करदा तप है सी उत्थे बैठ के ओह, सिर हेठ ते पैर उपर मित्तरा ॥२६४॥
पुच्छन लगे माहूराज फिर कोल जाके, रेहा तप किस वासते कर मित्तरा।
मतलब दिल दा दस्स *दिलशाद* मैनूँ, कर झरा न खौफ खतर मित्तरा ॥२६५॥

तपस्वी का वचन—

मैं ताँ वर्ण दा हाँ माहूराज शूद्र, ऐवेँ उठी दलील विच दिल मैनूँ।
कराँ तप इत्थे बैह के इस कारण, राज इन्दर वाला जावे मिल मैनूँ ॥२६६॥
इन्दर वेखदा नाच अपच्छराँ दे, रड़के[2] विच कलेजड़े किल मैनूँ।
लैसाँ राज *दिलशाद* मैं खोह उसदा, दित्ता रब जद तपदा टिल[3] मैनूँ ॥२६७॥

पै गए सोच दे विच माहूराज सुणके, सिरों मारना इसनूँ धर्म नहिंगा।
नाल इन्दर मुकाबला करन लगा, औंदा इस बेशरम नूँ शरम नहिंगा ॥२६८॥
दइए तप छुड़ा डरा के ते, होना कदी इस ऐवेँ नरम नहिंगा।
बेगुनाह नूँ मार *दिलशाद* देना, कैहूदे राजेआँ दा एह करम नहिंगा ॥२६९॥

लगे शूद्र नूँ कैहूण माहूराज फिर एह, लैके राज नूँ दस्स के करेंगा तूँ।
है भलयाई तेरी इसदे विच भाई, मेरी गल्ल ते कन्न जे धरेंगा तूँ ॥२७०॥

---

१. भोजन। २. चुभता है। ३. शक्ति।

चुप-चाप करके बैठ घर जाके, इत्थे एहमका रह के मरेंगा तूँ।
आउना हत्थ *दिलशाद* नहिँ कुछ तैरे, सुक्के सरोँ[1] पानी केॲा भरेंगा तूँ ॥२७१॥

लै लै धन जितना है लोड़ तैनूँ, दिन खुशी दे नाल गुज़ार बैह के।
तंगी रैहूण देवाँ किसे गल्ल दी न, जाके घर कर मौज बहार बैह के ॥२७२॥
एत्थों हत्थ नहिँ आउना कुच्छ तैनूँ, इत्थे मूरखा जान न मार बैह के।
नहिँ इतबार *दिलशाद* कोई ज़िन्दगी दा, कर लै ऐश-आराम दिन चार बैह के॥२७३॥

कड्ढ के फिर तलवार डरान लगे, जै तूँ कहें ताँ तैनूँ मैं मार देवाँ।
पिच्छों इन्दर दा राज लै लईं जाके, पैहूले कट सिर तेरा उडार देवाँ ॥२७४॥
रेहा खून बाकी जो विच जिसम तैरे, उस दी कर इत्थे त्रुंड्कार[2] देवाँ।
मर्ज़ी केॲा *दिलशाद* दस्स है तेरी, जो तूँ कहेँ ओही कर कार देवाँ ॥२७५॥

सुण के गल्ल शूदर दिलों डरन लगा, उठ के आन माह्राज दी शरण लगा,
हत्थ जोड़ के मिन्नताँ करन लगा, देॲो बखश मैनूँ मैं भुल गेॲा।
एह ताँ अच्छी नसीअत फरमाई है जी, कीती नाल मैरे भलयाई है जी,
मैनूँ राज दी ख्वाहश न काई है जी, हुक्म आप दा सिर ते मन्न लेॲा ॥२७६॥
लैसाँ तप दा कदी न नाम मैं ताँ, करसाँ जाके घर आराम मैं ताँ,
दित्ते छोड़ खेॲाल सब खाम मैं ताँ, सुण के आप दी गल्ल मैं कंब रेहा।
शूदर कहे *दिलशाद* हत्थ जोड़ के ते, रस्सी त्रिशनाँ दी नूँ तरोड़ के ते,
लओ माह्राज हुण तप नूँ छोड़ के ते, नाल आप दे टुर मैं घर पेॲा ॥२७७॥

लै के ज़र कशीर माह्राज कोलोँ, छोड़ तप शूदर घर रवान होया।
आई फिर आवाज़ आकाश उत्तोँ, गोया कोई इन्सान गोयान होया ॥२७८॥

---

१. सरोवर। २. छिड़काव।

लड़का ब्राह्मण दा भी हो गेआ झिन्दा, इन्दर आपदे झेर एहसान होया।
रास कम्म *दिलशाद* हो गए साडे, नाम आप दा रोशन जहान होया* ॥२७९॥

* *कवि-वचन—*

मैरे मित्तराँ प्यारेआँ सज्जनाँ नूँ, शायद इस दी समझ न आई होसी।
तप करन थीँ रोकेआ किऊँ शूदर, रमझ[1] इसदी शायद न पाई होसी ॥ १ ॥
शश-पन्ज दे विच पै गए होसन, विच दिल दलील दौड़ाई होसी।
दे हुण खोल के दस्स *दिलशाद* इत्थे, नज़र तरफ तैरी उन्हाँ लाई होसी ॥ २ ॥

घोर तप इस शूदर दा वेख के ते, पै इन्दर दे दिल विच डर गेआ।
इक ब्राह्मण गरीब दे पुत्तर ताईँ, ऐसा आन बेहोश ओ कर गेआ ॥ ३ ॥
न ओ हिलदा ते न ओह बोलदा सी, बैठे समझ माँपे[2] गोया मर गेआ।
रो रो पए *दिलशाद* एह आखदे नीँ, हाय ! उजाड़ बचा साडा घर गेआ ॥ ४ ॥

मौत पुत्तर प्यारे दी वेख के ते, गुस्से विच ब्राह्मण लाल लाल होया।
लगा कैहूण माहराज दे कोल जाके, लओ वेख जो कुझ मैरे नाल होया ॥ ५ ॥
तैनूँ नहिँ रैअत दी खबर कोई, राजा बन के मस्त विच हाल होया।
कीता पाप *दिलशाद* मैं दस्स केहड़ा, जुदा किओँ मैथोँ मैरा लाल होया ॥ ६ ॥

लेआ वेख अक्खीँ जद हाल सारा, हो हैरान इन्दर दिल विच कैहूण लगा।
रेहा कर शूदर है एह तप जेहड़ा, एह ताँ राज मैरा हुण लैण लगा ॥ ७ ॥
रेहा सोच तदबीरां विच दिल दे, बैहरे-फिकर[3] दे विच हुण बैहूण लगा।
फैरी गल्ल *दिलशाद* जद नहिँ कोई, धर हत्थ मत्थे उत्ते बैहूण लगा ॥ ८ ॥

लई सोच तदबीर अखीर ओही, ब्राह्मण नाल जो इन्दर वरताई है सी।
नारद मुनि भी ओसे भेज दित्ता, कचैहरी रामचन्दर जित्थे लाई है सी ॥ ९ ॥
नारद जा के जो बेआन कीता, एहो गल्ल उसनूँ उस सिखाई है सी।
कीता कम *दिलशाद* एह ताईँ उसने, उसदी उसदे विच भलयाई है सी ॥१०॥

एह ताँ रचना इन्दर रचाई सारी, करना होर नहिँ तुस्साँ खेआल मित्तरो।
कम्म आपना आप सँवारने नूँ, दित्ता इन्दर खिलार एह जाल मित्तरो ॥११॥
लवे कर तपस्या चाहे जेहड़ा, ऊँच-नीच दा नहिँ सवाल मित्तरो।
करो भजन *दिलशाद* बेशक तुस्सीं, मनह करे कोई केआ मजाल मित्तरो ॥१२॥

१. रहस्य। २ माता-पिता। ३. चिन्ता के समुद्र में। ४. सूझी।

कंगन की कथा—

रामचन्द्र माह्राज जी खुश होके, चढ़ बवान ते वापस रवान होए।
गए अगसत रिशि मिल विच राह दे, दे असीस ओ हाल पुरसान होए ॥२८०॥
जागे सुत्ते नसीब माह्राज मैरे, दरशन आप संदे जद आन होए।
रहो तुस्सी *दिलशाद* अज्ज कोल मैरे, मिन्नतवार होके गोयान होए ॥२८१॥

दिन दूसरे लगे जद टुरन ओथों, आके रिशी नूँ फिर नमस्कार कीती।
कंगन जड़त सुनहरी अजीब सोह्णा, देके रिशी फिर एह गुफ्तार कीती ॥२८२॥
बोह्त मुद्दत दा पेऑ एह कोल मैरे, पूरी ख्वाहश मैरी अज करतार कीती।
लायक आपदे है *दिलशाद* एह ताँ, मैं एह दिल दे विच विचार कीती ॥२८३॥

एह ताँ कंगन माह्राज है बोह्त सोह्णा, अज तक नहिँ आया नज़र ऐसा।
भला होर दिआँ देवाँ छोड़ गल्लाँ, पादशाहाँ दे भी नहिँ घर ऐसा ॥२८४॥
वाह वाह जड़त ते घड़त[1] इस कंगन दी ए, सकदा नहिँ तैय्यार कोई कर ऐसा
घड़ेऑ किस *दिलशाद* एह है कंगन, दस्सो है ओ कौन ज़रगर[2] ऐसा ॥२८५॥

रिशी आखदा कंगन दा हाल सारा, सुणो करके ज़रा धेऑन प्यारे।
मिल्या एह कंगन जित्थों है मैनूँ, लओ सुण मैथों मेह्रबान प्यारे ॥२८६॥

१. बनावट। २. सुनार।

कोई किसे नूँ मनाह नहिँ कर सकदा, जिसदा दिल चाहे जपे नाम रब दा।
ज़ात पात दी नहिँ परवाह रखदा, मिल्लत मजहब दे नाल नहिँ काम रब दा ॥१३॥
शक शुबे सारे दिलों दूर करके, पए करो सिमरन सुबह शाम रब दा।
मन्नो गल्ल *दिलशाद* एह सच मैरी, पैदावार एह आलम तमाम रब दा ॥१४॥

वाल्मीक रिशी विच रामायण दे जी, इत्थे सिर उस शूदर दा कट्या ए।
आया नहिँ पसन्द एह दिल मैरे, मैं इस ज़िकर ताईं ता हुण सिट्टया[1] ए ॥१५॥
बदी नाल किसे नहिँ करन चंगी, कर बुरयाई नफह किस खट्टेआ ए।
उसनूँ नहिँ कोई मार *दिलशाद* सकदा, जिस फिर नाम भगवान् दा रट्टेआ ए ॥१६॥

१. छोड़ दिया।

गुझरी मुद्दत बोह्ती इस गल्ल ताईं, उठ्या खेॲाल मैनूं एह आन प्यारे।
कराँ चल के सैर हुण जंगलाँ दी, लई विच दिल दे एहो ठान प्यारे ॥२८७॥

कीती ढिल इक तिल[१] न मैं उत्थे, कुटिआ छोड़ के होया रवान प्यारे।
कई दिनाँ दे बाद फिर सुणो तुस्सी, पौंह्ता जा विच इक बियावान[२] प्यारे ॥२८८॥

आया अन्त उस जंगल दा न कोई, लगा नझर हर तरफ दौड़ान प्यारे।
फल फुल कई किसम दे आहे लगे, ते द्रखत सोह्णे दिल नूँ भान प्यारे ॥२८९॥

ठंडेठार पानी इक जा उत्ते, घास नरम रेशम कोलों जान प्यारे।
किधरे आही लैंहाई[३] चढ़ाई किधरे, किधरे सोह्णा साफ मैदान प्यारे ॥२९०॥

कह्वाँ जंगल या उसनूं सुरग कह्वाँ, होया वेख के दिल शादान प्यारे।
सिफत जंगल दी होवँदी नहिँ मैथों, ताकत नहिँ विच मेरी झबान प्यारे ॥२९१॥

अज तक वेखेॲा मैं नहिँ कोई, सुन्दर साफ ऐसा अस्थान प्यारे।
जिया-जन्त डिट्ठा न कोई किधरे, न हैवान ते न इनसान प्यारे ॥२९२॥

पए कोई आवाझ न विच कन दे, हर इक जा उत्ते सुनसान प्यारे।
होया वेख के एह हैरान मैं ताँ, है एह किऊँ जंगल वीरान प्यारे ॥२९३॥

आया समझ दे विच न कुछ मैनूं, है बेअन्त लीला भगवान् प्यारे।
पेआ उठ के फिर मैं टुर उत्थों, सकेॲा कर न कोई पछान प्यारे ॥२९४॥

बहूँ दूर जद निकल माह्राज आया, सुणो अग्गों फिर तुस्सी बेॲान प्यारे।
पेॲा नझर तैंला[४] इक बौह्त सोह्णा, पंछी बोलदे खुश अलहान प्यारे ॥२९५॥

सुथरे साफ तला नूँ वेख के ते, कीता उसदे विच अश्नान प्यारे।
करके संध्या तरपण मैं उत्थे, कंद-मूल कीता अनुपान प्यारे ॥२९६॥

मुरदा इक डिट्ठा पेॲा उस जा ते, लगा उसनूं जदों जलान प्यारे।
सोह्णी सुर दे नाल आवाझ सोह्णा, अचनचेत पेॲा विच कान प्यारे ॥२९७॥

लगा तक्कन मैं उठ के हर पासे, आया नझर न कोई मकान प्यारे।
कह्वाँ कित्थों आवाझ एह आ रही ए, किऊँ नहिँ दिसदा कोई निशान प्यारे ॥२९८॥

---

१. किञ्चिन्मात्र। २. घोर वन। ३. उतराई। ४. तालाब।

तक्केआ जद असमान दे वल फिर मैं, औंदा नज़र इक पेआ बवान प्यारे।
डिट्ठा विच बवान इन्सान बैठा, अगे उस अपच्छराँ गान प्यारे ॥२९९॥
[1]लैथा आन बवान तला उत्ते, बाहर निकल्या आ जवान प्यारे।
गेआ बैठ फिर मुरदे दे कोल जा के, कप्प के मास उस तोँ लगा खान प्यारे ॥३००॥
कप्पे मास जितना होवे फिर उतना, होया मैं एह वेख हैरान प्यारे।
खा के मास धोता हत्थ मुँह उसने, उठ के लगा बवान चलान प्यारे ॥३०१॥
एह वेख के रैह न सक्केआ मैं, जाके कोल फिर लगा सुणान प्यारे।
होके देवता मुरदे दा मास खाना, दस्सो दस्सेआ किस गेआन प्यारे ॥३०२॥
मेरे भरम नूँ जाउना दूर करके, शक्क शक्की दा लाज़म[2] हटान प्यारे।
इतना आख ताँ मैं *दिलशाद* बैठा, लगी नाल डरदे निकलन जान प्यारे ॥३०३॥

इतना पुच्छ ताँ मैं माह्राज बैठा, एहपर दिल विच पेआ फिकर साईँ।
नाल डरदे निकलन जान लगी, कंब सरीर रेहा थर-थर साईँ ॥३०४॥
लगा कैह्‌ण फिर ओ जवान मैनूँ, सुण हाल मेरा न तूँ डर साईँ।
हैसाँ देश बिदर्भ मैं राजा, पिछले जनम विच सुणो ज़िकर साईँ ॥३०५॥
रह्‌वाँ ऐश दे विच मैं रात-दिने, नाम रब दा गेआ विसर साईँ।
कीता पुन्न ते दान न मैं कोई, हिस्सा उमर दा गेआ गुज़र साईँ ॥३०६॥
इक रोज़ इतफाक हो गेआ ऐसा, आए दो रिशी मेरे घर साईँ।
पुच्छेआ उन्हाँ थीँ दस्सो माह्राज मैनूँ, रैह्‌दी कितनी मेरी उमर साईँ ॥३०७॥
केहा रिशिआँ ने रह गई बौह्‌त थोड़ी, बैठे बौह्‌ती कर [3]बसर साईँ।
दिन आ नेड़े हुण मौत संदे, नहिँ तुस्साँ नूँ कोई खबर साईँ ॥३०८॥
सुणी खबर जद मौत दी फिकर लग, लओ सुण ज़रा कन्न धर साईँ।
आया निकल मैं घर थीँ विच बन दे, राज ह्‌वालड़े भाई दे कर साईँ ॥३०९॥
रैहँ के विच बन दे करन तप लगा, रेहा सिमर हरदम हरिहर साईँ।
पूरी होई मैयाद *दिलशाद* जदोँ, ऐसे जाह उत्ते गेआ मर साईँ ॥३१०॥

---

१. उतरा। २. उचित। ३. व्यतीत।

गेॲा मिट्टी दा छुट सरीर जदों, पौंह्ता सुरग दे विच मैं जा भाई ।
वेख वेख के होवँदा खुश है साँ, लगी भुक्ख डाढी उत्थे आ भाई ॥३११॥
डिट्ठी चीझ न उत्थे कोई खावने दी, लई नझर चौफेर दौड़ा भाई ।
केहॅा ब्रह्मे दे कोल फिर मैं जाके, मैनूँ रही है भुख सता भाई ॥३१२॥
नहिँ खान कारण कोई चीझ उत्थे, खावाँ केॲा मैं देॲो बता भाई ।
ब्रह्मे आखेॲा देवाँ दस्स केॲा तैनूँ, जाके अपने मास नूँ खा भाई ॥३१३॥
राजा हो के नाहिं कोई दान कीती, दित्ती ऐश विच उमर गँवा भाई ।
तप विच भी रक्खेॲा हाल ओही, दित्ता कक्ख न किसे नूँ चा भाई ॥३१४॥
कंद-मूल अकलड़ा खावँदा साँए, सक्यों मुँह न किसे दे पा भाई ।
मिल्या तप दा समझ एह फल तैनूँ, मिली सुरग दे विच है जाह भाई ॥३१५॥
आयों जंगल दे विच सुट लाश जेह्ड़ी, उस नूँ खा के भुख हटा भाई ।
खासें मास जितना उतना फिर होसी, घटसी कदी न समझ झरा भाई ॥३१६॥
ताझी लाश ओ रहेगी हर वेले, जा उठ न मग़झ खपा भाई ।
तेर खान कारण नहिँ कुच्छ कोल मेरे, दित्ता ब्रह्मे ने एह फरमा भाई ॥३१७॥
रिशी अगसत जद मिलनगे आन तैनूँ, देसें उन्हाँनूँ हाल सुणा भाई ।
उस वकत होसी पाप दूर तेरा, मिलसी खान नूँ फिर ग़जा भाई ॥३१८॥
है एह लाश मेरा जिस नूँ मैं खावाँ, दित्ता दस्स मैं सच सफा भाई ।
खाना मैं एह मास ताँ नाह्स चांह्दा, मैथों भुख एह रही करवा भाई ॥३१९
तुस्सी हो मह्राज अगसत रिशी, मेरे हक विच करो दुआ भाई ।
करिए पुन्न ते दान जे रब देवे, रखनी दौलत नहिँ दबा भाई ॥३२०॥
नित खान अकल्याँ नहिँ चंगा, दइए किसे नूँ कदी खवा भाई ।
दित्ता हत्थ दा आउना कम्म अगे, देवे पिच्छों न कोई पोंह्चा भाई ॥३२१॥
पेॲा रहेगा सब सामान इत्थे, लैके नाल न गेॲा कोई चा भाई ।
पादशाह मैं भी हैसाँ मुल्क संदा, न सी धन दा कोई अटका भाई ॥३२२॥
देंदा किसे नूँ कुच्छ न आह्स कदी, पाई उस दी मैं सझा भाई ।
एह कंगन मैनूँ उस देवते ने, दित्ता हत्थ दे विच फड़ा भाई ॥३२३॥

मैरे नाल माह्राज कर गल्ल इतनी, लेॲा आकाश बवान चढ़ा भाई।
न ओ लाश आई नज़र फिर उत्थे, नहिँ खबर किस लई उड़ा भाई ॥३२४॥

अन्न दान जेहा नहिँ दान कोई, पाप झूठ जेहा नहिँ का भाई।
दित्ता दस्स *दिलशाद* मैं हाल सारा, रक्खेॲा ज़रा भी नहिँ छपा भाई ॥३२५॥

सुण के गल्ल माह्राज शादान होए, लै के कंगन फिर उत्थोँ रवान होए,
दाखल विच अजुध्या आन होए, पुष्पबवान दरबार विच लाह्यो[1] वे।
दिन तीसरा अज गुज़र रेहॉ, पुत्तर बाह्मण दा [2]जी माह्राज पेॲा,
ओ ताँ उठ के अपने घर गेॲा, वज़ीराँ जोड़ के हत्थ सुणाया वे ॥३२६॥

देंदे आप नूँ पए दुआ सारे, ब्राह्मण वैश छत्री शूदर वर्ण चारे,
हर कोई तुस्साँ तो अपना आप वारे, उत्ते आप दे रब दा साया वे।
विच मुल्क न होना फतूर चाहिए, नेक-बद दी खबर ज़रूर चाहिए,
देनी सज़ा न बेकसूर चाहिए, एह *दिलशाद* माह्राज फरमाया वे ॥३२७॥

अश्वमेध यज्ञ का वृत्तान्त—

लछमन भरथ नूँ सद्द के कोल भाई, लगे कैह्ण माह्राज एह बोल भाई,
वज्जना मौत दा इक दिन ढोल भाई, सरपर तजना एह सरीर है जी।
नहिँ दम दा कोई [3]वैसाह समझो, इत्थे सभ ने होना फनाह समझो,
चलना सारेॲाँ मौत दे राह समझो, केॲा पादशाह केॲा फकीर है जी ॥३२८॥

जदों मौत दी वा सिर आन [4]धुलसी, बुध-सुध सरीर दी सभ भुलसी,
कोई किसे दे नाल न फिर [5]जुलसी, अकल्याँ चलना एत्थोँ अखीर है जी।
चलदा ज़ोर नहिँ मौत दे नाल कोई, न कोई है उपाह न चाल कोई,
सकदा मौत नूँ नहिँ है टाल कोई, भावेँ वली *दिलशाद* या पीर है जी ॥३२९॥

जिस वासते तुस्साँ नूँ सद्देॲा मैं, लओ सुण मैथोँ तुस्सी वीर मैरे।
कह्वाँ केॲा नहिँ हद्द हिसाब कोई, गए मर लक्खाँ नाल तीर मैरे ॥३३०॥

---

१. उतार दिया। २. जीवित। ३. विश्वास। ४. चलेगी। ५. चलेगा।

तीर्थ यात्रा भी लई कर भावें, कीते होर कोई कम्म सरीर मैरे।
कराँ यग *दिलशाद* अश्मेध[1] हुण मैं, उठी दिल दलील अखीर मैरे ॥३३१॥

इस यग जेहा नहिँ यग कोई, इसदे कीतिआँ हटदे पाप सारे।
रलदा दान भी नहिँ कोई नाल इसदे, हेठ इसदे तप ते जाप सारे ॥३३२॥
करे यग एह शुद्ध सरीर ताईं, देंदा दूर एह कर सन्ताप सारे।
विधि नाल जे यग अश्मेध करिए, जांदे हट *दिलशाद* सराप सारे ॥३३३॥

करो तुस्सी सामान तैय्यार यग दा, मैरे प्यारेओ ज़रा न देर होवे।
आ जान ग़रीब मसकीनें[2] सारे, विच मुल्क ऐलान चौफेर होवे ॥३३४॥
किसे गल्ल दी कमी न रहे कोई, लगा चीज़ हर इक दा ढेर होवे।
एहो चाहुंदा दिल *दिलशाद* मैरा, इत्थे यग अश्मेध इकबेर होवे ॥३३५॥

लगे करने सामान तैय्यार दोवें, कीती देर न फिर इक पल भाई।
मुल्क विच ऐलान करवा दित्ता, भेजे कासद राजेआँ वल भाई ॥३३६॥
हर इक चीज़ दे ला अम्बार रखे, रही कसर न कोई किसे गल्ल भाई।
वज्जन ढोल नगारे *दिलशाद* लगे, खलकत आई चौफेरेओं चल भाई ॥३३७॥

रिशी मुनि तपसी ते पण्डित सारे, पए दिल दे विच विचारदे नीँ।
सीता बाज किवेँ एह यग होसी, खेआली पए पतंग उडारदे नीँ ॥३३८॥
जांदी पेश उन्हाँदड़ी नहिँ कोई, ढांदे कदी ते कदी उसारदे[3] नीँ।
विच समझ *दिलशाद* नहिँ ओह औंदे, होंदे कम्म जो सच्चे करतार दे नीँ ॥३३९॥

खबर यग दी लई जद सुण सीता, ओ भी प्यारेओ होण हैरान लगी।
बिना इस्तरी किवेँ एह यग करसन, रंगारंग दे फिकर दौड़ान लगी ॥३४०॥

१. अश्वमेध। २. दीन। ३. बनाते थे।

शायद होर व्याह कर लेआ होवे, दिल अपने नूँ समझान लगी।
जावे पेश *दिलशाद* न कोई उसदी, बैह के विच कुटिआ घबरान लगी ॥३४१॥

रामचन्दर माह्राज भी सोच करदे, किवें एह पूरण हुण यग होवे।
अरधङ्गी इस्तरी पुरुष दी होवँदी ए, जिवें मुंदरी दे विच नग होवे ॥३४२॥

कदी कम्म ओ सुफल नहिँ हो सकदा, जद अंग थीँ अंग अलग होवे।
सीता बाज नहिँ चैन *दिलशाद* मैनूँ, भावेँ लक्ख इत्थे जगमग होवे ॥३४३॥

गल्लाँ मूरखाँ दिआँ नूँ सुण के ते, हत्थीँ अपनी लाल गंवाया मैं।
बेदोस सीता हाय प्यारड़ी नूँ, घरों कड्ढ विच बन रुलाया मैं ॥३४४॥

पुच्छे जा उसदे कोई दिल कोलोँ, भारा वख़त जिसनूँ एह पाया मैं।
आई समझ *दिलशाद* न कोई मैनूँ, किसे होर भी न समझाया मैं ॥३४५॥

हुण के होवँदा वकत विहा गेआ, आखर दिल नूँ एह समझावँदे नीँ।
सीता सोने दी फिर बनवा के ते, कोल आपने चा बहावँदे नीँ ॥३४६॥

पण्डित पोथिआँ खोल के आन बैठे, पए यग अश्मेध करवावँदे नीँ।
कम्म रब दे होण *दिलशाद* जेहड़े, विच समझ न किसे दे आवँदे नीँ ॥३४७॥

दिन दुखाँ दे गए ने गुज़र हुण ताँ, रब दाग़ जुदाई दे धोण लगा।
लैणा वेख तुस्साँ विच यग इस्से, मेल विछड़ेआँ दा यारो होण लगा ॥३४८॥

सुक्के मुद्दताँ दे लगे होण सावे, सुत्ता जाग के बखत खलोन लगा।
फुल्लेआ रुक्ख उमीदां दा आन के तें, हो के खुश *दिलशाद* फल खोण लगा ॥३४९॥

रिशी मुनि तपसी भी आए बोहूते, आ के होए विच यग शरीक मित्तरा।
लव-कुश नूँ आपने नाल लै के, अजुध्या पौंहूचेआई वाल्मीक मित्तरा ॥३५०॥

शकल सोह्णी दोहाँ दी दिलमोह्नी, हैसी इक थीँ इक वधीक मित्तरा।
सूरत वेख *दिलशाद* एह लोक कैंह्दे, मिलदी नाल माह्राज दे ठीक मित्तरा ॥३५१॥

रामचन्द्र माह्राज दे कोल बैह के, गुरु वसिश्ट जी यग करवा रहे नीँ ।
खलकत आई चौफेरेओं धा के ते, राजे चढ़ बतेरड़े आ रहे नीँ ॥३५२॥

महिमा यग दी सके न हो मैथोंँ, लोक खुशिआँ सभ मना रहे नीँ ।
किधरे बैठ पण्डित पए पाठ करदे, किधरे धूनिआँ रिशी जला रहे नीँ ॥३५३॥

करन खेल सोह्णे बाझीगर किधरे, किधरे लोक झयाफताँ खा रहे नीँ ।
किधरे मद्धम सतार ते बजे तबला, किधरे रागी राग अलां रहे नीँ ॥३५४॥

सोह्णी सुर दे नाल रामायण किधरे, पढ़ के लव ते कुश सुणा रहे नीँ ।
होई जमां खलकत सारी आन उत्थे, जित्थे बैठ रामायण ओ गा रहे नीँ ॥३५५॥

हैसी शकल सोह्णी ते आवाझ सोह्णी, हर इक दे दिल नूँ भा रहे नीँ ।
सूरत तकदा थकदा नहिँ कोई, लोक दोहाँ तोँ हो फिदा रहे नीँ ॥३५६॥

लगे बैठ के सुणन रामायण सारे, हञ्जू वाँग बरसात बरसा रहे नीँ ।
घर बार *दिलशाद* न याद किसे, सुध-बुध ते होश भुला रहे नीँ ॥३५७॥

रामचन्द्र माह्राज दे कोल जाके, एह आन वझीर सुणावँदे ने ।
आए सुन्दर बालक दो तपसिआँ दे, वाह वाह गीत अजीब ओ गावँदे ने ॥३५८॥

छोटी उमर ते मुँह है चन्न वाँगोँ, हर इक नूँ पए ओ भावँदे ने ।
सोह्णी सुर सुरीली उन्हाँदड़ी ए, पंछी उडदे भी ठैह्र जावँदे ने ॥३५९॥

वेख वेख के रज्जदा नहिँ कोई, दौड़ दौड़ के लोक पए आवँदे ने ।
नहिँ मंगदे कुछ ओ किसे कोलोँ, अगे किसे दे हत्थ न डाह्वँदे ने ॥३६०॥

सुरताल उन्हाँदड़ा वेख के ते, रागी केॲा गंधरब शरमावँदे ने ।
लव-कुश ओ अपना नाम दस्सदे, वालमीक दे शिष्य कहावँदे ने ॥३६१॥

१. गा। २. फैलाते।

सुट्टन लोक रुपये ते आन मोहराँ, ओ ताँ हत्थ न किसे नूँ लावँदे ने।
मस्त हाल दे विच *दिलशाद* दोवेँ, नाम रब दा पए ध्यावँदे ने ॥३६२॥

सुण के गल्ल वज़ीराँ दी रामचन्दर, लगे लछमन नूँ एह फरमान भाई।
उठ जा तूँ दोहाँ नूँ कोल मैरे, हाज़र कर जलदी इत्थे आन भाई ॥३६३॥
करे सिफत उन्हाँदड़ी हर कोई, थकदी किसे दी नहिँ ज़बान भाई।
लवाँ उन्हाँ नूँ वेख *दिलशाद* मैं भी, मैनूँ आन ओ गीत सुणान भाई ॥३६४॥

सुण के हुकम लछमन नहिँ देर लांदा, लव-कुश दे उठ के कोल जांदा,
जा के दोहाँ नूँ आपने नाल आंदा, विच दरबार दे पौंह्च्या आन है जी।
लव-कुश माह्राज दे कोल दोवेँ, हत्थ जोड़ के रहे खलो दोवेँ,
लगे करन अरज़ फिर एह दोवेँ, साडे वासते केआ फरमान है जी ॥३६५॥
खलकत मुँह वलोँ पई तक्कदी ए, तक्क तक्क के नज़र न थक्कदी ए,
अक्ख किसे दी न झमकदी ए, हर कोई होवँदा पेआ कुरबान है जी।
रामचन्दर माह्राज फरमाया वे, इज़त नाल *दिलशाद* बिठलाया वे,
गाओ गीत कोई आख सुणाया वे, जेह्ड़ा तुस्साँ नूँ याद ज़बान है जी ॥३६६॥

शायद रब सबब कोई करन लगा, नींदर खुली नसीब दी जापदी[1] ए।
नहिँ पिओ नूँ खबर एह पुत्तर मैरे, नाहीँ पुत्तराँ नूँ खबर बाप दी ए ॥३६७॥
खलकत वाँग तसवीर दे बैठ गई ए, गोया फेरी डोंडी चुप-चाप दी ए।
हैसी रंग अजीब *दिलशाद* उत्थे, कुदरत रब दी पई स्यापदी ए ॥३६८॥

सुर ताल दे नाल भिरा दोवेँ, रहे विच दरबार दे गा दोवेँ,
हर इक नूँ रहे लुभा दोवेँ, भेत उन्हाँदड़ा किसे न पाया वे।
पढ़ के पए रामायण सुणावँदे नीँ, सोह्णी सुरें दे नाल पए गावँदे नीँ,
पंछी उडदे भी ठैह्र जावँदे नीँ, वाह वाह रंग अजीब जमाया वे ॥३६९॥

---

१. प्रतीत होती।

मोहरां भरथ जी दस हज़ार तुस्सीँ, देॲो इन्हाँ नूँ कर शुमार तुस्सीँ,
लाओ आन के अगे अंबार[1] तुस्सीँ, रामचन्दर माह्राज फरमाया वे।
कल तुस्सीँ *दिलशाद* फिर आउना जी, इसे तरह इत्थे बैह के गाउना जी,
सारा हाल एह आन सुणाउना जी, मैनूँ बोहत पसंद एह आया वे ॥३७०॥

हत्थ जोड़ लव-कुश एह अरज़ करदे, है हुकम मनज़ूर सरकार सानूँ।
बाकी हाल सुणावाँगे कल आ के, ताकत नहिँ है करन इनकार सानूँ ॥३७१॥
अस्सी जन्म संदे हाँ बनवासी, मोह्रां नहिँ माह्राज दरकार सानूँ।
दौलत होंवदी लोड़ गृहस्थिआँ नूँ, नहिँ ज़र दे नाल प्यार सानूँ ॥३७२॥
अस्सी जंगलां दे विच रैहूण वाले, नहिँ दुनिआ दी कोई सार सानूँ।
खान-पीन नूँ देंवदा रब सच्चा, किसे गल्ल दी नहिँ अपार[2] सानूँ ॥३७३॥
अस्सी मंगन माह्राज नहिँ आए इत्थे, तुस्साँ समझिॲा शायद भिख्यार सानूँ।
नहिँ लोड *दिलशाद* कुझ होर अस्साँ, कंद-मूल विच जंगल बासिआर सानूँ ॥३७४॥

दिन दूसरे वक़्त दोपहर दे जी, लव-कुश फिर आन के गान लगे।
आया सीता बनवास दा वक़्त जदोँ, रो रो के लोक कुरलान लगे ॥३७५॥
रामचन्दर माह्राज भी उस वेले, विच दिल दे होण हैरान लगे।
बनाई किस *दिलशाद* रामायण है एह, देॲो दस्स मैनूँ फरमान लगे ॥३७६॥

लए सुण माह्राज ने गीत जदोँ, हो के खुश फिर एह फरमावँदे नीँ।
सुणे राग मैं भी बोह्त रागिआँ दे, इन्हाँ वाँग न होर कोई गावँदे नीँ ॥३७७॥
प्यारी शकल इन्हाँदड़ी है सोह्णी, केॲा सुर दे नाल अलावँदे[3] नीँ।
पैह्ले चाह्ड़ आवाज़ आकाश उत्ते, पिच्छोँ तोड़ के जोड़ मिलावँदे नी ॥३७८॥
मुँह फुल्ल गुलाब दे वाँग खिड़्या, हर इक दे दिल नूँ भावँदे नीँ।
एहो वरतेॲा ए मेरे नाल सारा, जेह्ड़ा पए एह बालक सुणावँदे नीँ ॥३७९॥

१. ढेर। २. कमी। ३. गाते।

नहिँ खबर किस इन्हाँ नूँ दस्सेआ ए, भला कद्द एह मैनूँ बतावँदे नीँ।
आउँदी समझ *दिलशाद* नहिँ कोई इसदी, भावे फिकर पए लक्ख दौड़ावँदे नीँ ॥३८०॥

लगे पुच्छन माहराज फिर कोल सद्के, किस जाह दे ओ तुस्सी रैहण वाले।
हाल आपना देओ हुण दस्स मैनूँ, केहड़े बाप दी गोद विच बैहण वाले ॥३८१॥
जैसे गीत सोहणे तुस्सी बोलदे ओ, ऐसे होर किधरे नहिँ कैहण वाले।
नाज़क[1] जिसम *दिलशाद* तुसाडड़े एह, नहिँ जंगलां दे दुख सैहण वाले ॥३८२॥

बालकों का वचन—

रैंहदे अस्सी माहराज हाँ विच जंगलाँ, सानूँ बस्तिआँ दी खबर सार नाहीँ।
कंद-मूल खुराक असाडड़ी ए, खंड-खीर पैला[2]ओ दरकार नाहीँ ॥३८३॥
मस्त अपने हाल दे विच अस्सी, बाझ रब कोई मददगार नाहीँ।
कुटिआ बन दे विच *दिलशाद* साडी, कोई होर साडा घर-बार नाहीँ ॥३८४॥

वालमीक माहराज तपसी जेहड़ा, एह उस रामायण बनाई ए जी।
रैंहदे अस्सी भी उसी दे कोल दोवेँ, साडे नाल असाडड़ी माई ए जी ॥३८५॥
अस्सी शिश ते ओ है गुरु साडा, सानूँ विद्या उस पढ़ाई ए जी।
कुटिआ जंगल दे विच *दिलशाद* उसदी, होर खबर न असाँ नूँ काई ए जी ॥३८६॥

रामचन्द्र जी का वचन—

वाह-वाह खूब रामायण बनाई ए ताँ, सुद्ध के फोग[3] नूँ इतर नचोड़ेआ ए।
शायरी ग़ज़ब दी है कमाल उसदी, वेखो जोड़ कैसा उस जोड़ेआ ए ॥३८७॥
एह ताँ लछमना मेरा है हाल सारा, बाकी उस कुछ पिच्छे न छोड़ेआ ए।
ओही सीवसी एह *दिलशाद* आके, टांका दिल दा जिस उधेडेआ[4] ए ॥३८८॥

इशारा समझ के उठेआ तुरत लछमन, वालमीक नूँ नाल लै आया ए।
हत्थ जोड़ परनाम माहराज कीती, अगे रिशी दे सिर नवाया ए ॥३८९॥

---

१. कोमल। २. सुगन्धित चावल—मांस, घी, या सब्ज़ी डालकर पकाए हुए।
३. सारहीन पदार्थ। ४. खोल दिया।

लगे हस्स के कैहूण एह रिशी ताईं, वाह वाह खूब ग्रन्थ बनाया ए।
सारा हाल *दिलशाद* एह है मैरा, दस्सो आप नूँ किस सुणाया ए ॥३९०॥

दस्सेऑ हाल मैनूँ एह जगत् माताँ, वालमीक रिशी मुँहों बोल कैंहदा।
घरों कड्ढ रुलाई जो विच जंगलां, सुण के मूरखां दी परचोल कैंहदा ॥३९१॥
बेदोस नूँ ला के दोस तुस्साँ, दित्ता खोह रत्न अनमोल कैंहदा।
दोवें पुत्तर *दिलशाद* एह आप दे ने, बैठे हीन जेहड़े तुस्साँ कोल कैंहदा ॥३९२॥

होवे हुकम ताँ सीता नूँ लै आवाँ, नहिँ माहराज उसदे विच पाप कोई।
छोड़ धर्म नहिँ उस अधर्म कीता, पिछले जन्म दा लगा सराप कोई ॥३९३॥
होई मुद्दत बीती मैं भी वेख रेहा, करो शक माहराज न आप कोई।
रोंदी पई *दिलशाद* विच जंगलां दे, सुणदा उसदा नहिँ वरलाप कोई ॥३९४॥

दाग चन्न ते सूरज दे विच होवे, नाल फुल्ल दे कंडा ज़रूर है जी।
नहिँ शक बेशक है सच्च एह ताँ, सीता विच न कोई कसूर है जी ॥३९५॥
लोकाँ मूरखाँ दा मुँह बंद करना, एह हिम्मत मैरे थीं दूर है जी।
नहिँ खबर *दिलशाद* कोई इस गल्ल दी, मैरे रब नूँ केऑ मनज़ूर है जी ॥३९६॥

लैइआँ रिशी दिआँ जद सुण गल्लाँ, कर विच कलेजड़े सल गैइआँ।
चुप-चाप करके गए बैठ फिर ताँ, हञ्जू वाँग बरसात दे चल रैहिआँ ॥३९७॥
है सी ख्वाब खेआल न विच रबा, कित्थों आन मुसीबतां गल्ल पैइआँ।
अकेले रोवँदे कन्त *दिलशाद* बैह के, नहिँ खबर गैइआँ केहड़ी वल सैइआँ ॥३९८॥

सीता से अन्तिम भेंट—

चुप-चाप माहराज नूँ वेख के ते, वालमीक उठ तुरत रवान होया।
उठ चल बेटी हुण तूँ नाल मैरे, मेहरबान शायद भगवान् होया ॥३९९॥

१. गँवा।

दिन दुखां दे जापदे गुझर गए नीँ, जाके सीता दे कोल गोयान होया।
सीता अपने नाल *दिलशाद* लै के, हाझर विच दरबार दे आन होया ॥४००॥

लओ हाझर माह्‌राज है सतवन्ती, बेगुनाह एह बेतकसीर है जी।
पतिव्रत धर्म इसदा है पूरा, पूरी धर्म दी एह तस्वीर है जी ॥४०१॥
मैरे तप दा फल हो नष्ट जावे, जे एह झूठ मैरी तकरीर है जी।
अरझ कराँ *दिलशाद* मैं कसम खा के, बस गल्ल मैरी एह अखीर है जी ॥४०२॥

लगे कैह्‌ण माह्‌राज है सच्च एह ताँ, मैरे दिल दा शक भी मिट जावे।
नहिँ पाप कोई विच सरीर मैरे, सीता आप इत्थे एह कसम खावे ॥४०३॥
देवे आख सीता जे एह आप मुँहोँ, समझो फेर मैनूँ एतबार आवे।
नहिँ मनझूर *दिलशाद* जे एह इसनूँ, जंगलां विच बेशक पई दुःख पावे ॥४०४॥

लैइआँ सुण सीता जद एह गल्लाँ, हो हैरान झमीन वल तक रही ए।
दिल चाहुँदा बोल के गल्ल कराँ, नहिँ खबर किस गल्ल थीँ[1] झक रही ए ॥४०५॥
नहिँ बोलदी डोलदी पई दिलोँ, भोग दुःख बतेरड़े इक रही ए।
काबू दिल *दिलशाद* न होंवदा सू, ला झोर भावें लख डक[2] रही ए ॥४०६॥

सुणदी कोल खलो के रही सीता, गल्लाँ सुण के वले हैरान होई।
निम्माझून होके विच दिल कैंह्‌दी, मैरे नाल की एह भगवान् होई ॥४०७॥
कीता करत्या पेॲा विच खूह मैरा, मैरी पति नूँ नहिँ पहचान होई।
सोचे लक्ख पर पेश न इक जावे, डावाँ-डोल डाढी हुण ताँ आन होई ॥४०८॥
दिल रोकेआँ रुक न सकदा सू, तंग आ विच जिसम दे जान होई।
आखर बोलना पेॲा *दिलशाद* उसनूँ, खोल बंदश झबान गोयान होई ॥४०९॥

---

१. लज्जा कर रही। २. रोक।

राज-भाग दे सुख मैं छोड़ के ते, तुस्साँ नाल विच बन दे पैर पाया ।
लगी अग्ग दे विच भी जलन मैं ताँ, फिर भी तुस्साँ नूँ नहिँ इतबार आया ॥४१०॥

रिशी मुनि अते देवी देवतेआँ ने, लंकाबाशिआँ वी तुस्साँ बतलाया ।
बिना रब दे जाणदा नहिँ कोई, जिस तरह मैं आप दा गीत गाया ॥४११॥

एहो आही करनी जेकर नाल मैरे, सेहूरे बन्ह के किऊँ फिर परनाया ।
देवाँ होर सबूत *दिलशाद* केहड़ा, डेरा बन्ह हुण दुनिया थीँ मैं चाया ॥४१२॥

हत्थ जोड़ के लगी फिर केहण सीता, धर्म आपना आप नूँ दस्स जावाँ ।
झूठी तोहमताँ दी माहराज किऊँ मैं, विच सिर दे पा के भस्स[1] जावाँ ॥४१३॥

अक्खीँ अपनी लवोगे वेख इत्थे, मैं हुण विच झमीन दे धस्स जावाँ ।
कहे *दिलशाद* माहराज तुसाडड़ा मैं, करदी विच परलोक दे जस्स जावाँ ॥४१४॥

पई रो सीता इतना आख के ते, करन उठ के फिर निमस्कार लगी ।
देने बख़्श कसूर माहराज मैरे, मैं हुण छोड़ने एह संसार लगी ॥४१५॥

इस जीउने थीँ मर जान चंगा, अगे रब दे करन पुकार लगी ।
वेख धर्म ते शर्म *दिलशाद* उसदा, सीता मरण नूँ होण तैय्यार लगी ॥४१६॥

नहिँ होर किसे नूँ खबर कोई, तू ही हैं, मैरा वाकफकार[2] रबा ।
कुझ तुध थीँ छपेआ नहिँ झूरीं[3], रेहा वरत जेहड़ा मैरे नाल रबा ॥४१७॥

नहिँ पाप जेकर कोई विच मैरे, लै मन्न फिर एह स्वाल रबा ।
धरती विच *दिलशाद* समा जावाँ, रही दुख बतेरड़े जाल रबा ॥४१८॥

उसे वकत उत्थे गई पाट[4] धरती, खलकत देख के हो हैरान रही ए ।
सेजा सुन्दर इक नाग दे सिर उत्ते, विछी होई एह सारेआँ वेख लई ए ॥४१९॥

---

१. राख । २. परिचित । ३. लुप्त (गुम) । ४. फट ।

सीता उठ के सामने सारेआँ दे, उत्ते सेज दे जाके लेट पई ए।
गई मिल *दिलशाद* फिर तुरत धरती, विच पल सीता हो छपन गई ए ॥४२०॥

होई छपन सीता गई मिल धरती, होए वेख के लोक हैरान ओत्थे।
तक्कन पए झमीन दे वल सारे, औंदा नझर नहिँ कोई निशान ओत्थे ॥४२१॥
गई कित्थे साडी हाय जगत माता, रो रो के पए कुरलान ओत्थे।
आवे समझ दे विच *दिलशाद* नाहीँ, माया जो वरताई भगवान् ओत्थे ॥४२२॥

सीता जद झमीन विच धस्स गई ए, कोई पता निशान न दस्स गई ए,
हत्थ मार के हत्थ ते नस्स गई ए, रही किसे नूँ खबर न सार कोई।
पेॲा कोई झमीन दे वल तकदा, मुँहोँ बोल के कुछ नहिँ आख सकदा,
रामचन्दर माह्राज थीँ है झकदा, पेॲा रोवँदा ई झारोझार कोई ॥४२३॥
बैठा होके है हैरान कोई, पेॲा दिल विच करे अरमान कोई,
चीकां मार के लगा कुरलान कोई, रेहॉ विच सिर दे मिट्टी डार कोई।
कोई आखदा होया एह झुलम भारा, अक्खिओँ चलदी सू पई नीर धारा,
करिए केॲा *दिलशाद* तूँ दस्स चारा, चलदा झोर नहिँ नाल करतार कोई ॥४२४॥

हो हैरान माह्राज चुप-चाप बैठे, नहिँ बोल के मुँह थीँ गल्ल करदे।
छम छम अक्खिआँ थीँ हंजू चल रैहिआँ, झरा ध्यान नहिँ किसे दे वल करदे ॥४२५॥
सीता बोल गई मुँहोँ सुखन जेह्ड़े, पए विच कलेजड़े सल करदे।
भुलदी नहिँ भुलायाँ *दिलशाद* सीता, पए नैन दोवेँ डेल-डल करदे ॥४२६॥

लव-कुश नूँ सद्द के कोल अपने, कर प्यार छाती नाल लान लगे।
मैं बाप ते तुस्सी हो पुत्तर मेरे, करो फिकर न कोई समझान लगे ॥४२७॥
जाना परत के बन विच नहिँ तुस्साँ, रैह्णा कोल मेरे एह सुणान लगे।
गेॲा हो *दिलशाद* जो होवना सी, करना याद नहिँ ओ फरमान लगे ॥४२८॥

रामलीला का उपसंहार—

पूरा यग अश्मेध नूँ करके ते, फिर विच अजुध्या आन बैठे।
करन राज लगे बैह के तख़त उत्ते, उसे तरफ़ लगा ध्यान बैठे ॥४२९॥

---

१. लुत (गुम)। २. (डल…करदे) छलक रहे हैं।

नहिँ झुलम हुँदा कोई किसी उत्ते, घरां विच शादान इन्सान बैठे।
चर्चा धर्म दी होवँदी हर जा ते, पण्डित वाचदे वेदपुराण बैठे ॥४३०॥
पापी नझर नहिँ आऊँदा कोई किधरे, सारे सिमरदे नाम भगवान् बैठे।
फाका फिकर *दिलशाद* न कोई किसे, होके मस्त पए करन गुझरान बैठे ॥४३१॥

होई मुद्दत बोह्ती राज करदेआँ नूँ, गेॲा आ हुण वक्त आखीर है जी।
रैह्णा किसे नूँ मिलना नहिँ इत्थे, केॲा पादशाह केॲा वझीर है जी ॥४३२॥
मरझ मौत दा नहिँ इलाज कोई, विच किताब लुकमान[1] तेहॅरीर है जी।
माँ-बाप ते पुत्तर नहिँ कुछ करदे, न कुछ कर सकदा सक्का[2] वीर है जी ॥४३३॥
सदा गुल-गुलशन गुलझार नहिँ गे, सदा नहिँ नदियाँ रैह्णा नीर है जी।
समाँ अन्त जिस वकत फिर आन लगदा, जांदी पेश न कोई तद्बीर है जी ॥४३४॥
चलदा झोर नहिँ किसे दा मौत अगे, भावें वली या पीर फकीर है जी।
घड़ेॲा भज्जना है *दिलशाद* इक दिन, समझो एही मसाल सरीर है जी ॥४३५॥

इक दिन कोल माह्राज दे काल देॲोता, गेॲा रूप तपसी दा धार साईँ।
होया खड़ा दरवाझे ते आन के ओ, कैंह्दा अरदली[3] नूँ एह पुकार साईँ ॥४३६॥
मैं ताँ मिलन माह्राज नूँ हाँ आया, कर रपोट तूँ कोल सरकार साईँ।
सुण के गल्ल तपस्वी दी अन्दर जाके, लगा करन अरझ चोबदार साईँ ॥४३७॥
तपसी आया इक आपदे मिलन कारण, पेॲा उडीकदा खड़ा दुआर साईँ।
दित्ता हुक्म माह्राज ने चा उत्थे, सुण के अरदली दी गुफ्तार साईँ ॥४३८॥
रिशी मुनि तपसी नूँ आउने दी, कोई रोक नहिँ विच दरबार साईँ।
दे भेज उस नूँ जलदी कोल मेरे, खबरदार मत करीँ तकरार साईँ ॥४३९॥
गेॲा हुक्म तपसीं नूँ मिल जदोँ, खड़ा आन दरबार विचकार साईँ।
रामचन्दर माह्राज फिर उठ के ते, हत्थ जोड़ करदे नमस्कार साईं ॥४४०॥
लगे पुच्छन दसो आए किस कारण, करो अपना हाल इझहार साईँ।
तपसी आखदा आपदे नाल मैं ताँ, आया करन गल्लां दो चार साईँ ॥४४१॥
विच दरबार दे आख नहिँ सकदा मैं, सुणो राजेॲां दे सरदार साईँ।
करनी अरझ माह्राज अकल्याँ मैं, करना गल्ल दा नहिँ खलार साईँ ॥४४२॥

---

१. यूनान का एक प्रसिद्ध वैद्य। २. सगा। ३. चपरासी।

होवे होर न कोई फिर कोल साडे, जावन उठ इत्थों एहलकार साईं ।
खड़ा बाहर पैहरा कर देओ तुस्सी, रहे किसे नूँ खबर न सार साईं ॥४४३॥
बिना हुक्म दे अंदर न कोई आवे, पहरेदार होवे होशेआर साईं ।
बिना रायाँ जे कोई आ जावे, देना उसदा सिर उतार साईं ॥४४४॥
देवे किसे नूँ अंदर न ओ आवन, खड़ा रहे होके खबरदार साईं ।
नहिँ गल्ल मामूली *दिलशाद* मेरी, एह तां खुफियां है इसरार साईं ॥४४५॥

करिए लक्ख उपाह बेशक भावें, मिटदी नहिँ तां भी होनहार यारो ।
जावे किसे दी पेश न नाल होणी, गए पीर फकीर भी हार यारो ॥४४६॥
वड्डे वड्डे राजे बलवान भारे, ओ भी होए इस अगे लाचार यारो ।
जदों आन के वरतदी सिर उत्ते, देंदी होण एह खबर न सार यारो ॥४४७॥
बड़े भारे स्यानेआँ दानेआँ दे, देवे अकल एह आन के मार यारो ।
ओही होणी *दिलशाद* अज आन इत्थे, लगी करन लछमन उत्ते वार यारो ॥४४८॥

उत्ते पहरे दे लछमन नूँ खड़ा कीता, कोलों सारेआँ नूँ चा उठायो ने ।
बिना सदेआँ अंदर न कोई आवे, मुँहों बोल के आप फरमाया ने ॥४४९॥
नहिँ ताँ जान थीँ मारेया जाएगा ओ, रखना खूब एह याद समझायो ने ।
करो गल्ल *दिलशाद* जो है करनी, एह तपसी नूँ फिर सुणायो ने ॥४५०॥

तपस्वी का वचन—

मेरा नाम माह्राज जी काल है वे, मैं ताँ रूप तपसी दा धार आया ।
ब्रह्मे भेजेआ आपदे कोल मैनूँ, इसे वासते मैं दुआर आया ॥४५१॥
होई मुद्दत विसार नहिँ सार लई, किऊँ नहिँ आपना याद कैरार आया ।
उठो चलो *दिलशाद* बैकुण्ठ चलिए, समझो लैण कारण खिदमतगार आया ॥४५२॥

सुण के गल्ल फिर काल दी कैह्‌ण लगे, मैं तां चलन नूँ हाँ तैय्यार बैठा ।
आया जिस कारण हैसाँ मैं इत्थे, कर ओ सारे कम-कार बैठा ॥४५३॥
रही नहिँ बाकी हुण गल्ल कोई, रावण सनेँ परवार दे मार बैठा ।
तैरे आउने थीँ पैह्‌ले मैं एहो, हैसाँ दिल दे विच विचार बैठा ॥४५४॥

१. सम्मति । २. मुद्दत । ३. वचन ।

थोड़े दिनां दी कसर रह गई हुण ताँ, बौह्ते दिन मैं इत्थे गुज़ार बैठा ।
ब्रह्मे नाल इकरार *दिलशाद* जेह्ड़ा, है ओह याद नहिँ मैं विसार बैठा ॥४५५॥

नाल काल करदे अन्दर गल्ल हैसन, रिशी दुरबाशा बाहर आया वे ।
हत्थ जोड़ लछमन निमस्कार कीती, आसन घत के कोल बहाया वे ॥४५६॥
थोड़ी देर बैठो इत्थे कोल मैरे, करके मिन्नत-ज़ारी एह सुणाया वे ।
अंदर जावने दा अज मौकेआ नहिँ, पैह्रा ताईँ इत्थे मैरा लाया वे ॥४५७॥
गुस्से नाल रिशी होया लाल सुण के, आसन अपना तुरत उठाया वे ।
नहिँ करोध मैरे दी खबर तैनूँ, मैनूँ मूरखा किऊँ अटकाया वे ॥४५८॥
कराँ नश्ट मैं राज सराप दे के, एह लछमन नूँ आख सुणाया वे ।
गल्ल रिशी दी एहं *दिलशाद* सुण के, लछमन हो हैरान घबराया वे ॥४५९॥

लई रिशी दी सुण एह गल्ल जदों, लछमन दिल दे विच विचार कीती ।
करसी नास एह कुल असाडड़ी दा, नहिँ झूठ जो इस गुफ्तार कीती ॥४६०॥
देवाँ जान मैं आपनी कुल बदले, एह ताँ मौत रब मैरी तैय्यार कीती ।
खबर लछमन ने अन्दर *दिलशाद* जा के, रामचन्दर दे गोश-गुज़ार कीती ॥४६१॥

रामचन्दर माह्राज दे कोल सारा, लछमन जा के हाल सुणान लगा ।
रिशी दुरबाशा खड़ा बाहर आ के, पैर आन अंदर जद ओ पान लगा ॥४६२॥
कीती अरज़ मैं मौकेआ नहिँ अजे, सुण के होण ओह एह कैह्रवान लगा ।
नहिँ एह खबर तैनूँ हाँ मैं कौन कैंह्दा, कड्ढ अखिआँ मैनूँ डरान लगा ॥४६३॥
देवाँ नश्ट कर कुल तुसाडड़ी दा, हैं तू कौन जो मैनूँ अटकान लगा ।
जल्दी जा के कर रपोट मैरी, नहिँ ताँ वकत समझ हत्थोँ जान लगा ॥४६४॥
गुस्से नाल होया चेहरा लाल उसदा, तंग-तुरश हो खोलन ज़बान लगा ।
डरदा मैं *दिलशाद* सराप कोलोँ, अन्दर शरण तुसाडड़ी आन लगा ॥४६५॥

गेआ टुर जवाब जद काल लै के, रिशी दुरबाशा अन्दर आया जी ।
गेआ उठ दरशन झट-पट करके, ज़रा चिर न उस कोई लाया जी ॥४६६॥

गए वज़ीर दीवान भी बैठ आ के, लछमन उठ के फिर सुणाया जी ।
पूरा हुकम नहिँ आपदा मैं कीता, है सी आप ने जो फरमाया जी ॥४६७॥
बिन बुलाए माह्‌राज मैं अन्दर आया, न सी तुस्साँ ने कोई बुलाया जी ।
देॲो सिर एह तुस्सी उतार मैरा, मैं ताँ पाप एह बड़ा कमाया जी ॥४६८॥
नहिँ ताँ करनगे लोक मखौल सारे, जेकर बोल न तोड़ चढ़ाया जी ।
करो सच्ची ज़बान *दिलशाद* आपनी, लछमन वासता रब दा पाया जी ॥४६९॥

विच दिल दे पै गई सोच भारी, सुणेॲा लछमन दा जद एह बेॲान मित्तरा ।
सुट्टेॲा वार जिस आपना सिर मैथोंँ, मारां किवें ओ होए हैरान मित्तरा ॥४७०॥
ऐसा भाई नहिँ सकदा मिल क़दी, भावें ढूँडिए कुल जहान मित्तरा ।
मारां कदी *दिलशाद* न मैं इस नूँ, एह फिर सोच के लगे फरमान मित्तरा ॥४७१॥

सकदा कदी भी नहिँ मैं मार तनूँ, तैरी लछमना नहिँ तकसीर कोई ।
डरके रिशी थीँ आया तूँ कोल मैरे, होई नहिँ ग़लती तैथोँ वीर कोई ॥४७२॥
जान बुझ के तूँ एह नहिँ कीता, मस्ती नहिँ विच तैरे सरीर कोई ।
करे लक्ख *दिलशाद* बेशक बंदा, सकदा मेट नहिँ लेख तकदीर कोई ॥४७३॥

लक्ष्मण का वचन—

डरेॲा रिशी दे भावेँ सराप कोलोँ, ताँ भी वड्डा एह मैं कसूर कीता ।
हुकम आपदा तोड़ नहिँ चाह्‌ड़ सकेॲा, मैं एह पाप माह्‌राज ज़रूर कीता ॥४७४॥
बिना सद्देॲा अंदर न आउना सी, रिशी अहा भावें मजबूर कीता ।
कीता जुर्म *दिलशाद* एह मैं भारा, मैरा अकल मैथोँ होणी दूर कीता ॥४७५॥

रामचन्द्र जी का वचन—

जो होया सो होया ओह वीर मैरे, मैं मुआफ एह तैरा कसूर कीता ।
नहिँ दिस्सदा दोस कोई विच तैरे, एह ताँ रिशी ने सारा फतूर कीता ॥४७६॥
कीती तूँ रच्छेॲा कुल आपने दी, मैरे हुकम नूँ भी मनज़ूर कीता ।
तैरी नहिँ खता *दिलशाद* कोई, मैनूँ किऊँ तू आन मजबूर कीता ॥४७७॥

लक्ष्मण का वचन—

देसो बख़्श माह्‌राज जे जान मैरी, मैरा जिउना निशफल होसी ।
कीता सच्च जे सुखन ज़बान दा न, विच मुल्क सारे हलचल होसी ॥४७८॥

कैहसन लोक माहराज दा हुक्म झूठा, विच जहान मशहूर एह गल्ल होसी।
डरसी झूठ थीँ न *दिलशाद* कदीं, अगोँ जो असाडड़ी अल होसी ॥४७९॥

रामचन्द्र जी का वचन—

तूहीँ जान ते तूहीँ प्राण मैरे, तैनूँ लछमना मैं कदी मारदा नहिँ ।
कह्वे लोक पेॲा भावेँ लक्ख मैनूँ, मैनूँ ज़रा भी डर संसारदा नहिँ ।४८०॥

मैरे वासते झल्लिआँ सख़्तिआँ तूँ, कदी जीउदिआँ मैं वसारदा नहिँ ।
होवे प्यार *दिलशाद* फिर नाल जिसदे, चलदा उसते वार तलवार दा नहिँ ॥४८१॥

लक्ष्मण का वचन—

सच्च बोलना धर्म माह्राज होवे, झूठ जेहा पर होर नहिँ पाप कोई ।
धर्म वासते भोग बनवास आए, दित्ता हुकम सानूँ नहिँ सी बाप कोई ।४८२॥

दित्ता मोह नूँ जिस त्याग दिलोँ, उसनूँ दुःख न दरद संताप कोई ।
देॲो सिर उतार *दिलशाद* मैरा, करो होर खेॲाल न आप कोई ॥४८३॥

रामचन्द्र जी का वचन—

तैरे जेहा कोई होर न आहा मैनूँ, तैरे उत्तोँ सरीर सी वारेॲा मैं ।
कीता सख़्त मजबूर तूँ आहा मैनूँ, आख आख तैनूँ हुण ताँ हारेॲा मैं ॥४८४॥

मन्नी गल्ल तूँ हाय न इक मैरी, दित्ता ढाह ओही जो उसारेॲा[१] मैं।
तैनूँ सिर थीँ मारसां न कदी, मैरी अक्खिआँ दे सोह्णे तारेॲा मैं ॥४८५॥

है हुण एह भी सावेँ मारने दै, विच दिल दे जो विचारेॲा मैं ।
निकल जा अजुध्या शैहर विचोँ, तैनूँ मुल्क-बद्दरे[२] कर डारेॲा मैं ॥४८६॥

मोए जीउँदिआँ नूँ मिलदे नहिँ कदीं, लैसाँ समझ मैं भी तैनूँ मारेॲा मैं ।
चला जा *दिलशाद* फिल्फ़ूर इत्थोँ, दित्ता हुकम एह तैनूँ प्यारेॲा मैं ॥४८७॥

पेॲा हो रवाँ फरमान सुण के, कीती देर न फिर इक पल मित्तरा ।
लई पकड़ लाठी न कोई संग साथी, निकल अजुध्या थीँ पेॲा चल मित्तरा ॥४८८॥

नाल दिल दे करन सलाह लगा, कर ध्यान सुनीँ अगोँ गल मित्तरा ।
लैंदा दम *दिलशाद* कदम टुर के, गेॲा दिन दोपहर थीँ ढल मित्तरा ॥४८९॥

१. खड़ा किया । २. देश से निर्वासित ।

सरजू नदी ते पौंह्च के कैह्ण लगा, केह्ड़ी गल्ल दा है तैनूँ ग़म दिला ।
लई है खेड जहान ते खेड बौह्ती, लगा रोण फिर किऊँ छमाछम दिला ॥४९०॥
रखेऑ नहिँ अफ़सोस तूँ किसे गल्ल दा, लए नीँ मार बतेरड़े ख़म दिला ।
झूठी दुनिआ दा है प्यार झूठा, रेहोँ विच जिसदे तूँ रम दिला ॥४९१॥
जाना नहिँ सरीर एह नाल तैरे, इकदिन होवना इस भसम दिला ।
नहिँ रोकना मरण थीँ तूँ मैनूँ, तैनूँ रबदी है कसम दिला ॥४९२॥
रामचन्दर माह्राज थीँ निखड़ के ते, जीउना है तैरा किस कम दिला ।
डुब के विच दरया दे मर जा तूँ, तैरी जिन्दगी होई खतम दिला ॥४९३॥
चलना इक दिन है ज़रूर इत्थों, लगा मगर हर इक दे भरम दिला ।
चलो चली दा है *दिलशाद* मेला, एह मैह्मान कोई दिन दा दम दिला ॥४९४॥

कीती गल्ल न लछमन ने फिर कोई, रामचन्दर दे वल धेऑन कीता ।
राम नाम रच्या रोम रोम अंदर, धो के हत्थ ते मुँह अश्नान कीता ॥४९५॥
ग़ोता मार बैकुण्ठ विच जा पौंह्ता, वाल्मीक ने एही बेऑन कीता ।
हैसी वेख मुहब्त *दिलशाद* कैसी, लछमन आपना आप कुरबान कीता ।४९६॥

कौसल्या माताँ कैकेई सुमित्रां भी, होइआँ आन के सख़त बीमार प्यारे ।
कीता लक्ख इलाज न फ़र्क होया, तिन्ने सुरग नूँ गैइयाँ सुधार प्यारे ॥४९७॥
रामचन्दर माह्राज नूँ फिर इक दिन, आई काल दी याद गुफ्तार प्यारे ।
रही हिरस *दिलशाद* नहिँ कोई बाकी, बैठे चलन नूँ हो तैय्यार प्यारे ॥४९८॥

रामचन्द्र जी का वचन—

सुणो भरथ भाई तुस्सी गल्ल मैरी, मैरा वक़्त नज़दीक हुण आया ए ।
गए हो सारे कम्म-काज मैरे, जिन्हाँ वासते जनम एह पाया ए ॥४९९॥
इत्थे रैह्ण नूँ नहिँ हुण चित्त चांहदा, तैनूँ प्यारेऑ सच्च सुणाया ए ।
मरज़ी केऑ *दिलशाद* तुसाडड़ी ए, रामचन्दर माह्राज फरमाया ए ।.५००॥

चली मुढ थीँ आई एह भाई मैरे, इस जगत् संदी एहो चाल है जी ।
दुनिया विच हमेश नहिँ कोई रैह्दा, इक दिन पकड़ लै जावना काल है जी ॥५०१॥

१. वियुक्त ।

मरना उस ज़रूर जिस जन्म पाया, जीवे कोई भावें लक्खाँ साल है जी ।
डर मौत दा नहिँ *दिलशाद* जिस नूँ, रैंह्दा सदा ओ पुरुष निहाल है जी ॥५०२॥

कीती अरज़ एह भरथ हत्थ जोड़ के ते, मैं ताँ आप संदा खिदमतगार हाँ जी ।
तुस्साँ बाज रह के इत्थे केॲा करसाँ, मैं भी चलन नूँ नाल तैय्यार हाँ जी ॥५०३॥
मेरा दम तुसाडड़े नाल दम दे, तन मन थीँ होया निसार हाँ जी ।
रखना नाल *दिलशाद* गुलाम ताईँ, करदा अरज़ एहो बारम्बार हाँ जी ॥५०४॥

दित्ता कर तकसीम फिर राज सारा, कर ध्यान सुणीँ अगोँ गल्ल भाई ।
मुल्क सिंध दा भरथ दे पुत्तराँ नूँ, दे के दित्ता विच सिंध दे घल भाई ॥५०५॥
लव-कुश नूँ आपना तखत दे के, कर प्यार लाया नाल गल भाई ।
जेहड़ी जा पसंद है तुस्साँ ताईँ, जा के लओ तुस्सी ओही मल भाई ॥५०६॥
करना राज तुस्साँ वक्खो वक्ख रैह के, कदी कदी बैह्ना दोहाँ रल भाई ।
छत्रघन बिभीछण सुग्रीव नूँ भी, दित्ते टोर कासद उन्हाँ वल भाई ॥५०७॥
दित्ता लिख आ के मिल जाओ मैनूँ, करो देर न घड़ी इक पल भाई ।
मैं ताँ चलन नूँ हाँ तैयार बैठा, लछमन गेॲा मैथोँ अगे चल भाई ॥५०८॥
चाहे चित्त तुसाडड़े मिलन कारण, रही अग मुहब्बत दी बल भाई ।
दरशन देॲो *दिलशाद* जी झब आ के, जावे दिल दी हिरस निकल भाई ॥५०९॥

गए मिट झगड़े जेहड़े दुनिआ दे. माह्राज बैकुण्ठ नूँ याद कीता ।
हत्थीँ अपनी राज तकसीम करके, तखत-ताज नूँ चा खैर-बाद कीता ॥५१०॥
बेटा लव लाहौर दे विच आ के, कुश जा कसूर आबाद कीता ।
रेहा फिकर विच दिल न किसे गल्ल दा, हर इक काम इआम *दिलशाद* कीता ॥५११॥

कासद टोरेआँ जद अजुध्या थीँ, गए गुज़र पूरे दिन चार मित्तरा ।
छत्रघन, बिभीछण, सुग्रीव राजा, हाज़र होए आ विच दरबार मित्तरा ॥५१२॥
जामावन्त भी सुण के गल्ल किधरों, गेॲा आ ओ भी हो तैय्यार मित्तरा ।
पए डिग कदमाँ उत्ते आन चारे, हत्थ जोड़ कीती निमस्कार मित्तरा ॥५१३॥

१. भेज। २. छोड़।

तक्कन पए माह्राज दे मुँह वलोँ, गए बैठ दरबार विचकार मित्तरा।
लैके जाउना नाल *दिलशाद* सानूँ, लगे करन अरज़ाँ वारोवार मित्तरा ॥५१४॥

छत्रधन हत्थ जोड़ के कैह्ण लगा, मैं भीं चलन नूँ हो तैय्यार आया।
कीता राज हवालड़े पुत्तरां दे, सौंप उन्हाँ नूँ सब कम्म-कार आया ॥५१५॥
रैह्साँ आप दे बाज न मैं कदीं, त्रिशना मन दी नूँ मैं ताँ मार आया।
चलसां आप दे नाल *दिलशाद* मैं भी, कर त्याग माह्राज घर-बार आया ॥५१६॥

रामचन्द्र जी का वचन—

केहा अस्साँ बिभीछणा अहा तैनूँ, रक्खेआ सिर तैरे जदों ताज भाई।
जित्थोँ तीक एह दुनिया कायम रैह्सी, रैह्सी विच लंका तैरा राज भाई ॥५१७॥
होसी लोड़ दी थोड़ न कोई तैनूँ, होसें किसे दा न मोह्ताज भाई।
रक्ख फिकर *दिलशाद* न किसे गल्ल दा, होके खुश जा करो कम्म-काज भाई ॥५१८॥

जामादन्त जी तुस्साँ एह आखेआ सी, शायद आपनी याद गुफ्तार होसी।
सुणसाँ कथा तुसाडड़ी हर वेले, जद तक ओह विच जारी संसार होसी ॥५१९॥
रैह्सो सुणदे कथा हमेश मैरी, द्वापर विच जद कृष्ण अवतार होसी।
जासो मुक्त फिर हो *दिलशाद* तुस्सी, उस वक़्त समझो बेड़ा पार होसी ॥५२०॥

कीती तुस्साँ भी आही तकरीर एहो, मैनूँ याद है बोल महाँबीर तैरा।
सुणसें कथा मैरी होसी जिस जा ते, होसी ओही जो चाहे ज़मीर तैरा ॥५२१॥
जन्म-मरण विच आवसें ना कदी, रैह्सी दायम-कायम[1] एह सरीर तैरा।
रैह्साँ मैं *दिलशाद* विच दिल तैरे, होसी वास बैकुण्ठ आखीर तैरा ॥५२२॥

मन तन थीं पूजसी जो तैनूँ, उसदे दिल दी पूरी मुराद होसी।
होसन दुख ते दरद सभ दूर उसदे, जेह्ड़ा पुरुष तैनूँ करदा याद होसी ॥५२३॥
चलसी ज़ोर न दुश्मन दा उस उत्ते, न कोई उस दे नाल फसाद होसी।
सदा खुश खुरसंद *दिलशाद* रैह्सी, ग़म-फिकर थीँ ओ आज़ाद होसी ॥५२४॥

१. सदा स्थिर।

मरना उस ज़रूर जिस जन्म पाया, जीवे कोई भावें लक्खाँ साल है जी ।
डर मौत दा नहिँ *दिलशाद* जिस नूँ, रैंह्दा सदा ओ पुरुष निहाल है जी ॥५०२॥

कीती अरज़ एह भरथ हत्थ जोड़ के ते, मैं ताँ आप सदा खिदमतगार हाँ जी ।
तुस्साँ बाज रह के इत्थे केॲा करसाँ, मैं भी चलन नूँ नाल तैय्यार हाँ जी ॥५०३॥
मेरा दम तुसाडड़े नाल दम दे, तन मन थीँ होया निसार हाँ जी ।
रखना नाल *दिलशाद* गुलाम ताईँ, करदा अरज़ एहो बारम्बार हाँ जी ॥५०४॥

दित्ता कर तकसीम फिर राज सारा, कर ध्यान सुणीँ अगोँ गल्ल भाई ।
मुल्क सिंध दा भरथ दे पुत्तराँ नूँ, दे के दित्ता विच सिंध दे घॅल भाई ॥५०५॥
लव-कुश नूँ आपना तखत दे के, कर प्यार लाया नाल गल भाई ।
जेहड़ी जा पसंद है तुस्साँ ताईँ, जा के लओ तुस्सी ओही मल भाई ॥५०६॥
करना राज तुस्साँ वक्खो वक्ख रैह के, कदी कदी बैह्ना दोहाँ रल भाई ।
छत्रघन बिभीछण सुग्रीव नूँ भी, दित्ते टोर कासद उन्हाँ वल भाई ॥५०७॥
दित्ता लिख आ के मिल जाओ मैनूँ, करो देर न घड़ी इक पल भाई ।
मैं ताँ चलन नूँ हाँ तैयार बैठा, लछमन गेॲा मैथोँ अगे चल भाई ॥५०८॥
चाहे चित्त तुसाडड़े मिलन कारण, रही अग मुहब्बत दी बल भाई ।
दरशन देॲो *दिलशाद* जी झब आ के, जावे दिल दी हिरस निकल भाई ॥५०९॥

गए मिट झगड़े जेहड़े दुनिआ दे. माह्राज बैकुण्ठ नूँ याद कीता ।
हत्थीँ अपनी राज तकसीम करके, तखत-ताज नूँ चा खैर-बाद कीता ॥५१०॥
बेटा लव लाहौर दे विच आ के, कुश जा कसूर आबाद कीता ।
रेहा फिकर विच दिल न किसे गल्ल दा, हर इक काम इआम *दिलशाद* कीता ॥५११॥

कासद टोरेॲाँ जद अजुध्या थीँ, गए गुज़र पूरे दिन चार मित्तरा ।
छत्रघन, बिभीछण, सुग्रीव राजा, हाज़र होए आ विच दरबार मित्तरा ॥५१२॥
जामावन्त भी सुण के गल्ल किधरों, गेॲा आ ओ भी हो तैय्यार मित्तरा ।
पए डिग कदमाँ उत्ते आन चारे, हत्थ जोड़ कीती निमस्कार मित्तरा ॥५१३॥

१. भेज। २. छोड़।

तक्कन पए माह्राज दे मुँह वलोँ, गए बैठ दरबार विचकार मित्तरा।
लैके जाउना नाल *दिलशाद* सानूँ, लगे करन अरझाँ वारोवार मित्तरा ॥५१४॥

छत्रघन हत्थ जोड़ के कैहण लगा, मैं भी चलन नूँ हो तैय्यार आया।
कीता राज हवालड़े पुत्तरां दे, सौंप उन्हाँ नूँ सब कम्म-कार आया ॥५१५॥
रैह्साँ आप दे बाज न मैं कदीं, त्रिश्ना मन दी नूँ मैं ताँ मार आया।
चलसां आप दे नाल *दिलशाद* मैं भी, कर त्याग माह्राज घर-बार आया ॥५१६॥

रामचन्द्र जी का वचन—

केहा अस्साँ बिभीछणा अहा तैनूँ, रक्खेआ सिर तैरे जदों ताज भाई।
जित्थों तीक एह दुनिया कायम रैह्सी, रैह्सी विच लंका तैरा राज भाई ॥५१७॥
होसी लोड़ दी थोड़ न कोई तैनूँ, होसें किसे दा न मोह्ताज भाई।
रक्ख फिकर *दिलशाद* न किसे गल्ल दा, होके खुश जा करो कम्म-काज भाई ॥५१८॥

जामावन्त जी तुस्साँ एह आखेआ सी, शायद आपनी याद गुफ्तार होसी।
सुणसाँ कथा तुसाडड़ी हर वेले, जद तक ओह विच जारी संसार होसी ॥५१९॥
रैह्सो सुणदे कथा हमेश मैरी, द्वापर विच जद कृष्ण अवतार होसी।
जासो मुक्त फिर हो *दिलशाद* तुस्सीं, उस वक़्त समझो बेड़ा पार होसी ॥५२०॥

कीती तुस्साँ भी आही तकरीर एहो, मैनूँ याद है बोल महाँबीर तैरा।
सुणसें कथा मैरी होसी जिस जा ते, होसी ओही जो चाहे ज़मीर तैरा ॥५२१॥
जन्म-मरण विच आवसें ना कदी, रैह्सी दायम-कायम[1] एह सरीर तैरा।
रैह्साँ मैं *दिलशाद* विच दिल तैरे, होसी वास बैकुण्ठ आखीर तैरा ॥५२२॥

मन तन थीं पूजसी जो तैनूँ, उसदे दिल दी पूरी मुराद होसी।
होसन दुख ते दरद सभ दूर उसदे, जेह्ड़ा पुरुष तैनूँ करदा याद होसी ॥५२३॥
चलसी ज़ोर न दुश्मन दा उस उत्ते, न कोई उस दे नाल फसाद होसी।
सदा खुश खुरसंद *दिलशाद* रैह्सी, ग़म-फिकर थीं ओ आज़ाद होसी ॥५२४॥

---

१. सदा स्थिर।

सुनो मित्तर सुग्रीव जी एह गल्ल मैरी, अजे वकत नहिँ आपदे जावने दा ।
विच दिल तुसाडड़े शौक भारा, है राज कोई दिन कमावने दा ॥५२५॥
अन्त समय मिलसी तुस्साँ फल उसदा, मैरे नाल परीत फिर लावने दा ।
दिलशाद बैकुण्ठ विच कोल मैरे, रैह्सो वकत नहिँ होर सुणावने दा ॥५२६॥

लगे कैह्‌ण बसिश्ट माह्‌राज आके, बाहर लोक हझारां हझार आए ।
खबर आप दे चलन दी सुण के ते, छोड़ आपना सभ कम्म-कार आए ॥५२७॥
रैहा घर ते बाहर न याद किसे, मैह्‌ल-माड़ियाँ नूँ ओ वसार आए ।
तुस्साँ बाज *दिलशाद* नहिँ रह सकदे, नाल चलन नूँ हो तैय्यार आए ॥५२८॥

अजुध्या बाशिआँ थीँ पुछदे रामचन्दर, दस्सो केॲा तुसाडड़ा कम्म है जी ।
वस्सो रस्सो तुस्सी जा के विच घराँ, लाया किऊँ तुस्साँ दिल ते ग़म है जी ॥५२९॥
सदा दुनिआ ते किसे नहिँ बैठ रैह्‌णा, मैरा वकत हो गेॲा खतम है जी ।
हमेशा नाल नहिँ कोई *दिलशाद* रैंह्‌दा, एह ताँ मेल समझो कोई दम है जी ॥५३०॥

कीती अरझ अगोँ रल के सारेॲाँ ने, झयादा होर अस्सी नहिँ कुछ कह सकदे ।
जित्थे चलोगे चलाँगे नाल अस्सी, अस्सी दुख जुदाई नहिँ सह सकदे ॥५३१॥
जुदा तुस्साँ कोलोँ फिर होके ते, विच घरां दे कदी नहिँ बह सकदे ।
रक्खो कदमाँ दे नाल *दिलशाद* साँनूं, तुस्साँ बाज माहराज नहिँ रह सकदे ॥५३२॥

चलो नाल तुस्सी बेशक मैरे, जेकर दिल तुसाडड़ा चाहेॲा वे ।
करो देर न हो तैय्यार जाओ, मैरे चलन दा वकत हुण आया वे ॥५३३॥
देसाँ होण तकलीफ न कोई तुस्साँ, रामचन्दर माह्‌राज फरमाया वे ।
तुस्साँ नाल प्यार *दिलशाद* मैरा, नहिँ एह झूठ मैं सच्च सुणाया वे ॥५३४॥

सतनाम[1] भगवान् दा बोल मुँहोँ, पए टुर सरजू नदी वल मित्तरा ।
सारी खलकत अजुध्या शैह्‌र संदी, पई मगर माह्‌राज दे चल मित्तरा ॥५३५॥
जिया-जन्त हैवान ते होर पंछी, पए टुर ओ भी नाल रल मित्तरा ।
चले नदी *दिलशाद* पई मार लैह्‌राँ, सुन्दर साफ निर्मल हैसी जल मित्तरा ॥५३६॥

१. सच्चा नाम ।

सरजू नदी ते पौँह्च के बैठ गए नीँ, लगे कैह्ण वाह वाह शुभ घड़ी है जी ।
लेॲा वेख एह फिर उत्थे सारेॲाँ ने, नझर जद माह्राज वल पड़ी है जी ॥५३७॥
सीता तरफ सज्जे, खब्बे महामाया, पकड़ खड़ग विच हत्थ दे खड़ी है जी ।
नहिँ अन्त *दिलशाद* बेअन्त लीला, इत्थे अकल न किसे दी लड़ी है जी ॥५३८॥

पेॲा सुरग उत्थे नझरीँ सारेॲाँ नूँ, खुला सुरग दा डिट्ठा दुआर मित्तरा ।
ब्रह्मे कई हझार बवान आ के, दित्ते कोल माह्राज खिलार मित्तरा ॥५३९॥
खलकत धा के चढ़ गई सारेॲाँ ते, रामचन्दर भी होए स्वार मित्तरा ।
रेहा पिच्छे *दिलशाद* नहिँ कोई उत्थे, सभे सुरग नूँ गए सिधार मित्तरा ॥५४०॥

उपसंहार-वचन—

खतम प्यारेॲो कथा हो गई इत्थे, दित्ती मैं ताँ सारी सुणा भाई ।
पढ़सी सुणसी ला के चित्त जेह्ड़ा, रैह्सी उसनूँ दुःख न का भाई ॥५४१॥
कदी नरक दे विच न जायगा ओ, विच सुरग दे बैठसी जा भाई ।
रखनी याद *दिलशाद* एह गल्ल चाहिए, इसनूँ देवना नहिँ भुला भाई ॥५४२॥

कहे कुच्छ कोई, कोई कुच्छ कैंह्दा, नहिँ किसे नूँ कोई खबर भाई ।
ओही सही जो आखदा है कोई, इस जहाँ थीँ गए गुझर भाई ॥५४३॥
होवे लिस्सा[1] कमझोर बेहिम्मत भावेँ, भावेँ कोई होवे झोरावर भाई ।
नहिँ छडना किसे नूँ मौत इत्थे, मरना सारेॲाँ ने सरपर भाई ॥५४४॥
रल के विच मिट्टी, मिट्टी होए ओ भी, गए दावा खुदाई जो कर भाई ।
एह ताँ खेड *दिलशाद* कोई दिन दी ए, झरा खोल के कर नझर भाई ॥५४५॥

शाहझोर मरसन ते कमझोर मरसन, वड्डे-वड्डे बली शूरवीर मरसन ।
शाहुकार मरसन ते ग़रीब मरसन, पादशाह मरसन ते वझीर मरसन ॥५४६॥
जासन मर गुरु अते होर चेले, मरसन औलिए पीर फकीर मरसन ।
रैह्णा किसे *दिलशाद* नहिँ बैठ इत्थे, दुनिया छोड़ के सारे अखीर मरसन ॥५४७॥

लैंदा राम दा नाम है जगत सारा, लैंदा दसरथ दा किऊँ नहिँ नाम कोई ।
बाप छड्ड के पुत्तर नूँ याद करदे, एह ताँ गल्ल अचम्भे दी आन होई ॥५४८॥

१. दुर्बल ।

राम नाम बोले दसरथ नाम जेहड़ा, होसी उसदी रब दे कोल ढोई[1] ।
विच चौरासिआँ[2] न *दिलशाद* फिरसी, बैहसी विच बैकुण्ठ दे जा सोई ॥५४९॥

अक्खीं खोल के वेख प्यारेआ तूँ, लछमन राम जेहे केहड़ी वल गए ।
कुंभकरण रावण मेघनाथ जैसे, मरके विच मिट्टी सारे रल गए ॥५५०॥
करदे दावे खुदाई दे आहे जेहड़े, ओ भी इस जहान तो चल गए ।
लक्खाँ पीर फकीर *दिलशाद* वली, हत्थ विच अफसोस दे मल गए ॥५५१॥

गई कथा समापत हो इत्थे, लै सुण हुण कर धेआन प्यारे ।
लिख्या हाल रामायण दा मैं सारा, विच नज़्म पंजाबी ज़बान प्यारे ॥५५२॥
ताक़त आही न इतना लिखने दी, कीती किरपा एह आप भगवान् प्यारे ।
न वँकूफ[3] है सी शेॲर लिखने दा, भन्न-तरोड़ कर दित्ता बेॲान प्यारे ॥५५३॥
करना बंद दरया नूँ विच कूँझे[4], खालाँ[5] जी दा घर न जाण प्यारे ।
समझ सुखन दी होवँदी आकलाँ नूँ, कदर पानगे केॲा नादान प्यारे ॥५५४॥
रमज़ शेॲर दी समझनी है औखी, इसदा समझना नाहिँ आसान प्यारे ।
नुकताचीनिआँ नूँ देना छोड़ चाहिए, कराँ अरज़ एह अगे शायरान[6] प्यारे॥५५५॥
आवे नज़र ग़लती जेकर किसे जा ते, लाज़म है ओत्थे पड़दा पान प्यारे ।
होवे ख्वाहिश जे किसे नूँ मिलन संदी, दस्साँ आपना पता निशान प्यारे ॥५५६॥
जिले शाहपुर दे विच शैह्र भेरे, मुहल्ले अणंदाँ विच मैरा मकान प्यारे ।
वर्ण छत्री ते अणंद झात मैरी, लवे ढूण्ढ इस पते ते आन प्यारे ॥५५७॥
किसे नाल न दुश्मनी है मैरी, हर इक मैरा मेह्रबान प्यारे ।
हाल आपने दे विच मस्त रह के, रेहा कर *दिलशाद* गुज़रान प्यारे ॥५५८॥

---

१. पौहुँच । २. ८४ योनियों में । ३. परिचय । ४. छोटा-सा बरतन । ५. माँ की बहिन (मासी) । ६. कवियों ।